धरती पर अवतार

(सम्पूर्ण)

जीव हमारी जाति है मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुसलिम, सिख, इसाई धर्म नहीं कोई न्यारा।।

-: विषय सूची :-

❑❑❑

''दो शब्द''

मानवता के पूर्ण विकास का कार्य अनादि काल से भारत ही करता आया है। इसी पुण्यभूमि पर अवतारों का अवतरण अनादि काल से होता आ रहा है।

लेकिन कैसी विडम्बना है कि ऋषि-मुनियों महापुरूषों व अवतारों के जीवन काल में उस समय की शासन व्यवस्था व जनता ने उनकी दिव्य बातों व आदर्शों पर ध्यान नहीं दिया और उनके अन्तर्ध्यान होने पर दुगने उत्साह से उनकी पूजा शुरू कर पूजने लग गये। यह भी एक विडम्बना ही है कि हम जीवंत और समय रहते उनकी नहीं मानते अपितु उनका विरोध व अपमान ही करते रहे हैं तथा कुछ स्वार्थी तत्व जनता को भ्रमित करके परम सन्त को बदनाम करके सत् भक्ति में बाधक बनते हैं। यह उक्ति प्रत्येक युग में चरितार्थ होती आई है, और आज भी हो रही है।

जो महापुरूष हजारों कष्टों को सहन करके अपनी तपस्या व सत्य पर अडिग रहता है, उनकी बात असत्य नहीं हो सकती। सत्य पर अडिग रहते हुए ईसा मसीह जी ने अपने शरीर में कीलों की भयंकर पीड़ा को झेला, संत गरीबदास जी महाराज, परमेश्वर कबीर साहेब जी, श्री नानक साहेब जी तथा श्री राम व श्री कृष्ण जी को भी यातनाओं का शिकार होना पड़ा। वर्तमान में उसी श्रृंखला में सन्त रामपाल दास जी महाराज परमेश्वर के अवतार के रूप में धरती पर मानव उद्धार का महापरोपकारी कार्य कर रहे हैं तथा उसी तरह यातनाओं का शिकार भी हो रहे हैं। संत रामपाल दास जी के विषय में फ्रांस देश के सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ता नास्त्रेदमस ने भी इस प्रकार कहा हैः-

The Great Chyren will be chief of the world,
Loved feared and unchallanged Even at the death,
His name and praise will reach beyond the skies.
And he will be content to be known only as Victor.

भविष्यवक्ता नास्त्रेदमस ने सन् 1555 में अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि सन् 2006 में एक हिन्दू नेता अचानक प्रकाश में आएगा। नास्त्रेदमस ने कहता है कि निःसंदेह विश्व में श्रेष्ठ तत्वज्ञाता (ग्रेट शायरन) के विषय में मेरी भविष्यवाणी के शब्दा शब्द को किसी नेता पर जोड़ कर तर्क-विर्तक करके देखेगें तो कोई भी खरा नहीं उतरेगा। मैं (नास्त्रेदमस) छाती ठोक कर शब्दा शब्द कह रहा हूँ कि मेरे शायरन का कृतत्व और उसका गूढ़-गहरा ज्ञान (तत्वज्ञान) ही सर्व की खाल उतारेगा, बस 2006 साल आने दो, इस विधान के एक-एक शब्द का खरा-खरा समर्थन शायरन ही देगा।

नास्त्रेदमस ने अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि 21 वीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया के क्षितिज पर 'शायरन' का उदय होगा। जो भी बदलाव होगा, वह मेरी (नास्त्रेदमस की) इच्छा से नहीं बल्कि शायरन की आज्ञा इच्छा से नियति अर्थात् विधान से सारा बदलाव होगा ही होगा। उसमें से नया बदलाव मतलब कि हिन्दुस्तान सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र होगा। कई सदियों से ना देखा, ऐसा हिन्दुओं का सुख साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा। उस देश में पैदा हुआ धार्मिक संत ही तत्वदृष्टा तथा जगत् का तारणहार, जगज्जेता होगा। एशिया खण्डों में रामायण, महाभारत आदि का ज्ञान जो हिन्दुओं में प्रचलित है उससे भी भिन्न आगे का ज्ञान उस तत्वदर्शी संत का होगा। वह सतपुरुष का अनुयाई होगा। वह एक अद्वितीय संत होगा। बहुत सारे संत नेता आयेगें और जाऐगें, सर्व परमात्मा के द्रोही तथा अभिमानी होगें। मुझे (नास्त्रेदमस को) आंतरिक साक्षात्कार उस शायरन का हुआ है। मैं उसका स्वागत

करता हुआ आश्चर्य चकित हो रहा हूँ, उदास भी हो रहा हूं, क्योंकि उसका दुनिया को ज्ञान न होने से मेरा शायरन (तत्वदर्शी संत) उपेक्षा का पात्र बन रहा है। वह अधेड़ उम्र में तत्वज्ञान का ज्ञाता तथा ज्ञेय होकर त्रिखंड में कीर्ति मान होगा। मुझ (नास्त्रेदमस) को उसका नया उपाय साधना मंत्र ऐसा जालिम मालूम हो रहा है जैसे सर्प को वश करने वाला गारडू मंत्र से महाविषैले सर्प को वश में कर लेता है। वह नया उपाय, नया कानून बनाने वाला तत्ववेता दुनिया के सामने उजागर होगा उसी को मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित होकर ''ग्रेट शायरन'' बता रहा हूं उसके ज्ञान के दिव्य तेज के प्रभाव से उस द्वीपकल्प (भारतवर्ष) में आक्रामक तूफान, खलबली मचेगी अर्थात् अज्ञानी संतों द्वारा विद्रोह किया जाएगा। (12 जुलाई 2006 में हुए करौंथा काण्ड की ओर संकेत है) उसको शांत करने का उपाय भी उसी को मालूम होगा।

तत्वज्ञान का सत्संग करके प्रथम अज्ञान निंद्रा में सोए हुए अपने धर्म बंधुओं (हिन्दुओं) को जागृत करके अंधविश्वास के आधार पर साधना कर रहे श्रद्धालुओं को शास्त्रविधि रहित साधना का बुरका फाड़ कर अपने गूढ़ गहरे ज्ञान (तत्वज्ञान) का प्रकाश करेगा। अपने सनातन धर्म का पालन करवा कर समृद्ध शांति का अधिकारी बनाएगा। तत् पश्चात् उसका तत्वज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा, उस (महान तत्वदर्शी संत) के ज्ञान की कोई भी बराबरी नहीं कर सकेगा।

जगत को नया प्रकाश देने वाला सर्वश्रेष्ठ जगज्जेता धार्मिक विश्व नेता की अपनी परमार्थी उदासी के सिवा कोई अभिलाषा नहीं होगी अर्थात् मानव उद्धार के लिए चिन्ता के अतिरिक्त उसका कुछ भी स्वार्थ नहीं होगा, ना अभिमान होगा, यह मेरी भविष्यवाणी के लिए गौरव की बात होगी की वास्तव में वह तत्वदर्शी संत संसार में अवश्य प्रसिद्ध होगा। उसके द्वारा बताया ज्ञान सदियों तक छाया रहेगा। वह संत आधुनिक वैज्ञानिकों की आँखें चकाचौंध करेगा, ऐसे आध्यात्मिक चमत्कार करेगा कि वैज्ञानिक भी आश्चर्य में पड़ जायेंगे। उसका सर्वज्ञान शास्त्र प्रमाणित होगा। मैं (नास्त्रेदमस) कहता हूँ कि बुद्धिवादी व्यक्ति उसकी उपेक्षा न करें। उसे छोटा ज्ञानदीप न समझें, उस तत्ववेता महामानव (Chyren) को सिहांसनस्थ करके (आसन पर बैठाकर) उसको आराध्य देव मानकर पूजा करें। वह आदि पुरुष (सतपुरुष) का अनुयाई दुनिया का तारणहार होगा।

"संत रामपाल जी महाराज के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ"

1. इंग्लैण्ड के ज्योतिषी 'कीरो' ने सन् 1925 में लिखी पुस्तक में भविष्यवाणी की है, बीसवीं सदी अर्थात् सन् 2000 ई. के उत्तरार्द्ध में (सन् 1950 के पश्चात् उत्पन्न सन्त) ही विश्व में 'एक नई सभ्यता' लाएगा जो सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी। भारत का वह एक व्यक्ति सारे संसार में ज्ञानक्रांति ला देगा।

2. अमेरिका के ''श्री एण्डरसन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में विश्व में असभ्यता का नंगा तांडव होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति, एक मानव, एक भाषा और झण्डा की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा सन् 1999 तक विश्व में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शांति भर देगा।

3. अमेरिका के भविष्वक्ता ''श्री चार्ल्स क्लार्क'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले एक देश विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा, यह धार्मिक क्रांति 21 वीं सदी के प्रथम दशक में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।

4. हंगरी की महिला ज्योतिषी ''बोरिस्का'' के अनुसार सन् 2000 ई. से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्गुणों का विकास एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरूप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा, इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयायी बनकर भौतिकवाद को आध्यात्मिकता में बदल देगें।

5. फ्रांस के डॉ. जूलर्वन के अनुसार सन् 1990 के बाद योरोपीय देश भारत की धार्मिक सभ्यता की ओर तेजी से झूकेंगे। सन् 2000 तक विश्व की आबादी 640 करोड़ के आस-पास होगी। भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में 'आत्मशक्ति' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।

6. इजरायल के प्रो.हरार के अनुसार भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् 2000 ई. से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़े मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उनके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत के अधिकतर राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा, पर बाद में नेतृत्व धर्मनिष्ठ वीर लोगों पर होगा। जो एक धार्मिक संगठन के आश्रित होगें।

7. नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार, सन् 1998 के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आवेगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान (आध्यात्मिक तत्वज्ञान) ही पूरे विश्व को मान्य होगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार ही आज विश्व में घटनाएँ घट रही हैं। युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धांत है। वैदिक दर्शन के अनुसार चार युगों- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था है। जब पृथ्वी पर पापियों का एक छत्र साम्राज्य हो जाता है तब भगवान पृथ्वी पर मानव रूप में प्रकट होता है।

अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें पुस्तक ''धरती पर अवतार'' में सन्त रामपाल दास जी महाराज के विषय में अनेकानेक भविष्यलेख जो आज सत्य सिद्ध हो रहे हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि ''पृथ्वी और आकाश टल सकते हैं, सूर्य का अटल सिद्धांत है उदय-अस्त, वो भी निरस्त हो सकता है, लेकिन मेरी बातें कभी झूठी नहीं हो सकती। जब कलयुग 5500 वर्ष बीत जाएगा तब एक महापुरूष जगत का उद्धार करने के लिए आएगा। (वर्तमान में सन् 2011 में कलयुग 5519 वर्ष बीत चुका है। विशेष प्रमाण कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 37 से 40 पर कि कलयुग का कौन सा वर्ष चल रहा है) उस के आध्यात्मिक ज्ञान के सामने उस समय के सर्व सन्त, महंत निरस्त हो जाऐंगे। सर्व पंथ व धर्म एक होकर सतनाम की साधना करेंगे तथा सर्व मेरी (परमेश्वर कबीर जी की) शरण ग्रहण करेंगे। जो मेरी शरण ग्रहण करेंगे तथा सतनाम (सच्चेनाम) की भक्ति करके सतलोक में चले जाऐंगे तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्त करेंगे'' वर्तमान में वह महापुरूष सन्त रामपाल दास जी महाराज हैं। जो परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी द्वारा पूर्व निरधारित की गई योजना अनुसार भेजे गये हैं।

सज्जनों ! यदि आज के करोड़ों मानव परमतत्व के ज्ञाता सन्त रामपाल दास जी महाराज जी के बताए पथानुसार, अपनी जीवन शैली को सुधार लेंगे तो पूरे विश्व में

सद्भावना, आपसी भाई-चारा, दया तथा सद्भक्ति का वातावरण हो जाएगा। वर्तमान का मानव बुद्धिजीवी है इसलिए सन्त के विचारों को अवश्य स्वीकार करेगा तथा धन्य होगा। वह सन्त है जगत् गुरु तत्वदर्शी सन्त रामपाल जी महाराज।

हे भोले मानव ! कुछ विचार कर ! सन्त रामपाल दास जी महाराज आप के उद्धार के लिए कितना संघर्ष कर रहे हैं। आप किन्हीं स्वार्थियों के द्वारा फैलाई झूठी अफवाहों के कारण उन्हें गालियाँ दे रहे हो, बुरा-भला कह रहे हो पाप के भागी हो रहे हो और अपना अनमोल मानव जीवन नष्ट कर रहे हो। संत रामपाल जी महाराज आप के लिए अमृत रूपी आध्यात्मिक ज्ञान की वर्षा कर रहे हैं। जिसे खोजने से भी मानव प्राप्त नहीं कर सकता।

परमेश्वर की खोज युगों-२ से चली आ रही है। अधिकतर भक्त समाज इस निर्णय पर पहुँचा है कि परमेश्वर निराकार है। समाधि अभ्यास करने वालों ने बताया है कि परमेश्वर का प्रकाश देखा जाता है। अधिकतर गुरु जन यही बताते हैं कि परमेश्वर निराकार है। जबकि सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थ स्पष्ट बता रहे हैं कि परमात्मा साकार है। वह मनुष्य सदृश है। ऊपर प्रकाशमान अमर लोक में रहता है। वहां से चलकर यहां आता है। नेक आत्माओं को मिलता है। प्रत्येक धर्म के व्यक्ति तथा गुरुजन अपने-२ सद्ग्रन्थों को सत्य मानते हैं कि परमात्मा की यथार्थ स्थिति तथा प्राप्ति विधि इन पवित्र सद्ग्रन्थों में वर्णित है। फिर यह विरोधाभास किस कारण से है। वास्तविकता क्या है ? वह इस पवित्र पुस्तक ''धरती पर अवतार'' से स्पष्ट हो जायेगा।

इस पुस्तक में बहुत से सन्तों के विचार लिखें हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज के प्रवचनों का भी कुछ अंश लिखा गया है तथा कुछ भविष्यवाणियाँ भी लिखी हैं जो शुभ संदेश देती हैं। जो ''धरती पर अवतार'' आने वाले एक महापुरूष के विषय में लिखी गई हैं। एक विशेष रहस्यमय अमरवाणी जयगुरु देव पंथ मथुरा के प्रवर्तक कहे जाने वाले सन्त तुलसीदास जी ने 28 अगस्त 1971 को अपने अमृत वचनों में कही जो ''शाकाहारी पत्रिका'' में छपी कि ''उस महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के छोटे से गाँव में हो चुका है। वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे बड़ा व्यक्ति बनेगा। वह महापुरूष नया विधान बनाएगा, वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झण्डा होगा, उसकी एक भाषा होगी।'' इसके पश्चात् श्री तुलसी दास जी से श्रद्धालुओं ने पूछना चाहा कि वह व्यक्ति जिसका जन्म अपने देश में हो चुका है, वह कहां है उसका पता भी बताओ। तब 7 सितम्बर 1971 को जयगुरुदेव पंथ के मुखिया श्री तुलसी दास जी ने अपने अमृत वचनों में फिर कहा कि ''वह अवतार जिसकी लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं। आज 7 सितम्बर 1971 को बीस वर्ष का हो चुका है। यदि उसका पता बता दूं तो लोग उसके पीछे पड़ जाऐंगे, समय आने पर सबको अपने आप पता लग जाएगा। सज्जनों जयगुरुदेव पंथ के मुखिया ने तो वर्तमान वाणी तथा भविष्यवाणी दोनों ही कह दी। सन्त रामपाल दास जी का जन्म 8 सितम्बर 1951 को भारतवर्ष के एक छोटे से गांव धनाना, जि. सोनीपत, हरियाणा (भारत देश) में एक जाट किसान परिवार में हुआ। 7 सितम्बर 1971 को 20 वर्ष पूरे करके 8 सितम्बर 1971 को इक्कीसवें वर्ष में कदम रखा। इसलिए वे महापुरूष धरती पर अवतार ''सन्त रामपाल दास जी महाराज'' हैं। आप जी को शंका होगी कि केवल जन्मतिथी से ही महापुरूष मानना कैसे सम्भव हो सकता है। विस्तृत जानकारी के लिए कृपा पढ़ें इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' में तथा आध्यात्मिक ज्ञान की विशेष जानकारी के लिए पढ़ें पुस्तक ''ज्ञान गंगा''

जो सतलोक आश्रम बरवाला जि. हिसार, प्रांत-हरियाणा (भारत) में उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र :- 9992600801, 9992600802, 9992600803, 9812166044, 9812026821

संत रामपाल जी अपने सत्संग वचनों में कहते हैं कि :- परमेश्वर की खोज युगों-२ से चली आ रही है। परमेश्वर की प्राप्ति न होने का कारण था कि जिन्होंने शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण किया। उनको परमात्मा प्राप्ति तथा अन्य लाभ हो ही नहीं सकते। प्रमाण श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में जिनमें कहा है कि जो साधक शास्त्रविधि को त्याग कर मनमाना आचरण करता है अर्थात् जो साधना की विधि सद्ग्रन्थों में लिखी है, उसके विपरित भक्ति कर्म (साधना) करता है, उसको न तो सुख होता है न सिद्धि को प्राप्त होता है तथा न उसकी परम गति अर्थात् मोक्ष प्राप्त होता है। जैसे श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में तथा अध्याय 8 श्लोक 1, 3, 5 से 10 अध्याय 18 श्लोक 62 अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9 में अध्याय 2 श्लोक 12 अध्याय 10 श्लोक 2 में अध्याय 4 श्लोक 32 व 34 में तथा गीता अध्याय 11 श्लोक 32,47,48 में तथा अध्याय 17 श्लोक 23 में स्पष्ट किया है। जिसमें गीता ज्ञान दाता ने अपनी स्थिति भी बताई है तथा अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म (पुरूष) की स्थिति भी स्पष्ट की है। अपने विषय में कहा है कि मेरे तथा तेरे अर्जुन बहुत जन्म हो चुके हैं। भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता कहता है कि मैं अविनाशी नहीं हूँ। अविनाशी तो परम अक्षर ब्रह्म है। मेरी भक्ति का केवल एक अक्षर ॐ है। लेकिन इसके जाप से पूर्ण मोक्ष नहीं हो सकता। जन्म-मरण सदा बना रहेगा तथा परमात्मा प्राप्ति भी नहीं हो सकती। जैसे गीता अध्याय 11 श्लोक 32,47,48 में कहा है कि मेरा यह वास्तविक रूप है मैं काल हूँ। मेरे इस स्वरूप के दर्शन अर्थात् मेरी प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से न किसी जप से न तप से न किसी क्रिया से नहीं हो सकती। गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी गति को अनुत्तम बताया है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में किसी अन्य परमात्मा की शरण में जाने के लिए कहा है। उसके लिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में तत्वदर्शी सन्तों से जानने के लिए कहा है तथा उस परमेश्वर परम अक्षर ब्रह्म (सच्चिदानन्द घन ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि उस सच्चिदानन्द घन परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के पाने का तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्ति व जन्म मरण से पूर्ण छुटकारा पाने के लिए ॐ तत् सत् की साधना करने का निर्देश दिया है। इन तीन मंत्रों में तत् तथा सत् सांकेतिक है। जिनको तत्वदर्शी संत ही जानता है।

जिनको हम महापुरूष माना करते थे। उनकी जीवनी से पता चलता था कि वे बहुत कठिन साधना किया करते थे। जो मनमाना आचरण था। जैसे निराहार रहना, अल्पहारी रहकर साधना करना, अग्नि जलाकर धूने लगा कर उनके बीच में बैठकर तपस्या करना। जल में खड़ा होकर साधना करना तथा सन्यास लेकर वन में चले जाना। उपरोक्त तीन मन्त्रों (ॐ तत् सत्) को पूर्ण संत से प्राप्त करके मर्यादा में रहकर भक्ति न करके अन्य नाम मन्त्रों जैसे हरे राम, हरे कृष्ण, ॐ नमों शिवायः, ओंकार, ररंकार, ज्योति निरंजन, सतनाम तथा अन्य नाम अकाल मूर्त, शब्द सरूपी राम, सतपुरूष आदि-२ का जाप करना यह शास्त्र विरूद्ध साधना थी। उनको हठ योग से कुछ चमत्कारी शक्तियां प्राप्त हो जाती थी इस आधार पर हम इनको परमात्मा प्राप्त मानते थे। लेकिन उन सभी शास्त्रविरूद्ध साधना करने वालो ने परमेश्वर को निराकार बताया है तथा कहा है कि समाधि में परमात्मा का सिर्फ प्रकाश देखा जाता है।

विचार करें :- यदि परमात्मा निराकार है तो प्रकाश किसका देखा? जैसे कोई कहे कि सूर्य का प्रकाश देखा और सूर्य को निराकार कहता है। उस नेत्रहीन से कोई पूछे कि सूर्य बिना प्रकाश किसका देखा ? यही दशा उन आध्यात्मिक ज्ञान नेत्रहीनों की है, जो परमात्मा को निराकार बताया करते हैं। समाधि में प्रकाश देखने वालों की दशा तो ऐसी है। जैसे किसी का घर तालाब (जोहड़) के किनारे है। सूर्य का प्रकाश जलाशय में जल पर गिरा वहाँ से प्रकाश का प्रतिबिम्ब घर के अंदर खिड़की के द्वारा प्रवेश होकर दीवार पर दिखाई देता है। उस प्रकाश को देखकर कोई कहे कि यह सूर्य का प्रकाश है। यह तो उचित है। फिर यह कहे कि सूर्य निराकार है। यह अनुचित है। इससे सिद्ध हुआ कि नेत्रहीन प्राणी किसी से सुनी सुनाई दंत कथा के आधार से यह कहता है कि सूर्य का प्रकाश दिवार पर देखा जाता है, परन्तु सूर्य निराकार है। यही दशा तत्वज्ञान नेत्रहीन प्राणीयों की जानों जो परमेश्वर को निराकार कहा करते थे और कहते हैं। वास्तव में परमेश्वर नराकार (मनुष्यवत्) तेजोमय शरीर युक्त है। जिसके एक रोमकूप में करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक प्रकाश है। उसके प्रकाश का प्रतिबिम्ब सर्व ब्रह्माण्डों में फैला है। ब्रह्मण्ड से (जलाशय की तरह) परमेश्वर का प्रकाश, पिण्ड (मानव शरीर) में समाधि में देखा जाता है। हमें प्रकाश देखकर संतुष्टि नहीं करनी है, हमें परमात्मा प्राप्ति करनी है। मान लीजिए हमने हलवा खाना है और कोई कहे कि देखो हलवे की महक आ रही है। जो परमात्मा का प्रकाश देखकर वाह वाह करते हैं तथा कहते हैं कि हमारा काम पूरा हुआ 'सब कुछ मिल गया'। उस व्यक्ति के विषय में अन्य श्रद्धालु कहा करते हैं कि यह बहुत पहुँचा हुआ भक्त है, इसको परमात्मा का प्रकाश दिखाई देता है। विचार करें कि वह क्या खाक पहुँचा हुआ होगा, खाना था हलवा, और दूर खड़ा होकर कह रहा है कि मुझे हलवे की महक आ रही है, मुझे सब कुछ मिल गया। यही दशा परमात्मा का प्रकाश देखने वालों की है। जो परमेश्वर को निराकार कहते हैं।

कुछ श्रद्धालु कहते हैं कि परमात्मा (सतपुरूष) सतगुरु रूप में तो साकार है, सतलोक में केवल प्रकाश ही प्रकाश है। सतपुरूष निराकार है। उन्होंने क्या पाया? जीवन व्यर्थ किया है। लेकिन जिन महापुरूषों को परमात्मा प्राप्ति हुई। उन्होंने परमेश्वर की यथार्थ स्थिति बताई है, कहा है कि सतलोक में परमेश्वर नराकार (मनुष्यवत्) है। परमेश्वर के शरीर के एक रोम कूप में करोड़ सूर्यों से भी अधिक प्रकाश है। परमात्मा के प्रत्यक्ष दृष्टा संतों में से कुछेक निम्न हैं:-

1. आदरणीय धर्मदास जी 2. आदरणीय मलूकदास जी 3. आदरणीय दादू दास जी 4. आदरणीय गरीबदास जी (गांव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा) 5. आदरणीय घीसा दास जी 6. आदरणीय नानक देव जी (सिख धर्म के प्रवर्तक) इन सबको परमात्मा प्राप्ति हुई है। इन सर्व महापुरूषों ने बताया कि परमात्मा सशरीर है, उसका नाम कबीर है। यही परमेश्वर काशी शहर में धाणक(जुलाहे) की भूमिका करके सशरीर मगहर नगर से सतलोक चले गये थे। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़े कुछ प्रमाण इसी पुस्तक (धरती पर अवतार) के पृष्ठ 88 से 92 पर।

पवित्र सदग्रन्थ भी परमात्मा की यथार्थ स्थिति का वर्णन करते हैं। पवित्र चारों वेदों में परमेश्वर को साकार (नराकार) कहा है वेदों को सत्य मानने वाले महर्षि दयानन्द तथा उसके भक्त भी परमात्मा तथा वेद ज्ञान से अपरिचित रहे। क्योंकि महर्षि दयानन्द (आर्य समाज प्रवर्तक) तथा उसके अनुयाई परमात्मा को निराकार कहते रहे। जबकि वेदों में परमात्मा साकार (नराकार) बताया है। वह राजा के समान दर्शनीय है। द्यूलोक (प्रकाशमय

सतलोक) में रहता है। वहाँ से चलकर सशरीर यहाँ पृथ्वी पर आता है। जब परमात्मा पृथ्वी पर अवतरित होता उस समय अपने रूप को सरल कर लेता है अर्थात् हल्का तेजयुक्त कर लेता है। यदि परमेश्वर अपने वास्तविक प्रकाश युक्त शरीर में यहाँ प्रकट हो जाये तो उसको चर्म दृष्टि से नहीं देखा जा सकता इसलिए परमेश्वर जब यहाँ अवतार रूप में आता है तो अपने रूप को सरल करके आता है। तत्वज्ञान (अध्यात्मिक ज्ञान) का प्रचार करता है। उस समय परमात्मा कवियों की तरह आचरण करता हुआ विचरता है। कृपा देखें महर्षि दयानन्द व उनके भक्तों द्वारा किये गये वेद मंत्रों के अनुवाद की फोटो कापियाँ। जिनमें उन्हीं के करकमलों से लिखा गया है कि परमात्मा राजा के समान दर्शनीय है, द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है। ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2-3, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 तथा अन्य मंत्रों में परमात्मा को साकार तथा एक देशीय कहा है। कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी उपरोक्त वेद मंत्रों की इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 65 से 70 पर।

पवित्र वेदों, श्रीमद्भगवत गीता, पवित्र पुराणों, पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहेब, पवित्र बाईबल, पवित्र कुरान शरीफ तथा अन्य आध्यात्मिक साहित्य को जैसे संत रामपाल दास जी महाराज ने जाना व समझा है। यह जन साधारण का काम नहीं है। इनके आध्यात्मिक ज्ञान से स्पष्ट है कि ये सामान्य व्यक्ति नहीं हैं। ऐसे लक्षण अवतारी शक्तियों के ही होते हैं। इस पुस्तक में आप पढ़कर आश्चर्य चकित हो जायेंगे कि प्रत्येक सद्ग्रंथ का निष्कर्ष निकालकर अन्य संतों-महंतों तथा महर्षियों को किस प्रकार निर्णायक तरीके से बेनकाब किया है। अवतारी शक्ति का एक विशेष प्रमाण आपके समक्ष यह भी है कि संत रामपाल दास जी महाराज संस्कृत नहीं पढ़ें हैं। फिर भी श्री मद्भगवत गीता का यथार्थ अनुवाद करके ''गहरी नजर गीता में'' पुस्तक की रचना की है। उस अनुवाद को अन्य अनुवादकर्ताओं से जांच कर देखने से स्वतः सिद्ध हो जाता है कि संत रामपाल दास जी महाराज स्वयं परमेश्वर कबीर साहेब जी ही धरती पर अवतार के रूप में अवतरित हुए हैं।

मेरा जन्म सिख परिवार में शहर अमृतसर में हुआ। जो बाद में जहांगीर पुर 'दिल्ली' में रहने लगा। प्रथम बार सन्त रामपाल दास जी महाराज के विचार सुने तो गले नहीं उतरे। जिज्ञासु बनकर तथा कुछ त्रुटियाँ खोजने के उद्देश्य से न चाहते हुए भी टी.वी. चैनल ''साधना'' तथा ''जी जागरण'' पर सुनता रहा। सर्व प्रमाणों को सद्ग्रंथों में देखकर अपनी शिक्षा का अभिमान त्यागकर सन्त जी को समर्पित होना पड़ा। मेरे अनुभव के अनुसार सम्पूर्ण विश्व में वर्तमान में केवल एक सन्त रामपाल दास जी महाराज ही ''सतगुरु'' हैं। श्री नानक देव जी के पश्चात् उन्हीं के गूढ़ रहस्यों को केवल सन्त रामपाल दास जी महाराज ने ही जाना है। यह पुस्तक ''धरती पर अवतार'' पूरे विश्व के मानव समाज के लिए नया संदेश लेकर आई है। विशेष कर सिख समाज के लिए वरदान सिद्ध होगी। जो मूल नाम (सतनाम) के दो अक्षर का जाप सिमरण न करके मोक्ष से वंचित हैं। वह पूर्ति सन्त रामपाल दास जी महाराज के अमृत वचनों के सत संदेश से हो जाएगी। जो इस पुस्तक ''धरती पर अवतार'' में तथा ''ज्ञान गंगा'' में संग्रहित करके मानव समाज में भेजे जा रहे हैं।

लेखक

डा. सरदार सूरज पाल सिंह,

एम. ए. पी. एच. डी.

कबिर्देव (कबीर परमेश्वर) जी का सतलोक से कलयुग में सशरीर आगमन।

(चित्र-A) कबिर्देव जी शिशु रूप धार कर लहरतारा तालाब में अवतरण। (चित्र-B)

परमअक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म जी तीसरे धाम (क्षर ब्रह्म तथा अक्षर ब्रह्म के लोकों से भिन्न जो तीसरा पूर्ण मोक्ष स्थान है उस) में विराजमान है। वह पूर्ण परमात्मा, काल ब्रह्म के भेजे हुए तत्वज्ञान हीन नकली ऋषियों, सन्तों व गुरुओं द्वारा फैलाए सद्ग्रन्थों के विपरित अज्ञान का नाश करने के लिए अपने तत्वज्ञान रूपी शस्त्र को लेकर प्रकट होता है। वह पूर्ण परमात्मा अन्य समय में भी अपने वरणीय भक्तों अर्थात् श्रेष्ठ पुरूषों को विशेष रूप से मिलता है। उनको अपने तत्वज्ञान से परिचित कराता है। उसी उद्देश्य से पूर्ण ब्रह्म अपने तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सत्यलोक से चलकर कलयुग में कबिर्देव अर्थात् कबीर साहेब नाम से संवत् 1455 (सन् 1398) की जेष्ट शुद्धि पूर्ण मासी को सुबह बनारस (काशी) में भारत की पवित्र भूमि पर एक लहरतारा नामक जलास्य में शिशु रूप धारण करके कमल के फूल पर विराजमान हुए (कृप्या देखें चित्र-A)। एक मुसलमान जुलाहा नूर अलि (नीरू) अपनी पत्नि नियामत (नीमा) के साथ प्रतिदिन की तरह उसी सरोवर में स्नान के लिए आए। वे निःसन्तान थे। शिशु रूपधारी परमेश्वर कबिर्देव जी (कबीर साहेब जी) को अपने घर ले गए (कृप्या देखें चित्र-B)। परमेश्वर कबिर्देव जी को सत्यलोक से आते हुए देखने वाले ऋषि अष्टानन्द जी थे जो प्रतिदिन की तरह उस दिन भी लहरतारा तालाब में स्नान ध्यान कर रहे थे (कृप्या देखें चित्र A)। परम अक्षर ब्रह्म कबीर जी ने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया। नीरू तथा नीमा को अति चिन्तित देखकर भगवान शिव एक फकीर (सन्त) के रूप में प्रकट हुए। क्योंकि नीरू तथा नीमा दोनों ब्राह्मण तथा ब्राह्मणी थे। जिनको मुसलमानों ने बलात् मुसलमान बनाया था। जो भगवान शिव के भक्त थे। भगवान शिव जी ने परमेश्वर कबीर जी को देखा तब शिशु रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने कहा फकीर शिव जी एक कंवारी गाय लाओ उसकी कमर पर आप अपना आर्शीवाद देना वह दूध देवेगी। नीरू एक कंवारी गाय मंगवाओ फकीर वेषधारी शिव जी ने उसकी कमर पर थपकी लगाई। कंवारी गाय ने चार सेर (किलोग्राम) का पात्र भर दिया। शिशु कबीर परमेश्वर जी की लीलामय परवरिश कंवारी गायों से हुई। प्रत्येक युग में परमेश्वर कबीर जी ऐसी ही लीला करते हैं। बड़े होकर परमात्मा कबीर जी साधारण मनुष्य की तरह जुलाहे का कार्य करने लगे तथा अपने मुख्य उद्देश्य जो तत्वज्ञान प्रचार करना था उसे भी करते रहे। परमेश्वर कर्बिदेव ने अपनी कर्बिबाणी द्वारा कविताओं और लोकोक्तियों के माध्यम से तत्वज्ञान को ऊँचे स्वर में गर्ज-गर्ज कर (बोल-बोल कर गा-गा कर) कहा। जिस कारण वे एक प्रसिद्ध कवि की उपाधी से सुषोभित हुए। कबीर परमेश्वर (कर्बिदेव) जी के कोई माता-पिता नहीं थे न उनकी कोई स्त्री तथा न सन्तान थी। कमाल एक मुर्दा जीवित किया हुआ बालक था तथा कमाली एक कब्र से निकाल कर जीवित की गई बालिका थी जो शेख तकि नामक पीर की लड़की थी। उन दोनों बच्चों को परमेश्वर कबीर जी ने अपने बच्चों की तरह पाला पोसा था। परमेश्वर कबीर जी सशरीर

आए थे, सशरीर अपने शाशवत स्थान अर्थात् सत्यलोक में (तीसरे मुक्ति धाम में) चले गए थे। प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मन्त्र 16 से 20, मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27 तथा मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2 तथा 3 में तथा मण्डल 9 सुक्त 1 मन्त्र 9, मण्डल 1 सुक्त 31 मन्त्र 17, यजुर्वेद अध्याय 5 मन्त्र 1, 32, अध्याय 29 मन्त्र 25 में

नाम (दीक्षा) लेने वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक जानकारी

1. पूर्ण गुरु की पहचान : -- आज कलियुग में भक्त समाज के सामने पूर्ण गुरु की पहचान करना सबसे जटिल प्रश्न बना हुआ है। लेकिन इसका बहुत ही लघु और साधारण-सा उत्तर है कि जो गुरु शास्त्रों के अनुसार भक्ति करता है और अपने अनुयाइयों अर्थात शिष्यों द्वारा करवाता है वही पूर्ण संत है। चूंकि भक्ति मार्ग का संविधान धार्मिक शास्त्र जैसे - कबीर साहेब की वाणी, नानक साहेब की वाणी, संत गरीबदास जी महाराज की वाणी, संत धर्मदास जी साहेब की वाणी, वेद, गीता, पुराण, कुरआन, पवित्र बाईबल आदि हैं। जो भी संत शास्त्रों के अनुसार भक्ति साधना बताता है और भक्त समाज को मार्ग दर्शन करता है तो वह पूर्ण संत है अन्यथा वह भक्त समाज का घोर दुश्मन है जो शास्त्रों के विरूद्ध साधना करवा रहा है। इस अनमोल मानव जन्म के साथ खिलवाड़ कर रहा है। ऐसे गुरु या संत को भगवान के दरबार में घोर नरक में उल्टा लटकाया जाएगा। उदाहरण के तौर पर जैसे कोई अध्यापक सलेबस (पाठ्यक्रम) से बाहर की शिक्षा देता है तो वह उन विद्यार्थियों का दुश्मन है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः, मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ।।

अनुवाद : मायाके द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्य नीच दुषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।

यजुर्वेद अध्याय न. 40 श्लोक न. 10 (संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य)

अन्यदेवाहुःसम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्, इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ।।10।।

हिन्दी अनुवाद :- परमात्मा के बारे में सामान्यत निराकार अर्थात् कभी न जन्मने वाला कहते हैं। दूसरे आकार में अर्थात् जन्म लेकर अवतार रूप में आने वाला कहते हैं। जो टिकाऊ अर्थात् पूर्णज्ञानी अच्छी प्रकार सुनाते हैं उसको इस प्रकार सही तौर पर वही समरूप अर्थात् यथार्थ रूप में भिन्न-भिन्न रूप से प्रत्यक्ष ज्ञान कराते हैं।

गीता अध्याय नं. 4 का श्लोक नं. 34

तत्, विद्धि, प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन, सेवया, उपदेक्ष्यन्ति, ते, ज्ञानम्, ज्ञानिनः, तत्वदर्शिनः ।।

अनुवाद : उसको समझ उन पूर्ण परमात्मा के ज्ञान व समाधान को जानने वाले संतोंको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करनेसे उनकी सेवा करनेसे और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करनेसे वे परमात्म तत्व को भली भाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्वज्ञानका उपदेश करेंगे।

2. नशीली वस्तुओं का सेवन निषेध :-- हुक्का, शराब, बीयर, तम्बाखु, बीड़ी, सिगरेट, हुलास सुंघना, गुटखा, मांस, अण्डा, सुल्फा, अफीम, गांजा और अन्य नशीली चीजों का सेवन तो दूर रहा किसी को नशीली वस्तु लाकर भी नहीं देनी है। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज इन सभी नशीली वस्तुओं को बहुत बुरा बताते हुए अपनी वाणी में कहते हैं कि -

सुरापान मद्य मांसाहारी, गमन करै भोगैं पर नारी। सतर जन्म कटत हैं शीशं, साक्षी साहिब है जगदीशं।।
पर द्वारा स्त्री का खोलै, सतर जन्म अंधा होवै डोलै। मदिरा पीवै कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।।
गरीब, हुक्का हरदम पिवते, लाल मिलावैं धूर। इसमें संशय है नहीं, जन्म पिछले सूर।।1।। गरीब, सो नारी

जारी करै, सुरा पान सौ बार। एक चिलम हुक्का भरै, डूबै काली धार।।2।। गरीब, सूर गऊ कुं खात है, भक्ति बिहुनें राड। भांग तम्बाखू खा गए, सो चाबत हैं हाड।।3।। गरीब, भांग तम्बाखू पीव हीं, सुरा पान सैं हेत। गौस्त मट्टी खाय कर, जंगली बनें प्रेत।।4।। गरीब, पान तम्बाखू चाब हीं, नास नाक में देत। सो तो इरानै गए, ज्यूं भड़भूजे का रेत।।5।। गरीब, भांग तम्बाखू पीव हीं, गोस्त गला कबाब। मोर मृग कूं भखत हैं, देगें कहां जवाब।।6।।

3. तीर्थ स्थानों पर जाना निषेध :-- किसी प्रकार का कोई व्रत नहीं रखना है। कोई तीर्थ यात्रा नहीं करनी, न कोई गंगा स्नान आदि करना, न किसी अन्य धार्मिक स्थल पर स्नानार्थ व दर्शनार्थ जाना है। किसी मन्दिर व ईष्ट धाम में पूजा व भक्ति के भाव से नहीं जाना कि इस मन्दिर में भगवान है। भगवान कोई पशु तो है नहीं कि उसको पुजारी जी ने मन्दिर में बांध रखा है। भगवान तो कण-कण में व्यापक है। ये सभी साधनाएँ शास्त्रों के विरुद्ध हैं। जरा विचार करके देखो कि ये सभी तीर्थ स्थल (जैसे जगन्नाथ का मन्दिर, बदरीनाथ, हरिद्वार,मक्का-मदीना, अमर नाथ, वैष्णो देवी, वृन्दावन, मथुरा, बरसाना, अयोध्या राम मन्दिर, काशी धाम, छुड़ानी धाम आदि), मन्दिर, मस्जिद, गुरु द्वारा, चर्च व ईष्ट धाम आदि ऐसे स्थल हैं जहाँ पर कोई संत रहते थे। वे वहाँ पर अपनी भक्ति साधना करके अपना भक्ति रूपी धन जोड़ करके शरीर छोड़ कर अपने ईष्ट देव के लोक में चले गए। तत्पश्चात उनकी यादगार को प्रमाणित रखने के लिए वहाँ पर किसी ने मन्दिर, किसी ने मस्जिद, किसी ने गुरु द्वारा, किसी ने चर्च या किसी ने धर्मशाला आदि बनवा दी। ताकि उनकी याद बनी रहे और हमारे जैसे तुच्छ प्राणियों को प्रमाण मिलता रहे कि हमें ऐसे ही कर्म करने चाहिए जैसे कि इन महान आत्माओं ने किये हैं। ये सभी धार्मिक स्थल हम सभी को यही संदेश देते हैं कि जैसे भक्ति साधना इन नामी संतों ने की है ऐसी ही आप करो। इसके लिए आप इसी तरीके से साधना करने वाले व बताने वाले संतों को तलाश करो और फिर जैसा वे कहें वैसा ही करो। लेकिन बाद में इन स्थानों की ही पूजा प्रारम्भ हो गई जो कि बिल्कुल व्यर्थ है और शास्त्रों के विरुद्ध है।

ये सभी स्थान तो एक ऐसे स्थान की भांति हैं जहाँ पर किसी हलवाई ने भट्ठी बना कर जलेबी, लड्डु आदि बना कर स्वयं खा कर और अपने सगे-साथियों को खिला कर चले गए। उसके बाद में उस स्थान पर न तो वह हलवाई है और न ही मिठाई। फिर तो वहाँ केवल भट्ठी ही है। वह न तो हमारे को मिठाई बनाना सिखला सकती है और न ही हमारा पेट (उदर) भर सकती है। अब कोई कहे कि आओ भईया! आपको वह भट्ठी दिखा कर लाऊँगा जहाँ पर एक हलवाई ने मिठाई बनाई थी। चलो चलते हैं। वहाँ जा कर उस भट्ठी को देख लिया और सात चक्कर भी काट आए। क्या आपको मिठाई मिली? क्या आपको मिठाई बनाने की विधि बताने वाला हलवाई मिला? इसके लिए आपने वैसा ही हलवाई खोजना होगा जो सबसे पहले आपको मिठाई खिलाए और बनाने की विधि भी बताए। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अन्य नहीं।

ठीक इसी प्रकार तीर्थ स्थानों की पूजा न करके वैसे ही संतों की तलाश करो जो शास्त्रों के अनुसार पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब की भक्ति करते व बताते हों। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अपनी मन मानी नहीं करना।

सामवेद संख्या नं. 1400 उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):- भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।

आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।।5।।

हिन्दी :- चतुर व्यक्तियों ने अपने वचनों द्वारा पूर्ण परमात्मा (पूर्ण ब्रह्म) की पूजा का सत्यमार्ग दर्शन न करके अमृत के स्थान पर आन उपासना (जैसे भूत पूजा, पितर पूजा, श्राद्ध निकालना, तीनों गुणों की पूजा (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शंकर) तथा ब्रह्म-काल की

पूजा मन्दिर-मसजिद-गुरूद्वारों-चर्चो व तीर्थ-उपवास तक की उपासना) रूपी फोड़े व घाव से निकले मवाद को आदर के साथ आचमन करा रहे होते हैं। उसको परमसुखदायक पूर्ण ब्रह्म कबीर सहशरीर साधारण वेशभूषा में (''वस्त्र का अर्थ है वेशभूषा-संत भाषा में इसे चोला भी कहते हैं। जैसे कोई संत शरीर त्याग जाता है तो कहते हैं कि महात्मा तो चोला छोड़ गए।'') सत्यलोक वाले शरीर के समान दूसरा तेजपुंज का शरीर धारण करके आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर कुछ दिन संसार में रह कर अपनी शब्द-साखियों के माध्यम से सत्यज्ञान अज्ञान को वर्णन करके पूर्ण परमात्मा के छुपे हुए वास्तविक सत्यज्ञान तथा भक्ति को जाग्रत करते हैं।

गीता अध्याय नं. 16 का श्लोक नं. 23

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः, न, सः, सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्।।

अनुवाद : जो पुरुष शास्त्र विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है वह न सिद्धि को प्राप्त होता है न परम गति को और न सुख को ही।

गीता अध्याय नं. 6 का श्लोक नं. 16

न, अति, अश्र्नतः, तु, योगः, अस्ति, न, च, एकान्तम्,
अनश्र्नतः, न, च, अति, स्वप्नशीलस्य, जाग्रतः, न, एव, च, अर्जुन।।

अनुवाद : हे अर्जुन! यह योग अर्थात् भक्ति न तो बहुत खाने वाले का और न बिल्कुल न खाने वाले का न एकान्त स्थान पर आसन लगाकर साधना करने वाले का तथा न बहुत शयन करने के स्वभाव वाले का और न सदा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

पूजैं देई धाम को, शीश हलावै जो। गरीबदास साची कहै, हद काफिर है सो।।
कबीर, गंगा काठै घर करै, पीवै निर्मल नीर। मुक्ति नहीं हरि नाम बिन, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, तीर्थ कर–कर जग मूवा, उडै पानी न्हाय। राम ही नाम ना जपा, काल घसीटे जाय।।
गरीब, पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा। जड़ मूरत को पूजतें, आवैगा टोटा।।
गरीब, पीतल चमच्चा पूजिये, जो थाल परोसै। जड़ मूरत किस काम की, मति रहो भरोसै।।
कबीर, पर्वत पर्वत मैं फिर्या, कारण अपने राम। राम सरीखे जन मिले, जिन सारे सब काम।।

4. पितर पूजा निषेध :-- किसी प्रकार की पितर पूजा, श्राद्ध निकालना आदि कुछ नहीं करना है। भगवान श्री कृष्ण जी ने भी इन पितरों की व भूतों की पूजा करने से साफ मना किया है। गीता जी के अध्याय नं. 9 के श्लोक नं. 25 में कहा है कि -

यान्ति, देवव्रताः, देवान्, पितृऋृन्, यान्ति, पितृव्रताः।भूतानि, यान्ति, भूतेज्याः, मद्याजिनः, अपि, माम्।

अनुवाद : देवताओंको पूजनेवाले देवताओंको प्राप्त होते हैं पितरोंको पूजनेवाले पितरोंको प्राप्त होते हैं भूतोंको पूजनेवाले भूतोंको प्राप्त होते हैं ओर मतानुसार पूजन करनेवाले भक्त मुझसे ही लाभान्वित होते हैं। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज और कबीर साहिब जी महाराज भी कहते हैं -'गरीब, भूत रमै सो भूत है, देव रमै सो देव। राम रमै सो राम है, सुनो सकल सुर भेव।।''

इसलिए उस (पूर्ण परमात्मा) परमेश्वर की भक्ति करो जिससे पूर्ण मुक्ति होवे। वह परमात्मा पूर्ण ब्रह्म सतपुरुष (सत कबीर) है। इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय नं. 18 के श्लोक नं. 46 में है।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्। स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।46।।

अनुवाद : जिस परमेश्वरसे सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वरकी अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा पूजा करके मनुष्य परमसिद्धिको प्राप्त हो जाता है।।63।।

गीता अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 62 :--

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत। तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।62।।

अनुवाद : हे भरतवंशोभ्द्रव अर्जुन! तू सर्वभावसे उस ईश्वरकी ही शरणमें चला जा। उसकी कृपासे तू परम शान्ति (संसारसे सर्वथा उपरति) को और अविनाशी परमपदको प्राप्त हो जायगा। सर्वभाव का तात्पर्य है कि कोई अन्य पूजा न करके मन-कर्म-वचन से एक परमेश्वर में आस्था रखना।

गीता अध्याय नं. 8 का श्लोक नं. 22 :--

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तः स्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।।22।।

अनुवाद : हे पृथानन्दन अर्जुन! सम्पूर्ण प्राणी जिसके अन्तर्गत हैं और जिससे यह सम्पूर्ण संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष परमात्मा तो अनन्यभक्तिसे प्राप्त होनेयोग्य है।

अनन्य भक्ति का तात्पर्य है एक परमेश्वर (पूर्ण ब्रह्म) की भक्ति करना, दूसरे देवी-देवताओं अर्थात् तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की नहीं। गीता जी के अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1 से 4 :--गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्, छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।1।।

अनुवाद : ऊपर को जड़ वाला नीचे को शाखा वाला अविनाशी विस्तृत वृक्ष है, घोड़े जैसा मजबूत जिसके छोटे-छोटे हिस्से या टहनियाँ पत्ते कहे हैं, उस संसाररूप वृक्षको जो इस प्रकार जानता है वह भक्त पूर्ण ज्ञानी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः, विषयप्रवालाः,
अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।2।।

अनुवाद : उस वृक्षकी नीचे और ऊपर तीनों गुणों ब्रह्मा-रजगुण, विष्णु-सतगुण, शिव-तमगुण रूपी फैली हुई विकार काम क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी कोपल डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव ही जीवको कर्मोमें बाँधने की भी जड़ें अर्थात् मूल कारण हैं तथा मनुष्यलोक, स्वर्ग, नरक लोक पृथ्वी लोक में नीचे (चौरासी लाख जूनियों में) ऊपर व्यस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असङ्गशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा।।3।।

अनुवाद : इस रचना का न शुरूवात तथा न अन्त है न वैसा स्वरूप पाया जाता है तथा यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी नहीं है क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है इस अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला मजबूत स्वरूपवाले निर्लेप तत्वज्ञान रूपी दृढ़ शस्त्र से अर्थात् निर्मल तत्वज्ञान के द्वारा काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक जानकर। (3)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्ति प्रसृता पुराणी।।4।।

अनुवाद : उसके बाद उस परमपद परमात्मा की खोज करनी चाहिये। जिसको प्राप्त हुए मनुष्य फिर लौटकर संसारमें नहीं आते और जिससे अनादिकालसे चली आनेवाली यह सृष्टी विस्तारको प्राप्त हुई है, उस आदि पुरुष परमात्माके ही मैं शरण हूँ।

इस प्रकार स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने इन्द्र जो देवी-देवताओं का राजा है कि पूजा भी छुड़वा कर उस परमात्मा की भक्ति करने के लिए ही प्रेरणा दी थी। जिस कारण उन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठा कर इन्द्र के कोप से ब्रज वासियों की रक्षा की।

गरीब, इन्द्र चढ़ा ब्रिज डुबोवन, भीगा भीत न लेव। इन्द्र कढाई होत जगत में, पूजा खा गए देव।।

कबीर, इस संसार को, समझाऊँ कै बार। पूँछ जो पकड़ै भेढ की, उतरा चाहै पार।।

5. गुरु आज्ञा का पालन :-- गुरुदेव जी की आज्ञा के बिना घर में किसी भी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान नहीं करवाना है। जैसे बन्दी छोड़ अपनी वाणी में कहते हैं कि :-

"गुरु बिन यज्ञ हवन जो करहीं, मिथ्या जावे कबहु नहीं फलहीं।"

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान। गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुराण।।

6. माता मसानी पूजना निषेध :-- आपने खेत में बनी मंढी या किसी खेड़े आदि की या किसी अन्य देवता की समाध नहीं पूजनी है। समाध चाहे किसी की भी हो बिल्कुल नहीं पूजनी है। अन्य कोई उपासना नहीं करनी है। यहाँ तक कि तीनों गुणों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की पूजा भी नहीं करनी है। केवल गुरु जी के बताए अनुसार ही करना है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः, मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः।।

अनुवाद : मायाके द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्य नीच दुषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।

कबीर, माई मसानी शेढ शीतला, भैरव भूत हनुमंत। परमात्मा उनसे दूर है, जो इनको पूजंत।।
कबीर, सौ वर्ष तो गुरु की सेवा, एक दिन आन उपासी। वो अपराधी आत्मा, परै काल की फांसी।।
गुरु को तजै भजै जो आना। ता पसुवा को फोकट ज्ञाना।।

7. संकट मोचन कबीर साहेब हैं :-- कर्म कष्ट (संकट) होने पर कोई अन्य ईष्ट देवता की या माता मसानी आदि की पूजा कभी नहीं करनी है। न किसी प्रकार की बुझा पड़वानी है। केवल बन्दी छोड़ कबीर साहिब को पूजना है जो सभी दुःखों को हरने वाले संकट मोचन हैं।

सामवेद संख्या न. 822 उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8 (संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):- मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

हिन्दी :-सनातन अर्थात् अविनाशी कबीर परमेश्वर हृदय से चाहने वाले श्रद्धा से भक्ति करने वाले भक्तात्मा को तीन मन्त्र उपेदश देकर पवित्र करके जन्म व मृत्यु से रहित करता है तथा उसके प्राण अर्थात् जीवन-स्वांसों को जो संस्कारवश अपने मित्र अर्थात् भक्त के गिनती के डाले हुए होते हैं को अपने भण्डार से पूर्ण रूप से बढ़ाता है। जिस कारण से परमेश्वर के वास्तविक आनन्द को अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

कबीर, देवी देव ठाढे भये, हमको ठौर बताओ। जो मुझ(कबीर) को पूजैं नहीं, उनको लूटो खाओ।।
कबीर, काल जो पीसै पीसना, जोरा है पनिहार। ये दो असल मजूर हैं, सतगुरु के दरबार।।

8. अनावश्यक दान निषेध :-- कहीं पर और किसी को दान रूप में कुछ नहीं देना है। न पैसे, न बिना सिला हुआ कपड़ा आदि कुछ नहीं देना है। यदि कोई दान रूप में कुछ मांगने आए तो उसे खाना खिला दो, चाय, दूध, लस्सी, पानी आदि पिला दो परंतु देना कुछ भी नहीं है। न जाने वह भिक्षुक उस पैसे का क्या दुरूपयोग करे। जैसे एक व्यक्ति ने किसी भिखारी को उसकी झूठी कहानी जिसमें वह बता रहा था कि मेरे बच्चे ईलाज बिना तड़फ रहे हैं। कुछ पैसे देने की कृपा करें को सुनकर भावनावस होकर 100 रु दे दिए। वह भिखारी पहले पाव शराब पीता था उस दिन उसने आधा बोतल शराब पीया और अपनी पत्नी को पीट डाला। उसकी पत्नी ने बच्चों सहित आत्म हत्या कर ली। आप द्वारा किया हुआ वह दान उस परिवार के नाश का कारण बना। यदि आप चाहते हो कि ऐसे

दु:खी व्यक्ति की मदद करें तो उसके बच्चों को डॉक्टर से दवाई दिलवा दें, पैसा न दें।

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान। गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुरान।।

9. झूठा खाना निषेध :-- ऐसे व्यक्ति का झूठा नहीं खाना है जो शराब, मांस, तम्बाखु, अण्डा, बीयर, अफीम, गांजा आदि का सेवन करता हो।

10. सत्यलोक गमन (देहान्त) के बाद क्रिया-कर्म निषेध :-- यदि परिवार में किसी की मौत हो जाती है, चिता में अग्नि कोई भी दे सकता है, घर का या अन्य तथा अग्नि प्रज्वलित करते समय मंगलाचरण बोल दें। तो उसके फूल आदि कुछ नहीं उठाने हैं, यदि उस स्थान को साफ करना अनिवार्य है तो उन अस्थियों को उठाकर स्वयं ही किसी स्थान पर चलते पानी में बहा दें। उस समय मंगलाचरण उच्चारण कर दें। न पिंड आदि भरवाने हैं, न तेराहमी, छः माही, बरसोधी, पिंड भी नहीं भरवाने हैं तथा श्राद्ध आदि कुछ नहीं करना है। किसी भी अन्य व्यक्ति से हवन आदि नहीं करवाना है। सम्बन्धी तथा रिश्तेदारों आदि जो शोक व्यक्त करने आए उनके लिए कोई भी एक दिन नियुक्त करें। उस दिन प्रतिदिन करने वाला नित्य नियम करें, ज्योति जागृत करें, फिर सर्व को खाना खिलाऐं। यदि आपने उसके (मरने वाले के) नाम पर कुछ धर्म करना है तो अपने गुरुदेव जी की आज्ञा ले कर बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की अमृतमयी वाणी का अखण्ड पाठ करवाना चाहिए। यदि पाठ करने की आज्ञा न मिले तो परिवार के उपदेशी भक्त चार दिन या सात दिन घर में एक अखण्ड जोत देशी घी की जलाऐ तथा ब्रह्म गायत्री मन्त्र प्रतिदिन चार बार करें तथा तीन या एक बार के मन्त्र का दान संकल्प सतलोक वासी को करें। जैसा उचित समझे एक, दो, तीन तक मन्त्र के जाप का फल उसे दान करें। प्रतिदिन की तरह ज्योति व आरती, नाम स्मरण करते रहना है, यह याद रखते हुए किः-

कबीर, साथी हमारे चले गए, हम भी चालन हार। कोए कागज में बाकी रह रही, ताते लाग रही वार।।

कबीर, देह पड़ी तो क्या हुआ, झूठा सभी पटीट। पक्षी उड़या आकाश कूं, चलता कर गया बीट।।

''कर्म काण्ड के विषय में सत्य कथा''

मेरे (संत रामपाल दास के) पूज्य गुरूदेव स्वामी राम देवानन्द जी महाराज को सोलह वर्ष की आयु में किसी महात्मा के सत्संग सुनने से वैराग हो गया था। एक दिन वे खेतों में गये हुए थे। पास में ही वन था। वे वन में जाकर किसी मृत जानवर की हड्डियों के पास अपने कपड़े फाड़कर फैंक जाते हैं और स्वयं महात्मा जी के साथ चले जाते हैं।

जब उनकी खोज हुई तो उनके घर वालों ने देखा कि वन में हड्डियों के पास फटे हुए कपड़े पड़े हैं तो उन्होंने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने उन्हें खा लिया है। उन कपड़ों तथा हड्डियों को उठा कर घर पर ले आते हैं और अंतिम संस्कार कर देते हैं। उसके बाद तेरहवीं तथा छःमाही करते हैं और फिर श्राद्ध शुरू हो जाते हैं। जब मेरे पूज्य गुरूदेव बहुत वृद्ध हो चुके थे तो वे एक बार घर पर गये। तब उन घर वालों को यह पता चला कि ये जीवित हैं और घर छोड़कर चले गये थे। उन्होंने बताया कि जब ये घर छोड़कर चले गये थे तो इनकी खोज हुई। वन में इनके कपड़े मिले। उनके पास कुछ हड्डियाँ पड़ी थी। तो हमने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने इनको खा लिया है और उन कपड़ों तथा हड्डियों को घर पर लाकर अंतिम संस्कार कर दिया।

फिर मैंने (संत रामपाल दास ने) मेरे पूज्य गुरूदेव के छोटे भाई की पत्नी से पूछा कि जब हमारे पूज्य गुरूदेव घर छोड़कर चले गये थे तो तुमने पीछे से क्या किया? उसने बताया कि जब मैं ब्याही आई थी तो उस समय मुझे इनके श्राद्ध निकलते मिले थे। मैं अपने हाथों से इनके लगभग 70 श्राद्ध निकाल चुकी हूँ। उसने बताया कि जब घर में कोई नुकसान हो जाता था जैसे कि भैंस का दूध न देना, थन में खराबी आ जाना, कोई और नुकसान हो जाना आदि तो हम स्यानों के पास बूझा पड़वाने के लिए जाते थे तो वे कहते थे

कि तुम्हारें घर में कोई निःसन्तान (अनमैरिड) मरा हुआ है। तुम्हारे को वह दुःखी कर रहा है। फिर हम उसके कपड़े आदि देते हैं। तब मैंने कहा कि ये तो दुनिया का उद्धार कर रहे हैं। ये किसको दुःख दे रहे थे। ये तो अब सुख दाता हैं। फिर मैंने (सन्त रामपाल जी महाराज ने) उस वृद्धा से कहा कि अब तो ये आपके सामने हैं, अब तो ये व्यर्थ की साधना जैसे श्राद्ध निकालने बंद कर दो। तब उसने कहा कि यह तो पुरानी रिवाज है, यह कैसे छोड़ दूं? अर्थात् हम अपनी पुरानी रिवाजों में इतने लीन हो चुके हैं कि प्रत्यक्ष प्रमाण होने पर कि वह गलत कर रहे हैं छोड़ नहीं सकते। इससे प्रमाणित होता है कि श्राद्ध निकालना, पितर पूजा करना आदि सब व्यर्थ हैं।

11. बच्चे के जन्म पर शास्त्र विरूद्ध पूजा निषेध :-- बच्चे के जन्म पर कोई छटी आदि नहीं मनानी है। सुतक के कारण प्रतिदिन की तरह करने वाली पूजा, भक्ति, आरती, ज्योति जगाना आदि बंद नहीं करनी है।

इसी संदर्भ में एक संक्षिप्त कथा बताता हूँ कि एक व्यक्ति की शादी के दस वर्ष पश्चात् पुत्र हुआ था। पुत्र की खुशी में उसने बहुत ही खुशी मनाई। बीस-पच्चीस गाँवों को भोजन के लिए आमन्त्रित किया और बहुत ही गाना-बजाना हुआ अर्थात् काफी पैसा खर्च किया। फिर एक वर्ष के बाद उस पुत्र का देहान्त हो जाता है। फिर वही परिवार टक्कर मार कर रोता है और अपने दुर्भाग्य को कोसता है। इसलिए कबीर साहेब हमें बताते हैं कि :-

कबीर, बेटा जाया खुशी हुई, बहुत बजाये थाल। आना जाना लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।
कबीर, पतझड़ आवत देख कर, बन रोवै मन माहिं। ऊंची डाली पात थे, अब पीले हो हो जाहिं।।
कबीर, पात झडंता यूं कहै, सुन भई तरूवर राय। अब के बिछुड़े नहीं मिला, न जाने कहां गिरेंगे जाय।
कबीर, तरूवर कहता पात से, सुनों पात एक बात। यहाँ की याहे रीति है, एक आवत एक जात।।

12. देई धाम पर बाल उतरवाने जाना निषेध :-- बच्चे के किसी देई धाम पर बाल उतरवाने नहीं जाना है। जब देखो बाल बड़े हो गए, कटवा कर फैंक दो। एक मन्दिर में देखा कि श्रद्धालु भक्त अपने लड़के या लड़कियों के बाल उतरवाने आए। वहाँ पर उपस्थित नाई ने बाहर के रेट से तीन गुना पैसे लीये और एक कैंची भर बाल काट कर मात-पिता को दे दिए। उन्होंने श्रद्धा से मन्दिर में चढ़ाए। पुजारी ने एक थैले में डाल लिए। रात्री को उठा कर दूर एकांत स्थान पर फैंक दिए। यह केवल नाटक बाजी है। क्यों न पहले की तरह स्वाभाविक तरीके से बाल उतरवाते रहें तथा बाहर डाल दें। परमात्मा नाम से प्रसन्न होता है पाखण्ड से नहीं।

13. नाम जाप से सुख :-- नाम (उपदेश) को केवल दुःख निवारण की दृष्टि कोण से नहीं लेना चाहिए बल्कि आत्म कल्याण के लिए लेना चाहिए। फिर सुमिरण से सर्व सुख अपने आप आ जाते हैं।

''कबीर, सुमिरण से सुख होत है, सुमिरण से दुःख जाए। कहैं कबीर सुमिरण किए, सांई माहिं समाय।।''

14. व्याभीचार निषेध :-- पराई स्त्री को माँ-बेटी-बहन की दृष्टि से देखना चाहिए। व्याभीचार महापाप है। जैसे :--

गरीब, पर द्वारा स्त्री का खोलै। सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।।सुरापान मद्य मांसाहारी। गवन करें भोगैं पर नारी।। सत्तर जन्म कटत हैं शीशं। साक्षी साहिब है जगदीशं।। पर नारी ना परसियों, मानो वचन हमार। भवन चर्तुदश तास सिर, त्रिलोकी का भार।। पर नारी ना परसियो, सुनो शब्द सलतंत। धर्मराय के खंभ से, अर्धमुखी लटकंत।।

15. निन्दा सुनना व करना निषेध :-- अपने गुरु की निंदा भूल कर भी न करें और न ही सुनें। सुनने से अभिप्राय है यदि कोई आपके गुरु जी के बारे में मिथ्या बातें करें तो आपने लड़ना नहीं है बल्कि यह समझना चाहिए कि यह बिना विचारे बोल रहा है अर्थात् झूठ कह रहा है।

गुरु की निंदा सुनै जो काना।ताको निश्चय नरक निदाना।।अपने मुख निंदा जो करहीं।शुकर श्वान गर्भ में परहीं।।

निन्दा तो किसी की भी नहीं करनी है और न ही सुननी है। चाहे वह आम व्यक्ति ही क्यों न हो। कबीर साहेब कहते हैं कि -"तिनका कबहू न निन्दीये, जो पांव तले हो। कबहु उठ आखिन पड़े, पीर घनेरी हो।।"

16. गुरु दर्श की महिमा :-- सतसंग में समय मिलते ही आने की कोशिश करे तथा सतसंग में नखरे (मान-बड़ाई) करने नहीं आवे। अपितु अपने आपको एक बीमार समझ कर आवे। जैसे बीमार व्यक्ति चाहे कितने ही पैसे वाला हो, चाहे उच्च पदवी वाला हो जब हस्पताल में जाता है तो उस समय उसका उद्देश्य केवल रोग मुक्त होना होता है। जहाँ डॉक्टर लेटने को कहे लेट जाता है, बैठने को कहे बैठ जाता है, बाहर जाने का निर्देश मिले बाहर चला जाता है। फिर अन्दर आने के लिए आवाज आए चुपके से अन्दर आ जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि आप सतसंग में आते हो तो आपको सतसंग में आने का लाभ मिलेगा अन्यथा आपका आना निष्फल है। सतसंग में जहाँ बैठने को मिल जाए वहीं बैठ जाए, जो खाने को मिल जाए उसे परमात्मा कबीर साहिब की रजा से प्रसाद समझ कर खा कर प्रसन्न चित्त रहे।

कबीर, संत मिलन कूं चालिए, तज माया अभिमान। जो–जो कदम आगे रखे, वो ही यज्ञ समान।।
कबीर, संत मिलन कूं जाईए, दिन में कई–कई बार। आसोज के मेह ज्यों, घना करे उपकार।।
कबीर, दर्शन साधु का, परमात्मा आवै याद। लेखे में वोहे घड़ी, बाकी के दिन बाद।।
कबीर, दर्शन साधु का, मुख पर बसै सुहाग। दर्श उन्हीं को होत हैं, जिनके पूर्ण भाग।।

17. गुरु महिमा :-- यदि कहीं पर पाठ या सतसंग चल रहा हो या वैसे गुरु जी के दर्शनार्थ जाते हों तो सर्व प्रथम गुरु जी को दण्डवत्(लम्बा लेट कर) प्रणाम करना चाहिए बाद में सत ग्रन्थ साहिब व तसवीरें जैसे साहिब कबीर की मूर्ति - गरीबदास जी की व स्वामी राम देवानन्द जी व गुरु जी की मूर्ति को प्रणाम करें जिससे सिर्फ भावना बनी रहेगी। मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल प्रणाम करना पूजा में नहीं आता यह तो भक्त की श्रद्धा को बनाए रखने में सहयोग देता है। पूजा तो वक्त गुरु व नाम मन्त्र की करनी है जो पार लगाएगा।

कबीर, गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागुं पाय। बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो मिलाय।।
कबीर, गुरु बड़े हैं गोविन्द से, मन में देख विचार। हरि सुमरे सो रह गए, गुरु भजे होय पार।।
कबीर, हरि के रूठतां, गुरु की शरण में जाय।कबीर गुरु जै रूठजां, हरि नहीं होत सहाय।।
कबीर, सात समुन्द्र की मसि करूं, लेखनि करूं बनिराय। धरती का कागज करूं, तो गुरु गुन लिखा न जाय।।

18. मांस भक्षण निषेध :--अण्डा व मांस भक्षण व जीव हिंसा नहीं करनी है। यह महा पाप होता है। जैसे साहेब कबीर जी महाराज व गरीबदास जी महाराज ने बताया है :-

कबीर, जीव हने हिंसा करे, प्रकट पाप सिर होय। निगम पुनि ऐसे पाप तें, भिस्त गया नहिं कोय।।1।।
कबीर, तिलभर मछली खायके, कोटि गऊ दे दान। काशी करौंत ले मरे, तो भी नरक निदान।।2।।
कबीर, बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल। जो बकरीको खात है, तिनका कौन हवाल।।3।।
कबीर, गला काटि कलमा भरे, कीया कहै हलाल। साहब लेखा मांगसी, तब होसी कौन हवाल।।4।।
कबीर, दिनको रोजा रहत हैं, रात हनत हैं गाय। यह खून वह वंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।5।।
कबीर, कबिरा तेई पीर हैं, जो जानै पर पीर। जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर।।6।।
कबीर, खूब खाना है खीचडी, मांहीं परी टुक लौन। मांस पराया खायकै, गला कटावै कौन।।7।।
कबीर, मुसलमान मारैं करदसो, हिंदू मारैं तलवार। कहै कबीर दोनूं मिलि, जैहैं यमके द्वार।।8।।
कबीर, मांस अहारी मानव, प्रत्यक्ष राक्षस जानि। ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।9।।
कबीर, मांस खांय ते ढेड़ सब, मद पीवैं सो नीच। कुलकी दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊंच।।10।।
कबीर, मांस मछलिया खात हैं, सुरापान से हेत। ते नर नरकै जाहिंगे, माता पिता समेत।।11।।

गरीब, जीव हिंसा जो करते हैं, या आगे क्या पाप। कंटक जुनी जिहान में, सिंह भेड़िया और सांप।। झोटे बकरे मुरगे ताई। लेखा सब ही लेत गुसाई। मृग मोर मारे महमंता। अचरा चर हैं जीव अनंता।। जिह्वा स्वाद हिते प्राना। नीमा नाश गया हम जाना।तीतर लवा बुटेरी चिड़िया। खूनी मारे बड़े अगड़िया।।अदले बदले लेखे लेखा। समझ देख सुन ज्ञान विवेका।

गरीब, शब्द हमारा मानियो, और सुनते हो नर नारि। जीव दया बिन कुफर है, चले जमाना हारि।।

अनजाने में हुई हिंसा का पाप नहीं लगता। बन्दी छोड़ कबीर साहिब कहते हैं :-

''इच्छा कर मारै नहीं, बिन इच्छा मर जाए। कहैं कबीर तास का, पाप नहीं लगाए।।''

19. गुरु द्रोही का सम्पर्क निषेध :-- यदि कोई भक्त गुरु जी से द्रोह (गुरु जी से विमुख हो जाता है) करता है वह महापाप का भागी हो जाता है। यदि किसी को मार्ग अच्छा न लगे तो अपना गुरु बदल सकता है। यदि वह पूर्व गुरु के साथ बैर व निन्दा करता है तो वह गुरु द्रोही कहलाता है। ऐसे व्यक्ति से भक्ति चर्चा करने में उपदेशी को दोष लगता है। उसकी भक्ति समाप्त हो जाती है।

गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर। चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।। कबीर, जान बुझ साची तजै, करै झूठे से नेह। जाकी संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।

अर्थात् गुरु द्रोही के पास जाने वाला भक्ति रहित होकर नरक व लख चौरासी जूनियों में चला जाएगा।

20. जुआ निषेध :-- जुआ-तास कभी नहीं खेलना चाहिए।

कबीर, मांस भखै और मद पिये, धन वेश्या सों खाय। जूआ खेलि चोरी करै, अंत समूला जाय।।

21. नाच-गान निषेध :-- किसी भी प्रकार के खुशी के अवसर पर नाचना व अश्लील गाने गाना भक्ति भाव के विरूद्ध है। जैसे एक समय एक विधवा बहन किसी खुशी के अवसर पर अपने रिश्तेदार के घर पर गई हुई थी। सभी खुशी के साथ नाच-गा रहे थे परंतु वह बहन एक तरफ बैठ कर प्रभु चिंतन में लगी हुई थी। फिर उनके रिश्तेदारों ने उससे पूछा कि आप ऐसे क्यों निराश बैठे हो? आप भी हमारे की तरह नाचो, गाओ और खुशी मनाओ। इस पर वह बहन कहती है कि किस की खुशी मनाऊँ? मुझ विधवा का एक ही पुत्र था वह भी भगवान को प्यारा हो चुका है। अब क्या खुशी है मेरे लिए? ठीक इसी प्रकार इस काल के लोक में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति है। यहाँ पर गुरु नानक देव जी की वाणी है कि :-

ना जाने काल की कर डारै, किस विधि ढल पासा वे। जिन्हादे सिर ते मौत खुड़गदी, उन्हानूं केड़ा हांसा वे।। साध मिलें साडी शादी (खुशी) होंदी, बिछड़ दां दिल गिरि (दु:ख) वे। अखदे नानक सुनो जिहाना, मुश्किल हाल फकीरी वे।।

कबीर साहेब जी महाराज भी कहते हैं कि :--

कबीर, झूठे सुख को सुख कहै, मान रहा मन मोद। सकल चबीना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद।।
कबीर, बेटा जाया खुशी हई, बहुत बजाये थाल। आवण जाणा लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।

विशेष :- स्त्री तथा पुरूष दोनों ही परमात्मा प्राप्ति के अधिकारी हैं। स्त्रियों को मासिक धर्म (Mainces) के दिनों में भी अपनी दैनिक पूजा, ज्योति लगाना आदि बन्द नहीं करना चाहिए, न ही किसी के देहान्त या जन्म पर भी दैनिक पूजा कर्म बन्द नहीं करना है।

नोट :-- जो भक्तजन इन इक्कीस सुत्रीय आदेशों का पालन नहीं करेगा उसका नाम समाप्त हो जाएगा। यदि अनजाने में कोई गलती हो भी जाती है तो वह माफ हो जाती है और यदि जान बुझकर कोई गलती की है तो वह भक्त नाम रहित हो जाता है। इसका समाधान यही है कि गुरुदेव जी से क्षमा याचना करके दोबारा नाम उपदेश लेना होगा।

"पुरी में श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम कैसे बना"

(संत रामपाल दास जी महाराज के सतसंग वचनों से)

उड़ीसा प्रांत में एक इन्द्रदमन नाम का राजा था। वह भगवान श्री कृष्ण जी का अनन्य भक्त था। एक रात्री को श्री कृष्ण जी ने राजा को स्वपन में दर्शन देकर कहा कि जगन्नाथ नाम से मेरा एक मन्दिर बनवा दे। श्री कृष्ण जी ने यह भी कहा था कि इस मन्दिर में मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल एक संत छोड़ना है जो दर्शकों को पवित्र गीता अनुसार ज्ञान प्रचार करे। समुद्र तट पर वह स्थान भी दिखाया जहाँ मन्दिर बनाना था। सुबह उठकर राजा इन्द्रदमन ने अपनी पत्नी को बताया कि आज रात्री को भगवान श्री कृष्ण जी दिखाई दिए। मन्दिर बनवाने के लिए कहा है। रानी ने कहा शुभ कार्य में देरी क्या? सर्व सम्पत्ति उन्हीं की दी हुई है। उन्हीं को समर्पित करने में क्या सोचना है? राजा ने उस स्थान पर मन्दिर बनवा दिया जो श्री कृष्ण जी ने स्वपन में समुद्र के किनारे पर दिखाया था। मन्दिर बनने के बाद समुद्री तुफान उठा, मन्दिर को तोड़ दिया। निशान भी नहीं बचा कि यहाँ मन्दिर था। ऐसे राजा ने पाँच बार मन्दिर बनवाया। पाँचों बार समुद्र ने तोड़ दिया।

राजा ने निराश होकर मन्दिर न बनवाने का निर्णय ले लिया। यह सोचा कि न जाने समुद्र मेरे से कौन-से जन्म का प्रतिशोध ले रहा है। कोष रिक्त हो गया, मन्दिर बना नहीं। कुछ समय उपरान्त पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) ज्योति निरंजन (काल) को दिए वचन अनुसार राजा इन्द्रदमन के पास आए तथा राजा से कहा आप मन्दिर बनवाओ। अब के समुद्र मन्दिर (महल) नहीं तोड़ेगा। राजा ने कहा संत जी मुझे विश्वास नहीं है। मैं भगवान श्री कृष्ण (विष्णु) जी के आदेश से मन्दिर बनवा रहा हूँ। श्री कृष्ण जी समुद्र को नहीं रोक पा रहे हैं। पाँच बार मन्दिर बनवा चुका हूँ, यह सोच कर कि कहीं भगवान मेरी परीक्षा ले रहे हों। परन्तु अब तो परीक्षा देने योग्य भी नहीं रहा हूँ क्योंकि कोष भी रिक्त हो गया है। अब मन्दिर बनवाना मेरे वश की बात नहीं। परमेश्वर ने कहा इन्द्रदमन जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है, वही सर्व कार्य करने में सक्षम है, अन्य प्रभु नहीं। मैं उस परमेश्वर की वचन शक्ति प्राप्त हूँ। मैं समुद्र को रोक सकता हूँ (अपने आप को छुपाते हुए सत कह रहे थे)। राजा ने कहा कि संत जी मैं नहीं मान सकता कि श्री कृष्ण जी से भी कोई प्रबल शक्ति युक्त प्रभु है। जब वे ही समुद्र को नहीं रोक सके तो आप कौन से खेत की मूली हो। मुझे विश्वास नही होता तथा न ही मेरी वितिय स्थिति मन्दिर (महल) बनवाने की है। संत रूप में आए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कहा राजन् यदि मन्दिर बनवाने का मन बने तो मेरे पास आ जाना मैं अमूक स्थान पर रहता हूँ। अब के समुद्र मन्दिर को नहीं तोड़ेगा। यह कह कर प्रभु चले आए। उसी रात्री में प्रभु श्री कृष्ण जी ने फिर राजा इन्द्रदमन को दर्शन दिए तथा कहा इन्द्रदमन एक बार फिर महल बनवा दे। जो तेरे पास संत आया था उससे सम्पर्क करके सहायता की याचना कर ले। वह ऐसा वैसा संत नहीं है। उसकी भक्ति शक्ति का कोई वार-पार नहीं है।

राजा इन्द्रदमन नींद से जागा, स्वपन का पूरा वृतान्त अपनी रानी को बताया। रानी ने कहा प्रभु कह रहे हैं तो आप मत चुको। प्रभु का महल फिर बनवा दो। रानी की सद्भावना युक्त वाणी सुन कर राजा ने कहा अब तो कोष भी खाली हो चुका है। यदि मन्दिर नहीं बनवाऊंगा तो प्रभु अप्रसन्न हो जायेंगे। मैं तो धर्म संकट में फंस गया हूँ। रानी ने कहा मेरे

पास गहने रखे हैं। उनसे आसानी से मन्दिर बन जायेगा। आप यह गहने लो तथा प्रभु के आदेश का पालन करो, यह कहते हुए रानी ने सर्व गहने जो घर रखे थे तथा जो पहन रखे थे निकाल कर प्रभु के निमित अपने पति के चरणों में समर्पित कर दिये। राजा इन्द्रदमन उस स्थान पर गया जो परमेश्वर ने संत रूप में आकर बताया था। कबीर प्रभु अर्थात् अपरिचित संत को खोज कर समुद्र को रोकने की प्रार्थना की। प्रभु कबीर जी (कविर्देव) ने कहा कि जिस तरफ से समुद्र उठ कर आता है, वहाँ समुद्र के किनारे एक चौरा (चबूतरा) बनवा दे। जिस पर बैठ कर मैं प्रभु की भक्ति करूंगा तथा समुद्र को रोकूंगा। राजा ने एक बड़े पत्थर को कारीगरों से चबूतरा जैसा बनवाया, परमेश्वर कबीर उस पर बैठ गए। छटी बार मन्दिर बनना प्रारम्भ हुआ। उसी समय एक नाथ परम्परा के सिद्ध महात्मा आ गए। नाथ जी ने राजा से कहा राजा बहुत अच्छा मन्दिर बनवा रहे हो, इसमें मूर्ति भी स्थापित करनी चाहिए। मूर्ति बिना मन्दिर कैसा? यह मेरा आदेश है। राजा इन्द्रदमन ने हाथ जोड़ कर कहा नाथ जी प्रभु श्री कृष्ण जी ने मुझे स्वपन में दर्शन दे कर मन्दिर बनवाने का आदेश दिया था तथा कहा था कि इस महल में न तो मूर्ति रखनी है, न ही पाखण्ड पूजा करनी है। राजा की बात सुनकर नाथ ने कहा स्वपन भी कोई सत होता है। मेरे आदेश का पालन कीजिए तथा चन्दन की लकड़ी की मूर्ति अवश्य स्थापित कीजिएगा। यह कह कर नाथ जी बिना जल पान ग्रहण किए उठ गए। राजा ने डर के मारे चन्दन की लकड़ी मंगवाई तथा कारीगर को मूर्ति बनाने का आदेश दे दिया। एक मूर्ति श्री कृष्ण जी की स्थापित करने का आदेश श्री नाथ जी का था। फिर अन्य गुरुओं-संतों ने राजा को राय दी कि अकेले प्रभु कैसे रहेंगे? वे तो श्री बलराम को सदा साथ रखते थे। एक ने कहा बहन सुभद्रा तो भगवान श्री कृष्ण जी की लाड़ली बहन थी, वह कैसे अपने भाई बिना रह सकती है? तीन मूर्तियाँ बनवाने का निर्णय लिया गया। तीन कारीगर नियुक्त किए। मूर्तियाँ तैयार होते ही टुकड़े-टुकड़े हो गई। ऐसे तीन बार मूर्तियाँ खण्ड हो गई। राजा बहुत चिन्तित हुआ। सोचा मेरे भाग्य में यह यश व पुण्य कर्म नहीं है। मन्दिर बनता है वह टूट जाता है। अब मूर्तियाँ टूट रही हैं। नाथ जी रूष्ट हो कर गए हैं। यदि कहूँगा कि मूर्तियाँ टूट जाती हैं तो सोचेगा कि राजा बहाना बना रहा है, कहीं मुझे शाप न दे दे। चिन्ता ग्रस्त राजा न तो आहार कर रहा है, न रात्री भर निन्द्रा आई। सुबह बेचैन अवस्था में राज दरबार में गया। उसी समय पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर प्रभु एक अस्सी वर्षीय कारीगर का रूप बनाकर राज दरबार में उपस्थित हुआ। कमर पर एक थैला लटकाए हुए था जिसमें आरी बाहर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, मानों बिना बताए कारीगर का परिचय दे रही थी तथा अन्य बसोला व बरमा आदि थेले में भरे थे। कारीगर वेश में प्रभु ने राजा से कहा मैंने सुना है कि प्रभु के मन्दिर के लिए मूर्तियाँ पूर्ण नहीं हो रही हैं। मैं 80 वर्ष का वृद्ध हो चुका हूँ तथा 60 वर्ष का अनुभव है। चन्दन की लकड़ी की मूर्ति प्रत्येक कारीगर नहीं बना सकता। यदि आप की आज्ञा हो तो सेवक उपस्थित है। राजा ने कहा कारीगर आप मेरे लिए भगवान ही कारीगर बन कर आये लगते हो। मैं बहुत चिन्तित था। सोच ही रहा था कि कोई अनुभवी कारीगर मिले तो समस्या का समाधान बने। आप शीघ्र मूर्तियाँ बना दो। वृद्ध कारीगर रूप में आए कविर्देव (कबीर प्रभु) ने कहा राजन मुझे एक कमरा दे दो, जिसमें बैठ कर प्रभु की मूर्ति तैयार करूंगा। मैं अंदर से दरवाजा बंद करके स्वच्छता से मूर्ति

बनाऊंगा। ये मूर्तियां जब तैयार हो जायेंगी तब दरवाजा खुलेगा, यदि बीच में किसी ने खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनेगी उतनी ही रह जायेंगी। राजा ने कहा जैसा आप उचित समझो वैसा करो।

बारह दिन मूर्तियाँ बनाते हो गए तो नाथ जी आ गए। नाथ जी ने राजा से पूछा इन्द्रदमन मूर्तियाँ बनाई क्या? राजा ने कर बद्ध हो कर कहा कि आप की आज्ञा का पूर्ण पालन किया गया है महात्मा जी। परन्तु मेरा दुर्भाग्य है कि मूर्तियाँ बन नहीं पा रही हैं। आधी बनते ही टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं नौकरों से मूर्तियों के टुकड़े मंगवाकर नाथ जी को विश्वास दिलाने के लिए दिखाए। नाथ जी ने कहा कि मूर्ति अवश्य बनवानी है। अब बनवाओं मैं देखता हूँ कैसे मूर्ति टूटती है। राजा ने कहा नाथ जी प्रयत्न किया जा रहा है। प्रभु का भेजा एक अनुभवी 80 वर्षीय कारीगर बन्द कमरें में मूर्ति बना रहा है। उसने कहा है कि मूर्तियाँ बन जाने पर मैं अपने आप द्वार खोल दूंगा। यदि किसी ने बीच में द्वार खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनी होंगी उतनी ही रह जायेंगी। आज उसे मूर्ति बनाते बारह दिन हो गये। न तो बाहर निकला है, न ही जल पान तथा आहार ही किया है। नाथ जी ने कहा कि मूर्तियाँ देखनी चाहिये, कैसी बना रहा है? बनने के बाद क्या देखना है। ठीक नहीं बनी होंगी तो ठीक बनायेंगे। यह कहकर नाथ जी राजा इन्द्रदमन को साथ लेकर उस कमरे के सामने गए जहाँ मूर्ति बनाई जा रही थी तथा आवाज लगाई कारीगर द्वार खोलो। कई बार कहा परन्तु द्वार नहीं खुला तथा जो खट-खट की आवाज आ रही थी, वह भी बन्द हो गई। नाथ जी ने कहा कि 80 वर्षीय वृद्ध बता रहे हो, बारह दिन खाना-पिना भी नहीं किया है। अब आवाज भी बंद है, कहीं मर न गया हो। धक्का मार कर दरवाजा तोड़ दिया, देखा तो तीन मूर्तियाँ रखी थी, तीनों के हाथ के व पैरों के पंजे नहीं बने थे। कारीगर अन्तर्ध्यान था। मन्दिर बन कर तैयार हो गया और चारा न देखकर अपने हठ पर अडिग नाथ जी ने कहा ऐसी ही मूर्तियों को स्थापित कर दो, हो सकता है प्रभु को यही स्वीकार हो, लगता है श्री कृष्ण ही स्वयं मूर्तियां बना कर गए हैं।

मुख्य पांडे ने शुभ मूहूर्त निकाल कर अगले दिन ही मूर्तियों की स्थापना कर दी। सर्व पाण्डे तथा मुख्य पांडा व राजा तथा सैनिक व श्रद्धालु मूर्तियों में प्राण स्थापना करने के लिए चल पड़े। पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) एक शुद्र का रूप धारण करके मन्दिर के मुख्य द्वार के मध्य में मन्दिर की ओर मुख करके खड़े हो गए। ऐसी लीला कर रहे थे मानों उनको ज्ञान ही न हो कि पीछे से प्रभु की प्राण स्थापना की सेना आ रही है। आगे-आगे मुख्य पांडा चल रहा था। परमेश्वर फिर भी द्वार के मध्य में ही खड़े रहे। निकट आ कर मुख्य पांडे ने शुद्र रूप में खड़े परमेश्वर को ऐसा धक्का मारा कि दूर जा कर गिरे तथा एकान्त स्थान पर शुद्र लीला करते हुए बैठ गए। राजा सहित सर्व श्रद्धालुओं ने मन्दिर के अन्दर जा कर देखा तो सर्व मूर्तियाँ उसी द्वार पर खड़े शुद्र रूप परमेश्वर का रूप धारण किए हुए थी। इस कौतूक को देखकर उपस्थित व्यक्ति अचम्भित हो गए। मुख्य पांडा कहने लगा प्रभु क्षुब्ध हो गया है क्योंकि मुख्य द्वार को उस शुद्र ने अशुद्ध कर दिया है। इसलिए सर्व मूर्तियों ने शुद्र रूप धारण कर लिया है। बड़ा अनिष्ठ हो गया है। कुछ समय उपरान्त मूर्तियों का वास्तविक रूप हो गया। गंगा जल से कई बार स्वच्छ करके प्राण स्थापना की गई। {कविर्देव ने कहा अज्ञानता व पाखण्ड वाद की चरम सीमा देखें। कारीगर मूर्ति का भगवान बनता है। फिर पूजारी या अन्य संत उस मूर्ति रूपी प्रभु में प्राण डालता है अर्थात् प्रभु को जीवन दान देता है। तब वह मिट्टी या लकड़ी का प्रभु कार्य सिद्ध करता है, वाह रे पाखण्डियों खूब मूर्ख बनाया प्रभु प्रेमी आत्माओं को।}

मूर्ति स्थापना हो जाने के कुछ दिन पश्चात् लगभग 40 फूट ऊँचा समुद्र का जल उठा जिसे समुद्री तुफान कहते हैं तथा बहुत वेग से मन्दिर की ओर चला। सामने कबीर परमेश्वर चौरा (चबुतरे) पर बैठे थे। अपना एक हाथ उठाया जैसे आर्शीवाद देते हैं, समुद्र उठा का उठा रह गया तथा पर्वत की तरह खड़ा रहा, आगे नहीं बढ़ सका। विप्र रूप बना कर समुद्र आया तथा चबूतरे पर बैठे प्रभु से कहा कि भगवन आप मुझे रास्ता दे दो, मैं मन्दिर तोड़ने जाऊंगा। प्रभु ने कहा कि यह मन्दिर नहीं है। यह तो महल (आश्रम) है। इस में विद्वान पुरुष रहा करेगा तथा पवित्र गीता जी का ज्ञान दिया करेगा। आपका इसको विधवंश करना शोभा नहीं देता। समुद्र ने कहा कि मैं इसे अवश्य तोडूंगा। प्रभु ने कहा कि जाओ कौन रोकता है? समुद्र ने कहा कि मैं विवश हो गया हूँ। आपकी शक्ति अपार है। मुझे रस्ता दे दो प्रभु। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हो? विप्र रूप में उपस्थित समुद्र ने कहा कि जब यह श्री कृष्ण जी त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र रूप में आया था तब इसने मुझे अग्नि बाण दिखा कर बुरा भला कह कर अपमानित करके रास्ता मांगा था। मैं वह प्रतिशोध लेने जा रहा हूँ।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि प्रतिशोध तो आप पहले ही ले चुके हो। आपने द्वारिका को डूबो रखा है। समुद्र ने कहा कि अभी पूर्ण नहीं डूबा पाया हूँ, आधी रहती है। वह भी कोई प्रबल शक्ति युक्त संत सामने आ गया था जिस कारण से मैं द्वारिका को पूर्ण रूपेण नहीं समा पाया। अब भी कोशिश करता हूँ तो उधर नहीं जा पा रहा हूँ। उधर से मुझे बांध रखा है।

तब परमेश्वर कबीर (कविर्देव) ने कहा वहाँ भी मैं ही पहुँचा था। मैंने ही वह अवशेष बचाया था। अब जा शेष बची द्वारिका को भी निगल ले, परन्तु उस यादगार को छोड़ देना, जहाँ श्री कृष्ण जी के शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया था (श्री कृष्ण जी के अन्तिम संस्कार स्थल पर बहुत बड़ा मन्दिर बना दिया गया। यह यादगार प्रमाण बना रहेगा कि वास्तव में श्री कृष्ण जी की मृत्यु हुई थी तथा पंच भौतिक शरीर छोड़ गये थे। नहीं तो आने वाले समय में कहेंगे कि श्री कृष्ण जी की तो मृत्यु ही नहीं हुई थी)। आज्ञा प्राप्त कर शेष द्वारिका को भी समुद्र ने डूबो लिया। परमेश्वर कबीर जी (कविर्देव) ने कहा अब आप आगे से कभी भी इस जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ने का प्रयत्न नहीं करना तथा इस महल से दूर चला जा। ऐसी आज्ञा प्रभु की मान कर प्रणाम करके मन्दिर से दूर लगभग डेढ़ किलोमीटर हट गया। ऐसे श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम स्थापित हुआ।

”श्री जगन्नाथ के मन्दिर में छुआछात प्रारम्भ से ही नहीं है“

कुछ दिन पश्चात जिस पांडे ने प्रभु कबीर जी को शुद्र रूप में धक्का मारा था उसको कुष्ट रोग हो गया। सर्व औषधी करने पर भी स्वस्थ नहीं हुआ। कुष्ट रोग का कष्ट अधिक से अधिक बढ़ता ही चला गया। सर्व उपासनायें भी की, श्री जगन्नाथ जी से रो-रोकर संकट निवार्ण के लिए प्रार्थना की, परन्तु सर्व निष्फल रही। स्वपन में श्री कृष्ण जी ने दर्शन दिए तथा कहा पांडे उस संत के चरण धोकर चरणामृत पान कर जिसको तुने मन्दिर के मुख्य द्वार पर धक्का मारा था। तब उसके आर्शीवाद से तेरा कुष्ट रोग ठीक हो सकता है। यदि उसने तुझे हृदय से क्षमा किया तो, अन्यथा नहीं। मरता क्या नहीं करता?

वह मुख्य पांडा सवेरे उठा। कई सहयोगी पांडों को साथ लेकर उस स्थान पर गया जहाँ पर प्रभु कबीर शूद्र रूप में विराजमान थे। ज्यों ही पांडा प्रभु के निकट आया तो

परमेश्वर उठ कर चल पड़े तथा कहा हे पांडा मैं तो अछूत हूँ मेरे से दूर रहना, कहीं आप अपवित्र न हो जायें। पांडा निकट पहुँचा, परमेश्वर और आगे चल पड़े। तब पांडा फूट-फूट कर रोने लगा तथा कहा परवरदीगार मेरा दोष क्षमा कर दो। तब दयालु प्रभु रूक गए। पांडे ने आदर के साथ एक स्वच्छ वस्त्र जमीन पर बिछा कर प्रभु को बैठने की प्रार्थना की। प्रभु उस वस्त्र पर बैठ गए। तब उस पांडे ने स्वयं चरण धोए तथा चरणामृत को पात्र में वापिस डाल लिया। प्रभु कबीर जी ने कहा पांडे चालीस दिन तक इसे पीना भी तथा स्नान करने वाले जल में कुछ डाल कर स्नान करते रहना। चालीसवें दिन तेरा कुष्ट रोग समाप्त होगा तथा कहा कि भविष्य में भी इस जगन्नाथ जी के मन्दिर में किसी ने छूआछात किया तो उसको भी दण्ड मिलेगा। सर्व उपस्थित व्यक्तियों ने वचन किए कि आज के बाद इस पवित्र स्थान पर कोई छुआ-छात नहीं की जायेगी।

विचार करें :- हिन्दुस्तान का एक ही मन्दिर ऐसा है जिसमें प्रारम्भ से ही छूआ-छात नहीं रही है।

मुझ दास (संत रामपाल दास जी महाराज) को भी उस स्थान को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। कई सेवकों के साथ उस स्थल को देखने के लिए गया था कि कुछ प्रमाण प्राप्त करूं। वहाँ पर सर्व प्रमाण आज भी साक्षी मिले। जिस पत्थर (चौरा) पर बैठ कर कबीर परमेश्वर जी ने मन्दिर को बचाने के लिए समुद्र को रोका था वह आज भी विद्यमान है। उसके ऊपर एक यादगार रूप में गुमज बना रखा है। वहाँ पर बहुत पुरातन महन्त(रखवाला) परम्परा से एक आश्रम भी विद्यमान है। वहाँ पर लगभग 70 वर्षीय वृद्ध महन्त जी से उपरोक्त मन्दिर की समुद्र से रक्षा की जानकारी चाही तो उसने भी यही बताया तथा कहा कि मेरे पूर्वज कई पीढ़ी से यहाँ पर महन्त (रखवाले) रहे हैं। यहाँ पर ही श्री धर्मदास साहेब व उनकी पत्नी भक्तमति आमनी देवी ने शरीर त्यागा था। दोनों की समाधियाँ भी साथ-साथ बनी दिखाई। फिर हम श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर में गए। वहाँ पर मूर्ति पूजा आज भी नहीं है। परन्तु प्रदर्शनी अवश्य लगा रखी है। जो तीन मूर्तियाँ भगवान श्री कृष्ण जी तथा श्री बलराम जी व बहन सुभद्रा जी की मन्दिर के अन्दर स्थापित हैं उनके दोनों हाथों के पंजे नहीं हैं, दोनों हाथ टूंडे हैं। उन मूर्तियों की भी पूजा नहीं होती, केवल दर्शनार्थ रखी हैं। वहाँ पर एक गाईड पांडे से पूछा कि सुना है कि यह मन्दिर पाँच बार समुद्र ने तोड़ा था पुनर बनवाया था। समुद्र ने क्यों तोड़ा? फिर किसने समुद्र को रोका। पांडे ने कहा इतना तो मुझे पता नहीं। यह सर्व कृपा जगन्नाथ जी की थी, उन्होंने ही समुद्र को रोका था, सुना तो है कि समुद्र ने तीन बार मन्दिर को तोड़ा था। मैंने फिर प्रश्न किया कि प्रथम वार ही क्यों न समुद्र रोका प्रभु ने। पांडे ने उत्तर दिया कि लीला है जगन्नाथ की।

मैंने फिर पूछा कि इस मन्दिर में छूआछात है या नहीं? उसने कहा जब से मन्दिर बना है यहाँ कोई छूआछात नहीं है। मन्दिर में शुद्र तथा पांडा एक थाली या पतल में खाना खा सकते हैं कोई मना नहीं करता। मैंने प्रश्न किया पांडे जी अन्य हिन्दु मन्दिरों में तो पहले बहुत छुआछात थी, इसमें क्यों नहीं? प्रभु तो वही है। पांडे का उतर था लीला है जगन्नाथ की।

अब पुण्यात्माऐं विचार करें कि सत को कितना दबाया गया है, एक लीला जगन्नाथ की कह कर। पवित्र यादगारें आदरणीय हैं, परन्तु आत्म कल्याण तो केवल पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों में वर्णित तथा परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिए तत्वज्ञान के अनुसार भक्ति साधना करने मात्र से ही सम्भव है, अन्यथा शास्त्र विरुद्ध होने से मानव जीवन व्यर्थ हो जाएगा। प्रमाण गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24 श्री जगन्नाथ के मन्दिर में प्रभु के आदेशानुसार

पवित्र गीता जी के ज्ञान की महिमा का गुणगान होना ही श्रेयकर है तथा जैसा श्रीमद्भगवत गीता जी में भक्ति विधि है उसी प्रकार साधना करने मात्र से ही आत्म कल्याण संभव है, अन्यथा जगन्नाथ जी के दर्शन मात्र या खिचड़ी प्रसाद खाने मात्र से कोई लाभ नहीं, क्योंकि यह क्रिया श्री गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरुद्ध हुई, जो अध्याय 16 मंत्र 23-24 में प्रमाण है।

"गद्दी तथा महन्त परम्परा की जानकारी"

महन्त व गद्दी परम्परा की जानकारी :- किसी एकांत स्थान पर या शहर व किसी गाँव में कोई महान आत्मा सन्त या साधक रहा करता था। उसके शरीर त्यागने के पश्चात् उसकी याद बनाए रखने के लिए उनके शरीर के अन्तिम संस्कार स्थल पर एक पत्थर या ईंटों की यादगार बना दी जाती है। फिर उस पवित्रात्मा के अनुयाई या वंशज उसकी पत्थर की मूर्ति रख लेते हैं। कुछ समय उपरान्त श्रद्धालु जाते हैं। कुछ धन दान करने लग जाते हैं। उसे मन्दिर का रूप दे देते हैं तथा उस संत व ऋषि के वंशजों को धन उपार्जन का लालच हो जाता है। वे बहकाना प्रारम्भ करते हैं कि जो यहाँ दर्शन करने आता है उसको पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है। सर्व लाभ मिलते हैं जो इसी महापुरूष के जीवन काल में शिष्यों को मिलते थे। यह मूर्ति साक्षात् उसी संत जी को ही जानों। जो यहाँ नहीं आएगा उसका मोक्ष संभव नहीं आदि-आदि।

उन नादानों को कोई पूछे कि जैसे कोई वैद्य था, वह नाड़ी देखकर दवाई देता था, रोगी स्वस्थ हो जाता था। उस वैद्य की मृत्यु के पश्चात् उसकी मूर्ति बनाकर स्थापित करके कोई लालची कहे कि यह मूर्ति उसी वैद्य वाला कार्य करती है, जो इसके दर्शन करने आएगा वह पूर्ण स्वस्थ हो जायेगा या स्वयं नकली वैद्य बन कर कोई बैठ जाए कि मैं भी दवाई देता हूँ। परन्तु सर्व उपचार औषधि के ग्रन्थ के विपरीत दे रहा है। वह धोखा दे रहा है क्योंकि केवल धन उपार्जन उसका उद्देश्य है। किसी भी सन्त या प्रभु की मूर्ति आदरणीय यादगार तो है परन्तु पूजनीय नहीं है।

ऐसे ही किसी संत या प्रभु की मूर्ति बनाकर उसकी आड़ में कोई पुजारी व महन्त कहे कि मैं भी नाम देता हूँ। वह महानुभाव सर्व साधना उसी पवित्र शास्त्र के विपरीत दे रहा है जो उस महान संत ने अपने अनुभव का लिखा है। तो वह नकली संत व महंत स्वयं भी दोषी है तथा अनुयाइयों का भी जीवन व्यर्थ करने का भार अपने शीश पर ले रहा है। संत तो एक समय में एक ही आता है। उसके मार्ग में करोड़ों नकली संत, महन्त तथा आचार्य बाधक बनते हैं। किसी संत जी के शरीर त्यागने के बाद संत या महन्त परम्परा प्रारम्भ होती है। पूर्व संत के स्थान की रक्षार्थ एक प्रबन्धक चुना जाता है, जिसे महन्त कहा जाता है। वह केवल उस पवित्र यादगार की देखभाल करने के लिए ही नियुक्त किया जाता है। फिर लालच वश वह स्वयं ही गुरु बन बैठता है तथा भक्ति चाहने वाली प्यारी आत्मायें उस पर आधरित होकर अपना जीवन व्यर्थ कर जाती हैं। महन्त परम्परा का नियम बना रखा है कि पूर्व महन्त का प्रथम पुत्र महन्त पद का अधिकारी होगा, चाहे वह शराबी हो, चाहे वह अज्ञानी हो। यह भक्ति मार्ग है, इसमें केवल पूर्ण संत ही जीव उद्धार कर सकता है। दास ने दो-तीन महन्त परम्परा की पुस्तक पढ़ी। उनमें देखा कि 1. एक दो वर्ष का बच्चा गद्दी पर बैठा दिया। फिर वह बड़ा होकर नाम दान करने लग गया। दूसरी पुस्तक में पढ़ा कि एक पाँच वर्ष के बच्चे का पिता जी जो महन्त जी था अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गया। बाद में संगत ने तथा उसकी माता जी ने उस पाँच वर्षीय बच्चे को महंत पद पर नियुक्त कर दिया। कुछ वर्ष पर्यन्त वह गुरु जी बन गया। 2. एक महन्त परम्परा के

इतिहास को पढ़ा कि महन्त को कोई संतान नहीं हुई। उसकी मृत्यु हो गई। भाई की मृत्यु पहले हो चुकी थी। कोई संतान नहीं थी। गद्दी की रखवाली के लिए एक सेवक को उस कुल में संतान होने तक अस्थाई महन्त नियुक्त कर दिया। कुछ समय उपरान्त महन्त कुल में किसी के लड़का हुआ, अस्थाई महंत गद्दी लेकर भाग गया। किसी अन्य शहर में स्वयं ही गद्दी स्थापना करके महन्त बन बैठा वहाँ नई दुकान खोल ली तथा पूर्व स्थान पर एक अढाई वर्ष का बच्चा महन्त बना दिया।

3. एक महन्त परम्परा का इतिहास देखा कि बड़ा बेटा घर त्याग गया। उस से छोटे को महन्त पद पर नियुक्त कर दिया। कुछ समय पर्यन्त वहाँ मन्दिर बन गया तथा अधिक चढ़ावा (भेंट पूजा का धन) आने लगा। उस बड़े वाले की संतान ने कहा कि इस मन्दिर पर हमारा अधिकार है, इस कारण झगड़ा प्रारम्भ हुआ। गद्दी पर विराजमान महन्त जी की हत्या कर दी गई। फिर उसका बड़ा बेटा महन्त अर्थात् गद्दी का अधिकारी नियुक्त कर दिया। उसकी भी हत्या कर दी गई। फिर उसका दूसरा भाई गद्दी पर बैठाया गया। दूसरे जो अपने को अधिकारी बताते थे उन्होंने नया स्थान बना कर नई दुकान खोल ली। एक दूसरे पर मुकदमें करके सुखमय जीवन को लालच में नरक बना लिया। वह धाम कहां रहा? वह तो कुरूक्षेत्र वाला महाभारत के युद्ध का मैदान हो गया। कुछ महन्तों ने सन्त बनाने की एजेंसी ले रखी है। लाल वस्त्र धारण करवाते हैं। पूर्व नाम को बदल कर अन्य नाम रख देते हैं। फिर वह बनावटी महन्त का बनावटी शिष्य नकली सन्त बनकर भोली आत्माओं के जीवन के साथ खिलवाड़ करता है तथा अनमोल मनुष्य जीवन को स्वयं भी व्यर्थ कर रहा है तथा भोली आत्माओं के जीवन को भी नाश कर रहा है तथा महापाप का भागी बन रहा है।

जिस समय राजा परिक्षित जी को सर्प ने डसना था। उस समय पूर्ण गुरु की आवश्यकता पड़ी क्योंकि पूर्ण सन्त बिना जीव का कल्याण असम्भव है। उस समय पृथ्वी के सर्व ऋषियों ने राजा परिक्षित को दीक्षा देने तथा सात दिन श्रीमदभागवत सुधसागर की कथा सुनाने से मना कर दिया। क्योंकि सातवें दिन पोल खुलनी थी इसी कारण से कोई सामने नहीं आया। स्वयं श्री मद्भागवत सुधासागर के लेखक महर्षि वेदव्यास जी ने भी असमर्थता व्यक्त की। क्योंकि वे ऋषिजन प्रभु से डरने वाले थे। इसलिए भी राजा परिक्षित के जीवन से खिलवाड़ करना उचित नहीं समझा।

राजा परिक्षित जी के कल्याण के लिए महर्षि सुखदेव जी को स्वर्ग से बुलाया गया। जिसने राजा को दीक्षा दी तथा सात दिन तक कथा सुनाकर राजा परिक्षित जी का जितना उद्धार ऋषि सुखदेव जी कर सकते थे, किया। वर्तमान के गुरु, सन्त, महन्त तथा आचार्य स्वयं ही प्रभु के संविधान से अपरिचित हैं। इसलिए भयंकर दोष के पात्र बनकर दोषी हो रहे हैंः- ओरों पंथ बतावहीं, स्वयं न जाने राह। अनअधिकारी कथा–पाठ करे व दीक्षा देवें, बहुत करत गुनाह।

वर्तमान में कथा व ग्रन्थों का पाठ करने वालों व नाम दान करने वालों की बाढ़ सी आई हुई है। क्योंकि सर्वपवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्व ज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं व सन्तों तथा महन्तों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा, पलायन करके पीछा छुड़वाना पड़ेगा।

(पुण्यात्माओं ऐसा निर्णायक ज्ञान परमेश्वर का भेजा अवतार ही दे सकता है)

अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़िये पुस्तक ''ज्ञान गंगा''।

''कलयुग में सत्ययुग''

(सन्त रामपाल जी के सत्संग वचनों से उद्धृत)

सत्ययुग उस समय को कहते हैं जिस युग में अधर्म नहीं होता। शांति होती है। पिता से पहले पुत्र की मृत्यु नहीं होती, स्त्री विधवा नहीं होती। रोग रहित शरीर होता हैं। सर्व मानव भक्ति करते हैं। परमात्मा से डरने वाले होते हैं क्योंकि वे आध्यात्मिक ज्ञान के सर्व कर्मों से परिचित होते हैं। मन, कर्म, वचन से किसी को पीड़ा नहीं देते तथा दुराचारी नहीं होते। जति-सती, स्त्री पुरूष होते हैं। वृक्षों की अधिकता होती हैं। सर्व मनुष्य वेदों के आधार से भक्ति करते हैं। वर्तमान में कलयुग है। इसमें अधर्म बढ़ चुका है। कलयुग में मानव की भक्ति के प्रति आस्था कम हो जाती है या तो भक्ति करते ही नहीं यदि करते हैं तो शास्त्र विधि त्याग कर मनमानी भक्ति करते हैं। जो श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में वर्जित हैं। जिस कारण से परमात्मा से जो लाभ वांछित होता है वह प्राप्त नहीं होता। इसलिए अधिकतर मनुष्य नास्तिक हो जाते हैं। धनी बनने के लिए रिश्वत, चोरी, डाके डालने को माध्यम बनाते हैं। परन्तु यह विधि धन लाभ की न होने के कारण परमात्मा के दोषी हो जाते हैं तथा प्राकृतिक कष्टों को झेलते हैं। परमेश्वर के विधान को मानव भूल जाता है कि किस्मत से अधिक प्राप्त नहीं हो सकता। यदि अन्य अवैध विधि से धन प्राप्त कर लिया तो वह रहेगा नहीं। जैसे एक व्यक्ति अपने पुत्र को सुखी देखने के लिए अवैध विधि से धन अर्जित करता था। कुछ दिनों पश्चात् उस के पुत्र के दोनों गुर्दे खराब हो गए। जैसे तैसे करके गुर्दे बदलवाए, तीन लाख रूपये खर्च हुआ। जो धन अवैध विधि से जोड़ा था वह सर्व खर्च हो गया तथा कुछ रूपये कर्जा भी हो गया। फिर लड़के का विवाह किया। छः महिने के पश्चात् बस दुर्घटना में इकलौता पुत्र मृत्यु को प्राप्त हुआ। अब न तो पुत्र रहा और न ही अवैध विधि से अर्जित किया गया धन। शेष क्या रहा? अवैध विधि से धन संग्रह करने में किए हुए पाप, जो अभी शेष हैं, उनको भोगने के लिए जिस-२ से पैसे ऐंठे थे, उनका पशु बनकर (गधा, बैल, गाय बनकर) पूरे करेगा। परन्तु परम अक्षर ब्रह्म की शास्त्रानुकूल साधना करने वाले भक्त की किस्मत को परमेश्वर बदल देता है। क्योंकि परमेश्वर के गुणों में लिखा है कि परमात्मा निर्धन को धनवान बना देता है।

सत्ययुग में कोई भी प्राणी मांस-तम्बाखु, मदिरा सेवन नहीं करता। क्योंकि वे इनसे होने वाले पापों से परिचित होते हैं।

❑ <u>मांस खाना पाप है :-</u> एक समय एक संत अपने शिष्य के साथ कहीं जा रहा था। वहाँ पर एक मछियारा तालाब से मच्छलियाँ पकड़ रहा था। मच्छलियाँ जल से बाहर तड़फ-२ कर प्राण त्याग रही थी। शिष्य ने पूछा हे गुरुदेव ! इस अपराधी प्राणी को क्या दण्ड मिलेगा ? गुरुजी ने कहा बेटा! समय आने पर बताऊँगा। चार-पांच वर्ष के पश्चात् दोनों गुरु शिष्य कहीं जाने के लिए जंगल से गुजर रहे थे। वहां पर एक हाथी का बच्चा चिल्ला रहा था। उछल कूद करते समय

हाथी का बच्चा दो निकट-२ उगे वृक्षों के बीच में फंस गया वह निकल तो गया परन्तु निकलने के प्रयत्न में उसका सर्व शरीर छिल गया था तथा उसके शरीर में जख्म हो गए थे। उसके सारे शरीर में कीड़े चल रहे थे। जो उसको नोच रहे थे। वह हाथी का बच्चा बुरी तरह चिल्ला रहा था। शिष्य ने गुरु जी से पूछा कि हे गुरुदेव ! यह प्राणी कौन से पाप का दण्ड भोग रहा है। गुरुदेव ने कहा पुत्र यह वही मच्छियारा है जो उस शहर के बाहर जलाशय से मच्छलियाँ निकाल रहा था।

❑ मदिरा (शराब) पीना कितना पाप है :- शराब पीने वाले को सत्तर जन्म कुत्ते के भोगने पड़ते है। मल-मूत्र खाता-पीता फिरता है। अन्य कष्ट भी बहुत सारे भोगने पड़ते हैं तथा शराब शरीर में भी बहुत हानि करती है। शरीर के चार महत्वपूर्ण अंग होते हैं। फेफड़े, लीवर, गुर्दे तथा हृदय। शराब इन चारों को क्षति पहुँचाती है। शराब पीकर मानव, मानव न रह कर पशु तुल्य गतिविधि करने लगता है। कीचड़ में गिर जाना, कपड़ों में मलमूत्र तथा वमन कर देना।

धन हानि, मान हानि, घर में अशांति आदि मदिरा पान के कारण होते है। मदिरा सत्ययुग में प्रयोग नहीं होती। सत्ययुग में सर्व मानव परमात्मा के विद्यान से परिचित होते हैं। जिस कारण सुख का जीवन व्यतीत करते हैं।

गरीब : मदिरा पीवै कड़वा पानी, सत्तर जन्म स्वान के जानी।

❑ दुराचार करना कितना पाप है :-

परद्वारा स्त्री का खोलै, सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।

पूज्य कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि जो व्यक्ति किसी परस्त्री के साथ दुष्कर्म करता है तो वह सत्तर जन्म अन्धे का जीवन भोगता है। बुद्धिमान व्यक्ति ऐसी आफत कभी मोल नहीं लेता। मूर्ख ही ऐसा कार्य करता है। जैसे आग में हाथ डालने का अर्थ मौत मोल लेना है। जैसे कोई व्यक्ति किसी अन्य के खेत में बीज डालता है तो वह महा मूर्ख है। बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा कभी नहीं कर सकता। वैश्यागमन को ऐसा जानो जैसे कुरड़ियों पर गेहूं का बहुमूल्य बीज का थैला भर कर डाल आए। यह क्रिया बुद्धिमान व्यक्ति नहीं कर सकता या तो महामूर्ख या शराबी निरलज्ज अर्थात् घंड व्यक्ति ही किया करता है। विचारणीय विषय है कि जो पदार्थ शरीर से नाश होते हुए आनन्द का अनुभव कराता है यदि वह शरीर में सुरक्षित रखा जाए तो कितना आनन्द देगा ? दीर्घायु, स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिष्क, शूरवीरता तथा स्फूर्ति प्रदान करता है। जिस पदार्थ से अनमोल बच्चा प्राप्त होता है। उसका नाश करना बच्चे की हत्या करने तुल्य है। इसलिए दुराचार तथा अनावश्यक भोग विलास वर्जित है।

❑ तम्बाकू सेवन कितना पाप है ? परमेश्वर कबीर जी ने बताया है :--

सुरापान मद्य मांसाहारी, गमन करै भोगै पर नारी।
सत्तर जन्म कटत हैं शिशम्, साक्षी साहिब है जगदीशम्।।
पर द्वारा स्त्री का खोलै, सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।
सौ नारी जारी करै, सुरापान सौ बार। एक चिलम हुक्का भरे, डूबै काली धार।।

जैसे कि ऊपर वर्णन किया है कि एक बार शराब पीने वाला सत्तर जन्म कुत्ते का जीवन भोगता है। फिर मल-मूत्र खाता-पीता फिरता है। परस्त्री गमन करने वाला सत्तर जन्म अन्धे के भोगता है। मांस खाने वाला भी महाकष्ट का भागी होता है। उपरोक्त सर्व पाप सौ-२ बार करने वाले को जो पाप होता है। वह एक बार हुक्का पीने वाले अर्थात् तम्बाखु सेवन करने वाले को सहयोग देने वाले को होता है। तम्बाखु सेवन करने वाले हुक्का, सिगरेट, बीड़ी या अन्य विधि से सेवन करने वाले तम्बाखु खाने वालों को क्या पाप लगेगा? घोर पाप का भागी होगा। एक व्यक्ति जो तम्बाखु सेवन करता है। जब वह हुक्का या बीड़ी-सिगरेट पी कर धुआं छोड़ता है तो वह धुआं उस के छोटे-छोटे बच्चों के शरीर में प्रवेश करके हानि करता है। वे बच्चें फिर शीघ्र बुराई को ग्रहण करते हैं तथा उनका स्वास्थय भी बिगड़ जाता है।

एक वृद्ध ने सन्त रामपाल जी महाराज के शिष्य से कहा कि तुम्हारा गुरु तो वृद्धों की सेवा को भी मना करता है। मेरे पोते ने कहा दादा जी मैं आप को हुक्का भर कर नहीं दूंगा। मुझे पाप लगेगा और मुझे कहा कि दादा जी आप भी छोड़ दो। हुक्का पीने से घोर पाप लगता है।

वृद्ध ने फिर कहा :- हुक्का तो पंचों का प्याला है, घर की इज्जत है।

उत्तर सन्त रामपाल जी महाराज के शिष्य का :- अंकल (चाचा) जी सन्त रामपाल जी महाराज जी सत्संग में बताते हैं। वह सुनों, जो इस प्रकार है :- दादा जी या पिता जी, चाचा जी या ताऊ जी अपने पौत्र या पुत्र या बेटी को कहते हैं कि बेटा आजा दूध पीले। वे अपने हिस्से के दूध को भी बच्चे को पिलाने की कोशिश करते हैं। क्योंकि उन्हें पता है कि यह बच्चे के लिए बहुत लाभदायक है। यदि वही बच्चा कभी हुक्के को पीने लगता है तो वे कहते हैं कि इसे नहीं पीना, यह बहुत खराब है। विचार करो अंकल जी यदि हुक्का पीना अच्छा है तो पिलाओ अपने पुत्र या पौत्र या पुत्री को।

वृद्ध ने कहा :- कि बात तो आप के महाराज जी की सही है परन्तु यह मर्यादा भी तो है।

पुत्र :- पिता जी ! ऐसी मर्यादा को छोड़ने से ही पाप से बचा जा सकेगा।

❑ एक नौजवान लड़के ने अपने पिता जी से कहा पिता जी आप हुक्का पीना छोड़ दो तथा धूम्रपान के उपरोक्त अवगुण बताए। उसके पिता जी कहने लगे भाई हैं तो सारी बातें सच्ची लेकिन इस हुक्के के कारण चार-पांच मित्र प्यारे मेरे पास आते हैं। यदि हुक्का छोड़ दिया तो कोई नहीं आएगा। सन्त रामपाल जी महाराज के शिष्य ने कहा :- पिता जी जिनको आप मित्र कह रहे हो यदि वे हुक्के के कारण ही आप से मिलने आते हैं तो वे आप के मित्र नहीं, वे तो आप के कड़वे तम्बाखु के मित्र हैं। यदि वे आप के मित्र हैं तो फिर भी आऐंगे तथा आप की प्रशंसा करेंगे कि आप ने बहुत अच्छा किया। यदि आप को इस के विपरीत कहते हैं तो उनको मित्र न समझना। क्योंकि मित्र अपने मित्र का हित चाहता है अहित नहीं।

❑ सन्त रामपाल जी महाराज के शिष्य ने अपने पिता जी से कहा :- पिता जी

देखो यह कुत्ता जिसके सर्व शरीर पर खारिस हो रही है खून निकल रहा हैं। जो व्यक्ति परमात्मा का नाम नहीं लेते उनकी यही दशा होती हैं तथा भक्ति भी पूरे गुरू से नाम ले कर करनी चाहिए। बिना गुरू के तथा अनाधिकारी गुरू से नाम ले कर भक्ति करने से भी कोई लाभ नहीं होता।

उस दिन तो उसके पिता जी ने मना कर दिया कि मैं नाम नहीं ले सकता क्योंकि गांव के व्यक्ति मजाक करेंगे।

अगले दिन उसके पिता जी ने कहा :- बेटा आज सारी रात मुझे वह खाजला कुत्ता दिखाई दिया। नींद की झपकी आते ही वह तड़फता हुआ नजर आता है। बेटा मुझे नाम दिला ला परन्तु मैं तेरे वाले गुरू (संत रामपाल दास जी महाराज) से तो नाम कभी नहीं लूंगा। वहां तो बहुत कुछ गलत कार्य होता है।

पुत्र :- पिता जी मेरी आयु 26 वर्ष की है। मैं कोई बालक नहीं हूँ कि किसी के बहकावे में आ जाऊँ। पिता जी वहां पर ऐसा कोई गलत कार्य नहीं होता, जो आपने सुना है।

पिता जी ने कहा :- क्या हमने जो सुना था, वह गलत सुना था।

पुत्र :- आपने सौ बार गलत, बाबू ! हजार बार गलत, सुना है। सन्त रामपाल जी महाराज जैसा सन्त पूरे विश्व में नहीं हैं। पिता जी जब करौंथा काण्ड हुआ उस समय मैं उसी आश्रम में था। मैं उस दिन आश्रम में नाम उपदेश लेने ही गया था। मैं चौथे दिन घर आया था। आप के पूछने पर मैंने कहीं और जाने का बहाना किया था। पिता जी यदि मैं उस दिन करौंथा आश्रम में नहीं होता तो मैं भी अफवाहों को सत्य मानता और जिस झूठ को आप ने सच मान रखा है उसे सत्य मानकर और परम सन्त की निन्दा करके घोर पाप का भागी होता।

विचार करो पिता जी ! सन्त रामपाल जी महाराज के दो आश्रम थे, एक करौंथा में तथा दूसरा बरवाला जि. हिसार (हरियाणा) में। करौंथा आश्रम के विषय में जो अफवाऐं फैलाई गई। वे सर्व निराधार थी। सरकार ने भी अपनी जांच में करौंथा आश्रम को पाक साफ बताया है और उन्हीं के बरवाला आश्रम के विषय में भी मीडिया वाले मौन साधे रहे, कुछ नहीं कहा। उस की रिपोर्ट में भी लिखा हैं कि बरवाला आश्रम में कुछ भी आपत्तिजनक सामान नहीं मिला। मीडिया ने भी उस आश्रम के विषय में कुछ भी नहीं कहा।

एक व्यक्ति शराब पीता है तो वह अपने दोनों ही ठिकानों पर पीयेगा। भावार्थ यह है कि यदि करौंथा में अवैध कार्य होता तो बरवाला में भी मिलता।

पिता जी आप मुझ पर विश्वास नहीं कर रहे, मैं आपका बेटा हूँ। आप झूठ छापने वाले समाचार पत्रों की बकवाद पर पूर्ण विश्वास किए हुए हो।

पिता जी ने कहा :- बेटा मुझे आप पर पूरा विश्वास है, परन्तु सारा हरियाणा कह रहा है। यह सब झूठ कैसे हो सकता है ?

पुत्र :- पिता जी सब सुना सुनाया कह रहे हैं। क्या किसी ने वहां जा कर देखा? अब सच्चाई सामने आ चुकी है। इस को भी मानेंगे। क्या आप ने दिनांक

20-7-2006 का पंजाब केसरी समाचार पत्र नहीं पढ़ा लो पढ़ो। पिता जी यह पंजाब केसरी समाचार पत्र दिनांक 20-7-2006 की कटिंग है। 19-7-2006 तक मीडिया वाले आश्रम में न जा कर किसी से सुनी सुनाई झूठी खबरे देते रहे। दिनांक 19-7-2006 को सरकार ने मिडिया को आश्रम देखने की आज्ञा दी। जो खबर दिनांक 20-7-2006 के समाचार पत्र में सच्चाई छापी है। उस पर किसी का ध्यान नहीं गया।

पंजाब केसरी पानीपत | वीरवार 20 जुलाई 2006

तथ्यों को तरोड़ा-मरोड़ा है मीडिया ने : एसपी

आश्रम से सोना, नोटों की बोरियां, विदेशी शराब व आपत्तिजनक सामान मिलने की खबरों को झूठा करार दिया

रोहतक, 19 जुलाई (ब्यूरो): मीडिया से इस तरह की उम्मीद नहीं की जा सकती। जिस तरह से तथ्यों को तरोड़-मरोड़ कर जनता के सामने पेश किया जा रहा है, उससे न सिर्फ मीडिया व पुलिस की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगा है, बल्कि इस पूरे प्रकरण में पुलिस की कार्रवाई भी बाधित हो रही है। यह कहना है एसपी डा. सीएस राव का। वे आज शाम अपने कैम्प कार्यालय में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि एक-दो अखबरों में प्रकाशित हो रही तरह-तरह की खबरों को लेकर कार्रवाई की जा रही है और इस मामले में डीजीपी, लोकसंपर्क विभाग के निदेशक व रोहतक (शेष पृष्ठ 2 कालम 6 पर) रेंज के आईजी को भी लिखा जा चुका है। उल्लेखनीय है कि करौंथा आश्रम प्रकरण में अखबारों में तरह-तरह की खबरें प्रकाशित की जा रही हैं। कोई अखबार आश्रम से तीस किलोग्राम सोना व नोटों से भरी हुई बोरियां मिलने की बात लिखता है तो कोई आश्रम के नीचे कमरे बने होने और कमरों में कैमरे लगे होने की बात कहता है। एसपी ने इस सभी बातों को सिरे से नकार दिया। उन्होंने कहा कि पुलिस को आश्रम से तीस किलो तो क्या एक किलो सोना भी नहीं मिला है और न ही नोटों व सिक्कों से भरी हुई बोरियां मिली हैं।

उन्होंने कहा कि इस अखबार (पंजाब केसरी नहीं) में प्रकाशित खबर से पुलिस की कार्रवाई प्रभावित हुई है। आश्रम से विदेशी शराब मिलने की बात को भी उन्होंने झूठा बताया। एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि आश्रम से ऐसा कोई सामान पुलिस को बरामद नहीं हुआ है, जिसे आपत्तिजनक कहा जाए। उन्होंने कहा कि जो कुछ भी मिला है, वह कोर्ट में पेश कर दिया गया है और आगामी कार्रवाई में अगर कोई ऐसी चीज पुलिस को मिलती है तो वह भी कोर्ट में पेश कर दी जाएगी।

डा. राव ने कहा कि आश्रम की जमीन में एक जगह से दूसरी जगह तक जाने का सुरंगनुमा रास्ता जरूर बनाया हुआ है, लेकिन जमीन के नीचे एक भी कमरा नहीं है।

जब जमीन के नीचे कमरे ही नहीं हैं तो कैमरे लगे होने की बात भी अपने आप ही गलत साबित हो जाती है। उन्होंने कहा कि बिना किसी सच्चाई के प्रकाशित हो रही खबरों के बाद ही प्रिंट व इलैक्ट्रोनिक मीडिया के लोगों का आश्रम में दौरा करवाया गया था।

अब वे स्वयं ही निर्णय लें कि आश्रम में क्या है और क्या नहीं। एसपी राव ने कहा कि पुलिस अपनी कार्रवाई कर रही है और किसी भी सूरत में दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने मीडिया के लोगों का आह्वान किया है कि वे तथ्यों के आधार पर ही खबरें प्रकाशित करें, लोगों को भ्रमित न करें।

इस समाचार पत्र में तो स्पष्ट है कि आश्रम पाक साफ था तथा दिनांक 19-7-2006 से पूर्व मीडिया ने कोरा झूठ उगला है।

प्रश्न : बेटा करौंथा काण्ड का क्या कारण था?

उत्तर : पिता जी जब दो पहलवानों की कुश्ती हो रही हो और सुप्रसिद्ध पहलवान को कोई पहलवान हरा देता है तो उसके समर्थक बीच में घुसकर झगड़ा करते हैं। वे अपनी तथा अपने पहलवान की हार देखना नहीं चाहते और जब दो पहलवानों के बीच में समर्थक आ जाते हैं तो लट्ठ ही बजा करते हैं। महर्षि दयानन्द के द्वारा रचित पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' के ज्ञान पर सन्त रामपाल दास जी महाराज ने सवाल उठाऐ थे। जो प्रमाणों सहित लिखे व सी.डी. में बताऐ हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज ने महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश के अज्ञान को सार्वजनिक कर दिया जिस कारण से आर्य समाज के आचार्यों को सदमा हो गया। क्योंकि वे महर्षि दयानन्द के साहित्य को बेचकर ही निर्वाह कर रहे थे। सन्त

रामपाल दास जी महाराज द्वारा दिए गए सत्य प्रमाणों से बौखला कर ज्ञान का उत्तर ज्ञान से न देकर सत्य को छुपाने के उद्देश्य से तथा जनता का ध्यान बांटने के लिए मुख्यमंत्री हरियाणा (जो महर्षि दयानन्द का ही भक्त है) तथा जनता को भ्रमित करके सन्त रामपाल दास जी महाराज को जान से मारने का घिनौना षड़यंत्र रचा था। मीडिया को प्रभावित करके अफवाहें इसलिए फैलाई थी कि यदि सन्त रामपाल दास जी महाराज को मारने में सफल हो गए तो जनता यही सोचे कि बुरा व्यक्ति था मारा ही जाना चाहिए था। झूठी अफवाहों के कारण सन्त रामपाल जी महाराज के अनुयाई भी उन्हें छोड़कर भाग जाऐंगे। परन्तु ''जाको राखे सांईयाँ, मार सके ना कोय'' वाला वचन सत्य सिद्ध हुआ। कुछ दिनों में सर्व सच्चाई विश्व के सामने आ जाएगी। ऐसे अन्याई राजा का वंश नष्ट होता है। पूर्व का इतिहास देखें तो पता चलेगा कि रावण का कुल नाश हुआ था। सन्त रामपाल दास जी महाराज सर्व संगत को कहते हैं कि झगड़ा मत करना। परमात्मा पर विश्वास रखो। परमात्मा भक्तों का साथ देता है अन्याई, अत्याचारियों का नाश करता है।

दिनांक 12-7-2006 को सन्त रामपाल दास जी महाराज को मारने का जो षड़यंत्र रचा गया था। यदि षड़यंत्रकारी संत को मारने में सफल हो जाते तो जनता के सभ्य व्यक्ति ऐसे पछताते जैसे कि बनजारा अपने वफादार कुत्ते को मार कर पछताया था।

एक बनजारा (फेरी लगाकर व्यापार करने वाला) था। उसके पास एक पालतू कुत्ता था। वह कुत्ता मनुष्य के समान बुद्धिमान था। उस बनजारे ने एक धनी व्यक्ति से कुछ कर्ज (ऋण) ले रखा था। कर्ज चुकाने में असमर्थ बनजारे ने धनी व्यक्ति से कहा कि मैं अभी आपका धन लौटाने में असमर्थ हूँ। मेरे पास एक वफादार कुत्ता है। यह चोरी नहीं होने देता। सारी रात जागता है तथा दिन में सोता है। आप इसे गिरवी (अमानत के रूप में) रख लो। आपका धन लौटाकर मैं इसे आप से वापिस ले लूंगा। धनी व्यक्ति ने बनजारे का प्रस्ताव स्वीकार किया तथा कुत्ते को घर ले आया।

कुछ दिनों के पश्चात् धनी व्यक्ति के घर चोरी हो गई। लाखों रूपये का सामान चोरी हो गया। सुबह सर्व परिजन शोक ग्रस्त थे। कुत्ते पर सवाल उठाऐ जा रहे थे। उसी समय उस कुत्ते ने धनी व्यक्ति की धोती वस्त्र को मुख में पकड़ा तथा उसको खींचने लगा। कुत्ते की गतिविधि समझ कर बहुत सारे व्यक्ति उस कुत्ते के पीछे-२ दूर जंगल में गए। रात्री में चोरों ने चोरी किया हुआ धन गड्डा खोदकर जमीन में दबा दिया था। क्योंकि सूर्य उदय होने वाला हो गया था। कुत्ता उनके पीछे-२ जाकर सब देख आया था। उसी स्थान पर जाकर कुत्ते ने अपने पैरों से खोदना शुरू किया। धनी व्यक्ति के नौकरों ने उस स्थान को खोदा तो सर्व धन मिल गया।

धनी व्यक्ति ने एक पत्र लिखा तथा कुत्ते की वफादारी बताई। उसमें धनी व्यक्ति ने लिख दिया कि आपका ऋण क्षमा कर दिया है तथा आपका कुत्ता भी

लौटा रहा हूँ। यह पत्र कुत्ते के गले में बांध कर बनजारे के पास लौट जाने का संकेत किया। कुत्ता दौड़ता हुआ बनजारे के पास गया। बनजारे ने सोचा कि कुत्ता भाग कर आ गया है। इस कुत्ते ने मेरी नाक कटवा दी है तथा मेरे मान को हानि पहुँचाई है, अब मैं क्या मुंह लेकर धनी के पास जाऊँगा। यह सोचकर दूर से ही कुत्ते को गोली मार दी, कुत्ते की मृत्यु हो गई। लेकिन जब निकट जाकर उसके गले में बंधा पत्र पढ़ा तो बनजारा फूट-फूट कर रोने लगा।

शिक्षा :- बिना आँखों देखें किया गया शीघ्रता का फैसला सदा हानिकारक ही होता है।

यदि षड़यंत्रकारियों द्वारा भ्रमित जनता व मुख्यमंत्री हरियाणा श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा उस दिन संत रामपाल दास जी महाराज को मारने में सफल हो जाते तो ऐसे पश्चाताप करते जैसे बनजारा अपने वफादार कुत्ते को बिना जांच किए मार कर पछताया था। सन्त रामपाल दास जी महाराज के गले में परमेश्वर कबीर जी ने अद्वितीय आध्यात्मिक ज्ञान को गले में पत्र की तरह बांध रखा है। जिसे वे लटकाए फिर रहे हैं। भोली जनता इसे न पढ़कर स्वार्थी तत्वों से भ्रमित होकर सन्त जी की उपेक्षा कर रही है। अब सर्व सच्चाई आपके समक्ष है। सन्त रामपाल दास जी महाराज महापरोपकार कर रहे हैं तथा समाज से बुराईयाँ दूर कर रहे हैं। उनसे नाम उपदेश प्राप्त करने वाले शराब, मांस, तम्बाखू का सेवन नहीं करते तथा रिश्वत लेना व दुराचार पूर्ण रूप से वर्जित है। इस प्रकार संत रामपाल जी महाराज द्वारा एक स्वच्छ मानव समाज तैयार किया जा रहा है।

''झूठे मुकदमें''

सन्त रामपाल दास जी महाराज तथा अनुयाइयों पर बनाए गए झूठे मुकदमे इस प्रकार हैं। जिस में वही कहावत चरित्रार्थ की गई है कि ''खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचैं''।

1. सतलोक आश्रम की जमीन खरीदने के विषय में :- इस की सच्चाई इस प्रकार है :- जमीन बेचने वाले की बहन को बच्चा होने वाला था। वह तहसील में आने में असमर्थ थी। उन्होंने अपनी बहन के स्थान पर अपनी बुआ की फोटो लगा दी तथा उसको बहन रूप में पेश कर दिया। यह सर्व क्रिया जमीन खरीदने वाले ट्रस्ट के सदस्यों से छुपाए रखी। नम्बरदार ने साक्षी कर दी कि सर्व सदस्य सही हैं। खरीदने वालों की इसमें क्या गलती है। सन्त रामपाल दास जी महाराज के तो जमीन की खरीद के दस्तावेजों पर कहीं हस्ताक्षर भी नहीं हैं। फिर भी सन्त रामपाल दास जी महाराज तथा ट्रस्ट के सदस्यों को इस झूठे केस में दोषी बना रखा है।

2. छुड़ानी आश्रम के साथ झगड़े का झूठा केस :- उन दिनों सन्त रामपाल जी महाराज महाराष्ट्र प्रान्त में पूना जिले में सत्संग करने गए हुए थे। जिसकी वहां के समाचार पत्रों में खबर भी छपी है। वह भी पुलिस को दिखाई फिर भी सन्त

रामपाल दास जी महाराज तथा अनुयाइयों पर झूठा केस बना दिया।

3. हत्या का झूठा मुकदमा :- षड़यंत्रकारियों के बहकावे में आकर असामाजिक तत्वों द्वारा सतलोक आश्रम करौंथा पर आक्रमण किया गया। उसमें से एक आक्रमणकारी की मृत्यु हो गई। क्योंकि उस समय आक्रमणकारी भी गोलियां चला रहे थे। पुलिस भी गोलियां चला रही थी तथा अपने बचाव में आश्रम से भी हवाई फायर किए जा रहे थे। आश्रम के हथियारों से चली गोली से उसकी मृत्यु नहीं हुई। क्योंकि सरकार द्वारा मधुबन जांच केन्द्र से कराई गई रिपोर्ट ने स्पष्ट किया है कि इस व्यक्ति की मृत्यु आश्रम के हथियारों से नहीं हुई है। सन्त रामपाल दास जी महाराज के हजारों अनुयाई आश्रम में सत्संग सुनने के लिए गए थे। वे सर्व वहां पर उपस्थित थे तो सन्त जी द्वारा बन्दूक उठाने की बात कहना सर्वथा व्यर्थ है।

सन्त रामपाल दास जी महाराज को दोषी बनाने के लिए झूठा मुकदमा बनाने के लिए एक बन्दूक लगा दी कि सन्त रामपाल दास जी महाराज ने इस बन्दूक से गोली मार कर उस व्यक्ति की हत्या की थी। जब सरकार ने जांच कराई तो पाया कि इस बन्दूक से गोली चली ही नहीं है। यह भी नहीं बताया जा सकता कि इस बंदूक से गए दिनों में कब गोली चली थी। भावार्थ है कि पिछले कई महिनों से इस बन्दूक का प्रयोग ही नहीं किया गया था।

परमात्मा का विधान है कि ''सांच को आंच नहीं''। ऐसा अन्याय व अत्याचार वर्तमान में कुछ भ्रष्ट राजनेता तथा भ्रष्ट अधिकारी कर रहे हैं। न्यायालय की छवि भी कुछ भ्रष्ट जज धूमिल कर रहे हैं। उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय में भी कुछ स्वार्थी भ्रष्ट जज अपने निजी स्वार्थ हेतु अन्याय कर रहे हैं। उन्होंने भी न्याय न करके अन्याय ही किया है। ऐसे समय में ''धरती पर अवतार'' का आना स्वाभाविक है यह जो परमात्मा का विद्यान है।

वर्तमान कलयुग में अन्याय, अत्याचार, अपराध तथा अधर्म बढ़ चुका है। अधिकतर राज नेता अन्यायी हो चुके हैं। इन सब का सुधार अवतार गण ही किया करते हैं।

''अवतार की परिभाषा''

'अवतार' का अर्थ है ऊँचे स्थान से नीचे स्थान पर उतरना। विशेषकर यह शुभ शब्द उन उत्तम आत्माओं के लिए प्रयोग किया जाता है, जो धरती पर कुछ अद्भुत कार्य करते हैं। जिनको परमात्मा की ओर से भेजा हुआ मानते हैं या स्वयं परमात्मा ही का पृथ्वी पर आगमन मानते हैं।

श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में तीन पुरूषों (प्रभुओं) का ज्ञान है।

❑ 1. क्षर पुरूष जिसे ब्रह्म भी कहते हैं। जिसका ॐ नाम साधना का है। जिसका प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में है।

❑ 2. अक्षर पुरूष जिसको परब्रह्म भी कहते हैं। जिसकी साधना का मंत्र तत् जो

सांकेतिक है। प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है।

❑ 3. उत्तम पुरूष तूः अन्यः = श्रेष्ठ पुरूष परमात्मा तो उपरोक्त दोनों पुरूषों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से अन्य है। वह परम अक्षर पुरूष है जिसे गीता अध्याय 8 श्लोक 1 के उत्तर में अध्याय 8 के श्लोक 3 में कहा है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है। इसका जाप सत् है जो सांकेतिक है। इसी परमेश्वर की प्राप्ति से साधक को परम शांति तथा सनातन परमधाम प्राप्त होगा। प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में यह परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) गीता ज्ञान दाता से भिन्न है। अधिक ज्ञान प्राप्ति के लिए कृप्या पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' सतलोक आश्रम बरवाला से प्राप्त करें। अवतार दो प्रकार के होते हैं। जैसे ऊपर कहा गया है। अब आप जी को पता चला कि मुख्य रूप से तीन पुरूष (प्रभु) है। जिनका उल्लेख ऊपर कर दिया गया है। हमारे लिए मुख्य रूप से दो प्रभुओं की भूमिका रहती है।

1. क्षर पुरूष (ब्रह्म) :- जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में अपने आप को काल कहता है।

2. परम अक्षर पुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) :- जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 3 तथा 8,9,10 में तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 17 में कहा है।

''ब्रह्म (काल) के अवतारों की जानकारी''

गीता अध्याय 4 का श्लोक 7

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। ७ ।

यदा, यदा, हि, धर्मस्य, ग्लानिः, भवति, भारत,
अभ्युत्थानम्, अधर्मस्य, तदा, आत्मानम्, सृजामि, अहम्।।7।।

अनुवाद : (भारत) हे भारत! (यदा,यदा) जब-जब (धर्मस्य) धर्मकी (ग्लानिः) हानि और (अधर्मस्य) अधर्मकी (अभ्युत्थानम्) वृद्धि (भवति) होती है (तदा) तब-तब (हि) ही (अहम्) मैं (आत्मानम्) अपना अंश अवतार (सृजामि) रचता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ। (7)

जैसे श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 7 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जब-जब धर्म में घृणा उत्पन्न होती है। धर्म की हानि होती है तथा अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं (काल = ब्रह्म = क्षर पुरूष) अपने अंश अवतार सृजन करता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ।

जैसे श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण चन्द्र जी को काल ब्रह्म ने ही पृथ्वी पर उत्पन्न किया था। जो स्वयं श्री विष्णु जी ही माने जाते हैं।

इनके अतिरिक्त 8 अवतार और कहे गये हैं। जो श्री विष्णु जी स्वयं नहीं आते अपितु अपने लोक से अपने कृपा पात्र पवित्र आत्मा को भेजते हैं। वे भी अवतार

कहलाते हैं। कहीं-2 पर 25 अवतारों का भी उल्लेख पुराणों में आता है। काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) के भेजे हुए अवतार पृथ्वी पर बढ़े अधर्म का नाश कत्लेआम अर्थात् संहार करके करते हैं।

उदाहरण के रूप में :- श्री रामचंद्र जी तथा श्री कृष्णचंद्र जी, श्री परशुराम जी तथा श्री निःकलंक जी (जो अभी आना शेष है, जो कलयुग के अन्त में आएगा)। ये सर्व अवतार घोर संहार करके ही अधर्म का नाश करते हैं। अधर्मियों को मारकर शांति स्थापित करने की चेष्टा करते हैं। परन्तु शान्ति की अपेक्षा अशांति ही बढ़ती है। जैसे श्री रामचंद्र जी ने रावण को मारने के लिए युद्ध किया। युद्ध में करोड़ों पुरूष मारे गए। जिन में धर्मी तथा अधर्मी दोनों ही मारे गए। फिर उनकी पत्नियाँ तथा छोटे-बड़े बच्चे शेष रहे उनका जीवन नरक बन गया। विधवाओं को अन्य व्यक्तियों ने अपनी हवस का शिकार बनाया। निर्वाह की समस्या उत्पन्न हुई आदि-२ अनेकों अशांति के कारण खड़े हो गए। यही विधि श्री कृष्ण जी ने अपनाई थी, यही विधि श्री परशुराम जी ने अपनाई थी। इसी विधि से दशवां अवतार काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) द्वारा उत्पन्न किया जाएगा। उसका नाम ''निःकलंक'' होगा। वह कलयुग के अन्तिम समय में उत्पन्न होगा। जो राजा हरिशचन्द्र वाली आत्मा होगी। संभल नगर में श्री विष्णु दत्त शर्मा के घर में जन्म लेगा। उस समय सर्व मानव अत्याचारी - अन्यायी हो जाऐंगे। उन सर्व को मारेगा। उस समय जिन-२ मनुष्यों में परमात्मा का डर होगा। कुछ सदाचारी होंगे उनको छोड़ जाएगा अन्य सर्व को मार डालेगा। यह विधि है ब्रह्म (काल-क्षर पुरूष) के अवतारों की अधर्म का नाश करने तथा शांति स्थापना करने की।

''परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्य पुरूष के अवतारों की जानकारी''

❑ 1. परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होता है। वह सशरीर आता है। सशरीर लौट जाता है :- यह लीला वह परमेश्वर दो प्रकार से करता है।

❑ क = प्रत्येक युग में शिशु रूप में किसी सरोवर में कमल के फूल पर वन में प्रकट होता है। वहां से निःसन्तान दम्पति उसे उठा ले जाते हैं। फिर लीला करता हुआ बड़ा होता है तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश करता है। सरोवर के जल में कमल के फूल पर अवतरित होने के कारण परमेश्वर नारायण कहलाता है (नार=जल, आयण=आने वाला अर्थात् जल पर निवास करने वाला नारायण कहलाता है।)

❑ ख = जब चाहे साधु सन्त जिन्दा के रूप में अपने सत्यलोक से पृथ्वी पर आ जाते हैं तथा अच्छी आत्माओं को ज्ञान देते हैं। फिर वे पुण्यात्माऐं भी ज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश करते हैं। वे भी परमेश्वर के भेजे हुए अवतार होते हैं।

कलयुग में ज्येष्ठ शुदि पूर्णमासी संवत् 1455 (सन् 1398) को कबीर परमेश्वर सत्यलोक से चलकर आए तथा काशी शहर के लहर तारा नामक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में विराजमान हुए। वहां से नीरू तथा नीमा जो जुलाहा

(धाणक) दम्पति थे, उन्हें उठा लाए। शिशु रूपधारी परमेश्वर कर्विदेव (कबीर परमेश्वर) ने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया। नीरू तथा नीमा उसी जन्म में ब्राह्मण थे। श्री शिव जी के पुजारी थे। मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक मुसलमान बनाए जाने के कारण जुलाहे का कार्य करके निर्वाह करते थे। बच्चे की नाजुक हालत देखकर नीमा ने अपने ईष्ट शिव जी को याद किया। शिव जी साधु वेश में वहां आए तथा बालक रूप में विराजमान कबीर परमेश्वर को देखा। बालक रूप में कबीर साहेब जी ने कहा हे शिव जी इन्हें कहो एक कुँवारी गाय लाऐं वह आप के आर्शीवाद से दूध देगी। ऐसा ही किया गया। कबीर परमेश्वर के आदेशानुसार भगवान शिव जी ने कुँवारी गाय की कमर पर थपकी लगाई। उसी समय बछिया के थनों से दूध की धार बहने लगी। एक कोरा मिट्टी का छोटा घड़ा नीचे रखा। पात्र भर जाने पर दूध बन्द हो गया। फिर प्रतिदिन पात्र थनों के नीचे करते ही बछिया के थनों से दूध निकलता। उसको परमेश्वर कबीर जी पीया करते थे। जुलाहे के घर परवरिश होने के कारण बड़े होकर परमेश्वर कबीर जी भी जुलाहे का कार्य करने लगे तथा अपनी अच्छी आत्माओं को मिले, उनको तत्वज्ञान समझाया तथा स्वयं भी तत्वज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश किया तथा जिन-२ को परमेश्वर जिन्दा महात्मा के रूप में मिले, उनको सच्चखण्ड (सत्यलोक) में ले गए तथा फिर वापिस छोड़ा, उनको आध्यात्मिक ज्ञान दिया तथा अपने से परिचित कराया। वे उस परमेश्वर (सत्य पुरूष) के अवतार थे। उन्होंने भी परमेश्वर से प्राप्त ज्ञान के आधार से अधर्म का नाश किया। वे अवतार कौन-२ हुऐ हैं।

(1.) आदरणीय धर्मदास जी (2.) आदरणीय मलुकदास जी (3.) आदरणीय नानक देव साहेब जी (सिख धर्म के प्रवर्तक)(4.) आदरणीय दादू साहेब जी (5.) आदरणीय गरीबदास साहेब जी गांव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) वाले तथा (6.) आदरणीय घीसा दास साहेब जी गांव खेखड़ा जि. मेरठ (उत्तर प्रदेश) वाले ये उपरोक्त सर्व अवतार परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) के थे। अपना कार्य करके चले गए। अधर्म का नाश किया। जिस कारण से जनता में बहुत समय तक बुराई नहीं समाई। वर्तमान में सन्तों की कमी नहीं परन्तु शांति का नाम नहीं, कारण यह है कि इन संतों की साधना शास्त्रों के विरूद्ध है। जिस कारण से समाज में अधर्म बढ़ता जा रहा है। इन पंथों और सन्तों को सैकड़ों वर्ष हो गए ज्ञान प्रचार करते हुए परन्तु अधर्म बढ़ता ही जा रहा है।

''सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार''

जो सत्य साधना तथा तत्वज्ञान का प्रचार परमेश्वर के पूर्वोक्त परमेश्वर के अवतार सन्त किया करते थे। जिससे आपसी प्रेम था, एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते थे, असहाय व्यक्ति की मदद करते थे, वही शास्त्रविधि अनुसार साधना तथा वही आध्यात्मिक यथार्थ ज्ञान संत रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने प्रदान किया है। मार्च 1997 को फाल्गुन मास की शुक्ल प्रथमा को

दिन के दस बजे जिन्दा महात्मा के रूप में सत्यलोक से आकर सन्त रामपाल दास जी महाराज को सतनाम तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गए।

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं। अब विश्व में शांति होगी। सर्व धर्म तथा पंथों के व्यक्ति एक होकर आपस में प्रेम से रहा करेंगे। राजनेता भी निर्भिमानी, न्यायकारी तथा परमात्मा से डर कर कार्य करने वाले होंगे। जनता के सेवक बनकर निष्पक्ष कार्य किया करेंगे। धरती पर पुनः सत्ययुग जैसी स्थिति होगी। वर्तमान में धरती पर वह अवतार सन्त रामपाल दास जी हैं। अब घर-२ में परमेश्वर के ज्ञान की चर्चा होगी। जहां गांव व शहरों में तथा पार्कों में बैठकर ताश खेलते है। कोई राजनीतिक बातें करता है, कोई अपने पुत्रों तथा पुत्र वधुओं की अच्छे या निकम्में होने की चर्चा करते हैं वहां परमेश्वर की महिमा की चर्चा होगी तथा ''ज्ञान गंगा'' पुस्तक में लिखे ज्ञान पर विचार हुआ करेगा। परमात्मा की महिमा करने मात्र से भी जीव पुण्य का भागी बनता है। फिर शास्त्रविधि अनुसार साधना करके जीवन सुखी बनाऐंगे तथा आत्म कल्याण करायेंगे। धरती पर कलयुग में सत्ययुग जैसा समय आयेगा। मेरा (लेखक का) कल्याण भी वहीं से हुआ है। सम्पूर्ण विश्व में एक मात्र आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्ति स्थान :-

सत्यलोक आश्रम

चण्डीगढ़ रोड़ बरवाला, जि. हिसार, (हरियाणा) भारत।

फोन नं. - 9992600801, 9992600802, 9992600803, 9812166044, 9812151088, 9812026821, 9812142324, 9992600825

''भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण''

''एक महापुरूष के विषय में भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रह्लाद भक्त की भविष्यवाणी''

''भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण संत रामपाल दास जी महाराज धरती पर अवतार)''

भाई बाले वाली जन्म साखी में लिखा गया विवरण स्पष्ट करता है कि संत रामपाल दास जी महाराज ही वह अवतार है जिन्हें परमेश्वर कबीर जी तथा संत नानक जी के पश्चात् पंजाब की धरती पर अवतरित होना था। सन्त रामपाल दास जी महाराज 8 सितम्बर सन् 1951 को गांव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा प्रान्त (उस समय पंजाब प्रान्त) भारत की पवित्र धरती पर श्री नन्द राम जाट के घर जाट वर्ण में श्रीमति इन्द्रा देवी की कोख से जन्में।

इस विषय में ''जन्म साखी भाई बाले वाली'' हिन्दी वाली में जिसके प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड कम्पनी पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर (पंजाब) तथा पंजाबी वाली के प्रकाशक है :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह पुस्तकां वाले गली-8 बाग रामानन्द अमृतसर (पंजाब)।

इसमें लिखा अमर लेख इस प्रकार है :- एक समय भाई बाला तथा मरदाना को साथ लेकर सतगुरु नानक देव जी भक्त प्रह्लाद जी के लोक में गए। जो पृथ्वी से कई लाख कोस दूर अन्तरिक्ष में है। प्रह्लाद ने कहा कि हे नानक जी! आप को परमात्मा ने दिव्य दृष्टि दी तथा कलयुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप का कलयुग में बहुत प्रताप होगा। यहां पर (प्रह्लाद के लोक में) पहले कबीर जी आये थे या आज आप आये हो एक और आयेगा जो आप दोनों जैसा ही महापुरूष होगा। इन तीनों के अतिरिक्त यहां मेरे लोक में कोई नहीं आ सकता। भक्त बहुत हो चुके हैं आगे भी होगें परन्तु यहां मेरे लोक में वही पहुँच सकता है, जो इन जैसी महिमा वाला होगा और कोई नहीं। इसलिए इन तीनों के अतिरिक्त यहां कोई नहीं आ सकता। मरदाने ने पूछा कि हे प्रह्लाद जी! कबीर जी जुलाहा थे, नानक जी खत्री हैं, वह तीसरा किस वर्ण (जाति) से तथा किस धरती पर अवतरित होगा।

प्रह्लाद भक्त ने कहा भाई सुन :- नानक जी के सच्चखण्ड जाने के सैकड़ों वर्ष पश्चात् पंजाब की धरती पर जाट वर्ण में जन्म लेगा तथा उसका प्रचार क्षेत्र शहर बरवाला होगा। (लेख समाप्त)

विवेचन :- संत रामपाल दास जी महाराज वही अवतार हैं जो अन्य प्रमाणों के साथ-२ जन्म साखी में लिखे वर्णन पर खरे उतरते हैं। जन्म साखी में ''सौ वर्ष के पश्चात्'' लिखा है। यहां पर सैकड़ों वर्ष पश्चात् कहा गया था जिसको पंजाबी भाषा में लिखते समय सौ वर्ष ही लिख दिया। क्योंकि मर्दाना ने पूछा था कि वह कौन से युग में नजदीक ही आयेगा? तब भक्त प्रह्लाद ने कहा कि श्री नानक जी

के सैकड़ों वर्ष पश्चात् कलयुग में ही वह संत जाट वर्ण में जन्म लेगा। इसी लिए यहां सौ के स्थान पर सैकड़ों ही न्यायोचित है तथा प्रचार क्षेत्र बरवाला के स्थान पर बटाला लिखा गया है। इसके दो कारण हो सकते हैं कि ''शहर बरवाला'' जिला हिसार हरियाणा (उस समय पंजाब) प्रान्त में सुप्रसिद्ध नहीं था तथा बटाला शहर पंजाब प्रान्त में प्रसिद्ध था। लेखनकर्ता ने इस कारण से ''बरवाला'' के स्थान पर ''बटाला'' लिख दिया दूसरा प्रिन्ट करते समय ''**ਵਰਵਾਲੇ**'' की जगह ''**ਵਟਾਲੇ**'' प्रिंट हो गया है। एक और विशेष विचारणीय पहलू है कि पंजाब के बटाला शहर में कोई भी जाट संत नहीं हुआ है। जो इन महापुरूषों (परमेश्वर कबीर देव जी व श्री नानक देव जी) के समान महिमावान तथा इनके समान ज्ञानवान हुआ हो। इस आधार से तथा अन्य प्रमाणों के आधार से तथा इस जन्म साखी के आधार से स्पष्ट है कि वह तीसरे महापुरूष संत रामपाल दास जी महाराज हैं तथा इनका आध्यात्मिक ज्ञान भी इन दोनों महापुरूषों (परमेश्वर कबीर जी तथा श्री नानक देव जी) से मेल खाता है। आप देखेंगे दोनों फोटो कापी जो जन्म साखी भाई बाले वाली जो कि एक पंजाबी भाषा में है तथा दूसरी हिन्दी में है जो कि पंजाबी भाषा से ही अनुवादित है। इसमें कुछ प्रकरण ठीक नहीं लिखा है। जैसे पंजाबी भाषा में लिखा है कि ''जो इस जीहा कोई होवेगा तां एथे पहुँचेगा होर दा एथे पहुँचण दा कम नही'' परन्तु हिन्दी वाली जन्म साखी में यह विवरण नहीं है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इससे सिद्ध है कि लिखते समय कुछ प्रकरण बदल जाता है। फिर भी ढेर सारे प्रमाण जो इस पुस्तक ''धरती पर अवतार'' में अन्य महापुरूषों के द्वारा सन्त रामपाल दास जी के विषय में कहे हैं वे भी इसी को प्रमाणित करते हैं।

विशेष :- यदि कोई यह कहे कि जन्म साखी में लिखी व्याख्या सन्त गरीबदास जी गांव छुड़ानी वाले के लिए हैं। क्योंकि वे भी जाट जाति से थे तथा छुड़ानी गांव भी पहले पंजाब प्रांत के अन्तर्गत आता था। यह भी उचित नहीं लगती क्योंकि संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरनी सूम जगायसी'' भावार्थ है कि संत गरीबदास जी के सतगुरु पूज्य कबीर साहेब जी थे। पुराना रोहतक जिला (सोनीपत, रोहतक तथा झज्जर को मिला कर एक जिला रोहतक था) दिल्ली मण्डल में लगता था। यह किसी राजा के आधीन नहीं था। अग्रेंजो के शासन काल में दिल्ली के आधीन था। सन्त गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि सतगुरु (परमेश्वर कबीर जी) दिल्ली मण्डल में आऐंगे भक्तिहीन प्राणियों को जगाऐंगे सत्यभक्ति कराऐंगे। ध्यान रहे कबीर सागर में काल के दूतों ने मिलावट करके सत्य को न जानकर अपनी अटकल बाजी से असत्य प्रमाण दिए हैं। उसका नाश करने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने अंश अवतार सन्त गरीब दास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रचार करवाया है। जो सन्त गरीब दास जी की अमृतवाणी रूप में है। इसी बात की पुष्टि ''कबीर सागर के सम्पादक कबीर पंथी श्री युगलानन्द बिहारी जी

की उस टिप्पणी से होती है जो उन्होंने अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की भूमिका में की है कहा है कि कबीर पंथियों ने ही कबीर पंथ के ग्रन्थों का नाश कर रखा है। अपने-२ मते अनुसार फेर बदल करके अपने मत को जोड़ा है। मेरे पास अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की कई-२ प्रतियाँ रखी हैं। जिनमें से एक दूसरे से मेल नहीं खा रही हैं।

सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म श्री नन्द राम जाट के घर 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना जिला सोनीपत (उस समय जिला रोहतक) में हुआ था। जो वर्तमान हरियाणा तथा पंजाब प्रांत मिलकर, उस समय एक ही 'पंजाब' प्रांत था। परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा था कि जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा मैं गरीबदास वाले बारहवें पंथ में आगे स्वयं आऊँगा। सन्त गरीबदास जी द्वारा मेरी (कबीर परमेश्वर की) महिमा की वाणी प्रकट होगी तथा गरीबदास वाले बारहवें पंथ तक के साधक मुझे आधार बनाकर वाणी को समझने की कोशिश करेंगे परन्तु वाणी को ना समझ कर सतनाम तथा सारनाम से वंचित रहने के कारण असंख्य जन्म तक सत्यलोक प्राप्ति नहीं कर सकते। उसी बारहवें पंथ (गरीबदास जी वाले पंथ) में मैं (परमेश्वर कबीर जी) ही स्वयं चलकर आऊँगा। तब सन्त गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई वाणी को मैं (कबीर परमेश्वर) प्रकट होकर समझाऊँगा। प्रमाण के लिए कृप्या देखें इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 28 पर पढ़ें 'कबीर परमेश्वर द्वारा स्वयं अवतार धारण करने की भविष्यवाणी''।

इस से सिद्ध हुआ कि जन्म साखी में जिस जाट सन्त के विषय में कहा है निरविवाद रूप से वह संत रामपाल दास जी महाराज जी ही हैं। फिर भी हम संत गरीबदास जी का विशेष आदर करते हैं। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर कबीर जी का अमर संदेश सुनाया है।

यदि कोई भ्रम उत्पन्न करे की दस गुरु साहिबानों में से भी किसी की ओर संकेत हो सकता है। इसके लिए स्मरण रहे कि दस सिख गुरु साहिबानों में से कोई भी जाट वर्ण से नहीं थे। दूसरे सिख गुरु श्री अंगद देव जी खत्री थे। तीसरे गुरु जी श्री अमर दास जी भी खत्री थे। चौथे गुरु जी श्री रामदास जी खत्री थे तथा पांचवें गुरु जी श्री अर्जुन देव जी से लेकर दसवें तथा अन्तिम श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक श्री गुरु रामदास जी की सन्तान अर्थात् खत्री थे। फिर भी हम सभी सिख गुरु साहिबानों का विशेष आदर करते हैं।

संत रामपाल दास जी महाराज कहते हैं :-

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा,
हिन्दु मुसलिम, सिख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

जाति ना पूछो संत की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी जन्म साखी पंजाबी गुरुमुखी (पंजाबी भाषा) वाली तथा हिन्दी वाली दोनों में आप जी सहज में समझ सकते हो कि वास्तविक्ता क्या है। जन्म साखियों के प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह अमृतसर (पंजाब)।

प्रश्न : एक संस्कृत के विद्वान शास्त्री ने कहा कि आप के गुरु संत रामपाल दास जी महाराज संस्कृत नहीं पढ़े हैं। आप कहते हो कि उन्होंने श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद करके भक्तों को बताते हैं। यह कभी नहीं हो सकता।

उत्तर : सन्त रामपाल दास जी महाराज के भक्त ने उत्तर दिया शास्त्री जी उसी को परमेश्वर का अवतार कहते हैं। जो भाषा का ज्ञान न होते हुए यथार्थ अनुवाद कर दें। क्योंकि परमेश्वर सर्वज्ञ है। उन्हीं गुणों से युक्त उसका भेजा हुआ अवतार होता है। वह अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज जी हैं। आप तो केवल वेदों और गीता के अनुवाद से अचम्भित हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज ने तो बाईबल तथा कुरान को यथार्थ रूप में बताया है। जिसे ईसाई धर्म के वर्तमान के फादर व पादरी तथा मुसलमान धर्म के मुल्ला व काजी भी नहीं समझ सके। कृप्या पढ़िए इसी पुस्तक के पृष्ठ 80-88 पर।

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली हिन्दी वाली के पृष्ठ 305 की

जन्म साखी (३०५) भाई बाले वाली

तब भक्त प्रहलाद ने कहा—हे नानक देव। आप को इस कलियुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप की ही संगति से अनेकों प्राणियों का भला होगा। और आप का अनंत प्रताप होगा। तब मरदाने ने कहा—हे प्रहलाद जी। आप भी तो परम भक्त हैं तथा भगवान ने आप के लिये ही अवतार धारन किया था। प्रहलाद जी ने कहा—हे भाई मरदाना। इस स्थान पर या तो कबीर पहुंचा है, और या यह गुरु नानक आया है। यहां आना कोई सुगम कार्य नहीं है। एक और महा पुरुष होगा जो पहुंच सकेगा। मरदाने ने कहा—हे भक्त वर। वह पुरुष कौन और कब होगा। प्रहलाद ने उत्तर दिया, कि जब गुरु नानक देव यहां आयेंगे तो इन के सौ वर्ष पश्चात आयेगा। अर्थात यहां केवल तीन आदमी ही आने हैं। एक तो भक्त कबीर और दूसरे श्री गुरु नानक देव जी इन के पश्चात वह तीसरा आयेगा। तब मर्दाने ने कहा हे प्रहलाद जी। कबीर तो जुलाहा था, और नानक देव—खत्री है। परंतु वह तीसरा किस जाती का होगा, उत्तर में प्रहलाद जी ने कहा—हे मर्दाना। पंजाब की धरती और वहां उस का जाट होगा। तथा नगर बरवाला में होगा। उस समय मर्दाना गुरु जी के चर्णों

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 272 की।

(੨੭੨) ਸਾਖੀ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨਾਲ ਹੋਈ

ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਆ ॥੪॥ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਜੀ ਤੇਨੂੰ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ
ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡਾ ਭਗਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਔਰ ਆਪਕੇ ਸੰਜੋਗ ਬਹੁਤਿਆਂ ਕਾ ਉਧਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇਰੀ
ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਵਡਾ ਪ੍ਰਤਾਪ ਹੋਵੇਗਾ ਇਸ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਅਗੇ
ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਏਥੇ ਆਯਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਾਂ ਆਪਕੋ ਕਰਤਾ ਨੇ ਆਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ
ਭਗਤ ਨੂੰ ਪੁਛਿਆ ਹੇ ਭਗਤ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਭੀ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਤੇ ਤੁਸਾਡੇ ਪਿਛੇ ਰਾਮ ਜੀ ਵਡਾ
ਚਲਤ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲ੍ਹੀ ਹੈ ਭਗਤ ਜੀ ਏਥੇ ਹੋਰ ਕੋਈ
ਵੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਬੀਰ ਅਤੇ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ
ਬੋਲਿਆ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਤਪੇ ਪਾਸੋਂ ਪੁਛ ਲੈ ਹੋਰ ਭੀ ਆਵਸੀ ਕਿ ਨਾ ਆਵਸੀ ਕੋਈ ਤਾਂ
ਮਰਦਾਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਗਲੀ ਤੇ ਪਿਛਲੀ ਸਭ ਆਪ ਨੂੰ ਸਤਿ
ਜੁਗ ਥੀਂ ਆਦਿ ਲੈਕੇ ਮਾਲੂਮ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੇ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਇਸ ਜਿਹਾ
ਕੋਈ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚੇਗਾ ਹੋਰਸ ਦਾ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚਣਾ ਕੰਮ ਨਾਹੀਂ ਹੋਰ ਅਗੇ ਵਡੇ ਵਡੇ
ਭਗਤ ਹੋਏ ਹੈਨ ਅਤੇ ਹੋਵਨਗੇ ਪਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਕੋਈ ਨਾਹੀਂ ਤਾਂ ਫੇਰ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ
ਜੀ ਓਹ ਕਦ ਹੋਸੀ ਕਿਤੇ ਨੇੜੇ ਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਸੁਣ
ਭਾਈ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ ਜਟ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਸਚਖੰਡ ਜਾਵੇਗਾ ਤਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਪਿਛੇ
ਸਉ ਵਰ੍ਹੇ ਹੋਸੀ ਅਤੇ ਏਹਨਾਂ ਤੇਹਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਵਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ
ਜੀ ਤਿੰਨ ਕੇਹੜੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਭਾਈ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 273 की।

ਸਾਖੀ ਇਕ ਪਹਾੜ ਦੀ ਚਲੀ (੨੭੩)

ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੂਆ ਹੈ ਅਤੇ ਫੇਰ ਉਹ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਕਬੀਰ ਜੁਲਾਹਾ
ਹੋਯਾ ਤੇ ਨਾਨਕ ਖਤਰੀ ਹੋਏ ਅਤੇ ਜੀ ਉਹ ਕਿਸ ਵਰਨ ਹੋਵੇਗਾ ਜੀ ਤੇ ਕਿਸ ਧਰਤੀ
ਤੇ ਹੋਸੀ ਕੇਹੜੇ ਸ਼ਹਿਰ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਿਹਾ ਭਾਈ ਪੰਜਾਬ ਧਰਤੀ ਤੇ ਵਰਨ ਜਟ ਤੇ
ਸ਼ਹਿਰ ਵਟਾਲੇ ਵਿਚ ਹੋਸੀ। ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਤੇ ਢਹਿ ਪਿਆ ਗੁਰੂ

''एक महापुरूष के विषय में जयगुरु देव की भविष्यवाणी''

''जयगुरुदेव पंथ के श्री तुलसी दास साहेब की विशेष भविष्यवाणी''

जयगुरू देव उर्फ राधास्वामी पंथ मथुरा के परम सन्त की भविष्यवाणी कृप्या पढ़ें पुस्तक ''जयगुरू देव की अमर वाणी भाग- 2'' जिसकी लेखिका है दिव्या शर्मा, मुद्रक : अर्जेन्ट प्रिन्टिग प्रैस पुराना बस स्टैण्ड मथुरा के पृष्ठ 50 तथा 59 की फोटो कापी।

औतारी शक्तियों का जन्म हो गया है

भारतवर्ष में औतारी शक्तियों ने जन्म ले लिया है। अनेक स्थानों पर वे बच्चों के रूप में पल रहें है और समय आने पर प्रगट हो जाऐंगी। माता पिता अपना सुधार कर लें वरना यही बच्चे उनके विनाश का कारण बन जाएगें। इन बच्चों को गोश्त व अण्डा दिया जाता है तो वे मुंह फेर लेते है और उधर देखते तक नहीं। माँ बाप इस बात का ध्यान रखें कि जो बच्चे इन चीजों को खाना नहीं चाहते उन्हें जबरदस्ती न खिलाएँ। वह औतार जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे है 20 वर्ष का हो चुका है यदि उसका पता बता दूँ तो लोग पीछे पड जाऐंगे। अभी उपर से आदेश बताने के लिए नही हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ और सभी महात्माओं ने समय का इन्तजार किया है। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जाएगा।

(शाकाहारी पत्रिकाः 7 सितम्बर 1971)

50

परिवर्तन का कारण भारतवर्ष बनेगा

भारतवर्ष को विश्व में परिवर्तन का कारण अब बनना होगा। त्रेता में विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और द्वापर में भी विश्व युद्ध का कारण भारतवर्ष था और इस समय में भी भारतवर्ष को ही कारण बनना होगा।

मुस्लिम राष्ट्रों में भारी कलह होगी। सभी मुसलमान आपस में लड़कर समाप्त हो जाऐंगे। अधिकांश छोटे–छोटे देश टूटकर बड़े राष्ट्रों में मिल जाऐंगे। भारतवर्ष इन सबका अगुआ होगा। चीन के समस्त वैज्ञानिक प्रगति को चूर्ण करके चीन को नष्ट कर दिया जाऐगा। चीन में बचे–खुचे लोगों की सहायता भारत करेगा। इसी बीच तिब्बत भारत में मिल जाएगा। यदि सभी राष्ट्र आपस में मिल कर भारतवर्ष पर आक्रमण करें तो भी इसे कोई जीत नहीं सकता है। भारत में नए सिरे से संगठन होगा। यदि विश्व के सभी राष्ट्र जी जान से यह प्रयास करे कि सुरक्षा परिषद अमेरिका से हटकर भारतवर्ष मे न जाने पावे तो यह कदापि नहीं होगा। सुरक्षा परिषद भविष्य में भारत में चली आएगी।

महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गांव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बडा सर्मथन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झंडा होगा। उसकी एक भाषा होगी।

(शाकाहारी पत्रिकाः 28 अगस्त 1971)

59

उपरोक्त पुस्तक की फोटो कापियों में सन्त रामपाल जी महाराज के विषय में वर्णन इस प्रकार कहा हैं।

''वह अवतार कौन है ?''

सन्त रामपाल दास जी महाराज अपने अमृत वचनों में कहते हैं कि जो भी व्यक्ति स्वयंभु गुरू बन कर सुप्रसिद्ध हुए हैं। ये पूर्व जन्मों की पुण्यात्माऐं हैं। जिस कारण से उनके पुण्य धन से (पूर्व जन्म की भक्ति धन से) अनुयाइयों को कुछ भौतिक लाभ भी प्राप्त हो जाते हैं। लेकिन बाद में इन स्वयंभु गुरूओं की भक्ति क्षीण हो जाती हैं। जैसे इर्न्वटर की बैटरी चार्ज हैं। उससे पंखे भी चल रहे हैं, ट्यूब भी जग रहीं है, भले ही वर्तमान में चार्जर भी न लगा हो। परन्तु संचित ऊर्जा के खर्च होने के बाद और आगे चार्जर न लगाने से एक दम बैट्री डिस्चार्ज हो जाती हैं तथा सर्व सुविधाऐं बन्द हो जाती हैं।

यही दशा वर्तमान के सर्व पुण्यात्माओं स्वयंभु गुरूओं की हैं। ये सर्व पूर्व जन्मों में की हुई भक्ति से चार्जड थे। वर्तमान में शास्त्रानुकूल भक्ति (साधना) न होने के कारण अपना तथा अपने अनुयाइयों का जीवन नाश कर गए। कुछ वर्तमान में कर रहे हैं।

जयगुरू देव पंथ मथुरा का सन्त श्री तुलसी दास साहेब जी पूर्व जन्म के बहुत ही पुण्यकर्मी प्राणी हैं। ये श्री शिवदयाल सिंह जी से भी अधिक भक्ति धन युक्त हैं। परन्तु वर्तमान में साधना शास्त्रानुकूल न होने से अपने पुण्यों का नाश कर लिया है। अब इनकी बैटरी पूर्ण रूप से डिस्चार्ज हो चुकि है।

जिस समय ''7 सिम्तबर 1971 में इन्होंने भविष्यवाणी की है। जो पुस्तक ''जय गुरुदेव की अमर वाणी'' के पृष्ठ 50 तथा 59 पर अंकित है।

➢जिसमें एक अवतार की जानकारी दी है कि पृष्ठ 59 पर दिनांक 28 अगस्त 1971 को की गई भविष्यवाणी का कुछ अंश इस प्रकार है। महापुरूष का जन्म भारतवर्ष के एक छोटे से गांव में हो चुका है और वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान को बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उसका एक झंडा होगा। उसकी एक भाषा होगी। कृप्या देखें फोटो कापी पुस्तक ''जयगुरुदेव की अमरवाणी'' भाग-2 के पृष्ठ 50-59 की। इसी पुस्तक के पृष्ठ 18 पर।

➢पृष्ठ 50 पर दिनांक 7 सितम्बर 1971 की भविष्यवाणी का कुछ अंश इस प्रकार है। ''अवतारी शक्तियों का जन्म हो गया है''

...... वह अवतार जिसकी लोगों को प्रतिक्षा है 20 वर्ष का हो चुका है। यदि उसका पता बता दूं तो लोग पीछे पड़ जाऐंगे। अभी ऊपर से आदेश बताने के लिए नहीं हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ। समय आते ही सबको सब कुछ मालूम हो जाएगा।

विवेचन :- संत रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना, जिला-सोनीपत, प्रांत-हरियाणा (भारत) में किसान (जाट) परिवार में हुआ। दिनांक 7 सितम्बर 1971 को संत रामपाल जी महाराज की आयु ठीक 20 वर्ष की थी। 8 सितम्बर 1971 को ईक्कीसवां वर्ष प्रारम्भ होता है। श्री तुलसी दास

जी जो जयगुरुदेव पंथ मथुरा के वर्तमान में गुरु पद पर विराजमान हैं, उन्होंने जो भविष्यवाणी की है। वह संत रामपाल जी महाराज पर खरी उतरती है। इसके साथ-2 संत रामपाल जी महाराज का आध्यात्मिक ज्ञान अद्वितीय है। इसलिए सर्व संसार में विख्यात होगा।

संत रामपाल जी महाराज ने सर्व संतों तथा पंथों की भक्ति विधि पर सवाल उठाए हैं कि इन सर्व की साधना शास्त्रविरूद्ध एवं व्यर्थ है। इनके द्वारा बताए भक्ति के नाम (मंत्र) मोक्षदायक नहीं हैं। जिन संतों को परमेश्वर मिला उन्होंने जो साधना की, हम सर्व को वही साधना करनी पड़ेगी। परमेश्वर प्राप्त संतों ने जो नाम जाप किए, जिनसे उनका मोक्ष हुआ, वे मंत्र वर्तमान में संत रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त किसी के पास नहीं हैं। यदि श्री तुलसी दास जी जयगुरूदेव पंथ मथुरा वाले की दिव्य दृष्टि काम करती है तो बताऐं कि वास्तव में वे महापुरूष संत रामपाल जी महाराज हैं या कोई अन्य है। हमें तो शत-प्रतिशत विश्वास है कि संत रामपाल जी महाराज जी ही वह महापुरूष अवतार हैं। जिसके विषय में सर्व भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणियाँ की हैं। एकमात्र संत रामपाल जी महाराज ने ही अपने अनुयाइयों की शराब, तम्बाखू, मांस, चोरी, रिश्वत खोरी आदि-2 सर्व बुराईयाँ छुड़वाई हैं।

श्री तुलसी दास साहेब जी मथुरा में जयगुरुदेव पंथ के वर्तमान प्रमुख ने तथा अन्य भविष्यवक्ताओं ने केवल इतना कार्य किया है। जैसे खगोल-भूगोल का ज्ञाता यह बताए कि कल सूर्य 6 बजकर 45 मिनट पर उदय होगा। सूर्य को तो उदय होना ही था, चाहे कोई बताए या ना बताए। सूर्य उदय हो चुका हो, सामने धुन्ध के बादल छाए हों। कोई व्यक्ति बच्चों को बताए कि सूर्य उदय हो चुका है। समय आने पर दिखाई देगा। सूर्य कहां पर है, यह बताने में असमर्थ व्यक्ति कहता है कि जब धुन्ध के बादल हट जाऐंगे, अपने आप सूर्य दिखाई देगा। सूर्य तो उदय है। वह दिखाई भी देगा, चाहे कोई बताए या ना बताए। ऐसी भविष्यवाणी श्री तुलसी दास साहेब मथुरा में जयगुरुदेव पंथ के वर्तमान मुखिया की है। अब सूर्य उदय हो चुका है। यदि तुलसी दास की आँखें (दिव्य दृष्टि) अब भी काम कर रही है तो बताए कि सूर्य अर्थात् वह अवतार महापुरूष कहाँ पर है। यदि श्री तुलसी साहेब यह बताने में असमर्थ है कि वह अवतारी पुरूष कौन है तो उनकी पूर्व जन्म की भक्ति शक्ति पूर्ण रूप से क्षीण हो चुकि है। क्योंकि 7 सितम्बर 1971 को उनकी दिव्य दृष्टि ने सही कार्य किया था। जिसमें उन्होंने कहा है (पुस्तक = ''जयगुरु देव की अमर वाणी'' भाग-2 पृष्ठ 50 तथा 59 पर) कि ''महापुरूष का जन्म भारत वर्ष के एक छोटे से गाँव में हो चुका है। वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है। वह महापुरूष नए सिरे से विधान बनाएगा और वह विश्व के सम्पूर्ण देशों पर लागू होगा। उस का एक झण्डा होगा। उसकी एक भाषा होगी। यह विवरण पृष्ठ 59 पर है तथा पृष्ठ 50 पर कहा है कि वह अवतार जिस

की लोग प्रतिक्षा कर रहे हैं 20 वर्ष का हो चुका है।'' (भविष्यवाणी समाप्त)

सन्त रामपाल जी महाराज का जन्म गाँव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा, भारतवर्ष में 8 सितम्बर 1951 को एक जाट किसान परिवार में हुआ। जयगुरु देव पंथ मथुरा के मुखिया श्री तुलसी दास साहेब के अनुसार 7 सितम्बर 1971 को सन्त रामपाल जी महाराज ठीक 20 वर्ष के हुए थे तथा 8 सितम्बर से उनके शरीर की आयु का इक्कीसवां वर्ष प्रारम्भ हुआ था।

सन्त रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में बार-बार प्रार्थना करते हैं कि वर्तमान के सर्व गुरु जन कृप्या ध्यान दें। आप जी शास्त्रविरूद्ध साधना कर तथा करवा रहे हो। आप बहुत बड़े मानव समाज के जीवन के नाशक बन रहे हो। आप भी तथा आप के अनुयाई, अपना अनमोल मानव जीवन नष्ट कर रहे हो। सर्व वर्तमान के गुरु जन महापाप के भागी बन रहे हो। आप जी को, पाप के भार से मुक्त होने का रास्ता भी सन्त रामपाल जी महाराज जी ही बताते हैं। आप सन्त रामपाल जी महाराज जी के द्वारा बताए आध्यात्मिक ज्ञान को गहराई से जानों। फिर अपने शिष्यों से कह दो कि ''हमने आप जी को जो भक्ति दिशा दी है। वह अधूरी है। हमारा उद्देश्य तो था कि आपको मुक्ति दिलाऐं। परन्तु हमें तत्व ज्ञान नहीं था। अब सर्व भक्त सन्त रामपाल दास जी महाराज के पास जाओ तथा दीक्षा ग्रहण करो।'' इस प्रकार कहने से गुरुजन पाप के भार से मुक्ति प्राप्त कर लेगें। फिर स्वयं भी अपना कल्याण कराऐं व सन्त रामपाल दास जी महाराज जी के पास आकर नाम दीक्षा ग्रहण करें।

सन्त रामपाल दास जी महाराज कहते है कि सर्व सन्त तथा भक्तजन जो दिशा भ्रष्ट है। मुझ दास के पास आओ, अभिमान-बड़ाई को त्यागो। मुझे अपना बच्चा जान कर अपने जन्म-मृत्यु के दीर्घ रोग का नाश कराओ। जैसे किसी का बच्चा डाक्टर बन जाता है। उसके पास उपचार के लिए जाने में संकोच कैसा? वह डाक्टर बच्चा तो अपने माता-पिता-भाई बहन तथा छोटे-बड़े सर्व समाज के व्यक्तियों का उपचार करता है। ठीक इसी प्रकार सन्त रामपाल जी महाराज के पास जन्म-मृत्यु के रोग को नाश करने की जड़ी 'सतनाम' (जो दो अक्षर का है) है तथा सारनाम (जिसे आदिनाम भी कहते हैं) डाक्टर के पास दूसरे डाक्टर भी तो अपना उपचार कराने आते हैं। इसमें मान-बड़ाई का प्रश्न नहीं है।

सन्त रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में बताते हैं कि जब यह तत्वज्ञान वर्तमान के गुरुओं को समझ आ जाएगा तो इन के सामने काल एक और बाधा खड़ी करेगा कि हमारा सर्व जीवन इस साधना में व्यतीत हो गया है। अब हमारा कल्याण कैसे होगा ? यदि गुरु बदल लिया तो हम घर के रहे ना घाट के, उन्हें इस शंका के समाधान के लिए एक उदाहरण है :- महर्षि रामानन्द पंडित जी जिस समय 104 वर्ष के हो चुके थे। उस समय परमेश्वर कबीर जी ने उनको तत्वज्ञान समझाया तथा सत्यलोक में अपनी समर्थता से परिचित कराया। उस समय स्वामी रामानन्द जी ने 1400 (चौदह सौ) ऋषि शिष्य बना रखे थे। जो अन्य स्थानों पर

प्रचार किया करते थे। तब महर्षि रामानन्द जी ने यह प्रश्न परमेश्वर कबीर जी के सामने किया था कि ''हे परमेश्वर'' अब मेरा क्या होगा? यदि में आप से उपदेश ले लूं तो मेरी पूर्व साधना का क्या होगा? अब आयु बहुत ही कम शेष है। आप वाली भक्ति कैसे कर पाऊंगा? कहीं मैं घर का रहूं ना घाट का। परमेश्वर कबीर जी ने उस पुण्यात्मा की शंका का समाधान इस प्रकार किया था। (उस समय परमेश्वर कबीर जी की लीलामय आयु 5 वर्ष की थी।) परमेश्वर कबीर जी ने कहा स्वामी जी जैसे बच्चा दसवीं कक्षा में पढ़ रहा है। उसको आगे की शिक्षा का ज्ञान न हो और कोई उसे कहे कि आप आगे की उच्च कक्षा में प्रवेश पाओ। वह बच्चा कहे कि मेरी पीछे की पढ़ाई का क्या होगा? तो यह प्रश्न अबोध बच्चे ही किया करते है। फिर परमेश्वर कबीर जी ने कहा स्वामी जी ! (कबीर परमेश्वर जी ने मर्यादा बनाए रखने के लिए महर्षि रामानन्द जी को गुरु बना लिया था। इसलिए ''स्वामी'' शब्द से संबोधित करते थे।) यह आध्यात्मिक मार्ग है। मर्यादा में रह कर भक्ति करने से आध्यात्मिक लाभ शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है। मैं (कबीर परमेश्वर) आप को ''सत्यनाम'' (जो दो अक्षर का है। जिस में एक ओम् तथा दूसरा ''तत्'' जो सांकेतिक है) दूंगा। जिस के एक सुमरण से इतना भक्ति धन प्राप्त होता है कि चौदह लोक की कीमत भी कम रह जाए।

सतनाम पालड़ै रंग होरी हो, चौदह लोक चढ़ावै राम रंग होरी हो।
तीन लोक पासंग धरै रंग होरी हो, तो ना तुलै तुलाया राम रंग होरी हो।।

कबीर परमेश्वर जी ने फिर कहा कि हे स्वामी जी :-

जीवन तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरण हो। लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

इस सतनाम तथा सारनाम (आदि नाम) के जाप को श्रद्धा से करने से शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है। इस मन्त्र के बिना चाहे लाख वर्ष भी गलत साधना करते रहो, कोई लाभ नहीं।

दूसरा उदाहरण :- यदि कोई व्यक्ति यात्रा कर रहा है। उस ने दिल्ली से बरवाला जिला हिसार हरियाणा में आना है। वह जा रहा है, दिल्ली से आगरा की ओर तथा जा चुका है 200 कि.मी.। वहाँ कोई उसे कहे कि आप की दिशा ठीक नहीं है। आप विपरीत मार्ग पर जा रहे हो। उस यात्री को विचार करना चाहिए कि सामने वाले व्यक्ति ने ऐसा क्यों कहा? यदि आप को विश्वास नहीं आया हो तो मानचित्र देखना चाहिए। सर्व जांच करने के पश्चात् यात्री को पता चला कि वास्तव में मेरा मार्ग गलत है। फिर वह यात्री यह कहे कि मैंने इतना रास्ता (200 कि.मी) तय कर लिया, इसको कैसे छोडूं.? इतना समय लगा दिया इसका क्या बनेगा? क्या बुद्धिमान व्यक्ति यह प्रश्न करेगा? नहीं। वह यात्री उस व्यक्ति का धन्यवाद करेगा, जिसने सावधान किया तथा सही मार्ग बताया।

उपरोक्त प्रथम उदाहरण में :- स्वामी रामानंद जी वेदों तथा श्री मद्भगवत् गीता व पुराणों को आधार मान कर साधना कर रहे थे। वे दसवीं कक्षा तक की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे तथा कई जन्मों से उसी कक्षा में ही पास-फेल हो रहे थे।

उनके लिए कहा गया है कि उन्हें आगे की शिक्षा ग्रहण करने के लिए पूर्व विद्यालय तथा पूर्व गुरु त्यागने होंगे तथा आगे की शिक्षा परमेश्वर कबीर जी (सत्यपुरूष ने) स्वयं तत्वदर्शी संत के रूप में आकर बताई है। जो जन्म-मरण से पूर्ण मोक्ष दिलाती है। जो महर्षि रामानंद जी ने सहर्ष स्वीकार की।

दूसरा उदाहरण राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाओं (जयगुरु देव पंथ मथुरा, धन-धन सतगुरु सच्चा सौदा सिरसा, जगमाल वाली तथा गंगवा हिसार के पास, श्री ताराचंद जी दिनौंद भिवानी के पास, श्री कृपाल सिंह वाला राधास्वामी पंथ तथा ठाकुर सिंह वाला पंथ) तथा निरंकारी पंथ, हंसादेश पंथ आदि पर खरा उतरता है। इन पंथों का मार्ग न तो परमेश्वर कबीर जी अनुसार सत्यलोक प्राप्ति का है न ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी आदि देवताओं व ब्रह्म (क्षर पुरूष) वाला है, जो दसवीं तक की शिक्षा है। इसलिए इनका मार्ग विपरीत होने से लाभदायक नहीं है।

इन सर्व से निवेदन है कि कृप्या पुनर् विचार करें तथा सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार, हरियाणा में पहुँच कर जगत् गुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से दीक्षा स्वयं भी लें तथा अपने शिष्यों को भी आदेश दें कि आप सर्व भक्तजन सतलोक आश्रम बरवाला में जाकर यथार्थ भक्ति मार्ग ग्रहण करें। इस प्रकार करने से वे गुरुजन जो शास्त्रविरूद्ध साधना कर तथा करवा रहे हैं। महापाप से बच जाऐंगे। मानव जीवन बहुत अनमोल है। इसको नष्ट करना तथा कराना महाअपराध है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

संखों गुरु गर्द में मिल गये, चेलों को कहां ठिकाना। झूठे गुरुवों बात बिगाड़ी, काल जाल नहीं जाना।।
बात कहत हैं पार जान की, खड़े वार के वारै। ना गुरुपुरा ना सतनाम उपासना, कैसे प्राण निस्तारै।

''शास्त्रों के आधार से पूर्ण संत तारणहार की पहचान''

श्री सावन सिंह, जो बाबा जयमल सिंह जी के शिष्य तथा डेरा ब्यास के दूसरे गद्दी नशीन हैं। बाबा जयमल सिंह आगरा वाले श्री शिवदयाल सिंह जी (राधास्वामी) के शिष्य थे। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक (धरती पर अवतार) के पृष्ठ 55 पर।

श्री सावन सिंह जी ने अपने विचार तथा श्री शिवदयाल (राधास्वामी) के विचारों को पुष्ट करने के लिए ''सन्तमत प्रकाश'' पुस्तक 5 भागों में लिखी है। सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 261-262 पर ''श्री गुरु ग्रंथ साहेब'' से श्री नानक जी की अमरवाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की अमृतवाणी का हवाला देकर अपने मत को पुष्ट करने की कुचेष्टा की है। जो उनके विपरीत ही गई। जो इस प्रकार है :-

पुस्तक ''सन्तमत प्रकाश भाग-4'' के पृष्ठ 261 पर लिखा है कि ''गुरु ग्रन्थ साहेब'' में लिखा है :-

सोई गुरु पूरा कहावै, जो दो अख्खर का भेद बतावै। एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर को पावै।।
जै तू पढ़या पंडित बिन, दोय अख्खर बिन दोय नावां। प्रणवत नानक एक लंघाए, जे कर सच्च समावां।।

फिर परमेश्वर कबीर जी की वाणी का हवाला देकर लिखा है कि कबीर जी भी यही कहते हैं :-

कह कबीर अखर दोय भाख, होयगा खसम तो लेगा राख।

फिर पृष्ठ 262 पर (सन्तमत प्रकाश भाग-4) पर श्री नानक जी की वाणी का हवाला दिया है जो इस प्रकार है :-

उपरोक्त वाणी स्वयं परमेश्वर कबीर जी की है तथा परमात्मा प्राप्त सन्त नानक देव जी की है। इसका अनुवाद व भावार्थ श्री सावन सिंह जी ने गलत किया है कहा है कि वे दो अक्षर पारब्रह्म में आगे जाकर मिलेंगे। राधास्वामी पंथ के संत तथा शाखाओं के संत पांच नाम (ररंकार, औंकार, ज्योतिनिरंजन, सोहम् तथा सतनाम) तथा अकाल मूर्ती, सतपुरूष, शब्द स्वरूपी राम व राधास्वामी नाम दान करते हैं। ढाई घण्टे सुबह व ढाई घण्टे शाम हठ योग करने से मोक्ष बताते हैं। जो साधना किसी भी परमात्मा प्राप्त संत तथा परमेश्वर कबीर जी की अमरवाणी से मेल नहीं खाती।

पूर्वोक्त अमृतवाणी में श्री नानक जी तथा परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि ''तारणहार परम संत'' वही है। जो दो अक्खर का भेद बताता है, क्योंकि दो अक्खर का जाप करने को कहा है। गुरु मुख होकर अर्थात् गुरु जी जिन दो अक्खर के नाम जाप करने को कहते हैं, वह सतनाम है। उस सतनाम में दो अक्खर इस प्रकार हैं, ओम् तथा दूसरा-तत् है। जो सांकेतिक है। उसको संत रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

फिर ''एक नाम गुरु मुख जापै नानक होत निहाल'' जिसका भी अर्थ स्पष्ट है कि दो अक्खरों अर्थात् सतनाम से भिन्न एक नाम और है। जिसे आदि नाम या सारनाम कहा है। वह भी जाप करने का है। उसको भी गुरु जी ही दान करेगा।

एक श्री तुलसी दास हाथरस वाले संत हुए हैं। उन्होंने कबीर परमेश्वर जी की वाणी को पढ़कर स्वयंभू संत बनकर अपनी वाणी बनाकर ''घट रामायण''नामक पुस्तक-2 भागों में लिखी है। ''घट रामायण'' भाग-1 पृष्ठ 27 पर तुलसी दास जी हाथरस वाले स्पष्ट करते हैं कि ''पांचों नाम काल के जानों''...... फिर कहा है ''सतनाम'' ले जीव उबारी। आदि नाम ले काल गिराऊँ।

कृप्या देखें फोटो कापी पुस्तक ''घट रामायण'' पहला भाग के पृष्ठ 27 की।

भेद पिंड और ब्रह्मांड का २७

अंतर गुफा तहाँ चलि जाऊँ। जहँ साहिब के दरसन पाऊँ॥
पाँचो नाम जीव जब भाखा। छठवाँ नाम गुप्त करि राखा॥
पाँचो नाम काल के जानौ। तब दानी मन संका आनौ॥
निरगुन निराकार निरबानी। धर्मराय यों पाँच बखानी॥
जीव नाम निज कहै बिचारी। जानि बूझि दानी भऌ मागी॥
दानी सुनु बिधि बात हमारी। हम चलि जाइँ पुरुष दरबारी॥
सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ। आदि नाम लै काल गिराऊँ॥
सत्त नाम लै जीव उबारी। अस चल जाउँ पुरुष दरबारी॥

इससे भी स्पष्ट है कि पांच नाम काल के हैं। इनसे अन्य सतनाम तथा आदि नाम जिसे सारनाम भी कहते हैं, अन्य है जो मोक्ष दायक हैं।

निष्कर्ष :- पूर्ण संत तारणहार (सायरन) संत रामपाल दास जी महाराज हैं। जिन्होंने दो अक्खर का भेद बताया है। राधास्वामी वाले, सच्चा सौदा वाले, परम संत तारण हार नहीं हैं। ये सर्व नकली हैं, इनसे बचें तथा सन्त रामपाल जी महाराज के पास आकर अपना कल्याण कराऐं।

प्रार्थना :- कृप्या देखें श्री शिवदयाल जी उर्फ राधास्वामी पंथ के पूरे परिवार { ब्यास डेरे वाले, सच्चा सौदा सिरसा तथा जगमाल वाली, गंगवा (हिसार में) जयगुरु देव मथुरा वाले, सावन कृपाल मिशन दिल्ली वाले, श्री ठाकुर सिंह वाले तथा दिनोद भिवानी वाले, आगरा वाले स्वयं शिवदयाल सिंह जी हैं} का अज्ञान देखें इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 55 से 59 पर।

''तारणहार परम सन्त'' की अन्य पहचान

परमेश्वर कबीर जी ने परम सन्त तारणहार जो परमेश्वर कबीर जी का कृप्या पात्र होता है। उसकी पहचान बताते हुए कहा है :-

जो मम सन्त सत शब्द दृढ़ावै। वाकै संग सब राड़ बढ़ावै।
ऐसे सन्त महन्तन की करणी, धर्मदास मैं तोसे वरणी।।

इस अमर वाणी का भावार्थ है कि :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जो मेरा सन्त, सच्चे ज्ञान व सच्चे नाम (सतनाम) के विषय में दृढ़ता से बताएगा। उस के साथ, उस समय के सन्त तथा महन्त झगड़ा करेगें। क्योंकि वह सच्चा ज्ञान उन नकलियों के नकली ज्ञान का पर्दा फाश करेगा। यह पहचान भी उस सन्त की होगी। वर्तमान में सन्त रामपाल जी महाराज के सच्चे ज्ञान से बौखला कर करौंथा काण्ड करा दिया। परन्तु परमेश्वर कबीर जी का पंजा सिर पर बराबर बना रहा जिस कारण संत रामपाल जी महाराज तथा अनुयाई सुरक्षित रहे। परमेश्वर का प्रचार पहले से कई गुना बढ़ गया। परमेश्वर सत्य का साथ देते हैं।

विशेष :- पुस्तक ''जय गुरुदेव की अमरवाणी'' भाग-2 के पृष्ठ 43 पर लिखा है कि ''भारत जैसे राष्ट्र में हम प्रत्येक व्यक्ति का आदर करते हैं। इसलिए हमारे विधान में आलोचना करने की स्वत्रंता है और हमारा अनुरोध है कि आलोचना सत्य को सामने रखते हुए करनी चाहिए। जिससे जनहित हो।(शाकाहारी पत्रिका 14 जून 1971)

नोट :- कृप्या पढ़ें फोटो कापी पुस्तक ''जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज'' के पृष्ठ 27-28 तथा पृष्ठ 78 से 81 की इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 26 से 27 पर। जिसमें स्पष्ट है कि श्री शिवदयाल जी का कोई गुरु नहीं था। जिस कारण से श्री शिवदयाल सिंह (राधा स्वामी पंथ के प्रवर्तक) भूत बने और अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश करके पहले की तरह हुक्का पीने लगे व भोजन खाने लगे तथा शंका समाधान करने लगे।

(३३) चूं कि अनामी पुरुष या मालिक कुल में सर्व शक्ति और ताक़त है और कुल का भंडार है और उसकी कुदरत से रचना का सब काम चल रहा है और जो परम संत वहाँ से आते हैं, वे भी वही ताक़त और समर्थता लेकर आते हैं तो उनमें और अनामी पुरुष में कुछ ज़र्रा भर भी फ़र्क़ नहीं होता है, तो जब इस संसार में जीवों के उपकार के वास्ते अनामी पुरुष या परम संत आन कर प्रगट होते हैं, तो उनसे बड़ा संसार में कोई नहीं होता है, तो वे किसी को गुरू नही बना सकते हैं, इसी वजह से

स्वामीजी महाराज का कोई गुरू नहीं था, और न किसी से उन्होंने परमार्थ का उपदेश लिया, बल्कि

(७१) अब बुक्कीजी का कि जो शिब्बोजी की छोटी बहिन थीं, थोड़ा सा हाल लिखा जाता है। यह शिब्बोजी से कुछ अर्से बाद स्वामीजी महाराज के चरनों में आईं थीं। जब इन्होंने कुछ दिन सतसंग किया और बचन स्वामीजी महाराज के सुने और वे बचन हिरदे में समा गये, तब इनके प्रेम की हालत अजीब थी कि जब स्वामीजी महाराज बचन या अर्थ पोथियों का करते, तब इनकी आंखें सुर्ख़ अंगारा सी हो जाती थीं और आँसू बराबर टपकते रहते थे और बहुत देर तक यानी घंटों उन बचनों का नशा बना रहता था और फिर जब स्वामीजी महाराज कथा से फ़ुर्सत पाकर हुक़्क़ा पीते थे या अभ्यास

१-तीसरे पहर।

जीवन चरित्र स्वामीजी महाराज (७९)

का रस लेते हुए या कथा कहने को बैठते थे, तो बुक्कीजी महाराज के चरनों का अंगूठा मुँह में रक्खे हुए घंटों चरनामृत का रस लेती रहती थीं । और जब कोई मत्था टेकने के वास्ते हटाना चाहता तो वे चरन नहीं छोड़ना चाहती थीं । तब मत्था टेकने वाले से कह दिया जाता था कि तुम दूसरे चरन पर मत्था टेक लो और उस प्यासी को मत हटाओ । और वह बयान किया करती थीं कि मुझे इसमें ऐसा रस आता है कि जैसे कोई दूध पीता है। इनके भजन का यह हाल था कि आठ घंटे नौ घंटे रोज़ भजन किया करती थीं । इन को स्वामीजी महाराज के दर्शनों का पूरा आधार हो गया था और सुरत भी ऊँचे देश में पहुँचती थी । जब स्वामीजी महाराज अंतर्द्धान हुए, तब बुक्कीजी की यह कैफ़ियत हुई कि दिन रात बेहोश पड़ी रहती थीं और दो दो दिन हाजात ज़रूरी[1] को भी रफ़ा करने नहीं जाती थीं और सुरत स्वामीजी महाराज के चरणों में लगी

(८०) जीवन चरित्र स्वामीजी महाराज

रहती थी । क़रीब डेढ़ महीने के यह हाल रहा । सब को ख़ौफ़ हुआ कि शायद इनकी देह छूट जावे । तब स्वामीजी महाराज ने इनको दर्शन दिये और फ़रमाया कि जिस तरह तुम सेवा पेश्तर किया करती थी, उसी तरह से करो । और फिर उसी रोज़ से बुक्कीजी भोग भी तैयार करती थीं और मेरे पन्नी गली के मकान पर पहिले दस्तूर के माफ़िक़ पलंग बिछाती और हुक़्क़ा भरती थीं । वह पलंग अभी तक बिछा रहता है । ग़रज़ कि जिस तरह से कि पेश्तर सेवा किया करती थीं, उसी तरह से कुल काम करने लगीं । और स्वामीजी महाराज उनको ध्यान के समय में प्रगट दर्शन देते थे और कुल सेवा उसी तरह क़बूल फ़रमाते थे, जैसा कि अंतर्द्धान होने के पेश्तर करते थे । बुक्कीजी को महाराज उनके अख़ीर दम तक प्रगट रहे, यहाँ तक कि जिस किसी को जब कोई बात स्वामीजी महाराज से अर्ज़ करनी होती थी तो वे बुक्कीजी के ज़रिये से दरियाफ़्त कर लिया करते थे, यानी बुक्किजी अभ्यास के समय स्वामीजी

यह फोटो कापी पृष्ठ 79-80 की है। इसमें स्पष्ट है कि श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश करके भोजन भी खाता था। हुक्का भी पीता था। प्रेत योनी प्राप्त शिवदयाल जी अपनी शिष्या बुक्की के शरीर का प्रयोग करता था। बुक्की के शरीर में श्री शिव दयाल जी प्रेत उसके अन्तिम दम तक रहे।

जीवन चरित्र स्वामीजी महाराज (८१)

महाराज को प्रगट करके हम-कलाम[1] हुआ करती थीं । इस नियाज़मन्द को भी जब कभी भीड़ के समय पर घबराहट होती थी और किसी तरह से अक़ल काम नहीं देती थी, तब बुक्कीजी के ज़रिये से स्वामीजी महाराज का हुक्म लिया करता था, और जैसा हुक्म होता था, उसी के मुवाफ़िक़ बंदा कारबंद होता था और इसी तरह पर राय साहब ने भी मौज की थी कि बुक्कीजी के ज़रिये से दो चार बार हुक्म हासिल किये थे ।

यह फोटो कापी पृष्ठ 81 की है। इसमें लिखा है कि ''जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज'' का लेखक प्रताप सिंह (जो श्री शिव दयाल जी का छोटा भाई था) कह रहा है कि मैंने कई बार बुक्की में प्रवेश श्री शिव दयाल जी से कई बार प्रार्थना करके आदेश प्राप्त किए थे। इस से स्वसिद्ध है कि श्री शिव दयाल जी प्रेत योनी को प्राप्त हुए। उनका जीवन नष्ट हुआ। अन्य अनुयाई भी वही साधना कर रहे हैं। उनकी भी यही दशा होगी। इसलिए सर्व से प्रार्थना है कि आप संत रामपाल दास जी महाराज से शास्त्र अनुकूल दो अक्षर अर्थात् सतनाम की साधना प्राप्त करके जीवन सफल करें।

''कबीर परमेश्वर जी द्वारा स्वयं अवतार धारण करने की भविष्यवाणी''

निम्न उल्लेख पवित्र कबीर सागर से लिया गया है। इसमें परमेश्वर कबीर जी ने लगभग 600 वर्ष पूर्व कहा था कि काल निरंजन मेरे (कबीर) नाम से 12 पंथ तथा बहुत से पंथ चलायेगा। उनमें जो बारहवाँ पंथ गरीबदास द्वारा चलाया जाएगा। उसमें मेरी महिमा की वाणी पुनः प्रकट होगी। यह मेरे द्वारा ही किया जायेगा। उसी पंथ में आगे चलकर नाद धारा में हम स्वयं ही आऐंगे। सर्व पंथों को मिटा कर एक पंथ चलाऐंगे।

कृप्या अब पढ़ें विस्तृत विवरण :- परमेश्वर ने स्वयं न आकर संत रामपाल दास जी महाराज को अपनी शक्ति प्रदान करके भेजा है। जैसे भारत के माननीय राष्ट्रपति जनता से नहीं चुने जाते। वे सांसदों द्वारा चुने जाते हैं। राष्ट्र के मालिक हैं। उनके आधीन सर्व मंत्री गण, प्रधानमंत्री होते हैं। जो जनता द्वारा सीधे चुने जाते हैं। वे सांसद बनते हैं। फिर पद प्राप्त करते हैं। वे भी कम शक्ति नहीं रखते वह शक्ति राष्ट्र के द्वारा ही उन्हें प्रदान की जाती है। इसी प्रकार इस प्रकरण को समझें। जैसे परमेश्वर जन्म नहीं लेते अवतार जन्म लेते हैं। अवतार जिस भी प्रभु के लोक से आते हैं, वे उसी से शक्ति प्राप्त होते हैं। उसी के प्रतिनिधि होते हैं। संत रामपाल दास जी महाराज के रूप में कबीर परमेश्वर का अवतार धार कर आने के प्रमाण देखें पवित्र कबीर सागर में जो आपके समक्ष फोटो कापी सहित प्रस्तुत है। कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ 136 पर :-

बारह पंथों का विवरण दिया है। बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ, बारहवां पंथ लिखा है कबीर सागर, कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1870 पर) के विषय में कबीर सागर कबीर वाणी पृष्ठ नं. 136-137 पर वाणी लिखी है कि :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद :--

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भुले जीव न जाय ठिकाना।।
(प्रथम) आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा।
दूसर जग में जागू भ्रमावै। बिना भेद ओ ग्रन्थ चुरावे।।
तीसरा सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई।।
चौथा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेद की निर्णय ठानी।।
पंचम पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै।।
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवन की करी है हानी।।
छठवाँ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा।।
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै।।
सातवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा।।
आठवाँ जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी।।
नौमा राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रमलै जीव दृढ़ावै।।

दशवां ज्ञानकी काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।
ग्यारहवाँ भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञान की राह चलावै।।
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमेंसो शब्द होय निरधारा।।
संवत सत्रासै पचहत्तर होई। तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे।।
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्म में ठौर ना पावै।।
बारवै पन्थ प्रगट होवै बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मरम न पावैं। ये बारा पंथ हमहीको ध्यावैं।।
बारहें पन्थ हमही चलि आवै। सब पंथ मिटा एकहीपंथ चलावै।।
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा।।
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना।।
धर्मराय से मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी।।
धर्मदास मोरी लाख दोहाई,मूल(सार)शब्द बाहर नहीं जाई।
मूल(सार)ज्ञान बाहर जो परही, बिचली पीढी हंस नहीं तरहीं।
तेतिस अर्ब ज्ञान हम भाखा, तत्वज्ञान गुप्त हम राखा।
मूलज्ञान (तत्वज्ञान) तब तक छुपाई, जब लग द्वादश पंथ न मिट जाई।

कबीर सागर अध्याय जीव धर्म बोध (बोध सागर) पृष्ठ 1937 पर लिखा है :-
पुस्तक=कबीर सागर=अध्याय जीव धर्म बोध (बोध सागर) पृष्ठ 1937 पर प्रमाण :-

धर्मदास तोहि लाख दोहाई। सार शब्द बाहर नहिं जाई।।
सार शब्द बाहर जो परि है। बिचलै पीढी हंस नहीं तरि है।।
युगन–युगन तुम सेवा किन्ही। ता पीछे हम इहां पग दीनी।।
कोटिन जन्म भक्ति जब कीन्हा। सार शब्द तब ही पै चीन्हा।।
अंकूरी जीव होय जो कोई। सार शब्द अधिकारी सोई।।
सत्यकबीर प्रमाण बखाना। ऐसो कठिन है पद निर्वाना।।

कबीर सागर ''कबीर बानी'' नामक अध्याय (बोध सागर) पृष्ठ नं. 134 से 138 पर लिखे विवरण का भावार्थ है :-

पृष्ठ नं. 134 पर बारह वंशों (अंसों) के बाद तेरहवें वंश (अंस) में सब अज्ञान अंधेरा मिट जाएगा। संत गरीबदास पंथ तक काल के बारह वंश अपनी - 2 चतुरता दिखाएगें। पृष्ठ नं. 136-137 पर ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमारी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी हरियाणा वाले का जन्म संवत् 1774 में हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है दूसरा कारण यह भी हो सकता है कि संत गरीब दास जी का जन्म वैशाख मास की पूर्णमासी को हुआ। संवत् वाला वर्ष चैत्र से प्रारम्भ होता है जो वैसाख मास के साथ वाला है। कई बार तिथियों

के घटने बढ़ने से दो मास बन जाते हैं। उस समय शिक्षा का अभाव था तिथि व संवत् बताने वाले भी अशिक्षित होते थे। जिस कारण से संवत् 1775 के स्थान पर गरीबदास जी का जन्म संवत् 1774 लिखा गया होगा परन्तु यह संकेत संत गरीबदास जी की ओर है।)।

भावार्थ है कि बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा उस पंथ सहित अर्थात् उपरोक्त बारह पंथों के अनुयाई मेरी महिमा का गुणगान करेगें तथा हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र से अपरिचित होने के कारण साधक असंख्य जन्म सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द तथा सारज्ञान (तत्वज्ञान) छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक जिला (वर्तमान में, सोनीपत, झज्जर तथा रोहतक जो पहले एक ही जिला था) दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। संत रामपाल दास जी महाराज का पैतृक गाँव धनाना इसी पुराने रोहतक जिले में है। सन् 1951 में संत रामपाल दास जी महाराज का जन्म हुआ था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास लिखा है।

कबीर साहेब के पंथ में काल द्वारा प्रचलित बारह पंथों का विवरण (कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से) :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।

विशेष :- यहाँ पर प्रथम पंथ का संचालक नारायण दास लिखा है जबकी कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ 136 पर प्रथम पंथ का संचालक चूड़ामणी लिखा है, शेष प्रकरण ठीक है। इसमें भी दामाखेड़ा वालों ने चुड़ामणी को हटाने का प्रयत्न किया है। उसके स्थान पर नारायण दास लिख दिया। जबकि नारायण दास तो बिल्कुल विपरित था। उसका तो विनाश हो गया था। इसलिए प्रथम पंथ चुड़ामणी जी का ही मानना चाहिए। दूसरी बात है कि कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 136 पर लिखी वाणी में चूड़ामणी को मिला कर ही बारह पंथ बनते हैं।

विचार करें :- परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं न आकर संत रामपाल दास जी महाराज को अपनी शक्ति प्रदान करके भेजा है। जैसे भारत के माननीय राष्ट्रपति जनता से नहीं चुने जाते। वे सांसदों द्वारा चुने जाते हैं। राष्ट्र के मालिक हैं। उनके आधीन प्रधानमंत्री तथा सर्व मंत्री गण, होते हैं। जो जनता द्वारा सीधे चुने जाते

हैं। वे सांसद बनते हैं। फिर पद प्राप्त करते हैं। वे भी कम शक्ति नहीं रखते वह शक्ति राष्ट्र के द्वारा ही उन्हें प्रदान की जाती है। इसी प्रकार इस प्रकरण को समझें। जैसे परमेश्वर जन्म नहीं लेते अवतार जन्म लेते हैं। अवतार जिस भी प्रभु के लोक से आते हैं, वे उसी से शक्ति प्राप्त होते हैं। उसी के प्रतिनिधि होते हैं। संत रामपाल दास जी महाराज के रूप में कबीर परमेश्वर का अवतार धार कर आने के प्रमाण देखें पवित्र कबीर सागर में जो आपके समक्ष फोटो कापी सहित प्रस्तुत है। अब वही एक पंथ संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा परमेश्वर कबीर जी की आज्ञा व शक्ति से चलाया जा रहा है जो सभी पंथों को एक करेगा। अब उसी बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने वह पूर्ण ज्ञान (तत्वज्ञान) संत रामपाल दास जी महाराज तेरहवें वंश द्वारा प्रकट कराया है।

कबीर वाणी पृष्ठ 134 :- ''वंश प्रकार''

प्रथम वंश उत्तम ।1। दूसरा वंश अहंकारी ।2। तीसरा वंश प्रचंड ।3। चौथे वंश बीरहे ।4। पाँचवें वंश निद्रा ।5। छटे वंश उदास ।6। सांतवें वंश ज्ञानचतुराई ।7। आठे द्वादश पन्थ विरोध ।8। नौवं वंश पंथ पूजा ।9। दसवें वंश प्रकाश ।10। ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा ।11। बारहवें वंश प्रगट होय उजियारा ।12। तेरहवें वंश मिटे सकल अँधियारा ।13।

भावार्थ :- उपरोक्त विवरण में प्रथम वंश जो उत्तम लिखा है वह चूड़ामणी साहेब के विषय में है, दूसरा वंश अहंकारी लिखा है ''यागौदास'' पंथ है, तीसरा वंश प्रचण्ड लिखा है, यह सूरत गोपाल पंथ है, चौथा वंश बीरहे लिखा है, यह ''मूल निरंजन पंथ'' है। पांचवाँ वंश ''पूजा टकसार पंथ'' है। छठा वंश ''उदास'' यह ''भगवान दास पंथ'' सातवां वंश ''ज्ञान चतुराई'' यह सत्यनामी पंथ है। आठवाँ वंश''द्वादश पंथ विरोद्ध'' यह कमाल का पंथ है। नौवाँ वंश ''पंथ पूजा'' यह राम कबीर पंथ है। दशवाँ वंश प्रकाश यह प्रेमधाम (परम धाम) की वाणी पंथ है। ग्यारहवाँ वंश ''प्रकट पसारा'' यह जीवा पंथ है। बारहवाँ वंश ''गरीबदास पंथ'' है। इसके विषय में कहा है कि बारहवें वंश अर्थात् गरीबदास जी द्वारा मेरी महिमा का उजियारा अर्थात् कुछ प्रकाश होगा। भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास जी द्वारा परम पूज्य कबीर परमेश्वर जी की महिमा की वाणी प्रकट की जाएगी। तेरहवाँ वंश यह यथार्थ कबीर पंथ है जो सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा बिचली पीढ़ी के उद्धार के लिए प्रारम्भ कराया है। कबीर परमेश्वर ने अपनी वाणी में काल से कहा था कि तेरे बारह पंथ चल चुके होगें तब हम अपना नाद (वचन-शिष्य परम्परा वाला) वंश अथार्त् अंश भेजेगें। यह मेरा वचन उस समय सत्य सिद्ध होगा जब कलयुग पचपन सौ पांच वर्ष (5505 वर्ष) बीत चुका होगा अर्थात् सन् 1997 में यह वचन सत्य सिद्ध होगा। उसी आधार पर यह विवरण लिखा है। बारहवां वंश (अंश) सन्त गरीबदास जी से कबीर वाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की महिमा का कुछ-कुछ संस्य युक्त ज्ञान विस्तार होगा। जैसे सन्त गरीबदास जी की परम्परा में परमेश्वर कबीर जी को विष्णु अवतार मान कर साधना तथा प्रचार

करते हैं। संत गरीबदास जी ने ''असुर निकन्दन रमैणी'' में कहा है ''साहेब तख्त कबीर खवासा। दिल्ली मण्डल लीजै वासा। सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी'' **भावार्थ है कि सन्त गरीबदास जी वाला बारहवाँ पंथ (अंश) तो काल तक साधना बताने वाला कहा है। इसलिए केवल कबीर महिमा की वाणी ही संत गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई है। उसमें कहा है कि कबीर परमात्मा के तख्त अर्थात् सिंहासन का ख्वास अर्थात् नौकर दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र में आएगा वह उस क्षेत्र के कृपण अर्थात् कंजूस व्यक्तियों को परमात्मा की महिमा बता कर जगाएगा अर्थात् दान-धर्म में उनकी रूची बढ़ाएगा। वह तेरहवाँ अंश कबीर परमात्मा के दरबार का उच्चतम् सेवक होगा। वह कबीर परमेश्वर का अत्यंत कृपा पात्र होगा। ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 1 मन्त्र 7 में उप अग्ने अर्थात् उप परमेश्वर कहा है। इसलिए पूर्ण परमात्मा अपना भेद छुपा कर दास रूप में प्रकट होकर अपनी महिमा करता है। इसलिए उसी परमेश्वर को ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 4 मन्त्र 6 में तस्करा अर्थात् आँखों मे धूल झोंक का कार्य करने वाला तस्कर कहा है। श्री नानक जी ने उसे ठगवाड़ा कहा है। इसलिए तेरहवें अंश को (सन्त रामपाल दास को) उनका दास जाने चाहे स्वयं पूर्ण प्रभु का उपशक्तिरूप(उप अग्ने्) समझें। इसलिए लिखा है कि बारहवें अंश की परम्परा में हम ही चलकर तेरहवें अंश रूप में आऐंगे। वह तेरहवां वंश (अंश) पूर्ण रूप से अज्ञान अंधेरा समाप्त करके परमेश्वर कबीर जी की वास्तविक महिमा तथा नाम का ज्ञान करा कर सभी पंथों को समाप्त करके एक ही पंथ चलाएगा, वह तेरहवां वंश हम (परमेश्वर कबीर) ही होंगे। फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 134**

(१३४) कबीरबानी

वंशप्रकार

प्रथम वंश उत्तम ।१। दूसरा वंश अहंकारी ।२। तीसरा वंश प्रचंड । ३ । चौथे वंश बीरहे ।४। पाँचवेंवंशनिद्रा ।५। छटे वंश उदास ।६। सांतवें वंश ज्ञानचतुराई । ७ । आठे द्वादश पन्थ विरोध । ८ । नौवें वंश पंथ पूजा । ९ । दसवें वंश प्रकाश ।१०। ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा ।११। बारहवें वंश प्रगट होय उजियारा । १२ । तेरहवें वंश मिटे सकल अँधियारा । १३ । एती दगा कालकी समाई है। तत्त्वबिन्दुकी टेक रह जाई है॥

इस फोटो कापी में 13 वंशों का विवरण है। जिनमें 12 तो वही है। जो बारह पंथों के मुखिया थे। जिनमें काल का दाव लगा रहा है। 13 वां वंश संत रामपाल दास जी महाराज हैं। जिनके द्वारा अध्यात्म का सर्व अज्ञान अंधेरा नाश कर दिया गया है।

फोटो कापी कबीर साहेब (बोध सागर=स्वसम वेद बोध) के पृष्ठ 120 की।

(१२०) बोधसागर

निरंजन वचन--चौपाई

धर्मराय अस बिनती ठानी। मैं सेवक दुतिया नहिं मानी ॥
ज्ञानी बिनती एक हमारा। सो न करो मोर होय बिगारा॥
पूरुष मोकहँ दीनो राजू। तुमहू देव होय तब काजू ॥
बिनती एक करो हो ताता। दृढ़ करि जान्यौ हमरी बाता ॥

फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर= स्वसमबेद बोध) के पृष्ठ 121 की।

स्वसमवेदबोध (१२१)

कहा तुमार जीव नहिं मानै। हमरी दिशभै बाद बखानै ॥
मैं दृढ़ फंदा रच्यौ बनाई। जामें जीव परा अरुझाई ॥
वेद शास्त्र सुमिरन गुन नाना। पुत्र हैं तीन देव परधाना ॥
देवल देव पखान पुजाई। तीरथ व्रत जप तप मन लाई ॥
यज्ञ होम अरु नियम अचारा। और अनेक फंद हम डारा ॥
जौं ज्ञानी जैहो संसारा। जीव न मानै कहा तुमारा ॥

ज्ञानी वचन--चौपाई

ज्ञानी कहै सुनो धर्मराई। काटो फंद जीव ले जाई ॥
जेतो फंद रची तुम भारी। सत्यशब्द ले सकल बिडारी ॥
जिहि जिवको हम शब्द दृढै हैं। फंद तुम्हार सबै मुक्तैहैं ॥

निरंजन वचन चौपाई

सतयुग त्रेता द्वापर माहीं। तीनों युग जिव थोरे जाही॥
चौथा युग जब कलऊ आई। तब तुव शरन जीव बहु जाई ॥
ऐसे वचन हारि मोहि दीजै। तब संसार गौन तुम कीजै ॥

ज्ञानी वचन चौपाई

अरे काल परपंच पसारा। तीनो युग जीवन दुख डारा ॥
बिनती तोरि लीन मैं मानी। मोकहँ ठगे काल अभिमानी ॥
चौथा युग जब कलऊ आई। तब हम अपनो अंश पठाई ॥
काल फन्द छूटे नर लोई। सकल सृष्टि परवानिक होई ॥
घर घर देखो बोध बिचारा। सत्य नाम सब ठौर उचारा ॥
पांच हजार पांचसौ पांचा। तब यह बचन होयगा सांचा ॥
कलियुग बीत जाय जब येता। सब जिव परम पुरुषपद चेता ॥

ये फोटो कापीयाँ कबीर सागर (बोध सागर=स्वसमवेद बोध) के पृष्ठ 120-121 की हैं। इनमें वह वर्णन है जिसमें परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी

अपने सतलोक वाले पुत्र जोगजीत के रूप में सन्त (ज्ञानी के) वेश में काल निरंजन के इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में गए। काल निरंजन ने पूछा जोगजीत तूं यहां किसलिए आया ? यदि कोई संदेश परमात्मा का लाया है तो वह बता ? तब परमेश्वर ने कहा था कि परमेश्वर का आदेश सुन! मैं नीचे के लोकों में जाऊँगा तेरी असलीयत बताऊंगा कि यह परमात्मा नहीं है तथा कबीर परमेश्वर की महिमा सुनाऊंगा। सतनाम मंत्र जो दो अक्षर का है। उसका जाप करा कर सर्व प्राणियों को सतलोक ले जाऊंगा। यह सुनकर काल निरंजन ने प्रथम तो परमेश्वर को जोगजीत समझ कर मारना चाहा। परन्तु समर्थ शक्ति का कुछ न बिगाड़ सक। इसके विपरित स्वयं ही शक्तिहीन होकर पाताल लोक में जा गिरा, फिर परमेश्वर इसे उसी स्थान पर लाए। तब इसने विनम्र होकर जोगजीत रूप में कबीर परमेश्वर से प्रार्थना की कि ''हे बड़े भाई आप तीन युगों में जीव थोड़े (कम) ले जाना। चौथे युग में जितने चाहो जीव ले जाना। जो जीव तुम्हारा ज्ञान व नाम मंत्र ग्रहण करे व आपका, तथा शेष जो मेरी भक्ति करें वे मेरे, काल ने कहा बचनबद्ध होकर कहिएगा। परमेश्वर ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तीन युगों में सतयुग, त्रेता तथा द्वापर में जीव कम ले जाऊंगा तथा चौथे युग में अधिक जीवों को अपना ज्ञान समझा कर ले जाऊंगा।

जब काल निरंजन ने देखा कि अनुबंध (Agreement) हो गया। उसी समय अपनी असलीयत पर आ गया तथा बोला जोगजीत बेसक नीचे संसार में जाओ। जिस समय कलयुग आवेगा तब तक सर्व प्राणियों को शास्त्र विरूद्ध साधना के ज्ञान से दृढ़ करवा दूंगा। सबको देवी, देवताओं, मन्दिर, मूर्ति पूजाओं पर दृढ़ करवा दूंगा। बारह नकली पंथ कबीर नाम से चलाऊंगा तथा अन्य पंथ चलाऊंगा इस प्रकार सर्व जीवों को भ्रमाऊंगा। जीव तुम्हारी बात पर विश्वास न करके हमारी ओर होकर तुम्हारे साथ वाद-विवाद किया करेंगे। तब परमेश्वर ने कहा है कि मैं कलयुग में अपना अंश अवतार धरती पर भेजूंगा। इस समय सर्व पृथ्वी पर सर्व मानव शरीरधारी प्राणी हमारे ज्ञान को ग्रहण करके उपदेश प्राप्त करेंगे। सबका फंद छूटेगा अर्थात् सब मोक्ष प्राप्त करेंगे। कलयुग में घर-घर में परमेश्वर कबीर जी की महिमा के बोध (ज्ञान) की चर्चा होगी। सर्व मनुष्य सारा दिन व्यर्थ की बातों में व्यतीत न करके परमात्मा के ज्ञान की चर्चा करके पुण्य के भागी होंगे। हमारे भेजे गए अंश अर्थात् धरती पर अवतार (सन्त रामपाल दास जी की ओर संकेत है) से सतनाम (जो दो अक्षर का है जिसे सत्यनाम भी कहते हैं) प्राप्त करके जाप किया करेंगे। यह प्रचार सब ठौर अर्थात् सम्पूर्ण विश्व में होगा। सम्पूर्ण विश्व सतनाम का जाप किया करेगा। मेरा यह वचन (कथन) उस समय सत्य होगा जिस समय कलयुग पचपन सौ पांच वर्ष (5505 वर्ष) बीत चुका होगा। कलयुग इतना समय बीत जाने के पश्चात् सर्व मानव परम पुरूष अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म के पद अर्थात् अमर स्थान को उनकी यथार्थ भक्ति विधी को जानेंगे तथा अपना कल्याण कराऐंगे।

फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर=कबीर चरित्र बोध) के पृष्ठ 1870 की।

(१८७०) बोधसागर ८६

कबीर साहबके पंथोंका वृत्तान्त

१-नारायणदासजीका पंथ। २-यागौदासजीकापंथ। ३-सूरत गोपाल पंथ। ४-मूलनिरञ्जनका पंथ। ५-टकसारी पंथ। ६-भगवान्दासजी का पंथ। ७-सत्यनामी पंथ। ८-कमालीपंथ। ९-राम कबीर पंथ। १०-प्रेमधामकी वाणी। ११-जीवा पंथ। १२-गरीबदास पंथ।

यह तो कबीर साहबके बारह पंथ हैं। इनमें कोई २ अच्छे हैं। और कोई निर्बल विश्वासके हैं। और रामकबीरके लोग ठाकुरपूजा करते हैं। और सत्यनामियोंके ध्यान भी विचलित प्रायः हैं। इन बारह पंथोंका यही विवरण है और इन बारह पंथोंके अतिरिक्त कबीर साहबके और पंथ भी हैं।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 136 की।

(१३६) कबीरबानी

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना॥
ताते आगम कहि हम राखा। वंश हमार चूरामणि शाखा॥
प्रथम जगमें जागू भ्रमावै। विना भेद ओ ग्रन्थ चुरावै॥
दुसरि सुरति गोपालहि होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावे सोई॥
तिसरा मूल निरञ्जन बानी। लोकवेदकी निर्णय ठानी॥
चौथे पंथ टकसार भेद लै आवै। नीर पवन को सन्धि बतावै॥
सो ब्रह्म अभिमानी जानी। सो बहुत जीवनकी करी है हानी॥
पांचौ पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहें हममें देखा॥
पांच तत्व का मर्म दृढ़ावै। सो बीजक शुक्ल ले आवै॥
छठवाँ पंथ सत्यनामि प्रकाशा। घटके माहीं मार्ग निवासा॥
सातवां जीव पंथले बोले बानी। भयो प्रतीत मर्म नहिं जानी॥
आठवे राम कबीर कहावै। सतगुरु भ्रम लै जीव दृढावै॥
नौमे ज्ञानकी काल दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै॥
दसवें भेद परमधाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी॥
साखी भाव प्रेम उपजावै। ब्रह्मज्ञानकी राह चलावै॥
तिनमें वंश अंश अधिकारा। तिनमेंसो शब्द होय निरधारा॥
संवत सत्रासै पचहत्तर होई। तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई॥

इस फोटो कापी में प्रथम जागु दास का पंथ लिया है। यह उचित नहीं है। प्रथम पंथ चूड़ामणी जी का है। दूसरा जागू दास।-------------संवत् सत्रासै पचहत्तर

होई----------यहाँ से बारहवें पंथ अर्थात् गरीब दास पंथ के विषय में वर्णन है।

फोटो कापी कबीर सागर (कबीर वाणी = बोध सागर) पृष्ठ 137 की।

बोधसागर (१३७)

आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावे। कोली चमार सबके घर खावे॥
साखि हमार लै जिव समुझावै। असंख्य जन्ममें ठौर ना पावै॥
बारवें पन्थ प्रगट है बानी। शब्द हमारेकी निर्णय ठानी॥
अस्थिर घरका मरम न पावै। ये बार पंथ हमहीको ध्यावै॥
बारहे पन्थ हमही चलि आवैं। सब पंथ मिट एकहीपंथ चलावैं॥
तब लगि बोधो कुरी चमारा। फेरी तुम बोधो राज दर्बारा॥
प्रथम चरन कलजुग नियराना। तब मगहर माडौ मैदाना॥
धर्मरायसे मांडौ बाजी। तब धरि बोधो पंडित काजी॥

कलियुगको अंत पठचते

ग्रहण परै चौंतीससो वारा। कलियुग लेखा भयो निर्धारा॥
३४००ग्रहणपरैसो लेखाकीन्हा। कलियुग अंतहु पियाना दीन्हा॥
पांच हजार पाँचसौ पांचा। तब ये शब्द होगया सांचा५५०५

किया सोगंद

धर्मदास मोरी लाख दोहाई। मूल शब्द बाहेर न जाई॥
पवित्र ज्ञान तुम जगमों भाखौ। मूलज्ञान गोइ तुम राखौ॥
मूलज्ञान जो बाहेर परही। बिचले पीढीवंशहंस नहिं तरही॥
तेतिस अर्ब ज्ञान हम भाखा। मूलज्ञान गोए हम राखा॥
मूलज्ञान तुम तब लगि छपाई। जब लगि द्वादश पंथ मिटाई॥

इस फोटो कापी में लिखा है कि कबीर परमेश्वर ने कहा था कि बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ में) आगे चलकर हम ही आऐंगे। सब पंथ मिटाकर एक पंथ चलायेगें। यही प्रमाण कबीर सागर - स्वसम बोध = बोध सागर के पृष्ठ 171 पर भी है कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 37 पर। परमेश्वर कबीर जी के प्रतिनिधि सन्त रामपाल दास जी महाराज हैं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा था। यह मेरा कथन उस समय सत्य होगा जब कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका होगा। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' जो शंकराचार्य द्वारा लिखी है। इसके पृष्ठ 42 पर कहा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर हुआ था। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि आदि शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ था। इस प्रकार 2000 सन् को कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है। अब गणित की रीति से जानते हैं कि 5505 कलयुग कौन से वर्ष में आता है। सन् 2000 को ईसा जी के जन्म को 2000 वर्ष बीत गए। इससे 508 वर्ष पूर्व आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के अनुसार कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म होना कहा है। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग (3000+2000+508) 5508 वर्ष बीत चुका है।

''कलयुग का 5505 वर्ष कौन से सन् में पूरा होता है''

सन् 2000 को कलयुग 5508 वर्ष बीत चुका है। सन् 1999 को 5507, सन् 1998 को 5506, सन् 1997 को 5505 वर्ष बीत चुका है। आप जी को याद रहे कि सन्त रामपाल दास जी महाराज ने अपने प्रवचनों में कहा है कि फाल्गुन शुद्धि एकम् 1997 को दिन के 10 बजे परमेश्वर कबीर जी मुझे मिले थे तथा सारनाम को प्रदान करने का उचित समय बताकर तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तरध्यान हो गये थे। कृप्या पढ़े पुस्तक आध्यात्मिक ज्ञान गंगा पृष्ठ 538 पर।

''कबीर परमेश्वर जी द्वारा अवतार धारण का समय''

सत कबीर वचन (अथ स्वस्मवेद की स्फुटवार्ता--चौपाई)

फोटो कापी कबीर सागर (बोध सागर = स्वसमवेदबोध) पृष्ठ 171 की।

दोहा–पांच सहस अरु पांचसौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरुष फरमान तब, जग तारनको आय॥
हिन्दु तुर्क आदिक सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नामकी साख गहि, पावैं पद निर्बान॥
यथा सरितगण आपही, मिलैं सिन्धुमें धाय।
सत्य सुकृत के मध्ये तिमि, सबही पंथ समाय॥
जबलगि पूरण होय नहिं, ठीकेको तिथि वार।
कपट चातुरी तबहिलों, स्वसमबेद निरधार॥
सबहिं नारि नर शुद्ध तब, जब टीका दिन अंत।
कपट चातुरी छोड़िके, शरण कबीर गहंत॥
एक अनेक न ह्वै गयो, पुनि अनेक हो एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनामकी टेक॥
घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय।
कलियुगमें इक है सोई, बरते सहज सुभाय॥
कहा उग्र कह छुद्र हो, हर सबकी भवभीर।
सो समान समदृष्टि है, समरथ सत्य कबीर॥

यह फोटो कापी पवित्र पुस्तक कबीर सागर के अध्याय स्वसमवेद अर्थात् सुक्ष्मवेद = बोधसागर के पृष्ठ 171 की है। परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि ''जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत जायेगा उस समय महापुरूष मेरी आज्ञा से विश्व उद्धार के लिए प्रकट होगा। वह महापुरूष ''सतनाम'' का भेदी होगा। वह अधिकारी होगा, उस सत्यनाम (सतनाम) को प्रदान करने का। विश्व के सर्व हिन्दू, मुसलमान व अन्य धर्मों में विभाजित मानव तथा अन्य प्राणी भी जो मानव जीवन प्राप्त करेगें। वे सर्व सत्यनाम (सतनाम) की महिमा से परिचित होकर उस सच्चे नाम को उस महापुरूष (मेरे दास) से प्राप्त करके (पावैं पद निर्बान) पूर्ण मोक्ष पद

प्राप्त करेगें। उस मेरे भेजे संत के द्वारा चलाए (सत सुकृत) पवित्र वास्तविक मोक्ष मार्ग के पंथ में सर्व पंथ ऐसे विलीन हो जायेंगे जैसे (सरितगण) सर्व नदियाँ स्वतः ही समुन्द्र में मिलकर एक हो जाती हैं। केवल एक ही पंथ हो जायेगा। जब तक वह निर्धारित समय नहीं आयेगा। तब तक तो मेरे द्वारा कहा गया यह स्वसम वेद निराधार लगेगा। परन्तु जब वह (ठीक का दिन) निर्धारित दिन (आवंत) आएगा। तब सर्व स्त्री-पुरूष कपट त्यागकर शुद्ध होकर कबीर (मुझ सर्वेश्वर कबीर जी) की शरण ग्रहण करेंगे। जो सर्व मानव समाज (अनेकन) अनेकों धर्मों में विभाजित हो चुका है। वह पुनः एक हो जाऐगा। सर्व जीवात्माऐं भक्ति युक्त विकार रहित होकर हंस बन जाऐंगे अर्थात् अविकारी तथा भक्त होकर सत्यलोक में चली जाऐंगी। उस समय घर-घर में परमेश्वर (कबीर परमेश्वर) का निर्मल ज्ञान चर्चा का विषय बनेगा। सर्व मानव दुर्मति त्यागकर नेक नीति अपनायेंगे। इसी कलयुग में जो माया के लिए भाग-दौड़ मची है। वह शांत हो जाऐगी। सर्व मानव शान्त स्वभाव के बन जायेंगे। चाहे कोई उग्र (डाकू, चोर या अन्य कारण से समाज को दुःखी करने वाला) चाहे कोई नीची जाति का हो। सर्व एक होकर रहेंगे। वह महापुरूष अर्थात् तत्वदर्शी संत रूप में प्रकट सर्व के प्रति समान दृष्टि वाला (समर्थ सत्य कबीर) स्वयं सर्वशक्तिमान कबीर है।

नोट :- कबीर सागर स्वसमबेद के पृष्ठ 171 पर लिखे वर्णन में कुछ अक्षर गलत छपे हैं। जैसे छपा है = ठीके को तिथी वार

इसका शुद्ध इस प्रकार है = ठीक का तिथी वार

ठीक का अर्थ होता है समय निरधारण करना। जैसे कहा जाता है कि उस व्यक्ति ने रूपये लौटाने की ठीक कब की रखी है, अर्थात् रूपये लौटाने का समय क्या निर्धारित किया है। (टीका दिन अंत) यह अशुद्ध है।

शुद्ध इस प्रकार है = ठीक का दिन आवंत।

''आओ जाने कलयुग कितना बीत चुका है''

शंकराचार्यों के द्वारा रचित पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर स्पष्ट है कि श्री आद्य शंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ। वर्तमान में ईसवीं (सन्) 2000 माने तो शंकराचार्य जी को 2508 वर्ष हो चुके हैं। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' पृष्ठ 42 पर लिखा है कि कलयुग के 3000 वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष बीत चुका है। इस प्रकार गणित की रीती से जानकर अन्य ईसवीं से गणना की जा सकती है। इसी पृष्ठ पर दो समय अंकित किए हैं। लिखा है कि आद्य शंकराचार्य का आविर्भाव (जन्म) काल ईसा पूर्व 508 या 476 वर्ष माना जाता है। पाठकगण यहाँ भ्रमित ना हों जो दूसरा 476 वर्ष समय लिखा है। यह आद्य शंकराचार्य जी का प्रयाण काल (मृत्यु समय) है। क्योंकि शंकराचार्य जी की मृत्यु 32 वर्ष की आयु में हो गई थी। लेखक भी विचलित है। उसे या करके नहीं लिखना चाहिए था।

शंकराचार्यों द्वारा रचित पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के पृष्ठ 42 पर पुस्तक

''शिव रहस्य'' के एक श्लोक का हवाला देकर लिखा है कि ''कलयुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर शंकर जी स्वयं शंकराचार्य के रूप में शंकर यति रूप में अविर्भूत होगें अर्थात् जन्म लेगें। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि शंकराचार्य का जन्म 508 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। जैसे सन् 2000 को ईसा जी के जन्म को 2000 वर्ष बीत चुके हैं। इस प्रकार 2000+508 = 2508 वर्ष सन् 2000 तक शंकराचार्य के जन्म को हो चुके हैं। अब गणित की रीति से सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष व्यतीत हो चुका है। इस प्रकार कलयुग के समय को गणित की रीति से अन्य सन् से भी जाना जा सकता है।

फोटो कापी ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ पुस्तक के सम्पादक तथा पृष्ठ 11 की।

ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ

जनवरी 2007

संरक्षक

अनन्त श्री विभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर
जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

सम्पादक, लेखक एवं संकलनकर्ता	परामर्श एवं सहयोग	प्रेरणा स्त्रोत
विष्णु दत्त शर्मा	पं. विपिन बिहारी दत्त 'रामायणी'	श्री सुबुद्धानन्द ब्रह्मचारी जी
अध्यक्ष	श्री पुनीत शर्मा	मुद्रक
आध्यात्मिक उत्थान मण्डल, दिल्ली	श्री आशुतोष जोशी	फाइन प्रिन्ट एण्ड पैक्स

प्रकाशक

अखिल भारतीय आध्यात्मिक उत्थान मण्डल

1/3234 गली नं.-2, राम नगर विस्तार, मण्डोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032
9810680024, 9212315001, 9212315002, 011-65292892 फैक्स - 011-22570737

आद्यगुरू शंकराचार्य

संक्षिप्त जीवन परिचय

''वैदुष्यं प्रतिभां युक्तिं भाष्यमेतत् प्रभाषते!
सूर्यचन्द्रमसो यावेत्तवत्कीर्विर्भवित्तव।।''

विश्व वन्दनीय तपः साधना अलौकिक मेधा, अद्‌भुत प्रतिभा, क्रांतिकारी रचनात्मकता, समन्वयात्मक प्रज्ञा, असाधारण तर्क कौशल, प्रकाण्ड पांडित्य, अगाध भगवद्‌भक्ति, उत्कृष्टतम त्याग, गहनगंभीर विचारशीलता आदि गुणों का आगार आदिगुरु शंकराचार्य ने न केवल वैदिक धर्म व दर्शन की युगानुकूल सारगर्भित सरल व्याख्या के साथ भारतीय चेतना को अनुप्राणित किया, अपितु चार मठों के रूप में भारत की चारों दिशाओं में समन्वय, अखण्डता व सांस्कृतिक एकता के चार सुदृढ़ स्तम्भ स्थापित किए।

लगभग 2500 वर्ष पूर्व शंकराचार्य का जन्म चरमराती आस्था के युग में केरल प्रांत में पूर्णानदी के तट पर कालाड़ी ग्राम में धर्मनिष्ठ नम्बूदरी शैव ब्राह्मण श्री शिवगुरु व धर्म परायणा सुभद्रा के घर हुआ। श्री शिवगुरु तैत्तरीय शाखा के यजुर्वेदी थे। शंकराचार्य का जन्म भगवान शंकर के आशीर्वाद से हुआ। अतः उनका नाम शंकर रखा गया। गुरु परम्परागत मठों के अनुसार उनका आर्विभाव काल ई.पू. 508 या 476 वर्ष माना जाता है।

11

यह फोटो कापी शंकराचार्यों के द्वारा रचित पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 की है। जिसमें स्पष्ट है कि श्री आद्यशंकराचार्य का जन्म ईसा से 508 वर्ष पूर्व हुआ। वर्तमान में ईसवीं (सन्) 2000 माने तो शंकराचार्य जी को 2508 वर्ष हो चुके हैं। पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' पृष्ठ 42 पर लिखा है कि कलयुग के 3000 वर्ष बीत जाने पर आद्य शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। इस प्रकार सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 =

5508 वर्ष बीत चुका है। इस प्रकार गणित की रीती से जानकर अन्य ईसवीं से गणना की जा सकती है। इसी पृष्ठ पर दो समय अंकित किए हैं, लिखा है कि आद्यशंकराचार्य का आविर्भाव(जन्म) काल ईसा पूर्व 508 या 476 वर्ष माना जाता है। पाठकगण यहाँ भ्रमित ना हों जो दूसरा 476 वर्ष समय लिखा है। यह आद्य शंकराचार्य जी का प्रयाण काल (मृत्यु समय) है। क्योंकि शंकराचार्य जी की मृत्यु 32 वर्ष की आयु में हो गई थी। लेखक भी विचलित है। उसने या करके नहीं लिखना चाहिए था।

फोटो कापी हिमालय तीर्थ पुस्तक के प्रकाशक तथा मुद्रक की व पृष्ठ 42 की।

हिमालय तीर्थ

जे० पी० नम्बूरी

उप मुख्य कार्याधिकारी
श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मन्दिर समिति

ट्रेक्स एण्ड टूर्स

कलकाता-७००००८

प्रकाशक :
रन्जु चक्रवर्ती
76A/1, बामाचरण राय रोड
कलकाता-७००००८
दूरभाष : ०३३-२४०६-८५९७

मुद्रक :
गिरि प्रिन्ट सर्विस
कलकाता

42 हिमालय तीर्थ

शंकराचार्य

आदि केदारेश्वर के समक्ष शंकराचार्य जी की दिव्य संगमरमर की मूर्ति है। शिव रहस्य के अनुसार :

कलौगतेत्रिसाहस्त्रे वर्षाणां शंकरो यतिः।
बौद्ध मीमांसक मतं जेतुमाबिर्बभूवह।। (शिव रहस्य)

अर्थात् कलियुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर बौद्ध मीमांसकों के मत पर विजय प्राप्ति के लिए शंकर यति के रूप में अविर्भूत होंगे। शंकराचार्य जी के दर्शनों के उपरान्त भगवान बदरीश्वर के मन्दिर में प्रवेश की परम्परा है।

यह फोटो कापी शंकराचार्यों द्वारा रचित पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' के पृष्ठ 42 की तथा प्रथम पृष्ठ की है। पृष्ठ 42 पर पुस्तक ''शिव रहस्य'' के एक श्लोक का हवाला देकर लिखा है कि ''कलयुग के तीन हजार वर्ष व्यतीत होने पर शंकर जी स्वयं शंकराचार्य के रूप में शंकर यति रूप में अविर्भूत होगें अर्थात् जन्म लेंगे। पुस्तक ''ज्योतिर्मय ज्योतिर्मठ'' के पृष्ठ 11 पर लिखा है कि शंकराचार्य का जन्म 508 वर्ष ईसा पूर्व हुआ। जैसे सन् 2000 में ईसा के जन्म को 2000 वर्ष हो चुके हैं। इस प्रकार 2000+508 = 2508 वर्ष सन् 2000 तक शंकराचार्य के जन्म को हो चुके हैं। अब गणित की रीति से सन् 2000 को कलयुग 3000+2508 = 5508 वर्ष व्यतीत हो चुका है। इस प्रकार कलयुग के समय को गणित की रीति से अन्य सन् से भी जाना जा सकता है।

''एक महापुरूष के विषय में नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी''

"संत रामपाल जी के विषय में ''नास्त्रेदमस'' की भविष्यवाणी"

फ्रैंच (फ्रांस) देश के नास्त्रेदमस नामक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने सन् (ई.सं.) 1555 में एक हजार श्लोकों में भविष्य की सांकेतिक सत्य भविष्यवाणियां लिखी हैं। सौ-सौ श्लोकों के दस शतक बनाए हैं। जिनमें से अब तक सर्व सिद्ध हो चुकी हैं। हिन्दुस्तान में सत्य हो चुकी भविष्यवाणियों में से :-

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री बहुत प्रभावशाली व कुशल होगी (यह संकेत स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी की ओर है) तथा उनकी मृत्यु निकटतम रक्षक द्वारा होना लिखा था, जो सत्य हुई।

2. उसके पश्चात् उन्हीं का पुत्र उनका उत्तराधिकारी होगा और वह बहुत कम समय तक राज्य करेगा तथा आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त होगा, जो सत्य सिद्ध हुई। (पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. श्री राजीव गांधी जी के विषय में)।

3. संत रामपाल जी महाराज के विषय में भविष्यवाणी नास्त्रेदमस द्वारा जो विस्तार पूर्वक लिखी हैं।

(क) अपनी भविष्यवाणी के शतक पांच के अंत में तथा शतक छः के प्रारम्भ में नास्त्रेदमस जी ने लिखा है कि आज अर्थात् ई.सं. (सन्) 1555 से ठीक 450 वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् 2006 में एक हिन्दू संत (शायरन) प्रकट होगा अर्थात् सर्व जगत में उसकी चर्चा होगी। उस समय उस हिन्दू धार्मिक संत (शायरन) की आयु 50 व 60 वर्ष के बीच होगी। परमेश्वर ने नास्त्रेदमस को संत रामपाल जी महाराज के अधेड़ उम्र वाले शरीर का साक्षात्कार करवा कर चलचित्र की भांति सारी घटनाओं को दिखाया और समझाया। श्री नास्त्रेदमस जी ने 16 वीं सदी को प्रथम शतक कहा है इस प्रकार पांचवां शतक 20 वीं सदी हुआ। नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि वह धार्मिक हिन्दू नेता अर्थात् संत (CHYREN-शायरन) पांचवें शतक के अंत के वर्ष में अर्थात् सन् (ई.सं.) 1999 में घर-घर सत्संग करना त्याग कर अर्थात् चौखटों को लांघ कर बाहर आयेगा तथा अपने अनुयाइयों को शास्त्रविधि अनुसार भक्तिमार्ग बताएगा। उस महान संत के बताए मार्ग से अनुयाइयों को अद्वितीय आध्यात्मिक और भौतिक लाभ होगा। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत के द्वारा बताए शास्त्रप्रमाणित तत्वज्ञान को समझ कर परमात्मा चाहने वाले श्रद्धालु ऐसे अचंभित होगें जैसे कोई गहरी नींद से जागा हो। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत द्वारा सन् 1999 में चलाई आध्यात्मिक क्रांति ई.सं. 2006 तक चलेगी। तब तक बहु संख्या में परमात्मा चाहने वाले भक्त तत्व ज्ञान समझ कर अनुयायी बन कर सुखी हो चुके होंगे। उसके पश्चात् उस स्थान की चौखट से भी बाहर लांघेगा। उसके पश्चात् 2006 से स्वर्ण युग का प्रारम्भ होगा।

नोट :- प्रिय पाठकजन कृप्या पढ़ें निम्न भविष्यवाणी जो फ्रांस देश के वासी श्री नास्त्रेदमस ने की थी। जिस के विषय में मद्रास के एक ज्योतिशास्त्री के. एस.

कृष्णमूर्ति ने कहा है कि श्री नास्त्रेदमस जी द्वारा सन् 1555 में लिखी भविष्यवाणियों का यथार्थ अनुवाद "सन् 1998 में महाराष्ट्र में एक ज्योतिष शास्त्री करेगा। वह ज्योतिष शास्त्री नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों का सांकेतिक भाषा का स्पष्टीकरण कर उसमें लिखित भविष्य घटनाओं का अर्थ देकर अपना भविष्य ग्रंथ प्रकाशित करेगा।" उसी ज्योतिषशास्त्री द्वारा यथार्थ अनुवादित की गई पुस्तक से अनुवादकर्ता के शब्दों में पढ़ें।

1. (पृष्ठ 32, 33 पर) :-- ठहरो स्वर्ण युग (रामराज्य) आ रहा है। एक अधेड़ उम्र का औदार्य (उदार) अजोड़ महासत्ता अधिकारी भारत ही नहीं सारी पृथ्वी पर स्वर्ण युग लाएगा और अपने सनातन धर्म का पुनरूत्थान करके यथार्थ भक्ति मार्ग बताकर सर्वश्रेष्ठ हिन्दू राष्ट्र बनाएगा। तत्पश्चात् ब्रह्मदेश, पाकिस्तान, बांगला, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत (तिबेत), अफगानिस्तान, मलाया आदि देशों में वही सार्वभौम धार्मिक नेता होगा। सत्ताधारी चांडाल चौकड़ियों पर उसकी सत्ता होगी वह नेता (शायरन) दुनिया को अधाप मालूम होना है, बस देखते रहो।

2. (पृष्ठ 40 पर फिर लिखा है) :-- ठहरो रामराज्य (स्वर्ण युग) आ रहा है। जून ई.सं. 1999 से ई.सं. 2006 तक चलने वाली उत्क्रांति में स्वर्णयुग का उत्थान होगा। हिन्दुस्तान में उदयन होने वाला तारणहार शायरन दुनिया में सुख समृद्धि व शान्ति प्रदान करेगा। नास्त्रेदमस जी ने निःसंदेह कहा है कि प्रकट होने वाला शायरन (CHYREN) अभी ज्ञात नहीं है लेकिन वह क्रिश्चन अथवा मुस्लमान हरगिज नहीं है। वह हिन्दू ही होगा और मैं नास्त्रेदमस उसका अभी छाती ठोक कर गर्व करता हूँ क्योंकि उस दिव्य स्वतंत्र सूर्य शायरन का उदय होते ही सारे पहले वाले विद्वान कहलाने वाले महान नेताओं को निष्प्रभ होकर उसके सामने नम्र बनना पड़ेगा। वह हिन्दुस्तानी महान तत्वदृष्टा संत सभी को अभूतपूर्व राज्य प्रदान करेगा। वह समान कायदा, समान नियम बनाएगा, स्त्री-पुरुष में, अमीर-गरीब में, जाति और धर्म में कोई भेद-भाव नहीं रखेगा, किसी पर अन्याय नहीं होने देगा। उस तत्व दर्शी संत का सर्व जनता विशेष सम्मान करेगी। माता-पिता तो आदरणीय होते ही हैं परन्तु अध्यात्मिकता व पवित्रता के आधार पर उस शायरन (तत्वदर्शी संत) का माता-पिता से भी अलग श्रद्धा स्थान होगा। नास्त्रेदमस स्वयं ज्यू वंश का था तथा फ्रांस देश का नागरिक था। उसने क्रिश्चन धर्म स्वीकार कर रखा था, फिर भी नास्त्रेदमस ने निःसंदेह कहा है कि प्रगट होने वाला शायरन केवल हिन्दू ही होगा।

3. (पृष्ठ 41 पर) :-- सभी को समान कायदा, नियम, अनुशासन पालन करवा कर सत्य पथ पर लाएगा। मैं (नास्त्रेदमस) एक बात निर्विवाद सिद्ध करता हूँ वह शायरन (धार्मिक नेता) नया ज्ञान आविष्कार करेगा। वह सत्य मार्ग दर्शन करवाने वाला तारणहार एशिया खण्ड में जिस देश के नाम महासागर (हिन्द महासागर) है। उसी नाम वाले (हिन्दुस्तान) देश में जन्म लेगा। वह ना क्रिश्चन, ना मुस्लमान, ना ज्यू होगा वह निःसंदेह हिन्दू होगा। अन्य भूतपूर्व धार्मिक नेताओं से महतर बुद्धिमान होगा और अजिंक्य होगा। (नास्त्रेदमस भविष्यवाणी के शतक 6 श्लोक 70 में महत्वपूर्ण संकेत संदेश बता रहा है) उस से सभी प्रेम करेगें। उसका

बोल बाला रहेगा। उसका भय भी रहेगा। कोई भी अपकृत्य करना नहीं सोचेगा। उसका नाम व कीर्ती त्रिखण्ड में गुंजेगी अर्थात् आसमानों के पार उसकी महिमा का बोल-बाला होगा। अब तक अज्ञान निंद्रा में गाढ़े सोए हुए समाज को तत्व ज्ञान की रोशनी से जगाएगा। सर्व मानव समाज हड़बड़ा कर जागेगा। उसके तत्व ज्ञान के आधार से भक्ति साधना करेगा। सर्व समाज से सत्य साधना करवाएगा। जिस कारण सर्व साधकों को अपने आदि अनादि स्थान (सत्यलोक) में अपने पूर्वजों के पास ले जा कर वहाँ स्थाई स्थान प्राप्त करवाएगा (वारिस बनाएगा)। इस क्रुर भूमि (काल लोक) से मुक्त करवाएगा, यह शब्द बोल उठेगा।

4. (पृष्ठ 42, 43) :-- यह हिंसक क्रुरचन्द्र (महाकाल) कौन है, कहाँ है, यह बात शायरन (तत्वदर्शी संत) ही बताएगा। उस क्रुरचन्द्र से वह **CHYREN** - शायरन ही मुक्त करवाएगा। शायरन (तत्वदर्शी संत) के कारकिर्द में इस भूतल की पवित्र भूमि (हिन्दुस्तान में) पर स्वर्णयुग का अवतरण होगा, फिर वह पूरे विश्व में फैलेगा। उस विश्व नेता और उसके सद्गुणों की, उसके बाद भी महिमा गाई जाएगी। उसके मन की शालीनता, विनम्रता, उदारता का इतना रेल-पेल बोल बाला होगा कि इससे पहले नमूद किए हुए शतक 6 श्लोक 70 के आखिरी पंक्ति में किया हुआ उल्लेख कि अपना शब्द खुद ही बोल उठता है और शायरन की ही जुबान बोल रही है कि ''शायरन अपने बारे में बस तीन ही शब्द बोलता है '' एक विजयी ज्ञाता'' (भावार्थ है कि सन्त रामपाल दास जी महाराज तीन शब्द अर्थात् नाम देकर सर्व को मोक्ष प्राप्त कराऐंगे। जैसे दो शब्द सतनाम के हैं जिनमें एक ओम् तथा दूसरा तत् जो सांकेतिक है उसे सन्त रामपाल दास जी महाराज जी ही बताने के अधिकारी हैं अन्य नहीं तीसरा आदि नाम जिसे सारनाम भी कहते हैं। यह भी गुप्त है। सन्त रामपाल दास जी बताऐंगे।) इसके साथ और विशेषण न चिपकाएं मूझे मंजूर नहीं होगा। (यह पृष्ठ 42 वाला 4 उल्लेख वाणी शतक 6 श्लोक 71 है) हिन्दू शायरन अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतुंग ऊंचा स्वरूप का विधान (तत्वज्ञान) फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा।

The Great Chyren will be chief of the world,
Loved feared and unchallanged Even at the death,
His name and praise will reach beyond the skies.
And he will be content to be known only as Victor.

और मानवी संस्कृती निरधोक संवारेगा, इसमें संदेह नहीं। अभी किसी को मालूम नहीं, लेकिन अपने समय पर जैसे नरसिंह अचानक प्रगट हुआ था ऐसे ही वह विश्व महान नेता (**Great Chyren**) अपने तर्कशुद्ध, अचूक आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति तेज से विख्यात होगा। मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित हूँ। मैं ना उसके देश (जहां से अवतरित होगा अर्थात् सतलोक देश) को तथा ना उसको जानता हूँ, मैं उसे सामने देख भी रहा हूँ, उसकी महिमा का शब्द बद्ध में कोई मिसाल नहीं कर सकता। बस उसे **Great Chyren** (महान धार्मिक नेता) कहता हूँ अपने धर्म बंधुओं

की सद्द कालीन समस्या से दयनीय अवस्था से बैचेन होता हुआ स्वतंत्र ज्ञान सूर्य का उदय करता हुआ अपने भक्ति तेज से जग का तारणहार 5वें शतक (20 वीं सदी के अंतिम वर्ष में) के अंत में ई.सं. 1999 अधेड़ उम्र का विश्व का महान नेता जैसे तेजस्वी सिंह मानव (Great Chyren) उदविग्न अवस्था से चोखट लांघता हुआ मेरे (नास्त्रेदमस के) मन का भेद ले रहा है और मैं उसका स्वागत करता हुआ आश्चर्य चकित हो रहा हूँ, उदास भी हो रहा हूँ, क्योंकि उसका दुनिया को ज्ञान न होने से मेरा शायरन (तत्वदर्शी संत) उपेक्षा का पात्र बन रहा है।

मेरी (नास्त्रेदमस की) चित्तभेदक भविष्यवाणी की और उस वैश्विक सिंह मानव की उपेक्षा ना करें। उसके प्रकट होने पर तथा उसके तेजस्वी तत्व ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से आदर्शवादी श्रेष्ठ व्यक्तियों का पुनर्उत्थान तथा स्वर्ण युग का प्रभात शतक 6 में आज ई.सं. 1555 से 450 वर्ष बाद अर्थात् 2006 में (1555+450=2005 के पश्चात् अर्थात् 2006 में) शुरूआत होगी। इस कृतार्थ शुरूआत का मैं (नास्त्रेदमस) दृष्टा हो रहा हूँ।

5. (पृष्ठ 44, 45, 46) :-- (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में फिर प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप (हिन्दुस्तान देश) में उस महान संत का जन्म होगा उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50)

(नोट :- नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी फ्रांस देश की भाषा में लिखी गई थी। बाद में एक पाल ब्रन्टन नामक अंग्रेज ने इस नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी ''सैन्चयुरी ग्रंथ'' को फ्रांस में कुछ वर्ष रह कर समझा, फिर इंग्लिश भाषा में लिखा। उसने गुरुवर शब्द को (बृहस्पति) गुरुवार अर्थात् थरस्डे जान कर लिख दिया की वह अपनी पूजा का आधार बृहस्पत्तिवार को बनाएगा। वास्तव में गुरुवर शब्द है जिसका अर्थ है सर्व गुरुओं में जो एक तत्वज्ञाता श्रेष्ठ है तथा गुरु को मुख्य मानकर साधना करना होता है। वेद भाषा में बृहस्पति का भावार्थ सर्वोच्च स्वामी अर्थात् परमेश्वर, दूसरा अर्थ बृहस्पति का जगतगुरु भी होता है। जगत गुरु तथा परमेश्वर भी बृहस्पति का बोध है।)

वह अधेड़ उम्र में तत्वज्ञान का ज्ञाता तथा ज्ञेय होकर त्रिखंड में कीर्ति मान होगा। मुझ (नास्त्रेदमस) को उसका नया उपाय साधना मंत्र ऐसा जालिम मालूम हो रहा है जैसे सर्प को वश करने वाला गारडू मंत्र से महाविषैले सर्प को वश कर लेता है। वह नया उपाय, नया कायदा बनाने वाला तत्ववेता दुनिया के सामने उजागर होगा उसी को मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित होकर ''ग्रेट शायरन'' बता रहा हूँ उसके ज्ञान के दिव्य तेज के प्रभाव से उस द्वीपकल्प (भारतवर्ष) में आक्रामक

तूफान, खलबली मचेगी अर्थात् अज्ञानी संतों द्वारा विद्रोह किया जाएगा। उसको शांत करने का उपाय भी उसी को मालूम होगा। जैसे जालिम सर्पनी को वश किया जाता है। वह सिंह के समान शक्तिशाली व तेजपूंज व्यक्तित्व का होगा। यह मैं नास्त्रेदमस स्पष्ट शब्दों में बता रहा हूँ कि वह कुण्डलीनी शक्ति धारण किए हुए है। आगे स्पष्ट शब्द यह है कि जिस समय वह शायरन जिस महासागर में द्वीपकल्प है उसी देश के नाम पर महासागर का भी नाम है (हिन्दमहासागर)। विशेषता यह होगी की उस देश की भुजंग सर्पिनी शक्ति (कुण्डलनी शक्ति) का पूर्ण परिचित True Master होगा। वह Chyren(महान धार्मिक नेता) उदारमत वाला, कृपालु, दयालु, दैदिप्यमान, सनातन साम्राज्य अधिकारी, आदि पुरूष (सत्यपुरूष) का अनुयाई होगा। उसकी सत्ता सार्वभौम होगी उसकी महिमा, उपाय गुरु श्रद्धा, गुरु भक्ति अर्थात् गुरु बिना कोई साधना सफल नहीं होती, इस सिद्धांत को दृढ़ करेगा। तत्वज्ञान का सत्संग करके प्रथम अज्ञान निंद्रा में सोए अपने धर्म बंधुओं (हिन्दुओं) को जागृत करके अंधविश्वास के आधार पर साधना कर रहे श्रद्धालुओं को शास्त्रविधि रहित साधना का बुरका फाड़ कर गूढ़ गहरे ज्ञान (तत्वज्ञान) का प्रकाश करेगा। अपने सनातन धर्म का पालन करवा कर समृद्ध शांति का अधिकारी बनाएगा। तत् पश्चात् उसका तत्वज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा, उस (महान तत्वदर्शी संत) के ज्ञान की कोई भी बराबरी नहीं कर सकेगा अर्थात् उसका कोई भी सानी नहीं होगा। उसके गूढ़ ज्ञान (तत्वज्ञान) के सामने सूर्य का तेज भी कम पड़ेगा। इसलिए मेरा (नास्त्रेदमस) वैश्विक सिंह महामानव इतना महान होगा कि मैं उसकी महिमा को शब्दों में नहीं बांध पाऊंगा। मैं (नास्त्रेदमस) उस ग्रेट शायरन को देख रहा हूँ।

उपरोक्त विवरण का भावार्थ है कि "उस विश्व नेता को 50 वर्ष की आयु में तत्वज्ञान शास्त्रों में प्रमाणित होगा अर्थात् वह 50 वर्ष की आयु में सन् 2001 में सर्व धर्मो के शास्त्रों को पढ़ कर उनका ज्ञाता (तत्वज्ञानी) होगा तथा उसके पश्चात् उस तत्वज्ञान का ज्ञेय (जानने योग्य परमेश्वर का ज्ञान अन्य को प्रदान करने वाला) होगा तथा उसका अध्यात्मिक जन्म अमावस्या को होगा। उस समय उसकी आयु तरुण अर्थात् 16, 20, 25 वर्ष की नहीं होगी, वह प्रौढ़ होगा तथा जब वह प्रसिद्ध होगा तब उसकी आयु पचास से साठ साल के मध्य होगी।"

6. (पृष्ठ 46, 47) :-- नास्त्रेदमस कहता है कि निःसंदेह विश्व में श्रेष्ठ तत्वज्ञाता (ग्रेट शायरन) के विषय में मेरी भविष्यवाणी के शब्दा शब्द को किसी नेताओं पर जोड़ कर तर्क-वितर्क करके देखेगें तो कोई भी खरा नहीं उतरेगा। मैं (नास्त्रेदमस) छाती ठोक कर शब्दा शब्द कह रहा हूँ मेरा शायरन का कृतत्व और उसका गूढ़-गहरा ज्ञान (तत्वज्ञान) ही सर्व की खाल उतारेगा, बस 2006 साल आने दो। इस विधान का एक-एक शब्द खरा-खरा समर्थन शायरन ही देगा।

7. (पृष्ट 52) :-- नास्त्रेदमस ने अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि 21 वीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया के क्षितिज पर 'शायरन' का उदय होगा। जो भी बदलाव

होगा वह मेरी (नास्त्रेदमस की) इच्छा से नहीं बल्कि शायरन की आज्ञा से नियति की इच्छा से सारा बदलाव होगा ही होगा। उस में से नया बदलाव मतलब हिन्दुस्तान सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र होगा। कई सदियों से ना देखा ऐसा हिन्दुओं का सुख साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा। उस देश में पैदा हुआ धार्मिक संत ही तत्वदृष्टा तथा जग का तारणहार, जगज्जेता होगा। एशिया खण्डों में रामायण, महाभारत आदि का ज्ञान जो हिन्दुओं में प्रचलित है उससे भी भिन्न आगे का ज्ञान उस तत्वदर्शी संत का होगा। वह सतपुरुष का अनुयाई होगा। वह एक अद्बितीय संत होगा।

8. (पृष्ठ 74) :-- बहुत सारे संत नेता आएगें और जाएगें, सर्व परमात्मा के द्रोही तथा अभिमानी होगें। मुझे (नास्त्रेदमस को) आंतरिक साक्षात्कार उस शायरन का हुआ है।

हिन्दुस्तान का हिन्दू संत आगामी अंधकारी (भक्तिज्ञान के अभाव से अंधे) प्रलयकारी (स्वार्थ वश भाई-भाई को मार रहा है, बेटा-बाप से विमुख है, हिन्दू-हिन्दू का शत्रु, मुस्लमान-मुस्लमान का दुश्मन बना है) धुंधुकारी (माया की दौड़ में बेसब्रे समाज) जगत को नया प्रकाश देने वाला सर्वश्रेष्ठ जगज्जेता धार्मिक विश्व नेता की अपनी उदासी के सिवा कोई अभिलाषा नहीं होगी अर्थात् मानव उद्धार के लिए चिन्ता के अतिरिक्त कुछ भी स्वार्थ नहीं होगा। ना अभिमान होगा, यह मेरी भविष्यवाणी की गौरव की बात होगी की वास्तव में वह तत्वदर्शी संत संसार में अवश्य प्रसिद्ध होगा। उसके द्वारा बताया ज्ञान सदियों तक छाया रहेगा। वह संत आधुनिक वैज्ञानिकों की आँखें चकाचौंध करेगा ऐसे आध्यात्मिक चमत्कार करेगा कि वैज्ञानिक भी आश्चर्य में पड़ जायेंगे। उसका सर्व ज्ञान शास्त्र प्रमाणित होगा। मैं (नास्त्रेदमस) कहता हूँ कि बुद्धिवादी व्यक्ति उसकी उपेक्षा न करें। उसे छोटा ज्ञानदीप न समझें, उस तत्ववेता महामानव (शायरन) को सिहांसनस्थ करके (आसन पर बैठाकर) उसको आराध्य देव मानकर पूजा करें। वह आदि पुरुष (सतपुरुष) का अनुयाई दुनिया का तारणहार होगा।

"संत रामपाल जी महाराज के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ"

1. इंग्लैण्ड के ज्योतिषी 'कीरो' ने सन् 1925 में लिखी पुस्तक में भविष्यवाणी की है, बीसवीं सदी अर्थात् सन् 2000 ई. के उत्तरार्द्ध में (सन् 1950 के पश्चात् उत्पन्न सन्त) ही विश्व में 'एक नई सभ्यता' लाएगा जो सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी। भारत का वह एक व्यक्ति सारे संसार में ज्ञानक्रांति ला देगा।

2. भविष्यवक्ता ''श्री वेजीलेटिन'' के अनुसार 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में, विश्व में आपसी प्रेम का अभाव, मानवता का ह्रास, माया संग्रह की दौड़, लूट व राज नेताओं का अन्यायी हो जाना आदि-२ बहुत से उत्पात देखने को मिलेगें। परन्तु भारत से उत्पन्न हुई शांति भ्रातृत्व भाव पर आधारित नई सभ्यता, संसार में-देश, प्रांत और जाति की सीमायें तोड़कर विश्वभर में अमन व चैन उत्पन्न करेगी।

3. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता ''जीन डिक्सन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अंत से पहले विश्व में एक घोर हाहाकार तथा मानवता का संहार होगा। वैचारिक युद्ध के बाद आध्यात्मिकता पर आधारित एक नई सभ्यता सम्भवतः भारत के

ग्रामीण परिवार के व्यक्ति के नेतृत्व में जमेगी और संसार से युद्ध को सदा-सदा के लिए विदा कर देगी।

4. अमेरिका के ''श्री एण्डरसन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में विश्व में असभ्यता का नंगा तांडव होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति, एक मानव, एक भाषा और एक झण्डे की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा सन् 1999 से विश्व में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शांति भर देगा।

5. हॉलैण्ड के भविष्यदृष्टा ''श्री गेरार्ड क्राइसे'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में भयंकर युद्ध के कारण कई देशों का अस्तित्व ही मिट जावेगा। परन्तु भारत का एक महापुरूष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बांध देगा व हिंसा, फूट-दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिटा देगा।

6. अमेरिका के भविष्वक्ता ''श्री चार्ल्स क्लार्क'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले एक देश विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा, यह धार्मिक क्रांति 21 वीं सदी के प्रथम दशक में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।

7. हंगरी की महिला ज्योतिषी ''बोरिस्का'' के अनुसार सन् 2000 ई. से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्‌गुणों का विकास एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरूप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा, इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयायी बनकर भौतिकवाद को आध्यात्मिकता में बदल देगें।

8. फ्रांस के डॉ. जूलर्वन के अनुसार सन् 1990 के बाद यूरोपीय देश भारत की धार्मिक सभ्यता की ओर तेजी से झूकेंगे। सन् 2000 तक विश्व की आबादी 640 करोड़ के आस-पास होगी। भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में 'आत्मशक्ति' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।

9. फ्रांस के ''नास्त्रेदमस'' के अनुसार विश्व भर में सैनिक क्रांतियों के बाद थोड़े से ही अच्छे लोग संसार को अच्छा बनाऐंगे। जिनका महान् धर्मनिष्ठ विश्वविख्यात नेता 20 वीं सदी के अन्त और 21 वीं सदी की शुरूआत में किसी पूर्वी देश से जन्म लेकर भ्रातृवृत्ति व सौजन्यता द्वारा सारे विश्व को एकता के सूत्र में बांध देगा। (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप में उस महान संत का जन्म होगा। उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर, हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा

तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50) (सेंचुरी-I, कन्ना-50)

10. इजरायल के प्रो.हरार के अनुसार भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् 2000 ई. से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़े मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उनके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत के अधिकतर राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा, पर बाद में नेतृत्व धर्मनिष्ठ वीर लोगों पर होगा। जो एक धार्मिक संगठन के आश्रित होगें।

11. नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार, सन् 1998 के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आऐगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान (आध्यात्मिक तत्वज्ञान) ही पूरे विश्व को मान्य होगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार ही आज विश्व में घटनाएँ घट रही हैं। युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धांत है। वैदिक दर्शन के अनुसार चार युगों-सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था है। जब पृथ्वी पर पापियों का एक छत्र साम्राज्य हो जाता है तब भगवान पृथ्वी पर मानव रूप में प्रकट होता है।

इसी प्रकार युग परिवर्तन की भविष्यवाणी ईसाइयों की पवित्र धार्मिक पुस्तक बाईबल भी स्पष्ट शब्दों में कहती है। पवित्रात्मा यीशु ने सैंट जोहन के 15:26 एवं 16:7 से 15 में एक सहायक भेजने की भविष्यवाणी की है। बाईबल की भविष्यवाणी के अनुसार अगर वह सहायक 20 वीं सदी के अन्त से पहले-पहले उत्पन्न नहीं हुआ तो बाईबल की भविष्यवाणियाँ स्वयं असत्य प्रमाणित हो जाएगी। परन्तु ऐसा असम्भव है। क्योंकि उस महान् आत्मा यीशु ने उस सहायक को भेजने के लिए ही अपने प्राणों की आहुति दी थी। यह तथ्य सैंट जोहन के 16:7 से स्पष्ट प्रमाणित होता है। ‘‘तो भी मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है क्योंकि यदि मैं न जाऊं तो सहायक तुम्हारे पास न आयेगा। परन्तु यदि में जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा और अपने कहे के अनुसार उस पवित्रात्मा ने अपने जीवन को स्वेच्छा से बली चढ़ा दिया।

मानवता के इस पूर्ण विकास का काम अनादि काल से भारत ही करता आया है। इसी पुण्यभूमि पर अवतारों का अवतरण अनादि काल से होता आ रहा है।

लेकिन कैसी विडम्बना है कि ऋषि-मुनियों महापुरूषों व अवतारों के जीवन काल में उस समय के शासन व्यवस्था व जनता ने उनकी दिव्य बातों व आदर्शों पर ध्यान नहीं दिया और उनके अन्तर्ध्यान होने पर दुगने उत्साह से उनकी पूजा शुरू कर पूजने लग गये। यह भी एक विडम्बना है कि हम जीवंत और समय रहते उनकी नहीं मानते अपितु उनका विरोध व अपमान ही करते रहे हैं। कुछ स्वार्थी तत्व जनता को भ्रमित करके परम सन्त को बदनाम करके सतभक्ति में बाधक

बनते हैं। यह उक्ति हर युग में चरितार्थ होती आई है, और आज भी हो रही है।

जो महापुरूष हजारों कष्टों को सहन कर अपनी तपस्या व सत्य पर अडिग रहता है उनकी बात असत्य नहीं हो सकती। सत्य पर अडिग रहते हुए ईसा मसीह ने अपने शरीर में कीलों की भयंकर पीड़ा को झेला, सुकरात ने जहर का प्याला पीया, श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को भी यातनाओं का शिकार होना पड़ा।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा था कि- ''पृथ्वी और आकाश टल सकते हैं, सूर्य का अटल सिद्धांत है उदय-अस्त, वो भी निरस्त हो सकता है, लेकिन मेरी बातें कभी झूठी नहीं हो सकती है।''

सज्जनों ! यदि आज के करोड़ों मानव उस परमतत्व के ज्ञाता सन्त को ढूंढकर, स्वीकार कर, उनके बताए पथानुसार, अपनी जीवन शैली को सुधार लेंगे तो पूरे विश्व में सद्भावना, आपसी भाई-चारा, दया तथा सद्भक्ति का वातावरण हो जाएगा। वर्तमान का मानव बुद्धिजीवी है इसलिए उस सन्त के विचारों को अवश्य स्वीकार करेगा तथा धन्य होगा। वह सन्त है जगत् गुरु तत्वदर्शी सन्त रामपाल जी महाराज। कृप्या पढ़ें सन्त रामपाल जी महाराज की संक्षिप्त जीवनी जो सर्व भविष्यवाणियों पर खरी उतर रही है।

"संत रामपाल जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय"

संत रामपाल दास जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव धनाना जिला सोनीपत हरियाणा में एक किसान परिवार में हुआ। पढ़ाई पूरी करके हरियाणा प्रांत में सिंचाई विभाग में जूनियर इंजिनियर की पोस्ट पर 18 वर्ष कार्यरत रहे। सन् 1988 में परम संत रामदेवानंद जी से दीक्षा प्राप्त की तथा तन-मन से सक्रिय होकर स्वामी रामदेवानंद जी द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना की तथा परमात्मा का साक्षात्कार किया।

संत रामपाल दास जी महाराज को नाम दीक्षा 17 फरवरी 1988 को फाल्गुन महीने की अमावस्या को रात्री में प्राप्त हुई। उस समय संत रामपाल जी महाराज की आयु 37 वर्ष थी। उपदेश दिवस (दीक्षा दिवस) को संतमत में उपदेशी भक्त का आध्यात्मिक जन्मदिन माना जाता है।

उपरोक्त विवरण श्री नास्त्रेदमस जी की उस भविष्यवाणी से पूर्ण मेल खाता है जो पृष्ठ संख्या 44-45 पर लिखी है। "जिस समय उस तत्वदृष्टा शायरन का आध्यात्मिक जन्म होगा उस दिन अंधेरी अमावस्या होगी। उस समय उस विश्व नेता की आयु 16, 20, 25 वर्ष नहीं होगी, वह तरुण नहीं होगा, बल्कि वह प्रौढ़ होगा और वह 50 और 60 वर्ष के बीच की उम्र में संसार में प्रसिद्ध होगा। वह सन् 2006 होगा।"

सन् 1993 में स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने आपको सत्संग करने की आज्ञा दी तथा सन् 1994 में नामदान करने की आज्ञा प्रदान की। भक्ति मार्ग में लीन होने के कारण जे.ई. की पोस्ट से त्यागपत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार द्वारा 16-5-2000 को पत्र क्रमांक 3492-3500, तिथि 16-5-2000 के तहत स्वीकृत है। सन्

1994 से 1998 तक संत रामपाल जी महाराज ने घर-घर, गांव-गांव, नगर-नगर में जाकर सत्संग किया। बहु संख्या में अनुयाई हो गये। साथ-साथ ज्ञानहीन संतों का विरोध भी बढ़ता गया। सन् 1999 में गांव करौंथा जिला रोहतक (हरियाणा) में सतलोक आश्रम करौंथा की स्थापना की तथा एक जून 1999 से 7 जून 1999 तक परमेश्वर कबीर जी के प्रकट दिवस पर सात दिवसीय विशाल सत्संग का आयोजन करके आश्रम का प्रारम्भ किया तथा महीने की प्रत्येक पूर्णिमा को तीन दिन का सत्संग प्रारम्भ किया। दूर-दूर से श्रद्धालु सत्संग सुनने आने लगे तथा तत्वज्ञान को समझकर बहुसंख्या में अनुयाई बनने लगे। चंद दिनों में संत रामपाल महाराज जी के अनुयाइयों की संख्या लाखों में पहुंच गई। जिन ज्ञानहीन संतों व ऋषियों के अनुयाई संत रामपाल जी के पास आने लगे तथा अनुयाई बनने लगे फिर उन अज्ञानी आचार्यों तथा सन्तों से प्रश्न करने लगे कि आप सर्व ज्ञान अपने सद्ग्रंथों के विपरीत बता रहे हो।

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा अपने भक्त के सर्व अपराध (पाप) नाश (क्षमा) कर देता है। आपकी पुस्तक जो हमने खरीदी है उसमें लिखा है कि ''परमात्मा अपने भक्त के पाप क्षमा (नाश) नहीं करता। आपकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 में लिखा है कि सूर्य पर पृथ्वी की तरह मनुष्य तथा अन्य प्राणी वास करते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी की तरह सर्व पदार्थ हैं। बाग, बगीचे, नदी, झरने आदि, क्या यह सम्भव है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि परमात्मा सशरीर है। अग्ने तनुः असि। विष्णवै त्वां सोमस्य तनुर् असि।। इस मंत्र में दो बार गवाही दी है कि परमेश्वर सशरीर है। उस अमर पुरुष परमात्मा का सर्व के पालन करने के लिए शरीर है अर्थात् परमात्मा जब अपने भक्तों को तत्वज्ञान समझाने के लिए कुछ समय अतिथि रूप में इस संसार में आता है तो अपने वास्तविक तेजोमय शरीर पर हल्के तेजपुंज का शरीर ओढ कर आता है। इसलिए उपरोक्त मंत्र में दो बार प्रमाण दिया है। इस तरह के तर्क से निरूत्तर होकर अपने अज्ञान का पर्दा फास होने के भय से उन अंज्ञानी संतों, महंतों व आचार्यो ने सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास के गांवों में संत रामपाल जी महाराज को बदनाम करने के लिए दुष्प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया तथा 12-7-2006 को संत रामपाल जी महाराज को जान से मारने तथा आश्रम को नष्ट करने के लिए आप तथा अपने अनुयाइयों से सतलोक आश्रम पर आक्रमण करवाया। पुलिस ने रोकने की कोशिश की जिस कारण से कुछ उपद्रवकारी चोटिल हो गये। सरकार ने सतलोक आश्रम को अपने अधीन कर लिया तथा संत रामपाल जी महाराज व कुछ अनुयाइयों पर झूठा केस बना कर जेल में डाल दिया। इस प्रकार 2006 में संत रामपाल जी महाराज विख्यात हुए। भले ही अंजानों ने झूठे आरोप लगाकर संत को प्रसिद्ध किया परन्तु संत निर्दोष है। प्रिय पाठको (नास्त्रेदमस) की भविष्यवाणी को पढ़कर सोचेगें कि संत रामपाल जी को इतना बदनाम कर दिया है, कैसे संभव होगा कि विश्व को ज्ञान प्रचार करेगा। उनसे

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा ।।
धरती पर अवतार
भारतवर्ष का वह छोटा सा गांव धनाना जहां पर परमेश्वर के अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म हुआ।
हरि आये हरियाणे नूं
मां की गोद में अवतार
परमात्मा से अवतार रुप में पुत्र प्राप्त होने का धन्यवाद करते हुए पिता नन्दाराम व माता इन्द्रावती
कबीर, पांच सहंस अरु पांच सौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरुष फरमान तब, जग तारन को आय।।

प्रार्थना है कि परमात्मा पल में परिस्थिती बदल सकता है।

कबीर, साहेब से सब होत है, बंदे से कछु नांहि। राई से पर्वत करे, पर्वत से फिर राई।।

परमेश्वर कबीर जी अपने बच्चों के उद्धार के लिए शीघ्र ही समाज को तत्वज्ञान द्वारा वास्तविकता से परिचित करवाएंगे, फिर पूरा विश्व संत रामपाल जी महाराज के ज्ञान का लोहा मानेगा।

संत रामपाल जी महाराज सन् 2003 से अखबारों व टी. वी. चैनलों के माध्यम से सत्य ज्ञान का प्रचार कर अन्य धर्म गुरुओं से कह रहे हैं कि आपका ज्ञान शास्त्रविरूद्ध अर्थात् आप भक्त समाज को शास्त्ररहित पूजा करवा रहे हैं और दोषी बन रहे हैं। यदि मैं गलत कह रहा हूँ तो इसका जवाब दो आज तक किसी भी संत ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की।

संत रामपाल जी महाराज को ई.सं. (सन्) 2001 में अक्तुबर महीने के प्रथम बृहस्पतिवार को अचानक प्रेरणा हुई कि "सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन कर" इस आधार पर सर्वप्रथम पवित्र श्रीमद् भगवद्गीता जी का अध्ययन किया तथा पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' की रचना की तथा उसी आधार पर सर्वप्रथम राजस्थान प्रांत के जोधपुर शहर में मार्च 2002 में सत्संग प्रारंभ किया। इसलिए नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि विश्व धार्मिक हिन्दू संत (शायरन) पचास वर्ष की आयु में अर्थात् 2001 में ज्ञेय ज्ञाता होकर प्रचार करेगा। संत रामपाल जी महाराज का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में सन् (ई.सं) 1951 में 8 सितम्बर को गांव धनाना जिला सोनीपत, प्रांत हरियाणा (भारत) में एक किसान परिवार में हुआ। इस प्रकार सन् 2001 में संत रामपाल जी महाराज की आयु पचास वर्ष बनती है, सो नास्त्रेदमस के अनुसार खरी है। इसलिए वह विश्व धार्मिक नेता संत रामपाल जी महाराज ही हैं जिनकी अध्यक्षता में भारतवर्ष पूरे विश्व पर राज करेगा। पूरे विश्व में एक ही ज्ञान (भक्ति मार्ग) चलेगा। एक ही कानून होगा, कोई दुःखी नहीं रहेगा, विश्व में पूर्ण शांति होगी। जो विरोध करेंगे अंत में वे भी पश्चाताप करेंगे तथा तत्वज्ञान को स्वीकार करने पर विवश होंगे और सर्व मानव समाज मानव धर्म का पालन करेगा और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके सतलोक जाएंगे।

जिस तत्वज्ञान के विषय में नास्त्रेदमस जी ने अपनी भविष्यवाणी में उल्लेख किया है कि उस विश्व विजेता संत के द्वारा बताए शास्त्र प्रमाणित तत्व ज्ञान के सामने पूर्व के सर्व संत निष्प्रभ (असफल) हो जाएंगे तथा सर्व को नम्र होकर झुकना पड़ेगा। उसी के विषय में परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने अपनी अमृत वाणी में पवित्र 'कबीर सागर' ग्रंथ में (जो संत धर्मदास जी द्वारा लगभग 550 वर्ष पूर्व लीपीबद्ध किया गया है) कहा है कि एक समय आएगा जब पूरे विश्व में मेरा ही ज्ञान चलेगा। पूरा विश्व शांति पूर्वक भक्ति करेगा। आपस में विशेष प्रेम होगा, सतयुग जैसा समय (स्वर्ण युग) होगा। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ द्वारा बताए ज्ञान को संत रामपाल जी महाराज ने समझा है। इसी ज्ञान के विषय में कबीर साहेब जी ने अपनी वाणी में कहा है कि --

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

भावार्थ है कि यह तत्वज्ञान इतना प्रबल है कि इसके समक्ष अन्य संतों व ऋषियों का ज्ञान टिक नहीं पाएगा। जैसे तोब यंत्र का गोला जहां भी गिरता है वहाँ पर सर्व किलों तक को ढहा कर मैदान साफ बना देता है।

यही प्रमाण संत गरीबदास जी (छुड़ानी, जिला झज्जर, हरियाणा वाले) ने दिया है कि सतगुरु (तत्वदर्शी संत परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ का भेजा हुआ) दिल्ली मण्डल में आएगा।

"गरीब, सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी"

परमात्मा की भक्ति बिना कंजूस हो गए व्यक्तियों को जगाएगा। गांव धनाना, जिला सोनीपत पहले दिल्ली शासित क्षेत्र में पड़ता था। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि सतगुरु (वास्तविक ज्ञान जानने वाला संत अर्थात् तत्व दृष्टा संत) दिल्ली मण्डल में आएगा फिर कहा है कि :-

साहेब कबीर तख्त खवासा, दिल्ली मण्डल लीजै वासा।।

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ के तख्त (दरबार) का ख्वास (नौकर) अर्थात् परमेश्वर का नुमायंदा (प्रतिनिधि) दिल्ली मण्डल में वास करेगा अर्थात् वहाँ उत्पन्न होगा। प्रथम अपने हिन्दू बंधुओं को तत्वज्ञान से परिचित करवाएगा। बुद्धिमान हिन्दू ऐसे जागेंगे जैसे कोई हड़बड़ा कर जागता है अर्थात् उस संत के द्वारा बताए तत्व ज्ञान को समझ कर अविलम्ब उसकी शरण ग्रहण करेंगे। फिर पूरा विश्व उस तत्वदर्शी हिन्दू संत के ज्ञान को स्वीकार करेगा। यह भविष्यवाणी श्री नास्त्रेदमस जी ने भी की है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी लिखा है कि मुझे दुःख इस बात का है कि उससे परिचित न होने के कारण मेरा शायरन (तत्वदृष्टा संत) उपेक्षा का पात्र बना है। हे बुद्धिमान मानव ! उसकी उपेक्षा ना करो। वह तो सिंहासनस्थ करके (आसन पर बैठा कर) आराध्य देव (इष्टदेव) रूप में पूजा करने योग्य है। वह हिन्दू धार्मिक संत शायरन आदि पुरुष (पूर्ण परमात्मा) का अनुयाई जगत् का तारणहार है।

नास्त्रेदमस जी भविष्य वक्ता ने पुस्तक पृष्ठ 41-42 पर तीन शब्द का उल्लेख किया है। कहा है कि वह विश्व विजेता तत्वदृष्टा संत क्रुरचन्द्र अर्थात् काल की दुःखदाई भूमि से छुड़ा कर अपने आदि अनादि पूर्वजों के साथ वारिस बनाएगा तथा मुक्ति दिलाएगा। यहाँ पर उपदेश मंत्र की ओर संकेत है कि वह शायरन केवल तीन शब्द (ओम्-तत्-सत्) ही मंत्र जाप देगा। इन तीन शब्दों के साथ मुक्ति का कोई अन्य शब्द न चिपकाएगा। यही प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 90 मंत्र 16 में, सामवेद श्लोक संख्या 822 तथा श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) तीन मंत्र (ओम्-तत्-सत् जिनमें तत् तथा सत् सांकेतिक हैं) दे कर पूर्ण परमात्मा (आदि पुरुष) की भक्ति करवा कर जीव को काल-जाल से मुक्त करवाता है। फिर वह साधक भक्ति की कमाई के बल से वहाँ चला जाता है जहां आदि सृष्टी के अच्छे प्राणी रहते हैं। जहां से यह जीव अपने पूर्वजों को छोड़ कर क्रुरचन्द्र (काल प्रभु) के साथ आकर इस दुःखदाई लोक में फंस

कर कष्ट पर कष्ट उठा रहा है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि मध्य काल अर्थात् बिचली पीढ़ी हिन्दू धर्म का आदर्श जीवन जीएंगे। शायरन (तत्वदृष्टा संत) अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतंग ऊँचा स्वरूप अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शास्त्रानुकूल भक्ति विधान फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा ओर मानवी संस्कृति अर्थात् मानव धर्म के लक्षण निर्धोक (निष्कपट भाव से) संवारेगा। (मधल्या कालात हिन्दू धर्मांचे व हिन्दुच्या आदर्शवत् झालेल) - यह मराठी भाषा में पृष्ठ 42 पर लिखा हुआ है जिसका भावार्थ है कि बिचली पीढ़ी का उद्धार शायरन करेगा। यह उल्लेख पृष्ठ 42 की हिन्दी लिखना रह गया था इसलिए यहाँ लिख दिया है तथा स्पष्टीकरण भी दिया है। यही प्रमाण स्वयं पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि :-

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सारज्ञान व सारशब्द कहीं बाहर न जाई।
सारनाम बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तर ही।।
सारज्ञान तब तक छुपाई, जब तक द्वादस पंथ न मिट जाई।

जैसे ई.सं.(सन्) 1947 में भारतवर्ष अंग्रेजों से मुक्त हुआ। उससे पहले हिन्दुस्तान में शिक्षा नहीं थी। सन् 1951 में संत रामपाल जी महाराज को परमेश्वर जी ने पृथ्वी पर भेजा। सन् 1947 से पहले कलियुग की प्रथम पीढ़ी जानें तथा 1947 से बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। यह एक हजार वर्ष तक सत्य भक्ति करेगी। इस दौरान जो पूर्ण निश्चय के साथ भक्ति करेगा वह सतलोक चला जाएगा। जो सतलोक नहीं जा सके तथा कभी भक्ति की, कभी छोड़ दी, परंतु गुरु द्रोही नहीं हुए वे फिर हजारों मनुष्य जन्म इसी कलियुग में प्राप्त करेंगे क्योंकि यह उनकी शास्त्रविधि अनुसार साधना का परिणाम होगा। इस प्रकार कई हजारों वर्षों तक कलियुग का समय वर्तमान से भी अच्छा चलेगा। फिर अंत की पीढ़ी भक्ति रहित उत्पन्न होगी क्योंकि शुभ कमाई जो भक्ति युग में की है वह बार-२ जन्म प्राप्त करके खर्च (समाप्त) कर दी होगी। इस प्रकार कलियुग के अंत की पीढ़ी कृतघनी होगी। वे भक्ति नहीं कर सकेंगी। इसलिए कहा है कि अब कलियुग की बिचली पीढ़ी चल रही है (1947 से)। सन् 2006 से वह शायरन सर्व के समक्ष प्रकट हो चुका है, वह है "संत रामपाल जी महाराज"।

उपरोक्त ज्ञान जो बिचली पीढ़ी व प्रथम तथा अंतिम पीढ़ी वाला संत रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में वर्षों से बताते आ रहे हैं जो अब नास्त्रेदमस जी की भविष्यवाणी ने भी स्पष्ट कर दिया। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि - कबीर परमेश्वर की भक्ति पूर्ण संत से उपदेश लेकर करो नहीं तो यह अवसर फिर हाथ नहीं आएगा।

गरीब, समझा है तो सिर धर पांव, बहुर नहीं रे ऐसा दाव।।

भावार्थ है कि यदि आप तत्वज्ञान को समझ गए हैं तो सिर पर पैर रख अर्थात् अतिशीघ्रता से तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाओ। यह सुअवसर फिर प्राप्त नहीं होगा। जैसे यह बिचली पीढ़ी (मध्य काल) वाला समय और आपका मानव शरीर तथा तत्वदृष्टा संत प्रकट है।

यदि अब भी भक्ति मार्ग पर नहीं लगोगे तो उसके विषय में कहा है कि --

यह संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि यह भोला संसार शास्त्रविधि रहित साधना कर रहा है जो अति दुःखदाई है, इसी को सुखदाई कह रहा है। जैसे जून मास दोपहर (दिन के बारह बजे) में धूप में खड़ा-२ जल रहा है उसी को सांय बता रहा है। जैसे कोई शराबी व्यक्ति शराब पीकर सड़क पर पड़ा है और उससे कोई कहे कि आप दोपहर की धूप में क्यों जल रहे हो, छांया में चलो। वह शराब के नशे में कहता है कि नहीं सांय है, कौन कहता है कि दोपहर है ? इसी प्रकार जो साधक शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण कर रहे हैं वे अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। उसे त्यागना नहीं चाहते अपितु उसी को सर्व श्रेष्ठ मानकर काल के लोक की आग में जल रहे हैं। संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि इतने प्रमाण मिलने के पश्चात् भी सतसाधना पूर्ण संत के बताए अनुसार नहीं करोगे तो यह अनमोल मानव शरीर तथा बिचली पीढ़ी का भक्ति युग हाथ से निकल जाएगा फिर इस समय को याद करके रोवोगे, बहुत पश्चाताप करोगे। फिर कुछ नहीं बनेगा। परमेश्वर कबीर जी बन्दी छोड़ ने कहा है कि -

आच्छे दिन पाछै गए, सतगुरु से किया ना हेत।
अब पछतावा क्या करे, जब चिड़िया चुग गई खेत।।

सर्व मानव समाज से प्रार्थना करते हैं कि पूर्ण संत रामपाल जी महाराज को पहचानों तथा अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाओ। अपने रिश्तेदारों तथा दोस्तों को भी बताओ तथा पूर्ण मोक्ष पाओ। स्वर्ण युग प्रारम्भ हो चुका है। लाखों पुण्य आत्माएं संत रामपाल जी तत्वदर्शी संत को पहचान कर सत्य भक्ति कर रहे हैं, वे अति सुखी हो गए हैं। सर्व विकार छोड़ कर निर्मल जीवन जी रहे हैं।

''राधास्वामी पंथ की जानकारी''

राधास्वामी पंथ शहर आगरा पन्नी गली निवासी श्री शिव दयाल सिंह जी से चला है। राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक श्री शिव दयाल जी का कोई गुरु जी नहीं था। प्रमाण :- पुस्तक ''जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज'' के पृष्ठ 28 पर, कृप्या देखें फोटो कापी पृष्ठ 28 की इसी पुस्तक के पृष्ठ 26 पर।

श्री शिव दयाल सिंह जी ने 17 वर्ष तक कोठे में कोठा अर्थात् बन्द स्थान पर बैठ कर हठ योग किया। जो किसी भी संत की साधना से मेल नहीं खाता। उन्होंने सन् 1861 में सत्संग करना प्रारम्भ किया। सन् 1856 में बाबा जयमल सिंह जी ने श्री शिवदयाल जी से उपदेश (नाम प्राप्त) किया। इससे सिद्ध यह हुआ कि जिस समय बाबा जयमल सिंह जी को श्री शिवदयाल सिंह जी (राधास्वामी) ने नाम दान किया। उस समय तक तो श्री शिवदयाल जी साधक (Under Training) थे। पूरे संत नहीं हुए थे, अधूरे थे। क्योंकि श्री शिवदयाल जी ने साधना पूरी करके

सन् 1861 में सत्संग करना प्रारम्भ किया। उससे पूर्व तो वे अधूरे थे। बाबा जयमल सिंह जी ने उपदेश 1856 में 5 वर्ष पूर्व एक साधक (रंगरूट) से उपदेश ले लिया। जो अभी ट्रैनिंग भी पूरी नहीं कर पाया था। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है :-

झूठे गुरुवा काल के दूत हैं, देंवे नरक धकेल। काच्ची सरसौं पेल कर, खल हुआ ना तेल।।

श्री शिवदयाल जी से आगे शाखाऐं निम्न चली हैं :- श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) जिनके तीन मुख्य शिष्य हुए 1. श्री जयमल सिंह (डेरा ब्यास) 2. जयगुरुदेव पंथ (मथुरा में) 3. श्री तारा चंद (दिनोद जि. भिवानी)।

इनसे आगे निकलने वाले पंथ :- 1. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ जयमल सिंह (डेरा ब्यास) ➪ श्री सावन सिंह ➪ श्री जगत सिंह 2. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ जयगुरु देव पंथ (मथुरा में) 3. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ श्री ताराचंद जी (दिनोद जि. भिवानी) 4. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ जयमल सिंह (डेरा ब्यास) ➪ श्री सावन सिंह ➪ श्री खेमामल जी उर्फ शाह मस्ताना जी (डेरा सच्चा सौदा सिरसा) 5. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ जयमल सिंह (डेरा ब्यास) ➪ श्री सावन सिंह ➪ श्री खेमामल जी उर्फ शाह मस्ताना जी (डेरा सच्चा सौदा सिरसा) ➪ श्री सतनाम सिंह जी (सिरसा) 6. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ जयमल सिंह (डेरा ब्यास) ➪ श्री सावन सिंह ➪ श्री खेमामल जी उर्फ शाह मस्ताना जी (डेरा सच्चा सौदा सिरसा) ➪ श्री मनेजर साहेब (गांव जगमाल वाली में) 7. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ जयमल सिंह (डेरा ब्यास) ➪ श्री सावन सिंह ➪ श्री कृपाल सिंह (सावन कृपाल मिशन दिल्ली) 8. श्री शिवदयाल जी (राधा स्वामी) ➪ जयमल सिंह (डेरा ब्यास) ➪ श्री सावन सिंह ➪ श्री कृपाल सिंह (सावन कृपाल मिशन दिल्ली) ➪ श्री ठाकुर सिंह जी

श्री जयमल सिंह जी ने दीक्षा प्राप्त की सन् 1856 में श्री शिवदयाल सिंह जी (राधा स्वामी) की मृत्यु सन् 1878 में 60 वर्ष की आयु में हुई।

श्री जयमल सिंह जी सेना से निवृत हुए सन् 1889 में अर्थात् श्री शिवदयाल सिंह जी (राधा स्वामी) की मृत्यु के 11 वर्ष पश्चात् सेवा निवृत होकर 1889 में ब्यास नदी के किनारे डेरे की स्थापना करके स्वयंभू संत बनकर नाम दान करने लगे। यदि कोई कहे कि शिवदयाल सिंह जी ने बाबा जयमल सिंह को नाम दान करने को आदेश दिया था। यह उचित नहीं है क्योंकि यदि नाम दान देने का आदेश दिया होता तो श्री जयमल सिंह जी पहले से ही नाम दान प्रारम्भ कर देते। यहाँ पर यह भी याद रखना अनिवार्य है कि श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) के कोई गुरु नहीं थे। श्री जयमल सिंह जी (डेरा ब्यास) ने जिस समय दीक्षा प्राप्त की सन् 1856 में उस समय श्री शिवयाल सिंह जी (राधा स्वामी) साधक (Under training) थे। श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी) संत 1861 में बने तब उन्होंने सत्संग प्रारम्भ किया था।

2. बाबा जयमल सिंह जी से उपदेश प्राप्त हुआ श्री सावन सिंह जी को तो श्री सावन सिंह उत्तराधिकारी हुए श्री जयमल सिंह जी के यानी डेरा बाबा जयमल सिंह (ब्यास) के।

➢बाबा सावन सिंह जी के अनेकों शिष्य हुए। जिन में से दो अपने आपको बाबा जयमल सिंह के डेरे की गद्दी को प्राप्त करने के अधिकारी मानने लगे।

1. श्री खेमामल जी (शाहमस्ताना) जी 2. श्री कृपाल सिंह

श्री सावन सिंह जी ने दोनों के टकराव को टालते हुए इन दोनों को बाईपास करके श्री जगत सिंह जी को बाबा जयमल सिंह (ब्यास) की गद्दी पर विराजमान कर दिया। उसके नाम वसीयत कर दी। इस घटना से क्षुब्ध होकर दोनों (श्री खेमामल जी तथा श्री कृपाल सिंह जी) बागी हो गए। श्री खेमामल जी ने स्वयंभू गुरू बनकर 2 अप्रैल 1949 में सिरसा में सच्चा सौदा डेरा की स्थापना करके नाम दान करने लगे।

➢श्री कृपाल सिंह जी ने दिल्ली में विजय नगर स्थान पर स्वयंभू गुरु बनकर नामदान करना प्रारम्भ कर दिया तथा ''सावन-कृपाल मिशन'' नाम से आश्रम बना कर रहने लगा।

श्री कृपाल सिंह जी ने श्री दर्शन सिंह जी को उत्तराधिकार नियुक्त कर दिया। श्री ठाकुर सिंह जी अपने को सीनियर मानते थे। जो श्री कृपाल सिंह जी के शिष्यों में से एक थे। वांच्छित पद न मिलने से क्षुब्ध श्री ठाकुर सिंह जी ने स्वयंभू गुरु बनकर नाम दान करना प्रारम्भ कर दिया।

श्री जगत सिंह की मृत्यु लगभग तीन वर्ष पश्चात् ही क्षय रोग से हो गई थी। उसके पश्चात् श्री चरण सिंह जी जो श्री सावन सिंह जी के शिष्य थे तथा श्री जगत सिंह के गुरु भाई थे। डेरा ब्यास की गद्दी पर विराजमान हो गए। श्री चरण सिंह जी को नाम दान का आदेश प्राप्त नहीं था। कोई कहे कि श्री जगत सिंह ने आदेश दे दिया था। श्री चरण सिंह को यह उचित नहीं, क्योंकि गुरु भाई अपने गुरु भाई को नाम दान का आदेश नहीं दे सकता। एक कमाण्डर अपने बराबर के पद वाले कमाण्डर की पदोन्नति नहीं कर सकता।

श्री शिव दयाल सिंह के पंथ से श्री जैमल सिंह जी व उनसे बागी होकर श्री बग्गा सिंह ने तरणतारण में अलग डेरा बनाया जिनसे आगे श्री देवा सिंह जी से आगे तीन बागी पंथ चलाने वाले बन गये जो इस प्रकार हैं :-

1. श्री देवा सिंह ⇨ श्री गुरवचन लाल डेरा ध्यानपुर जिला अमृतसर ⇨ श्री कश्मीरा सिंह जी से एस. जी. एल. जन सेवा केन्द्र, गड़ा रोड़ जलंधर में पंथ चला।

2. श्री देवा सिंह ⇨ साधु सिंह, डेरा राधास्वामी, बस्ती बिलोचा, फिरोजपुर, पंजाब ⇨ संत तेजा सिंह, बस्ती बिलोचा, फिरोजपुर, पंजाब।

A. श्री साधु सिंह जी ⇨ श्री फकीरचंद जी ने होशियारपुर, पंजाब में बनाया।

3. श्री देवा सिंह ⇨ श्री बूटा सिंह, डेरा राधास्वामी, पंजग्राई कलां, जिला फरीदकोट, पंजाब ⇨ श्री सेवा सिंह डेरा राधास्वामी, पंजग्राई कलां, जिला फरीदकोट, पंजाब।

A. श्री देवा सिंह ⇨ दयाल सिंह, डेरा राधास्वामी, गिल रोड़, लुधियाना, पंजाब।

1. बग्गा सिंह तरनतारण ⇨ दर्शन सिंह डेरा सतकरतार, नजदीक मॉडल टाउन, जलंधर, पंजाब।

सावन-कृपाल रूहानी मिशन में :-
1. श्री कृपाल सिंह ➪ श्री ठाकुर सिंह ➪ बलजीत सिंह, डेरा राधास्वामी, नया गांव, हिमाचल प्रदेश।

शिवदयाल सिंह = राय सालिगराम, डेरा दयाल बाग, आगरा, यू.पी. = हजूर सरकार साहिब = साहिब जी महाराज = महता जी महाराज = लाल साहिब जी महाराज = सतसंगी साहिब जी महाराज गद्दी नशीन।
शिवदयाल सिंह = राय सालिगराम = शिवब्रत लाल = फकीर चंद मानव मंदिर होशियारपुर, पंजाब = प्रो. ईश्वर चंद्र = रिटायर्ड डी. आई. जी. नेगी साहिब
शिवदयाल सिंह = राय सालिगराम = शिवब्रत लाल = रामसिंह = ताराचंद, दिनोद, भिवानी, हरियाणा = मास्टर कंवर सिंह गद्दीनशीन
शिवदयाल सिंह = राय सालिगराम = शिवब्रत लाल = रामसिंह = ताराचंद, दिनोद, भिवानी, हरियाणा = गांव अंटा जिला जींद।
शिवदयाल सिंह = जैमल सिंह = बग्गा सिंह, तरनतारन, पंजाब = देवा सिंह तरनतारन = प्रताप सिंह तरनतारन = केहर सिंह, गद्दी नशीन तरनतारन।
शिवदयाल सिंह = जैमल सिंह = सावन सिंह = तेजा सिंह, गांव सैदपुर, जि. जालंधर = रसीला राम = श्री प्यारालाल।
शिवदयाल सिंह = जैमल सिंह = सावन सिंह = देशराज, डेरा राधास्वामी ऋषिकेश, उत्तराखण्ड।
जयगुरुदेव पंथ से सम्बंधित :- शिवदयाल सिंह = गरीबदास = पंडित विष्णु दयाल = घूरेलाल = तुलसीदास जयगुरुदेव मथुरा गद्दीनशीन।

➢डेरा सच्चा सौदा का इतिहास :- डेरे की स्थापना 2 अप्रैल 1949 में श्री खेमामल जी (डेरा सच्चा सौदा के संस्थापक) की मृत्यु सन् 1960 में (ग्यारह वर्ष पश्चात्) इंजेक्शन रियैक्शन से हुई। प्रमाण पुस्तक ''सतगुरु के परमार्थी करिश्मों का वृतांत'' (भाग-पहला) पृष्ठ 31-32 पर वे किसी को उत्तराधिकार नियुक्त नहीं कर सके। उसके दो शिष्य गद्दी के दावेदार थे। 1. श्री सतनाम सिंह जी तथा 2. मनेजर साहब। संगत ने कई दिन तक मीटिंग करके श्री सतनाम सिंह जी को डेरा सच्चा सौदा सिरसा की गद्दी पर विराजमान कर दिया। मनेजर साहेब ने क्षुब्ध होकर गाँव-जगमाल वाली में स्वयं ही डेरा बनाकर नाम दान प्रारम्भ कर दिया। डेरा सच्चा सौदा सिरसा से प्रकाशित पुस्तक ''सतगुरु के परमार्थी करिश्मों के वृतान्त (पहला भाग) पृष्ठ - 56 पर लिखा है कि श्री शाहमस्ताना जी (जो इंजैक्शन रियैक्शन से मृत्यु को प्राप्त हुआ था। प्रमाण पृष्ठ 31 पर) ही श्री गुरमीत सिंह जी के रूप में जन्में हैं। जो वर्तमान में डेरा सच्चा सौदा सिरसा के गद्दीनसीन हैं।

विचार करें :- श्री शाहमस्ताना जी का भी पुनर्जन्म हुआ है तो मोक्ष नहीं हुआ। यह कहें कि हंसों को तारने के लिए आए हैं। वह भी उचित नहीं। क्योंकि इनकी साधना शास्त्रविरूद्ध है तथा श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में प्रमाण है कि तत्वदर्शी संत से ज्ञान प्राप्त करके सत्य साधना करने वाले साधक

परमेश्वर के उस परम धाम को प्राप्त हो जाते हैं, जहां जाने के पश्चात् फिर लौटकर कभी संसार में नहीं आते। इससे सिद्ध हुआ कि श्री शाहमस्ताना जी का मोक्ष नहीं हुआ। हो सकता है उस पुण्यात्मा की कुछ भक्ति कमाई बची हो उसको अब राज सुख भोग कर नष्ट कर जाएगा। भक्तों को तारने की बजाय उनका जीवन नाश कर जायेंगे।

पाठको ! यह राधास्वामी पंथ, डेरा सच्चा सौदा सिरसा तथा सच्चा सौदा जगमाल वाली, गंगवा गांव में भी श्री खेमामल जी के बागी शिष्य छः सो मस्ताना ने डेरा बना रखा हैं तथा जय गुरूदेव पंथ मथुरा वाला तथा श्री तारा चन्द जी का दिनौंद गाँव वाला राधास्वामी डेरा तथा डेरा बाबा जयमल सिंह ब्यास वाला तथा कृपाल सिंह व ठाकुर सिंह वाला राधास्वामी पंथ सबका सब गोलमाल है। श्रद्धालुओं! यह काल का फैलाया हुआ जाल है। इस से बचो तथा सन्त रामपाल जी महाराज के पास आकर नाम दान लो तथा अपना कल्याण कराओं।

राधास्वामी पंथ, जयगुरूदेव पंथ तथा सच्चा सौदा सिरसा व जगमाल वाली पंथों में श्री शिवदयाल सिंह के विचारों को आधार बना कर सत्संग सुनाया जाता हैं। श्री शिवदयाल सिंह जी इन्हीं पांच नामों (ररंकार, औंकार, ज्योति निरंजन, सोहं तथा सतनाम) का जाप करते थे। वे मोक्ष प्राप्त नहीं कर सके और प्रेत योनी को प्राप्त होकर अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश होकर अपने शिष्यों की शंका का समाधान करते थे। जिस पंथ का प्रर्वतक ही अधोगति को प्राप्त हुआ हो तो अनुयाइयों का क्या बनेगा? सीधा सा उत्तर है, वही जो राधास्वामी पंथ के मुखिया श्री शिवदयाल सिंह राधास्वामी का हुआ। देखें फोटो कापी ''जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज'' के पृष्ठ 78 से 81 की पृष्ठ 30 से 34 पर।

''यह उपरोक्त है जन्म पत्री राधास्वामी पंथ तथा उसकी शाखाओं की'' समझदार को संकेत ही बहुत होता है।

कौन तथा कैसा है परमेश्वर ?

जिन-जिन पुण्यात्माओं ने परमात्मा को प्राप्त किया उन्होंने बताया कि कुल का मालिक एक है। वह मानव सदृश तेजोमय शरीर युक्त है। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा करोड़ चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक है। उसी ने नाना रूप बनाए हैं। परमेश्वर का वास्तविक नाम अपनी-अपनी भाषाओं में कविर्देव (वेदों में संस्कृत भाषा में) तथा हक्का कबीर (श्री गुरु ग्रन्थ साहेब में पृष्ठ नं. 721 पर क्षेत्रीय भाषा में) तथा सत् कबीर (श्री धर्मदास जी की वाणी में क्षेत्रीय भाषा में) तथा बन्दी छोड़ कबीर (सन्त गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में क्षेत्रीय भाषा में) कबीरा, कबीरन् व खबीरा या खबीरन् (श्री कुरान शरीफ़ सूरत फुर्कानि नं. 25, आयत नं. 19, 21, 52, 58, 59 में क्षेत्रीय अरबी भाषा में)। इसी पूर्ण परमात्मा के उपमात्मक नाम अनामी पुरुष, अगम पुरुष, अलख पुरुष, सतपुरुष, अकाल मूर्ति, शब्द स्वरूपी राम, पूर्ण ब्रह्म, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं, जैसे देश के प्रधानमंत्री का वास्तविक शरीर का नाम कुछ और होता है तथा उपमात्मक नाम प्रधान मंत्री जी, प्राइम मिनिस्टर जी अलग होता है। जैसे भारत देश का प्रधानमंत्री जी अपने पास गृह विभाग रख लेता है। जब वह उस विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करता है तो वहाँ गृहमंत्री की भूमिका करता है तथा अपना पद भी गृहमन्त्री लिखता है, हस्ताक्षर वही होते हैं। इसी प्रकार ईश्वरीय सत्ता को समझना है।

जिन सन्तों व ऋषियों को परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई, उन्होंने अपना अन्तिम अनुभव बताया है कि प्रभु का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, प्रभु दिखाई नहीं देता क्योंकि उसका कोई आकार नहीं है तथा शरीर में धुन सुनना आदि प्रभु भक्ति की उपलब्धि है।

आओ विचार करें - जैसे कोई अंधा अन्य अंधों में अपने आपको आँखों वाला सिद्ध किए बैठा हो और कहता है कि रात्री में चन्द्रमा की रोशनी बहुत सुहावनी मन भावनी होती है, मैं देखता हूँ। अन्य अन्धे शिष्यों ने पूछा कि गुरु जी चन्द्रमा कैसा होता है। चतुर अन्धे ने उत्तर दिया कि चन्द्रमा तो निराकार है वह दिखाई थोड़े ही दे सकता है। कोई कहे सूर्य निराकार है वह दिखाई नहीं देता रवि स्वप्रकाशित है इसलिए उसका केवल प्रकाश दिखाई देता है। गुरु जी के बताये अनुसार शिष्य 2½ घण्टे सुबह तथा 2½ घण्टे शाम आकाश में देखते हैं। परन्तु कुछ दिखाई नहीं देता। स्वयं ही विचार विमर्श करते हैं कि गुरु जी तो सही कह रहे हैं, हमारी साधना पूरी 2½ घण्टे सुबह 2½ घण्टे शाम नहीं हो पाती। इसलिए हमें सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा। चतुर गुरु जी की व्याख्या पर आधारित होकर उस चतुर अन्धे की (ज्ञानहीन) व्याख्या के प्रचारक करोड़ों अंधे (ज्ञानहीन) हो चुके हों। फिर उन्हें आँखों वाला (तत्वदर्शी सन्त) बताए कि सूर्य आकार में है और उसी से प्रकाश निकल रहा है। इसी प्रकार चन्द्रमा से प्रकाश निकल रहा है नेत्रहीनों! चन्द्रमा के बिना रात्री में प्रकाश कैसे हो सकता है? जैसे कोई कहे कि ट्यूब लाईट देखी, फिर कोई पूछे कि ट्यूब कैसी होती है जिसकी

आपने रोशनी देखी है? उत्तर मिले कि ट्यूब तो निराकार होने के कारण दिखाई नहीं देती। केवल प्रकाश देखा जा सकता है। विचार करें :- ट्यूब बिना प्रकाश कैसा ?

यदि कोई कहे कि हीरा स्वप्रकाशित होता है। फिर यह भी कहे कि हीरे का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, क्योंकि हीरा तो निराकार है, वह दिखाई थोड़े ही देता है, तो वह व्यक्ति हीरे से परिचित नहीं है। फोकट जौहरी बना है। जो परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा केवल प्रकाश देखना तथा धुन सुनना ही प्रभु प्राप्ति मानते हैं वे पूर्ण रूप से प्रभु तथा भक्ति से अपरिचित हैं। जब उनसे प्रार्थना की कि कुछ नहीं देखा है तुमने, अपने अनुयाइयों को भ्रमित करके दोषी हो रहे हो। न तो आपके गुरुदेव के तत्वज्ञान रूपी नेत्र हैं और न ही आपको। इसलिए दुनियाँ को भ्रमित मत करो। इस बात पर सर्व अज्ञान रूपी नेत्रों के अन्धों ने लट्ठ उठा लिए कि हम तो झूठे, तूं एक सच्चा। आज वही स्थिति संत रामपाल जी महाराज के साथ है।

इस विवाद का निर्णय कैसे हो कि किस सन्त के विचार सही हैं किसके गलत हैं? मान लिजिए जैसे किसी अपराध के विषय में पाँच वकील अपना-अपना विचार व्यक्त कर रहे हैं। एक कहे कि इस अपराध पर संविधान की धारा 301 लगेगी, दूसरा कहे 302, तीसरा कहे 304, चौथा कहे 306 तथा पाँचवां वकील 307 को सही बताए।

ये पाँचों ठीक नहीं हो सकते। केवल एक ही ठीक हो सकता है यदि उसकी व्याख्या अपने देश के पवित्र संविधान से मिलती है। यदि उसकी व्याख्या भी संविधान के विपरीत है तो पाँचों वकील गलत हैं। इसका निर्णय देश का पवित्र संविधान करेगा जो सर्व को मान्य होता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न विचार धाराओं में तथा साधनाओं में से कौन-सी शास्त्र अनुकूल है या कौन-सी शास्त्र विरुद्ध है? इसका निर्णय पवित्र सद्ग्रन्थ ही करेंगे, जो सर्व को मान्य होना चाहिए (यही प्रमाण पवित्र श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में)।

''महर्षि दयानन्द के भक्तों से ज्ञान चर्चा''

➢ महर्षि दयानन्द का भक्त :- परमेश्वर निराकार है, तुम साकार किस आधार से कहते हो, यदि साकार है तो किस आकार में हैं ? पशु, पक्षी या मनुष्य रूप में या कोई पत्थर है परमात्मा ?

➢संत रामपाल जी महाराज :- मैं परमेश्वर को वेदों के आधार से साकार मानता हूँ तथा उन परम सन्तों के अनुभव की वाणी के आधार से साकार मानता हूँ जिन्होंने परमात्मा का साक्षात्कार किया है। इसके साथ-2 तत्वज्ञान के आधार से व गुरू देव द्वारा प्राप्त दीक्षा मन्त्रों की साधना से जाना तथा देखा परमेश्वर साकार है तथा नराकार हैं। महर्षि दयानन्द तथा दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित कुछ वेद मन्त्रों में भी यह स्पष्ट है कि परमेश्वर एक देशीय तथा राजा के समान दर्शनीय है अर्थात् नराकार है। परमेश्वर ऊपर तीसरे मुक्ति धाम में रहता है, वहाँ से गति करके अर्थात् चल कर आता है और वरणीय पुरूष अर्थात् श्रेष्ठ आत्मा, जो

दृढ़ भक्त हैं। उनको आकर परमात्मा मिलता है। उन्हें तत्वज्ञान का उपदेश सुनाता है। जिसका प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27,ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 मैं हैं। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 में स्पष्ट किया है कि परमेश्वर पृथ्वी लोक पर कवियों की तरह भूमिका करता हुआ, विचरण करता है (कवियन् व्रजम्) और भी अनेक वेद मन्त्रों में प्रमाण है कि परमेश्वर साकार नराकार है, जिन वेद मन्त्रों में महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों ने अर्थों के अनर्थ कर रखें हैं। उनका यथार्थ अनुवाद कृप्या पढ़े इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' में। इस पुस्तक में आपको उन मन्त्रों की फोटो कॉपिया भी पढ़ने को मिलेंगी जो महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों के द्वारा अनुवादित हैं, जिनमें वे सच्चाई को नहीं छुपा सके। उन्होंने वेदों के उन मन्त्रों का यथार्थ अनुवाद कर दिया। इसे परमेश्वर की कृपा ही मानेंगे कि उन्होंने आंख मिचौलि करके वेदों की सच्चाई को प्रकट रखा। आप महर्षि दयानन्द तथा दयानन्द के भक्तों द्वारा किए गये वेद मन्त्रों के अनुवाद की फोटो कापी भी पढ़ेंगे। इससे स्वतः निर्णय हो जाएगा कि वास्तविक्ता क्या हैं।

➢महर्षि दयानन्द का भक्त :- आप संस्कृत भाषा नहीं जानते। आप वेदों को कैसे समझ सकते हैं। जनता को बरगला रहे हो। वेदों में परमात्मा निराकार लिखा है। महर्षि दयानन्द ने वेदों का यथार्थ ज्ञान सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है।

➢संत रामपाल जी महाराज :- महर्षि दयानन्द को वेदों का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था। यदि वेद ज्ञान होता तो परमात्मा को निराकार नहीं कहते। देखों ढेर सारे वेद मंत्र जिनमें परमात्मा साकार सिद्ध है। जिन वेद मंत्रों का अनुवाद दयानन्द के चेलों का किया हुआ है। मेरे पूज्य ईष्ट देव कबीर परमेश्वर जी सन् 1398 (वि. संवत् 1455 ज्येष्ठ शुदी पूर्णमासी) को सत्यलोक से अर्थात् तीसरे मुक्ति धाम से चल कर आए। अपनी अच्छी आत्माओं, दृढ़ भक्तों (आदरणीय धर्मदास जी, आदरणीय मलूक दास जी, आदरणीय दादू दास जी, आदरणीय नानक देव जी, आदरणीय गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर (हरियाणा) व आदरणीय घीसा दास जी गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ (उत्तर प्रदेश) को मिले।

परम पूज्य कबीर जी जो काशी शहर में जुलाहा रूप में लीला किया करते थे। वे स्वयं परमेश्वर हैं। उन्होंने ही वे लीलाऐं की हैं, जो वेद बताते हैं कि परमेश्वर ऐसी लीलाऐं करता है। इसी प्रकार लीला करने, परमेश्वर प्रत्येक युग में आते हैं। भक्तों को उपदेश देते हैं तथा यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान को अपनी अमृत वाणी (सच्चिदानन्द घन की वाणी अर्थात् कर्विवाणी) में कहते हैं। इसी वाणी को 'सूक्ष्म वेद' कहते हैं। जिस का विवरण श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में भी है। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में अन्य अनुवाद कर्त्ताओं ने अर्थों का अनर्थ किया है। मूल पाठ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में ''ब्रह्मणः मुखे'' शब्द है जिसका अनुवाद ''वेद की वाणी'' किया है। यहाँ 'ब्रह्मण' का अर्थ उचित नहीं किया है। कृप्या देखें उन्हीं अनुवाद कर्त्ताओं द्वारा गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ब्रह्मणः''

का अर्थ ''सच्चिदानन्द घन ब्रह्म'' जो उचित अनुवाद है। यहाँ गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान ''ब्रह्मणः मुखे'' सच्चिदानन्द घन ब्रह्म ने अर्थात् परमेश्वर ने अपने मुख कमल से उच्चारण करके कहा है। वह 'सच्चिदानन्द घन' की वाणी है जिसमें परमेश्वर ने यज्ञों व धार्मिक अनुष्ठानों को विस्तार से कहा हैं। यह ज्ञान कबीर परमेश्वर जी ने सन् 1398 संवत् 1455 ज्येष्ठ शुदी पूर्णमासी से सन् 1518 (माघ शुदी एकादशी सं. 1575) तक अतिथि की तरह रहकर के अपने मुख कमल से बोला था। जिसे ''कबीर वाणी'' कहते हैं। इसी को तत्वज्ञान तथा सुक्ष्म वेद भी कहते हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा था :-

हम ही अलख अल्लाह है, कुतुब गोस और पीर। मैं हूँ खालिक धणी, मेरा नाम कबीर।।
बेद मेरा भेद है, मैं ना मिलूं बेदन के माहीं। जौण बेद से मैं मिलूं, उसे बेद जानते नाहीं।।

सोलह संख पर हमारा तकिया, गगन मण्डल के जिन्दा।
हुक्म हिसाबी हम चल आए, काटन यम का फंदा।।

महर्षि रामानन्द जी से कबीर परमेश्वर जी ने कहा था :-

ए स्वामी सृष्टा मैं सृष्टि हमरे तीर। गरीब, दास अधर बसूं, अबिगत सत् कबीर।।

कबीर परमेश्वर ने आदरणीय धर्मदास जी को तत्वज्ञान बताया :-

धर्मदास यह जग बौराना, कोई ना जाने पद निर्वाणा।
यही कारण में कथा पसारा, इन से कहिए वह राम नियारा।।
अब मैं तुमसे कहूँ चिताई, त्रिदेवन की उत्पत्ति भाई।
माँ अष्टंगी पिता निंरजन, ये जम दारूण वंशन अंजन।।
निरंजन किन्हें भोग विलासा, दुर्गा को रही तब आशा।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा, विष्णु, शिव नाम धराए।।
तीनों देव अविनाशी नाहीं, जन्में मरें आवें जाहीं।
तीन देव की जो करते भक्ति, उनकी कबहु ना होवे मुक्ति।।
बेद मेरा भेद है, मैं ना मिलूं बेदन के माहीं।
जौण बेद से मैं मिलूं, उसे बेद जानते नाहीं।।

उपरोक्त सच्चिदानन्द घन ब्रह्म (कबीर परमेश्वर) की वाणी है। जिसमें परमेश्वर ने अपने मुख कमल से कहा है कि हे धर्मदास ! (जो उन श्रेष्ठ आत्माओं में से एक हैं, जिनको परमेश्वर मिले थे) यह सर्व संसार मोक्ष मार्ग से अपरिचित है, मैं पूर्ण परमात्मा हूँ। मैंने सर्व सृष्टि की रचना, अपने वचन से की है। चारों वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) मेरी ही महिमा का गुणगान कर रहे हैं। परन्तु मेरे परम पद को प्राप्त करने का भक्ति मार्ग इन चारों वेदों में नहीं है। जिस वेद से (कबीर वाणी जिसे 'सुक्ष्म वेद' कहते हैं उससे) अर्थात् सुक्ष्म वेद से मेरी प्राप्ति हो सकती है। वह भक्ति विधि इन वेदों में नहीं है। हे धर्मदास! और बताता हूँ कि जिन तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी) को आप अजर-अमर अविनाशी-अजन्मा कहते हो। वे तीनों नाशवान हैं, इनका जन्म-मृत्यु होता है। ज्योति निरंजन अर्थात् क्षर ब्रह्म इन तीनों का पिता है तथा दुर्गा इनकी

माता है। इन तीनों देवताओं की भक्ति करने वालों का कदापि मोक्ष नहीं हो सकता।

पुण्यात्माओं ! उस समय महर्षि दयानन्द जैसे गुरू पद प्राप्त ब्राह्मणों ने परमेश्वर कबीर जी का घोर विरोध किया था तथा जनता को बरगलाया था कि कबीर अशिक्षित है, यह संस्कृत नहीं पढ़ा है, यह सब झूठ कह रहा है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी नाशवान है, यह झूठ कह रहा है कि वेदों में परमात्मा साकार है। यह जुलाहा (धाणक) अपने आप को परमात्मा कह रहा है। परमेश्वर तो निराकार है। वह विराट परमात्मा कण-कण में विद्यमान है। यह कबीर क्या जाने वेदों, श्रीमद् भगवत् गीता तथा पुराणों के विषय में? इस की बातों में न आना।

उस समय उन अज्ञानियों का दाव लग गया क्योंकि जनता शिक्षित नहीं थी। अज्ञान के आधार से दयानन्द जैसे वेद ज्ञानहीन प्राणी केवल एक संस्कृत भाषा को पढ़ कर महर्षि पद पर विराजमान हो गए। दयानन्द शास्त्री तो हो सकता है महर्षि नहीं। यही भाषा अब आप दयानन्द भक्त आर्यसमाजी बोल रहे हो कि रामपाल संस्कृत भाषा नहीं जानता है, यह क्या जाने वेदों के गूढ़ रहस्यों को। इसी बात से वर्तमान शिक्षित समाज भी भ्रम में है कि वेद संस्कृत भाषा में हैं तथा रामपाल जी संस्कृत नहीं जानता, इसीलिए वेदों को नहीं समझ पा रहा है और परमात्मा को साकार कह रहा है। महर्षि दयानन्द ने तो वेदों के आधार से ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना की है। यह धारणा अभी तक बनी हुई है। जब तक जनता वेदों की सच्चाई से परिचित नहीं होगी तब तक इस शास्त्री दयानन्द को महर्षि मानते रहेंगे। मुझ दास का प्रयत्न है कि वेदों की सच्चाई जनता के रूबरू करूं। जिससे अज्ञान का नाश और ज्ञान का प्रकाश हो सके। इसलिए ''महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों द्वारा किए वेदों के अनुवाद जनता को दिखाता हूँ कि परमेश्वर के निराकार होने का शोर मचाने वालों के द्वारा किए, अनुवादों में ही, परमेश्वर साकार लिखा है। ''सत्यार्थ प्रकाश'' के विवेचन से भी परमेश्वर साकार सिद्ध होता है। वास्तव में परमेश्वर साकार है, नराकार है, देखिए ढ़ेर सारे प्रमाण वेद मन्त्रों में जो इस पुस्तक ''धरती पर अवतार'' में प्रस्तुत किए गए हैं। निराकार परमेश्वर कहने वालों अर्थात् महर्षि दयानन्द तथा इसके भक्तों के करकमलों से किए अनुवाद में साकार-नराकार परमेश्वर के प्रमाण प्रस्तुत हैं उन्हीं के अनुवाद की फोटो कापियाँ।

➢महर्षि दयानन्द का भक्त :- परमात्मा को साकार मानें तो उसका शरीर सिद्ध हुआ, शरीर सिद्ध हुआ तो उसको उत्पन्न करने वाला कोई और होगा, यदि परमात्मा को साकार मानें तो वह सर्वव्यापक नहीं हो सकता तथा अन्तर्यामि भी नहीं हो सकता। यदि यह माने कि परमेश्वर ने अपना शरीर आप बना लिया तो इससे पहले परमात्मा निराकार था। यह सत्य है जो महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि परमेश्वर निराकार है, यही वेदों में प्रमाण है कि परमेश्वर निराकार है। हम वेदों को सत्य मानते हैं।

➢संत रामपाल जी महाराज :- विचारणीय विषय है कि जैसे गिरगिट (करेलिया) एक छिपकली जैसा जानवर होता है। वह अपना रंग रूप बदल लेता है तो क्या परमात्मा

उस करेलिये से भी गया गुजरा है, जो उसी परमेश्वर द्वारा बनाया गया है। परमेश्वर समर्थ है। वह एक वचन से सर्व ब्रह्मण्डों को उत्पन्न कर देता है। फिर नियम बना देता है यह सर्व सृष्टि उस परमेश्वर के बनाए विद्यान अनुसार बनती बिगड़ती रहती है। परमात्मा अन्य सर्व प्राणियों के शरीर बनाता है तो वह अपना शरीर भी बना सकता है। जैसे दर्जी (Tailor) अन्य के वस्त्र बनाता है तो वह अपने भी बना सकता है। जो बात वेदों में प्रमाणित है तो उस को आप के न मानने से अभिप्राय यही होगा की आप सत्य अनुगामी नहीं है मन मुखी तथा हठ्ठी व्यक्ति हैं। यह देखें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18-19-20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 जो दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है तथा सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधी सभा दिल्ली से तथा श्री वेदभिक्षु आर्यसमाज मन्दिर करोल बाग, पो. मुखमेल पुर, इब्राहिम नगर, दिल्ली से प्रकाशित है।

दयानन्द के भक्त कहते रहे हैं कि संत रामपाल दास जी महाराज झूठ बोलता है कह रहा है कि वेदों में परमात्मा साकार बताया है। अब आप अपनी आँखों से पढ़ें वेदों में परमेश्वर साकार है नराकार हैं के ढेर सारे प्रमाण। कबीर परमेश्वर कहा करते :-

निरंजन धन तेरा दरबार, जहां पर तनिक न न्याय विचार।
साच्चों को तो झूठा बतावें, इन झूठों का ऐतबार।।

❑परमेश्वर कविर्देव (कबिर परमेश्वर) अपने रूप को सरल करके अपने लोक से आता है। अपने उपासक के विघ्नों को नाश करते हैं। अच्छी आत्मा को मिलते हैं। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(यज्वे) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिए परमात्मा (विश्वानि सुपथानि) सब रास्तों को (कृण्वन्) सुगम करता हुआ (मृधः) उनके विघ्नों को (अतिगाहते) मर्द्दन करता है और (पुनानः) उनको पवित्र करता हुआ और (निर्निजं) अपने रूप को (गाः कृण्वानः) सरल करता हुआ (हर्य्यतः) वह कान्तिमय परमात्मा (कविः) सर्वज्ञ (अत्योन) विद्युत् के समान (क्रीळन्) क्रीड़ा करता हुआ (वारं) वरणीय पुरुष को (पर्य्यर्षति) प्राप्त होता है ॥२६॥

यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26 की फोटो कापी है। महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। ''परमात्मा भक्ति करने वाले भक्तों के सर्व विघ्न नाश करता है। अपने रूप को सरल करता हुआ अर्थात् अपना रूप हल्के तेजयुक्त करके वह कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर श्रेष्ठ पुरूष को मिलता है।

विचार करें :- दयानन्द के भक्त कहते हैं कि ''कविः'' का अर्थ कविर्देव या कबीर कैसे किया है, यह उचित नहीं। महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 1 में ''यजुः'' का अर्थ यजुर्वेद किया है। हम 'व' को 'ब' कहते हैं। देव का अर्थ परमेश्वर होता है। इसलिए जहाँ पर वेदों में परमात्मा की महिमा का प्रकरण है

वहाँ पर यदि ''कविः'' शब्द लिखा है तो उसका अर्थ कविर्देव है = इसे कबिर परमेश्वर कहने लगे तथा कबीर लिखने लगे। परमेश्वर का यही नाम वेदोक्त है।

❑परमेश्वर द्यूलोक अर्थात् प्रकाशमान सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ (स्थान) पर विराजमान है। एक देशीय है। साकार है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 (महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(उदन्युवः) प्रेम की (ताः) वे (शतधाराः) सैंकड़ों धाराएं (असश्चतः) जो नानारूपों में (अभिश्रियः) स्थिति को लाभ कर रही हैं। वे (हरिं) परमात्मा को (अवनवन्ते) प्राप्त होती हैं। (गोभिरावृतं) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (क्षिपः) बुद्धिवृत्तियां (मृजन्ति) विषय करती हैं। जो परमात्मा (दिवस्तृतीये पृष्ठे) द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (रोचने) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 की फोटो कापी है। जो दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि परमात्मा द्यूः लोक अर्थात् प्रकाशमान सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है। भावार्थ है कि परमेश्वर एक देशीय है साकार है वहाँ से चलकर पृथ्वी लोक पर सत्यज्ञान प्रदान करने आते हैं।

❑परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय है साकार है। अपने निज स्थान से जहां परमेश्वर रहता है। वहाँ से तीव्र गामी होकर बिजली जैसी गति से आता है। अपने दृढ़ भक्त को जो अच्छी आत्मा दृढ़ भक्त होता है। उसे आकर मिलता है। जैसे आकाशीय विद्युत किसी धातु को आधार बनाकर ही गिरती है। उसी प्रकार परमेश्वर विद्युत से भी अधिक तीव्रता से आते हैं। अपनी अच्छी आत्मा को उद्देश्य बनाकर मिलते हैं। उसको तत्वज्ञान कराने के उद्देश्य से मिलते हैं। देखें प्रमाण (महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥१॥

पदार्थः—(सोमः) जो सर्वोत्पादक प्रभु (अरुषः) प्रकाशस्वरूप (वृषा) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (हरिः) पापों के हरण करने वाला है, वह (राजेव) राजा के समान (दस्मः) दर्शनीय है। और वह (गाः) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (अभि अचिक्रदत्) शब्दायमान हो रहा है। वह (वारं) वरणीय पुरुष को जो (अव्ययं) दृढ़भक्त है उसको (पुनानः) पवित्र करता हुआ (पर्य्येति) प्राप्त होता है। (न) जिस प्रकार (श्येनः) विद्युत् (घृतवन्तं) स्नेहवाले (आसदं) स्थानों को (योनिं) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (असावि) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित है। छोटे आकार वाले ऋग्वेद से लिया है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय है अर्थात् नराकार है। अपने दृढ़ भक्त को अचानक आकर मिलता है। जैसे आकाशीय बिजली किसी धातु विशेष पर गिरती है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि।
अपसेधन्दुरिता सोम मृलय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥२॥

पदार्थ—हे परमात्मन्! (वेधस्या) उपदेश करने की इच्छा से आप (माहिनं) महापुरुषों को (पर्येषि) प्राप्त होते हैं और आप (अत्यः) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (न) समान (अभिवाजं) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को (अभ्यर्षसि) प्राप्त होते हैं। आप (कविः) सर्वज्ञ हैं (मृष्टः) शुद्ध स्वरूप हैं (दुरिता) हमारे पापों को (अपसेधन्) दूर करके (सोम) हे सोम! (मृलय) आप हमको सुख दें और (घृतं वसानः) प्रेमभाव को उत्पन्न करते हुए (निर्निजं) पवित्रता को (परियासि) उत्पन्न करें ॥२॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 2 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। इस में स्पष्ट है कि परमात्मा का नाम (कविः) कविर्देव है। वह अत्यन्त गतिशील पदार्थ के समान अर्थात् बिजली जैसी गति से चलकर भक्तों को अनुष्ठानों में मिलता है। दयानन्द भक्तों ने ''कवि'' का अर्थ सर्वज्ञ किया है कोई भी ''कवि'' सर्वज्ञ नहीं होता इसलिए कवि का अर्थ सर्वज्ञ करना अनुचित है। कविः का अर्थ कवि या काव्यकार तो किया जा सकता है। परन्तु जहां पर परमात्मा की महिमा का वर्णन हैं वहाँ यह परमात्मा का नाम है वहाँ ''कविः'' का अर्थ कविर्देव करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के तीसरे समुल्लास में पृष्ठ 64 पर लिखा है कि वेद ईश्वर कृत होने से निभ्रान्त है अर्थात् वेदों का प्रमाण वेद आधीन है वेद की विशेष व्याख्या ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' नामक पुस्तक में देख लिजिए। महर्षि दयानन्द का कहने का भावार्थ है कि वेदों को जानने के लिए व्याकरण में उलझने की आवश्यकता नहीं हैं। वेद ज्ञान प्रथम है व्याकरण निघटु आदि ऋषियों कृत हैं वे त्रुटि युक्त हो सकते हैं। वेद ज्ञान स्वतः प्रमाण है। इसलिए ''कविर्'' का अर्थ कबिर या कबीर करना सुक्ष्मवेद अनुसार उचित है। यदि इन व्याकरण वालों की मानें तो यह जान लें कि उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर का नाम ''कवि'' है। जैसे किसी लड़की का नाम ''कविता'' है। यदि कविता शब्द का अर्थ कर दिया जाए तो उस लड़की को कैसे जान सकेंगे। जहां पर बेटी कविता का वर्णन है। वहां उसका अर्थ न करके कविता लिखना उचित है। ऐसा ही ''कवि'' के विषय में जाने। उसे कर्विदेव वेदों में लिखा है। उसी को कबिर्देव=कबिर परमेश्वर = कबीर साहेब लिखने तथा उच्चारण करने लगे। जैसे किसी का नाम धर्मवीर है। उसको अपनी भाषा में धरमबिर लिखने लगे,

बोलने लगे फिर भी संकेत ''धर्मवीर'' की ओर है। इसी तरह बेदों में अंकित कविर्देव को कबिर परमेश्वर लिखने लगे (कबीर साहब लिखने व बोलने लगे) परन्तु यह ''कबिर'' नाम परमेश्वर का है। वही परमेश्वर काशी शहर में जुलाहा जाति में प्रकट व प्रसिद्ध हुआ। वेद उसी का गुण-गान कर रहे हैं।

अन्य उदाहरण :- यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 1 के मूल पाठ में ''यजुः'' शब्द लिखा है। जो यजुर्वेद का बोधक है। महर्षि दयानन्द ने (यजुः) का अर्थ यजुर्वेद किया है। जो सही है यदि ''यजुः'' का अर्थ अन्य कर दिया जाए तो अनर्थ हो जाएगा। यजुः का अर्थ यज्ञिय स्तुतियाँ तथा उपासना भी होता है। इसी प्रकार ''कविः'' शब्द का अर्थ इस मंत्र में कविर्देव करना उचित है। क्योंकि इसमें परमेश्वर की महिमा का वर्णन है।

❑ परमेश्वर मनुष्य सदृश है। साधक जन समाधि में उस नराकार परमेश्वर को देखते हैं। कृप्या देखें ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 में जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)
ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27

यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम ।
अग्ने स बोधि मे वचः ॥२७॥

पदार्थः—(अङ्गिरस्तम) हे सबको अत्यधिक रस देने वाले ! (अग्ने) हे सबके आधार सर्वशक्तिमान् ! (मनुष्वत्) विज्ञाता मनुष्यों के तुल्य (यम् त्वाम्) जिस तुझे (जनासः) मनुष्य (इन्धते) समाधि में देखते हैं (सः) वह तू (मे वचः) मेरे स्तुतिरूप वचनों को (बोधि) कृपा करके सुन ॥२७॥

यह ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 की फोटो कापी है। जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट है कि परमात्मा (मनुष्वत्) विज्ञाता अर्थात् तत्वदर्शी मनुष्यों के तुल्य है (त्वान) आप को (जनासः) साधक जन (इन्धते) समाधि में देखते हैं।

विचार करें :- यह अनुवाद परमात्मा को निराकार बताने वालों के कर कमलों से हैं। जिस में स्पष्ट है कि परमात्मा मनुष्य सदृश है। समाधि में देखा जाता है। अब परमेश्वर को निराकार कहने वालों को या तो चुल्लू भर पानी में डूब कर मर जाना चाहिए या सत्य को स्वीकार कर अक्षय मोक्षार्थ हेतु मुझ दास से उपदेश लेकर अपना तथा अपने परिजनों का उद्धार कराना चाहिए। इस ऋग्वेद मण्डल 8 सुक्त 43 मंत्र 27 का यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है (मनुष्वत् अंगिरस्तम अग्ने) हे परमेश्वर ! आप मनुष्य सदृश सर्वांग युक्त साकार सशरीर हैं (यम् त्वा) जिस आपको (जनास्) साधक जन (इन्धते) समाधि में देखते हैं। (स) वह आप (मे) मेरे को (वचः) अपने अमृत वचन अर्थात् तत्वज्ञान (बोधि) का बोध कराऐं।

❑ परमात्मा तीन प्रकार से शरीर धारण करके संसार का धारण पोषण करता

है। देखें दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 में जो अग्रलिखित हैं :-
(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)
ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ।२६।

पदार्थः—(सोम) परमात्मन् ! (अग्ने) हे ज्ञानस्वरूप ! (सवितः) हे सर्वोत्पादक ! (देव) हे दिव्य गुणसम्पन्न परमात्मन् ! (त्वं) आप (त्रिभिः) तीन (धामभिः) शरीरों से (वर्षिष्ठैः) जो श्रेष्ठ हैं तथा (दक्षैः) दक्षतायुक्त हैं उनसे (नः) हम लोगों को (पुनीहि) पवित्र करिये ।।२६।।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)
ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8

तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम् ।
त्रिधातु वारणं मधु ।।८।।

पदार्थः—(तं) उस पुरुष को (अग्रुवः) उग्रगतियें (हिन्वन्ति) प्रेरणा करती हैं और (बाकुरं) भासमान (दृतिं) शरीर को वह पुरुष प्राप्त होता है जिसमें (त्रिधातु) तीन प्रकार से (वारणं) दूसरों का वारण करने वाला (मधु) मधुमय शरीर मिलता है ।।८।।

यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 की फोटो कापी है इस से पहले ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 की फोटो कापी है। जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित है। इन मंत्रों में भी परमेश्वर सशरीर प्रमाणित है की परमात्मा का तीन स्थिति में शरीर है। एक शरीर में परमेश्वर द्यू लोक अर्थात् शाशवत् स्थान जिसे सत्यलोक भी कहा है उस लोक में अत्यन्त तेजोमय शरीर युक्त हैं। उस शरीर के एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यो तथा करोड़ चन्द्रमाओं के मिले जुले प्रकाश से भी अधिक है। परमेश्वर के शरीर की यह प्रथम स्थिति है। दूसरी स्थिति जो शरीर धारण करने की है उसमें परमेश्वर प्रत्येक युग में एक नवजात शिशु का रूप धारण करके किसी शहर से कुछ दूरी पर वन में जलास्य में जल के ऊपर कमल के फूल पर विराजमान होता है। जिस कारण से परमेश्वर को नारायण भी कहा जाता है। नार का अर्थ जल तथा आयण का अर्थ है अवतरित होना अर्थात् आना। इसलिए परमेश्वर को नारायण कहा जाता है। जिस का अर्थ है जल पर विश्राम करने वाला। तीसरी स्थिति में परमेश्वर सन्त या ऋषि का रूप धारण करके श्रेष्ठ पुरूषों को जो दृढ़ भक्त होते हैं। उनको मिलता है। उनको तत्वज्ञान से परिचित करवाता है। इस मन्त्र में दयानन्द के भक्त अपने कर कमलों से लिख रहे हैं कि परमात्मा सुन्दर शरीर धारण करता है। वेद ज्ञान सही है परन्तु, महर्षि दयानन्द का ''सत्यार्थ प्रकाश'' झूठा है। जिस में कहा है कि परमात्मा निराकार है। आप जी

स्वयं देखें इन वेद मन्त्रों में स्पष्ट है कि परमेश्वर तीन स्थिति में शरीर धारण करता है। पुरूष का आध्यात्मिक अर्थ परमेश्वर है। महर्षि दयानन्द के द्वारा अनुवादित यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 17 में दयानन्द ने ''पुरूष'' का अर्थ पूर्ण परमात्मा किया है तथा ''ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'' पृष्ठ 125 पर ''पुरूष'' का अर्थ किया है कि ''पुरूष'' उस को कहते हैं जो सर्वशक्तिमान ईश्वर कहाता है। इसलिए पाठकों से निवेदन है कि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8-9 में अनुवाद कर्ताओं ने जो चतुरता की है उसे समझे तथा पुरूष का अर्थ परमेश्वर जाने।

❑परमात्मा किस प्रकार तीन शरीर धारण करता है ? कृप्या पढ़ें निम्न व्याख्या :- 1. अत्यधिक प्रकाशयुक्त मानव सदृश शरीर में परमेश्वर सत्यलोक में विराजमान हैं। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी अधिक है। 2. शिशु रूप में पृथ्वी पर प्रकट होता है। लीलामय शरीर से बड़ा होता है फिर तत्वज्ञान प्रचार करता है। 3. ऋषि या सन्त रूप में कहीं भी प्रकट होकर दृढ़ भक्तों को मिलता है तथा तत्वज्ञान प्रचार करता है।

❑जब परमात्मा दूसरी प्रकार का शरीर धारण करके अर्थात् शिशु रूप धारण करके पृथ्वी पर प्रकट होता है उस समय उनके पालन की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। कृप्या पढ़ें ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 में जो निम्न हैं :-
(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)
ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9

अभी३ममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् ।
सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्य की (पातवे) वृद्धि के लिये। (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ॥९॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 9 की फोटो कापी है जो महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा अनुवादित है। इसमें परमेश्वर के दूसरे प्रकार के शरीर की स्थिति का वर्णन है। जिस शरीर में परमात्मा शिशु रूप धारण करके वन (जंगल) में जल पर प्रकट होता है। उस समय उस बालक वेशधारी परमात्मा के पोषण की लीला कंवारी गौवों द्वारा होती है। यही प्रमाण पवित्र ''कबीर सागर'' नामक सद्ग्रंथ में है। जो आदरणीय धर्मदास जी द्वारा लगभग सन् 1520 के आसपास लिखा गया था। उसमें लिखा है कि परमेश्वर कबीर जी शिशु रूप धारण करके 'लहरतारा' नामक सरोवर में कमल के फूल पर अपने द्यूलोक (सतलोक) से चलकर आकर विराजमान हुए। वहां उन्हें एक निःसन्तान जुलाहा दम्पति घर ले आया। बाल वेशधारी परमेश्वर ने कई दिनों तक कुछ नहीं खाया-पीया। फिर ऋषि रामानन्द जी के बताए अनुसार तथा एक सन्त रूप में प्रकट शिव जी के अनुसार कँवारी गाय लाई गई। परमेश्वर कबीर जी के आर्शीवाद से उस कँवारी

गाय (बछिया) ने दूध दिया। वह बालक कर्विदेव ने पीया। वह बछिया प्रतिदिन दूध देने लगी। इस प्रकार बालक रूप में लीला कर रहे परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई।

इन उपरोक्त वेद मंत्रों में स्पष्ट है कि परमेश्वर एक देशीय है, अर्थात् एक स्थान पर तीसरे मुक्ति धाम में, अर्थात् द्युलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है। वहाँ से गति करके आता है। जैसे व्यक्ति शुभ्र शरीर धारण करके आता है। परमेश्वर राजा के समान दर्शनीय भासमान शरीर धारण करता है। शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है। उस समय परमात्मा की परवरिश की लीला कंवारी गायों द्वारा होती है। उपदेश करने की इच्छा से अर्थात् तत्व ज्ञान देने के लिए स्वयं आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता हैं। वह नराकार अर्थात् मनुष्य सदृश है।

इन उपरोक्त वेद मन्त्रों की फोटो कापियों में आप को स्पष्ट हुआ कि वेदों में परमेश्वर साकार है। वह राजा के समान दर्शनीय अर्थात् नराकार अर्थात् मनुष्य सदृश है, देखा जाने वाला है। अपने द्युलोक के तीसरे स्थान पर एक जगह विराजमान है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में समुल्लास 9 में लिखा है कि परमात्मा किसी एक स्थान पर विराजमान नहीं है। वह विभु है। जबकि वेद बताते हैं कि परमात्मा एक स्थान पर विराजमान है। एक देशीय है। इस से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द का 'सत्यार्थ प्रकाश' वेद ज्ञान विरूद्ध कोरा अज्ञान है। करौंथा काण्ड का यही कारण था कि आर्य समाज के आचार्यों ने महर्षि के अनुयाइयों को भ्रमित किया कि रामपाल दास जी महाराज जनता में भ्रम फैला रहा है। महर्षि दयानन्द की छवि धूमिल कर रहा है। वह परमात्मा को साकार बता रहा जबकि वेदों में परमात्मा निराकार लिखा है। अब इन आचार्यों को चूल्लू भर पानी में डूब कर मर जाना चाहिए या संत रामपाल दास जी महाराज के पास आकर अपना कल्याण करवाना चाहिए। जबकि वेदों में परमात्मा साकार है और इन्हीं के कर कमलों से वेदों का अनुवाद है। इसका परिणाम यह है कि महर्षि दयानन्द की हार हुई व संत रामपाल दास जी महाराज की जीत हुई।

(महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥१॥

पदार्थः—(**सूर्य्ये**) सूर्य के विषय में (**न**) जैसे (**विशः**) रश्मियां प्रकाशित करती हैं । उसी प्रकार (**धियः**) मनुष्यों की बुद्धियां (**स्पर्धन्ते**) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं । (**अस्मिन् अधि**) जिस परमात्मा में (**वाजिनीव**) सर्वोपरि बलों के समान (**शुभः**) शुभ बल है वह परमात्मा (**अपोवृणानः**) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (**पवते**) सबको पवित्र करता हैं । (**कवीयन्**) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (**पशुवर्धनाय**) सर्वद्रष्टृत्व पद के लिए (**व्रजं, न**) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (**मन्म**) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ॥१॥

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1 की फोटो कापी है। जो दयानन्द भक्तों द्वारा अनुवादित हैं। इस मन्त्र के अनुवाद में ढेर सारी त्रुटियाँ

हैं। फिर भी इन्हीं के जल में तुम्बा छुपाने के प्रयत्न के पश्चात् भी स्पष्ट है कि परमेश्वर (कवियन् न व्रजम्) कवियों के समान आचरण करता हुआ विचरता है। एक स्थान से दूसरे स्थान को तत्वज्ञान प्रचार हेतु जाता हैं। इस से परमेश्वर साकार, नराकार सिद्ध हुआ। अब कहाँ गया महर्षि दयानन्द का अज्ञान जो कहता था कि वेदों में परमेश्वर निराकार है। एक देशीय नहीं है। वेदों के प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द को वेदों का ज्ञान नहीं था इसलिए वह महर्षि भी नहीं था। (महर्षि दयानन्द के अनुयाई आर्यसमाजियों के अनुवाद की फोटो कापी)

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 18

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् ।।१८।।

पदार्थः—(**सोमः**) सोमस्वरूप परमात्मा (**सिसासन्**) पालन की इच्छा करता हुआ (**महिषः**) जो महान् है वह परमात्मा (**तृतीयं, धाम**) देवयान और पितृयान इन दोनों से पृथक तीसरा जो मुक्तिधाम है। उसमें (**विराजम्**) विराजमान जो ज्ञानयोगी है उसको (**अनुराजति**) प्रकाश करने वाला है और (**स्तुप**) स्तूयमान है। (**कवीनाम्, पदवीः**) जो क्रान्तदर्शियों की पदवी अर्थात् मुख्य स्थान है और (**सहस्रनीथः**) अनन्त प्रकार से स्तवनीय है, (**ऋषिमनाः**) सर्वज्ञान के साधनरूप मनवाला वह परमात्मा (**यः**) जो (**ऋषिकृत**) सब ज्ञानों का प्रदाता (**स्वर्षाः**) सूर्यादिकों को प्रकाशक है। वह जिज्ञासु के लिए उपासनीय है ।।१८।।

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 की फोटो कापी है। इसका दयानन्द के भक्तों के द्वारा अनुवाद किया गया है। इस में स्पष्ट है कि परमेश्वर तीसरे मुक्ति धाम में विराजमान है। इसमें अनुवाद कर्त्ता ने महर्षि दयानन्द के अज्ञान को आधार मान कर अर्थ को घुमा दिया है लिख दिया ''जो ज्ञान योगी'' विराजमान है। पाठक जन ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 27 में दयानन्द के भक्तों द्वारा किए अनुवाद में पढ़ चुके हैं कि द्यूलोक के तीसरे भाग में परमात्मा विराजमान है। ज्ञान योगी नहीं यहां पर अनुवाद कर्ताओं को दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश आड़े आ गया। इसलिए अनर्थ करने की कुचेष्टा की है। जब कि मूल पाठ में ज्ञान योगी का सम्बन्ध नहीं है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 27 स्वयं अनुवाद में लिखा है कि परमेश्वर द्यूलोक के तीसरे पृृष्ठ (भाग) पर विराजमान है। यहां भी वेद मंत्र 18 में यही प्रमाण है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 का यथार्थ अनुवाद कृप्या पढ़े संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा किया गया।

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्।।18।।

ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्राणीथः पदवीः कवीनाम्। तृतीयम् धाम महिषः सिषा सन्त् सोमः विराजमानु राजति स्टुप्।।

अनुवाद – वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि (य) जो पूर्ण परमात्मा विलक्षण बच्चे के रूप में आकर (कवीनाम्) प्रसिद्ध कवियों की (पदवीः) उपाधि प्राप्त करके अर्थात् एक संत या ऋषि की भूमिका करता है उस (ऋषिकृत्) संत रूप में प्रकट हुए प्रभु द्वारा रची (सहस्राणीथः) हजारों वाणी (ऋषिमना) संत स्वभाव वाले व्यक्तियों अर्थात् भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग तुल्य आनन्द दायक

होती हैं। (सोम) वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष (तृतीया) तीसरे (धाम) मुक्ति लोक अर्थात् सत्यलोक की (महिषः) सुदृढ़ पृथ्वी को (सिषा) स्थापित करके (अनु) पश्चात् (सन्त्) मानव सदृश संत रूप में होता हुआ (स्टुप) गुबंद अर्थात् गुम्बज में उच्चे टिले रूपी सिंहासन पर (विराजमनु राजति) उज्जवल स्थूल आकार में अर्थात् मानव सदृश तेजोमय शरीर में विराजमान है।

भावार्थ - ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 17 में कहा है कि कविर्देव शिशु रूप धारण कर लेता है। लीला करता हुआ बड़ा होता है। कविताओं द्वारा तत्वज्ञान वर्णन करने के कारण कवि की पदवी प्राप्त करता है अर्थात् उसे ऋषि, संत व कवि कहने लग जाते हैं, वास्तव में वह पूर्ण परमात्मा कविर् ही है। इसकी पुष्टि ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मंत्र 1 ने भी की है कि परमात्मा कवियों की तरह आचरण करता है। उसके द्वारा रची अमृतवाणी कबीर वाणी (कविर्वाणी) कही जाती है, जो भक्तों के लिए स्वर्ग तुल्य सुखदाई होती है। वही परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सत्यलोक की स्थापना करके एक गुबंद अर्थात् गुम्बज में सिंहासन पर तेजोमय मानव सदृश शरीर में आकार में विराजमान है।

इस मंत्र में ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 18 तीसरा धाम सतलोक को कहा है। जैसे एक ब्रह्म का लोक जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, दूसरा परब्रह्म का लोक जो सात संख ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, तीसरा परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का सतलोक है क्योंकि पूर्ण परमात्मा ने सत्यलोक में सत्यपुरूष रूप में विराजमान होकर नीचे के लोकों की रचना की है। इसलिए नीचे के लोकों की गणना की गई है।

यही आँखों देखा प्रमाण सन्त गरीब दास जी ने बताया है अर्स कुर्स पर सफेद गुम्बज है जहाँ सतगुरु का डेरा। **भावार्थ यह है कि ऊपर आसमान के ऊपरी छोर पर कबीर परमेश्वर जी एक सफेद गुबंद (गुम्बज) में रहते हैं।**

ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मन्त्र 27 में अनुवाद परमेश्वर ने ठीक करा दिया। वहाँ स्पष्ट लिखा है ''परमात्मा द्यूलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है।'' एक देशीय है साकार है देखें फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 27 की इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 66 पर। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1 में स्पष्ट है कि परमात्मा राजा के समान दर्शनीय है। ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 1 मंत्र 8 में तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 67 मंत्र 26 में स्पष्ट है कि पुरूष अर्थात् परमात्मा भासमान शरीर को प्राप्त होता है। इन ऋग्वेद मण्डलों के मन्त्रों के अनुवाद कर्त्ता भी दयानन्द के भक्त ही हैं। परमेश्वर ने सच्चाई सामने ला दी।

वह अमर परमात्मा जो अपनी महिमा की अमृत वाणी को कवियों के समान बोलता है। उस कारण से वह प्रसिद्ध कवियों में से एक प्रसिद्ध कवि भी कहलाता है। परन्तु वह केवल कवि ही नहीं, वह कवि परमात्मा (जिसे वेदों में कविर्देव कहा है) होता है। यही उसका वास्तविक गुप्त श्रेष्ठ नाम है। कविर्देव जिसको सन्त भाषा में कबीर परमेश्वर कहते हैं। उस (ऋषिकृत्) कविर्देव द्वारा ऋषि या संत रूप में प्रकट होकर अपने मुख कमल से उच्चारण करके बनाई गई अमृत वाणी उस परमेश्वर के अनुयाइयों के लिए (स्वर्षाः) आनन्द दायक होती हैं। वह कविर्देव

अर्थात् कविर परमेश्वर तीसरे मुक्ति धाम में विराजमान है। वह एक (स्तुप्) गुमंद में तेजोमय रूप में प्रकाशमान है। उस महान् स्थान अर्थात् तेजोमय तीसरे धाम की बहुत बड़ी पृथ्वी को बनाकर उस पर विराजमान है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 20

मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोरा विवेश ।।२०।।

पदार्थः—वह परमात्मा (**यूथा, वृषेव**) जिस प्रकार एक संघ को उसका सेनापति प्राप्त होता है, इसी प्रकार (**कोशम्**) इस ब्रह्माण्डरूपी कोश को (**अर्षन्**) प्राप्त होकर (**कनिक्रदत्**) उच्च स्वर से गर्जता हुआ (**चम्वोः**) इस ब्रह्माण्ड रूपी विस्तृत प्रकृति-खण्ड में (**पर्याविवेश**) भली-भांति प्रविष्ट होता है और (**न**) जैसे कि (**मर्यः**) मनुष्य (**शुभ्रस्तन्वं, मृजानः**) शुभ्र शरीर को धारण करता हुआ (**अत्योन**) अत्यन्त गतिशील पदार्थों के समान (**सनये**) प्राप्ति के लिए (**सृत्वा**) गतिशील होता हुआ (**धनानाम्**) धनों के लिए कटिबद्ध होता है; इसी प्रकार प्रकृति-रूपी ऐश्वर्य को धारण करने के लिए परमात्मा सदैव उद्यत है ।।२०।।

विशेष विवेचन :- यह ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मंत्र 20 की फोटो कापी है जो दयानन्द भक्तों के द्वारा अनुवादित है। इस में भी अड़ंगा डालने का भरसक प्रयत्न किया है। फिर भी सच्चाई जल में छुपाए तूम्बे के समान ऊपर ही आती है। इस में स्पष्ट है कि (मर्यः न शुभ्रः तन्वम् मृजानः अत्यः न सृत्वा सनये धनानाम्) इसका अर्थ है कि परमात्मा भक्ति धन के पूर्वजन्म के धनवानों को अर्थात् अच्छी आत्माओं को जो दृढ़भक्त हैं उनको मनुष्य के समान उज्जवल सफेद शरीर धारण करके अत्यन्त तीव्र गति से चलने वाले पदार्थ के समान अर्थात् विद्युत जैसी गति से अपने द्युलोक अर्थात् सत्यलोक से चलकर स्वयं आकर प्राप्त होते हो।

वेदों के अर्थों का अनर्थ करने के पीछे दो कारण रहे हैं।

1. महर्षि दयानन्द की आध्यात्मिक ज्ञानहीनता।

2. सत्यार्थ प्रकाश का लेखन कार्य प्रथम करके समाज में प्रवेश करना तथा इसके पश्चात् वेदों का भाषा-भाष्य अर्थात् हिन्दी अनुवाद करना।

1. आध्यात्मिक ज्ञानहीनता :- महर्षि दयानन्द की आध्यात्मिक ज्ञानहीनता तो उपरोक्त तथा पूर्वोक्त प्रमाणों से स्पष्ट है। जैसे किसी व्यक्ति ने ''रामायण कथा'' का ज्ञान न हो कि श्री रामचन्द्र कौन थे, सीता जी कौन थी, श्री रावण कौन था, श्री लंका कौन था तथा क्या-2 घटनाएं घटी। जब तक उसका मौखिक ज्ञान न हो तथा वह व्यक्ति श्री तुलसीदास कृत ''रामायण'' की चौपाईयों व दोहों का अनुवाद करने लगे तो वह ऐसे ही शब्दों के अनर्थ करेगा। जैसे कथित महर्षि दयानन्द आर्य समाज प्रवर्तक ने किया है। आध्यात्मिक ज्ञान को समझने के लिए ''सृष्टि रचना'' का ज्ञान होना अनिवार्य है। क्योंकि ''सृष्टि रचना'' का ज्ञान सर्व सदग्रन्थों को समझने की कुंजी (Key) है। जिसका ज्ञान किसी भी महर्षि कहलाने वालों को नहीं था। जिस कारण से सद्ग्रन्थों के अनुवादों में अर्थों का अनर्थ कर

डाला। इसी कारण से इस कथित महर्षि दयानन्द ने ज्ञान का अज्ञान कर डाला।

2.सत्यार्थ प्रकाश का लेखन कार्य वेदों के भाषा-भाष्य अर्थात् अनुवाद से पहले करना :-

यजुर्वेद भाषा-भाष्य करते समय महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद के पृष्ठ 2 पर लिखा है ''विक्रम के संवत् 1934 (1877) पौष सुदि 13 गुरूवार के दिन यजुर्वेद के भाष्य बनाने का आरम्भ किया जाता है'' फिर यजुर्वेद के अन्त में पृष्ठ 1216 पर लिखा है कि मार्गशीर्ष कृष्ण 1 शनौ संवत् 1939 (सन्1882) में समाप्त किया तथा वैशाख शुक्ल 11 शनौ संवत् 1946 (सन् 1889) में छप कर तैयार हुआ। कृप्या देखें प्रमाण के लिए फोटो कापी पृष्ठ 2 तथा 1216 की।

२ यजुर्वेदभाषाभाष्ये

विक्रम के संवत् १९३४ पौष सुदि १३ गुरुवार के दिन यजुर्वेद के भाष्य बनाने का आरम्भ किया जाता है। (विश्वानि०) इस मन्त्र का अर्थ भूमिका में कर दिया है।

ईश्वर ने ऋग्वेद में गुण और गुणी के विज्ञान के प्रकाश के द्वारा सब पदार्थ प्रसिद्ध किये हैं उन मनुष्यों को पदार्थों से जिस-जिस प्रकार यथायोग्य उपकार लेने के लिये क्रिया करनी चाहिये तथा उस क्रिया के जो-जो अङ्ग वा साधन हैं सो सो यजुर्वेद में प्रकाशित किये हैं क्योंकि जब-तक क्रिया करने का दृढ़ ज्ञान न हो तबतक उस ज्ञान से श्रेष्ठ सुख कभी नहीं हो सकता और विज्ञान होने के ये हेतु हैं कि जो क्रियाप्रकाश अविद्या की निवृत्ति अधर्म्म में अप्रवृत्ति तथा धर्म्म और पुरुषार्थ का संयोग करना है।

यह फोटो कापी यजुर्वेद भाषा भाष्ये की भूमिका के पृष्ठ-2 की है जो महर्षि दयानन्द के कर कमलों से लिखी है। इसमें स्पष्ट है कि यजुर्वेद का अनुवाद संवत् 1934 (सन् 1877) को प्रारम्भ किया आगे फोटो कापी यजुर्वेद के अन्तिम पृष्ठ 1216 की लगी है। उस में स्पष्ट है की यजुर्वेद का अनुवाद संवत् 1939 (सन् 1882) को समाप्त हुआ। सत्यार्थ प्रकाश सन् 1875 में जनता में वितरित कर दिया गया था।

१२१६ यजुर्वेदभाषाभाष्ये

चालीसवां अध्याय समाप्त हुआ ।।

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीपरमविदुषां विरजानन्द-सरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मिते यजुर्वेदभाषाभाष्ये चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः समाप्तः ।

समाप्तश्चायं ग्रन्थ इति ।।

मार्गशीर्ष कृष्ण १ शनौ संवत् १९३९ में समाप्त किया

वैशाख शुक्ल ११ शनौ संवत् १९४६ में छप कर समाप्त हुआ ।।

पुस्तक नव जागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती, जिसका प्रकाशक है = वैदिक पुस्तकालय परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, अजमेर, लेखक :- डॉ भवानी लाल भारतीय के पृष्ठ 211 पर लिखा है कि सत्यार्थ प्रकाश का लेखन कार्य सन् 1875 में पूरा कर छपवा कर वितरण कर दिया गया।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि सत्यार्थ प्रकाश समाज में सन् 1875 में प्रवेश कर दिया गया। फिर सन् 1877 में यजुर्वेद का अनुवाद प्रारम्भ किया। सन् 1882 को पूरा हुआ। सन् 1883 में यजुर्वेद के अनुवाद के एक वर्ष पश्चात् महर्षि दयानन्द की मृत्यु हो गई। मृत्यु के 6 वर्ष पश्चात् सन् 1889 में यजुर्वेद छप कर तैयार हुआ जो आज हम पढ़ रहे है। जिस अज्ञान को आज 2011 में 122 वर्ष हो गए। पढ़ते-पढ़ाते जिसको कोई नहीं समझ सका कि कथित महर्षि ने वेदों के अनुवाद तथा ''सत्यार्थ प्रकाश'' में कोरा अज्ञान भर रखा है जबकि सद्ग्रन्थ परमेश्वर को साकार, नराकार तथा एक देशीय बताते हैं परन्तु तत्वज्ञानहीन महर्षि आज तक परमेश्वर को निराकार कहते रहे। यदि किसी ने परमात्मा को साकार बताया है तो कहा कि यह जो कुछ भी दृश्यमान संसार है जैसे पृथ्वी, पहाड़, ग्रह तथा चर प्राणी परमात्मा का साकार रूप हैं। यह इन अज्ञानियों के अज्ञान का ही जीवित प्रमाण है।

महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए यजुर्वेद के अनुवाद में भी स्पष्ट है कि परमात्मा सशरीर साकार है कृपा पढ़े निम्न फोटो कापी यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 15 की जो स्वामी दयानन्द के द्वारा अनुवादित है। यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 15

पुनर्मनः पुनरायुर्मऽआगन् पुनः प्राणः पुनरात्मा मऽआगन पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं मऽआगन। वैश्वानरोऽअदब्धस्तनूपाऽअग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात् ॥१५॥

पदार्थः—जिसके सम्बन्ध वा कृपा से (**मे**) मुझ को जो (**मनः**) विज्ञानसाधक मन (**आयुः**) उमर (**पुनः**) फिर-फिर (**आगन्**) प्राप्त होता (**मे**) मुझ को (**प्राणः**) शरीर का आधार प्राण (**पुनः**) फिर (**आगन्**) प्राप्त होता (**आत्मा**) सब में व्यापक सब के भीतर की सब बातों को जानने वाले परमात्मा का विज्ञान (**आगन्**) प्राप्त होता (**मे**) मुझको (**चक्षुः**) देखने के लिये नेत्र (**पुनः**) फिर (**आगन्**) प्राप्त होते और (**श्रोत्रम्**) शब्द को ग्रहण करने वाले कान (**आगन्**) प्राप्त होते हैं वह (**अदब्धः**) हिंसा करने अयोग्य (**तनूपाः**) शरीर वा आत्मा की रक्षा करने और (**वैश्वानरः**) शरीर को प्राप्त होने वाला (**अग्निः**) अग्नि वा विश्व को प्राप्त होने वाला परमेश्वर (**नः**) हम लोगों को (**अवद्यात्**) निन्दित (**दुरितात्**) पाप से उत्पन्न हुए दुःख वा दुष्ट कर्मों से (**पातु**) पालन करता है ॥१५॥

यह उपरोक्त फोटो कापी महर्षि दयानन्द के अनुवाद की है। इस यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 15 के भाषाभाष्य अर्थात् अनुवाद में दयानन्द ने स्वयं स्वीकारा है कि ''वह हिंसा करने योग्य शरीर वा आत्मा की रक्षा करने और (वैश्वानरः) शरीर को प्राप्त होने वाला (अग्निः).......परमेश्वर हम लोगों को.....। :- इस में स्पष्ट है

कि महर्षि दयानन्द भी वेदों की सच्चाई को छुपाने की कुचेष्टा करके भी नहीं छुपा सके। स्पष्ट है कि परमात्मा शरीर को प्राप्त है अर्थात् साकार (सशरीर) है। कृप्या पढ़ें अन्य प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 13 में (दयानन्द महर्षि द्वारा अनुवादित :- यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 13 की फोटो कापी)

इयं तें यज्ञियां तनूरपो मुंञ्चामि न प्रजाम् । अꣳहोमुचः स्वाहांकृतः पृथिवीमाविंशत पृथिव्या सम्भंव ॥१३॥

पदार्थः — हे विद्वन् मनुष्य ! जैसे (**ते**) तेरा जो (**इयम्**) यह (**यज्ञिया**) यज्ञ के योग्य (**तनूः**) शरीर (**अपः**) जल, प्राण वा (**प्रजाम्**) प्रजा की रक्षा करता है, जिस को तू नहीं छोड़ता । मैं भी अपने उस शरीर को विना पूर्ण आयु भोगे प्रमाद से बीच में (**न मुञ्चामि**) नहीं छोड़ता हूं । हे मनुष्यो ! जैसे तुम (**पृथिव्या**) भूमि के साथ वैभवयुक्त होते (**अंहोमुचः**) दुःखों को छुड़ाने वा (**स्वाहाकृताः**) वाणी से सिद्ध किये हुए (**अपः**) जल और (**पृथिवीम्**) भूमि को (**आविशत**) अच्छे प्रकार विज्ञान से प्रवेश करते हो, मैं इन से ऐश्वर्य्यसहित और इनमें प्रविष्ट होता हूँ वैसे तू भी (**सम्भव**) हो और प्रवेश कर ॥१३॥

इस यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 13 में महर्षि दयानन्द अनुवाद में लिखते हैं कि ''हे विद्वान् मनुष्यों! जैसे (ते) तेरा जो यह यज्ञ के योग्य (तनूः) शरीर जल, प्राण व प्रजा की रक्षा करता है, जिसको तू नहीं छोड़ता। मैं भी अपने उस शरीर को बिना पूर्ण आयु भोगे बीच में नहीं छोड़ता हूँ।

विवेचन :- महर्षि दयानन्द का मानना है कि ब्रह्म ने वेदों का ज्ञान दिया। जिसे वे ईश्वर भी कहते हैं। इस यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 13 में वेद ज्ञान दाता ब्रह्म अर्थात् महर्षि दयानन्द का ईश्वर विद्वान् जनों को उपदेश दे रहा है कि जैसे तुम शरीर में आनन्द लेते हो, वैसे मेरा भी शरीर है मैं भी पूरी आयु भोगे बिना अपना शरीर नहीं छोड़ता हूँ। पुण्यात्माओं यदि महर्षि दयानन्द आज वर्तमान में होता तो उनसे बच्चा-२ पूछता कि हे महर्षि जी ! सत्यार्थ प्रकाश लिखते समय कितनी भांग पी रखी थी। क्योंकि महर्षि दयानन्द की जीवनी में लिखा है कि वे भांग पीते थे, हुक्का पीते थे, तम्बाखु खाते थे तथा सूंघते भी थे। पुण्यात्माओं मुझ दास (संत रामपाल दास जी महाराज) पर विश्वास रखना कि एक शब्द भी अप्रमाणित नहीं बोलूंगा या लिखूंगा। वे सर्व पुस्तकें मेरे पास सुरक्षित हैं। कम्पयूटर में स्केन करके रखी हैं। जब आवश्यकता पड़ेगी सार्वजनिक कर दी जायेंगी।

वेद ज्ञान दाता तथा श्री मद्भगवत गीता का ज्ञान दाता एक ही है वह ''ब्रह्म'' है वह गीता अध्याय 4 श्लोक 5, 9 में अध्याय 2 श्लोक 12 में तथा अध्याय 10 श्लोक 2 में स्वयं कह रहा है कि अर्जुन! तेरे व मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं तू नहीं जानता मैं जानता हूँ। मेरी उत्पत्ति अर्थात् जन्म को ऋषि जन तथा देवता नहीं जानते क्योंकि इन सबका उत्पत्ति करता मैं हूँ। जैसे पिता के जन्म का ज्ञान सन्तान को नहीं होता, पिता का पिता अर्थात् पितामह (दादा जी) बता सकता है। इससे सिद्ध है कि ब्रह्म की उत्पत्ति (जन्म) तो हुआ है परन्तु इससे उत्पन्न जनता नहीं जानती।

यही प्रमाण इस यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 13 में जाने कि वेद ज्ञान दाता ब्रह्म सशरीर हैं तथा जन्मता मरता हैं। कृप्या देखें सशरीर साकार परमात्मा के अन्य प्रमाण :-

महर्षि दयानन्द के अनुवाद की फोटो कापी यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 2

आपोऽअस्मान् मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु। विश्वꣳ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि। दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवाꣳ शग्मां परिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन् ॥२॥

पदार्थः—हे मनुष्यो ! जैसे (**भद्रम्**) अति सुन्दर (**वर्णम्**) प्राप्त होने योग्य रूप को (**पुष्यन्**) पुष्ट करता हुआ मैं जो (**घृतप्वः**) घृत को पवित्र करने (**देवीः**) दिव्यगुणयुक्त (**मातरः**) माता के समान पालन करने वाले (**आपः**) जल (**रिप्रम्**) व्यक्त वाणी को प्राप्त करने वा जानने योग्य (**विश्वम्**) सब को (**प्रवहन्ति**) प्राप्त करते हैं, जिनसे विद्वान् लोग (**अस्मान्**) हम मनुष्य लोगों के (**शुन्धयन्तु**) बाह्य देश को पवित्र करें और जो (**घृतेन**) घृतवत् पुष्ट करने योग्य जल हैं जिनसे (**नः**) हम लोगों को सुखी कर सकें उनसे (**पुनन्तु**) पवित्र करें। जैसे मैं (**इत्**) भी (**उत्**) अच्छे प्रकार (**आभ्यः**) इन जलों से (**शुचिः**) पवित्र तथा (**आपूतः**) शुद्ध होकर (**दीक्षातपसोः**) ब्रह्मचर्य्य आदि उत्तम-उत्तम नियम सेवन से जो धर्मानुष्ठान के लिये (**तनूः**) शरीर (**असि**) है जिस (**शिवाम्**) कल्याणकारी (**शग्माम्**) सुखस्वरूप शरीर को (**आएमि**) प्राप्त होता और (**परिदधे**) सब प्रकार धारण करता हूँ वैसे तुम लोग भी उन जल और (**ताम्**) उस (**त्वा**) अत्युत्तम शरीर को धारण करो ॥२॥

विवेचन :- इस यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 2 में महर्षि दयानन्द ने अपने कर कमलों से अनुवाद में लिखा है कि ''हे मनुष्यों ! जैसे (भद्रम् वर्णम्) अति सुन्दर प्राप्त होने योग्य रूप को (पुष्यन्) पुष्ट करता हुआ मैं जो धृत को पवित्र करने ....:- जैसे मैं (इत्) भी (उत्) अच्छे प्रकार (आभ्यः) इन जलों से (शुचीः) पवित्र तथा (आपूतः) शुद्ध होकर (दीक्षातपसोः) ब्रह्मचर्य आदि उत्तम-उत्तम नियम सेवन से जो धर्मानुष्ठान के लिए (तनूः) शरीर (असि) है जिस (शिवम्) कल्याणकारी (शग्माम्) सुखस्वरूप शरीर को (आएमि) प्राप्त होता और (परिदधे) सब प्रकार धारण करता हूँ वैसे तुम लोग भी उन जल और (ताम्) उस (त्वा) अत्युत्तम शरीर को धारण करो।

विवेचन :- इस यजुर्वेद अध्याय 4 मंत्र 2 में भी वेद ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि मेरा उत्तम रूप है, मेरा भी शरीर है। विचारणीय विषय है कि महर्षि दयानन्द स्वयं अनुवाद कर रहे हैं। कि वेद परमात्मा को सशरीर कह रहे हैं। महर्षि दयानन्द स्वयं निराकार कहा करता। मुझे लगता है परमेश्वर ने हमारे ऊपर दया की शायद उस दिन जिस दिन इन मंत्रों का अनुवाद कर रहा था भांग कुछ अधिक मात्रा में सेवन किए हुए था। इस को ध्यान ही नहीं रहा कि मैं (दयानन्द) परमात्मा को निराकार बताता हूँ। सज्जनों परम पुज्य कबीर परमेश्वर जिसे वेदों में कविर्देव कहा है, कहते हैं कबीर, चोर चुरावैं तूम्बड़ी गाढ़े पानी मैं। वह गाढ़े वो ऊपर आवै यूं सच्चाई छानि नां।

इस अमृत वाणी में कविर्देव जी का भावार्थ है कि किसी चोर ने सूखा तुम्बा चुरा लिया उस को जल में छुपाने का व्यर्थ प्रत्यन करने लगा चोर तुम्बे को गहरे पानी में

छुपाकर सोचे की मैंने छुपा दिया है परन्तु तुम्बा साथ-2 जल के ऊपर आ जाता है। इसी प्रकार महर्षिदयानन्द ने वेदों के सत्य रूपी तुम्बे को छुपाने की कुचेष्टा की परन्तु आज वह सच्चाई स्पष्ट दिखाई देती है कि परमेश्वर सशरीर नराकार है। वह एक देशीय है।

''साकार परमेश्वर होते हुए अन्तर्यामी कैसे हो सकता है ?''

➢दयानन्द का भक्त :- महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि परमात्मा निराकार है, अन्तर्यामी है, कण-कण में विद्यमान है। यदि परमात्मा साकार होता तो अन्तर्यामि नहीं हो सकता। यदि साकार होता तो एक देशीय होता, जिस कारण से सर्व ब्रह्मण्डों को कैसे सम्भालता। इसलिए परमात्मा सर्व व्यापक निराकार है। एक देशीय तथा साकार नहीं है।

➢संत रामपाल जी महाराज :- आप जी को वेदों में ढेर सारे प्रमाण दिखा दिए। अब भी आप महर्षि दयानन्द वाली भाषा बोल रहे हो। आप के लिए तो परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर जान बूझ साची तजै करै झूठ से नेह, ताकि संगत हे प्रभु स्वप्न में भी ना दे।

फिर भी सुनों जैसे महर्षि दयानन्द ने कहा है कि साकार होने से परमात्मा अन्तर्यामी नहीं हो सकता। यह कथन भी महर्षि दयानन्द का अज्ञान से परिपूर्ण है। जैसे एक्सरे की मशीन या अल्ट्रासाऊन्ड या ई.सी.जी. के यंत्र साकार हैं तथा शरीर के भीतर की सर्व जानकारी ले लेते हैं। जब एक मनुष्य द्वारा बनाया यंत्र साकार होते हुए, अन्तर्यामि हो सकता है तो क्या मनुष्य को भी बनाने वाला परमेश्वर साकार होते हुए अन्तर्यामी नहीं हो सकता ? क्यों नहीं शत प्रतिशत अन्तर्यामी है। आप तथा महर्षि दयानन्द वेदों को सत्य मानते हैं। वेदों में परमेश्वर साकार कहा है फिर भी यदि आप अगर-मगर करते हो तो इसका अर्थ यही माना जाए कि आप सत्य को स्वीकार नहीं करना चाहते केवल अभिमान में सड़ रहे हो तथा झूठ पर ही अटके हैं।

महर्षि दयानन्द का यह कहना कि एक देशीय अर्थात् एक स्थान पर रहने वाला परमात्मा सर्व ब्रह्मण्डों को कैसे संभाल सकता है, भी गलत है। क्योंकि जैसे राजा वर्तमान में प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति जानों, वे एक स्थान पर रह कर अपने सर्व क्षेत्र को सम्भालते हैं, तो परमेश्वर को क्या समस्या आ सकती है अर्थात् कोई परेशानी नहीं हो सकती। वेदों में ही लिखा है कि परमेश्वर साकार है और एक देशीय है। जिन वेदों को महर्षि दयानन्द सत्य मानते हैं तथा लिखते हैं कि ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'' कृप्या देखें सत्य विद्याओं की पुस्तक वेदों में साकार तथा नराकार एक देशीय परमेश्वर के ढेर सारे प्रमाण। इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 60 से 79 पर। महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा अनुवादित वेद मंत्रों की फोटो कापियाँ। इस से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द को वेदों का ज्ञान नहीं था।

परिणाम :- संत रामपाल दास जी की जीत हुई तथा महर्षि दयानन्द की हार हुई।

कबीर, गुरु बिन काहु न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुष छिड़ै मूढ़ किसाना।
कबीर, गुरु बिन बेद पढ़े जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।।
कबीर, नौ मन सूत उल्लझीया ऋषि रहे झक मार, सतगुरु ऐसा सुलझा दे, उल्झे ना दूजी बार।

''पवित्र बाईबल में प्रभु मानव सदृश साकार का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुर्आन शरीफ में भी है।

कुर्आन शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टी रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है ?

पवित्र बाईबल(उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :- प्राणी और मनुष्य : अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाऐं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टी की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं (माँस खाना नहीं कहा है)।

सातवां दिन :- विश्राम का दिन : परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टी की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टी की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

उत्पति विषय में लिखा है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। इससे सिद्ध है कि प्रभु भी मनुष्य जैसे शरीर युक्त है तथा छः दिन में सृष्टी रचना करके सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। कृप्या देखें प्रमाण के लिए पवित्र बाईबल की फोटो कापी।

उत्पत्ति 1:26–2:17

26 फिर परमेश्वर ने कहा, ''हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ;* और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।'' 27 तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।* 28 और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, ''फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।'' * 29 फिर परमेश्वर ने उनसे कहा, ''सुनो, जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथ्वी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं, वे सब मैं ने तुम को दिए हैं; वे तुम्हारे भोजन के लिये हैं। 30 और जितने पृथ्वी के पशु, और आकाश के पक्षी, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले जन्तु हैं, जिन में जीवन का प्राण है, उन सब के खाने के लिये मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिए हैं,'' और वैसा ही हो गया। 31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार छठवाँ दिन हो गया।

2 यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया। 2 और परमेश्वर ने अपना काम जिसे वह करता था सातवें दिन समाप्त किया, और उसने अपने किए हुए सारे काम से सातवें दिन विश्राम किया।* 3 और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दी और पवित्र ठहराया; क्योंकि उसमें उसने सृष्टि की रचना के अपने सारे काम से विश्राम लिया।*

15 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम* को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे। 16 और यहोवा परमेश्वर ने आदम* को यह आज्ञा दी, ''तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; 17 पर भले या बुरे के ज्ञान का जो

इस पवित्र बाईबल की फोटो कापी में स्पष्ट है कि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने जैसे आकार का बनाया है। इससे सिद्ध हुआ कि परमात्मा नराकार तथा साकार है।

कृप्या देखें प्रमाण के लिए पवित्र बाईबल की फोटो कापी

उत्पत्ति 2:18–3:14 4

वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।''

18 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, ''आदम* का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।'' 19 और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम* के पास ले आया कि देखे कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम* ने रखा वही उसका नाम हो गया। 20 अत: आदम* ने सब जाति के घरेलू पशुओं, और आकाश के पक्षियों, और सब जाति के बनैले पशुओं के नाम रखे; परन्तु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके। 21 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम* को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। 22 और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उसने आदम* में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। 23 तब आदम* ने कहा, ''अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है; इसलिए इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है।'' 24 इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे।* 25 आदम* और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते न थे।

मनुष्य के पापी हो जाने का वर्णन

3 यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था;* उसने स्त्री से कहा, ''क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा, 'तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना' ?'' 2 स्त्री ने सर्प से कहा, ''इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं; 3 पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे।'' 4 तब सर्प ने स्त्री से कहा, ''तुम निश्चय न मरोगे! 5 वरन् परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।'' 6 अत: जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, और देखने में मनभाऊ, और बुद्धि देने के लिये चाहनेयोग्य भी है; तब उसने उसमें से तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया। 7 तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये।

8 तब यहोवा परमेश्वर, जो दिन के ठंडे समय* वाटिका में फिरता था, का शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। 9 तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, ''तू कहाँ है ?'' 10 उसने कहा, ''मैं तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया, क्योंकि मैं नंगा था; इसलिये छिप गया।'' 11 उसने कहा, ''किसने तुझे बताया कि तू नंगा है ? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे मना किया था, क्या तू ने उसका फल खाया है ?'' 12 आदम ने कहा, ''जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया।'' 13 तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री ने कहा, ''तू ने यह क्या किया है ?'' स्त्री ने कहा, ''सर्प ने मुझे बहका दिया,* तब मैं ने खाया।''

परमेश्वर का न्याय

14 तब यहोवा परमेश्वर ने सर्प से कहा, ''तू

कृप्या देखें प्रमाण के लिए पवित्र बाईबल की फोटो कापी

उत्पत्ति 3:15–4:9

20 आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा* रखा; क्योंकि जितने मनुष्य जीवित हैं उन सब की आदिमाता वही हुई। 21 और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।

वाटिका से निकाला जाना

22 फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है : इसलिये अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष* का फल भी तोड़ के खा ले और सदा जीवित रहे।"

उत्पत्ति 15:16–17:2

वाचा का चिह्न, खतना

17 जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा, "मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल* और सिद्ध होता जा। 2 मैं तेरे साथ वाचा

उत्पत्ति 17:26–18:22

इसहाक के जन्म की प्रतिज्ञा

18 अब्राहम मम्रे के बांज वृक्षों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया : 2 उसने आँख उठाकर दृष्टि की तो क्या देखा कि तीन पुरुष उसके सामने खड़े हैं।* जब उसने उन्हें देखा तब वह उनसे भेंट करने के लिये तम्बू के द्वार से दौड़ा, और भूमि पर गिरकर दण्डवत् की और कहने लगा, 3 "हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूँ कि अपने दास के पास से चले न जाना। 4 मैं थोड़ा सा जल लाता हूँ, और आप अपने पाँव धोकर इस वृक्ष के नीचे विश्राम करें। 5 फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊँ, और उससे आप अपने अपने जीव को तृप्त करें, तब उसके पश्चात् आगे बढ़ें; क्योंकि आप अपने दास के पास इसी लिये पधारे हैं।" उन्होंने कहा, "जैसा तू कहता है वैसा ही कर।"

ऊपर दी गई फोटो कापियाँ पवित्र बाईबल की हैं। जिनमें स्पष्ट है कि परमेश्वर नर आकार (साकार) है। फोटो कापी "उत्पति 3:15-4:9" में आयत संख्या 20 में लिखा है कि श्री आदम तथा उसकी पत्नी के लिए वस्त्र बनाकर उनको पहनाए। फिर फोटो कापी "उत्पति 15:16-17:2" अध्याय 17 में लिखा है कि परमात्मा ने अब्राम को दर्शन देकर बताया में समर्थ परमात्मा हूँ। फोटो कापी "उत्पति "17:26-18:22" अध्याय 18 में यह भी स्पष्ट है कि इसाई धर्म के परमात्मा भी हिन्दुओं के प्रभुओं की तरह संख्या में तीन हैं तथा पुरूष के आकार के हैं। सद्ग्रन्थों में भी परमेश्वर साकार नराकार है। सतग्रन्थों को न समझ कर सर्व धर्मों के व्यक्ति परमात्मा को निराकार Formless कहा करते हैं। सर्व धर्मों के धार्मिक सद्ग्रन्थों को यथार्थ जाना और जनाया। यह कार्य परमेश्वर या उसके भेजे धरती पर अवतार के बिना कोई नहीं कर सकता। इसलिए सन्त रामपाल दास जी महाराज धरती पर अवतार है जो परमेश्वर के कृपा पात्र हैं। इन से यथार्थ भक्ति तथा तत्वज्ञान प्राप्त करके आत्म कल्याण कराऐं। सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार, प्रांत-हरियाणा (भारत) में जाऐं, नाम उपदेश पाऐं। फोटो कापी 2:18-3:14 में यह भी स्पष्ट है कि इसाई जिसे अपना परमेश्वर मानते हैं। वह सर्वज्ञ भी नहीं है क्योंकि जब वाटिका में टहलने के लिए आया उसको यह भी ज्ञान नहीं था कि आदम तथा उसकी पत्नी वाटिका में कहां छुपे हैं। फिर उन्हीं से पूछ रहा है कि क्या तुमने उस वृक्ष का फल तोड़कर खा लिया जिसको खाने के लिए मना किया था? फिर उसी परमेश्वर ने कहा कि भले-बुरे का ज्ञान होने से ये हम में से एक के

समान हो गए हैं। इससे भी सिद्ध है कि इसाई धर्म के प्रभु भी अनेक हैं।

''प्रभु आकार में मानव सदृश है, कुर्आन शरीफ में प्रमाण''

पवित्र कुर्आन शरीफ में प्रभु सशरीर है तथा उसका नाम कबीर है का प्रमाण

"पवित्र कुरान शरीफ़ से सहाभार ज्यों का त्यों लेख"

सुरत-फुर्कानि नं. 25 आयत नं. 52 से 59

(इन आयत नं. **52** से **59** में विशेष प्रमाण है)

(कृप्या देखें पवित्र कुरान शरीफ से ज्यों का त्यों फोटो कापी लेख)

६०४ व क़ालल्लजीन १६ कुर्आन शरीफ़ सूरतुल्-फ़ुर्क़ानि २५

व क़ौम नूहि्ल्लम्मा कज्जबुर्रुसुल अग्‌रक़्नाहुम् व जअ़ल्नाहुम् लिन्नासि आयतन् त व अअ़्तद्ना लिज्ज़ालिमीन अ़ज़ाबन् अलीमन् ज सला (३७) व्व आदंव्व समूद व अस्‌हाबर्रस्सि व क़ुरूनम् - बैन ज़ालिक कसीरन् (३८) व कुल्लन् ज़रब्ना लहुल् - अम्साल ज व कुल्लन् तब्बर्ना तत्बीरन् (३९) व लक़द् अतौ अ़लल् - क़र्‌यतिल्लती' उम्तिरत् मतरस्सौअि त अफ़लम् यकूनू यरौनहा ज बल् कानू ला यर्जून नुशूरन् (४०) व अिज़ा रऔक अिय्यत्तख़िज़ूनक अिल्ला हुज़ुवन् त अहाज़ल्लज़ी बअ़सल्लाहु रसूलन् (४१) अिन् काद लयुज़िल्लुना अ़न् आलिहतिना लौला' अन् सबर्ना अ़लैहा त व सौफ़ यअ़्लमून ह़ीन यरौनल् - अ़ज़ाब मन् अज़ल्लु सबीलन् (४२) अरअैत मनित्तख़ज़ अिलाहहू हवाहु त अफ़अन्त तकूनु अ़लैहि वकीलन् ला (४३) अम् तह़्सबु अन्न अक्सरहुम् यस्मअ़ून औ यअ़्क़िलून त अिन् हुम् अिल्ला कल्अन्आ़मि बल् हुम् अज़ल्लु सबीलन् (४४) ★ अलम् तर अिला रब्बिक कैफ़ मद्दज़्ज़िल्ल ज व लौ शा'अ लजअ़लहू साकिनन् ज सुम्म जअ़ल्नश्शम्स अ़लैहि दलीलन् ला (४५) सुम्म क़बज़्नाहु अिलैना क़ब्ज़ंय्यसीरन् (४६) व हुवल्लज़ी जअ़ल लकुमुल्लैल लिबासंव्वन्नौम सुबातंव्व जअ़लन्नहार नुशूरन् (४७) व हुवल्लज़ी' अर्सलर्‌रियाह़ बुश्‌रम् - बैन यदै रह़्मतिही ज व अन्ज़ल्ना मिनस्समा'अि मा'अन् तहूरन् ला (४८) लु'निनुह़्यिय बिही बल्दतम् - मैतंव्व नुस्क़ियहू मिम्मा ख़लक़्ना' अन्आ़मंव्व अनासिय्य कसीरन् (४९) व लक़द् सर्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज्ज़क्करू ज सला फ़अबा' अक्सरुन्नासि अिल्ला कुफ़ूरन् (५०) व लौ शिअ्ना लबअ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र्‌यतिन् नज़ीरन् ज़ सला (५१) फ़ला तुतिअ़िल् - काफ़िरीन व जाहिद्‌हुम् बिही जिहादन् कबीरन् (५२)

मंज़िल ४

सुरतुल फुर्कानी-25

६०६ व क़ालल्लज़ीन १९ (✿) क़ुर्आन शरीफ़ (✿) सूरतुल्-फ़ुर्क़ानि २५

व हुवल्लज़ी मरजल् - बह्रैनि हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुंव्व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् ज व जअ़ल बैनहुमा बर्ज़ख़ंव्व हिज्रम् - मह्जूरन् (५३) व हुवल्लज़ी ख़लक़ मिनल्मा'इ बशरन् फ़जअ़लहू नसबंव्व सिह्रन् त व कान रब्बुक क़दीरन् (५४) व यअ़्बुदून मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अ़ुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम् त व कानल्काफ़िरु अ़ला रब्बिही ज़हीरन् (५५) व मा' अर्सल्नाक इल्ला मुबश्शिरंव्व नज़ीरन् (५६) क़ुल् मा' अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन् शा'अ अंय्यत्तख़िज़ इला रब्बिही सबीलन् (५७) व तवक्कल् अ़लल् - हय्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही त व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि नि' अ़िबादिही ख़बीरा ज ला (५८) ∴ अ्ल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल्अर्ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्अ़र्शि ज ∴ अर्रह्मानु फ़स्अल् बिही ख़बीरन् (५९) व इज़ा क़ील लहुमुस्जुदू लिर्रह्मानि क़ालू व मर्रह्मानु क़ अनस्जुदु लिमा तअ्मुरुना व ज़ादहुम् नुफ़ूरन् (६०) ★ ▲ तबारकल्लज़ी जअ़ल फ़िस्समा'इ बुरूजंव्व जअ़ल फ़ीहा सिराजंव्व क़मरम्-मुनीरन् (६१) व हुवल्लज़ी जअ़लल्लैल वन्नहार ख़िल्फ़तल्लिमन् अराद अंय्यज़्ज़क्कर औ अराद शुकूरन् (६२) व अ़िबादुर्रह्मानिल्लज़ीन यम्शून अ़लल्अर्ज़ि हौनंव्व इज़ा ख़ातबहुमुल् - जाहिलून क़ालू सलामन् (६३) वल्लज़ीन यबीतून लिरब्बिहिम् सुज्जदंव्व क़ियामन् (६४) वल्लज़ीन यक़ूलून रब्बनस्रिफ़् अ़न्ना अ़ज़ाब जहन्नम क़ सुला इन्न अ़ज़ाबहा कान ग़रामन् क़ सुला (६५) इन्नहा सा'अत् मुस्तक़र्रंव्व मुक़ामन् (६६) वल्लज़ीन इज़ा' अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व कान बैन ज़ालिक क़वामन् (६७)

٢٩١

جَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا ۝ وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ
فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝ وَ
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى
رَبِّهٖ ظَهِيْرًا ۝ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝ قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ
مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝ وَتَوَكَّلْ عَلَى
الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۝
الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ ۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا ۝ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا
لِلرَّحْمٰنِ قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۝
تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ۝
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ
شُكُوْرًا ۝ وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّ
اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ
سُجَّدًا وَّقِيَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ
اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ وَ
الَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝

मंज़िल ४

पवित्र कुर्आन शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा(कबीरन्) ।52।

तो (ऐ पैग़म्बर!) तुम काफ़िरों का कहा न मानना और इस (कुर्आन की दलीलों) से उनका सामना बड़े जोर से करो। (52)

आयत नं. 52 का ऊपर अनुवाद किसी मुसलमान श्रद्धालु का किया हुआ है। तत्वज्ञान के अभाव से ग्रन्थ के वास्तविक अर्थ को प्रकट नहीं कर सका। वास्तव में

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी-देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुर्आन के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना(लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् हरूिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही
व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा(कबीरा) |58।

और (ऐ पैग़म्बर!) उस जिन्दा (चैतन्य) पर भरोसा रखो जो कभी मरनेवाला नहीं और तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करते रहो और अपने बन्दों के गुनाहों से वह काफ़ी ख़बरदार है **(58)**

आयत संख्या 58 का ऊपर अनुवाद किसी मुसलमान भक्त का किया हुआ है जो वास्तविकता प्रकट करने में असमर्थ रहा है। वास्तव में इस आयत संख्या 58 का भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह कुरान ज्ञान दाता अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी(पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह(कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन्
सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्) |59।।

जिसने आसमानों और जमीन और जो कुछ उनके बीच में है (सबको) छः दिन में पैदा किया, फिर तख्त पर जा विराजा (वह अल्लाह बड़ा) रहमान है, तो उसकी खबर किसी बाखबर (इल्मवाले) से पूछ देखो। (59)

आयत संख्या 59 का ऊपर वाला अनुवाद किसी मुसलमान श्रद्धालु का किया हुआ है जो पवित्र शास्त्र कुर्आन शरीफ के वास्तविक भावार्थ से कोसों दूर है। इसका वास्तविक भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुर्आन शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टी की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो(बैठ) गया।

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी ? तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत(बाखबर) से पूछो, मैं (कुर्रान ज्ञान दाता) नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों(ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टी रचनहार सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

सुरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 में लिखा है कि कबीर परमात्मा ने छः दिन में सृष्टी की रचना की तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा। जिस से परमात्मा साकार सिद्ध होता है।

"फजाईले आमाल से प्रमाण"

विशेष विचारः- फजाईले आमाल मुसलमानों की एक विशेष पवित्र पुस्तक है जिसमें पूजा की विधि तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब का नाम विशेष रूप से वर्णित है। जैसा कि आप निम्न फजाईले आमाल के ज्यों के त्यों लेख देखेंगे उनमें फजाईले जिक्र में आयत नं. 1,2,3,6 तथा 7 में स्पष्ट प्रमाण है कि ब्रह्म(काल अर्थात् क्षर पुरूष) कह रहा है कि तुम कबीर अल्लाह कि बड़ाई बयान करो। वह कबीर अल्लाह तमाम पोसीदा और जाहिर चीजों को जानने वाला है और वह कबीर है और आलीशान रूत्बे वाला है। जब फरिश्तों को कबीर अल्लाह की तरफ से कोई हुक्म होता है तो वे खौफ के मारे घबरा जाते हैं। यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होती है तो एक दूसरे से पूछते हैं कि कबीर परवरदिगार का क्या हुक्म है। वह कबीर आलीशान मर्तबे वाला है। ये सब आदेश कबीर अल्लाह की तरफ से है जो बड़े आलीशान रूत्बे वाला है। हजुरे अक्सद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम(हजरत मुहम्मद) का इर्शाद (कथन) कहना है कि कोई बंदा ऐसा नहीं है कि 'लाइला-ह-इल्लल्लाह' कहे उसके लिए आसमानों के दरवाजें न खुल जाए, यहाँ तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुँचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचाता रहे। दो कलमों का जिक्र है कि एक तो 'लाइला-ह-इल्लल्लाह' है और दूसरा 'अल्लाहु अक्बर'(कबीर)। यहाँ पर अल्लाहु अक्बर का भाव है भगवान कबीर (कबीर साहेब अर्थात् कविर्देव)। फिर फजाईले दरूद शरीफ़ में भी कबीर नाम की महिमा का प्रत्यक्ष प्रमाण छुपा नहीं है।

कृप्या निम्न पढ़िये फजाईले आमाल का लेख। फजाईले आमाल से सहाभार ज्यों का त्यों लेख :- फजाइले जिक्र

(1) وَلِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ - (سورۂ بقرہ، رکوع ۲۳)

बल्लत कबीर बूल्लाह आला महादाकुप वाला अल्ला कुम तरकोरून —1

1. और ताकि तुम कबीर अल्लाह की बड़ाई बयान करों, इस बात पर कि तुम को हिदायत फरमायी और ताकि तम शक्र करो अल्लाह तआला का। फजाइले जिक्र

अल्लीमूल गैब बसाहादाती तील कबीर रूलमुतालू —2

2. वह कबीर अल्लाह तमाम पोशीदा और जाहिर चीजों का जानने वाला है(सबसे) बड़ा है और आलीशान रुत्बे वाला है। फजाइले जिक्र

थाजालीका सहारा लाकुम लीतू कबीरू

बुल्लाह आला महादा कुम बसीरी रील मोहसीनीन —3

3. इसी तरह अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हारे लिए मुसख्खर कर दिया ताकि तुम कबीर अल्लाह की बड़ाई बयान करो। इस बात पर कि उसने तुमको हिदायत की इख्लास वालों को (अल्लाह की रिजा की) खुशखबरी सुना दीजिए।

फजाइले जिक्र :- مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ۔ (سورۂ سبا، رکوع ۳)

माजा काला रब्बूकूम कालू लूलहक्का वाहोवर अल्लीयू उल्ल कबीर —6

6. (जब फरिश्तों को कबीर अल्लाह की तरफ से कोई हुक्म होता है तो वे खौफ के मारे घबरा जाते हैं) यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर हो जाती है, तो एक दूसरे से पूछते हैं कि कबीर परवरदिगार का क्या हुक्म है ? वे कहते हैं कि (फ्लानी) हक बात का हुक्म हुआ। वाकई वह (कबीर) आलीशान और मर्तबे वाला है।

फजाइले जिक्र :- (سورۂ مومن، رکوع ۲) فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ

कुल हूक्कू मूल्लाही हीलअल्ली लील कबीर —7

7. पस हुक्म कबीर अल्लाह ही के लिए है, जो आलीशान है, बड़े रुत्बे वाला है।

फजाईले दरूद शरीफ :-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَرْوَاحِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِي الْاَجْسَادِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِي الْقُبُوْرِ۔

अल्लाहुम-म सल्लि अलारूहि मुहम्मदिन फ़िल् अर्वाहि अल्लाहुम-म सल्लि अला ज-स-दि मुहम्मदिन फिल् अज्सादि अल्लाहुम म सल्लि अला कबिर (कबीर) महम्मिद फिल कुबूरि

फजाईले जिक्र :- عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا قَالَ عَبْدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِلَّا فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى يُفْضِيَ اِلَى الْعَرْشِ مَا اجْتُنِبَتِ الْكَبَائِرُ۔ رواه الترمذي وهكذا في المشكوٰة لكن ليس فيها حسن بل غريب فقط قال القاري و رواه النسائي وابن حبان وعزاه السيوطي في الجامع الى الترمذي و رقم له بالحسن وحكاه السيوطي في الدر من طريق ابن مردويه عن ابي هريرة وليس فيه ما اجتنبت الكبائر وفي الجامع الصغير برواية الطبراني عن معقل ابن يسار لكل شي مفتاح ومفتاح السمٰوات قول لا اله الا الله ورقم له بالضعف۔

5. हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई बन्दा ऐसा नहीं कि 'लाइला-ह-इल्लल्लाहह' कहे और उसके लिए आसमानों के दरवाजें न खुल जायें, यहाँ तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुँचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचाता रहे।

फ़—कितनी बड़ी फ़जीलत है और कुबूलियत की इन्तिहा है कि यह कलिमा बराहे रास्त अर्शे मुअल्ला तक पहुँचता है और यह अभी मालूम हो चुका है कि अगर कबीरा गुनाहों के साथ भी कहा जाये, तो नफ़ा से उस वक्त भी खाली नहीं।

मुल्ला अली कारी रह0 फरमाते हैं कि कबाइर से बचने की शर्त कुबूल की जल्दी और आसमान के सब दरवाजे खुलने के एताबर से है, वरना सवाब और कूबूल से कबाइर (कबीर) के साथ भी खाली नहीं।

बाज उलेमा ने इस हदीस का यह मतलब बयान फरमाया है कि ऐसे शख्स के

वास्ते मरने के बाद उस की रूह के एजाज में आसमान के सब दरवाजे खुल जायेंगे।

एक हदीस में आया है, दो कलिमे ऐसे हैं कि उनमें से एक के लिए अर्श के नीचे कोई मुन्तहा नहीं।' दूसरा आसमान और जमीन को (अपने नूर या अपने अज्र से) भर दे —एक 'लाइला-ह इल्लल्लाह', दूसरा 'अल्लाहु अक्बर, (परमेश्वर कबीर)

फजाइले जिक्र :- سبحان الله والحمد لله والله أكبر

'सुब्हानल्लाहि अल्हम्दु लिल्लाहि अल्लाहु अक्बरू'(कबिर्)

फजाइले दरूद शरीफ :- من صلى على روح محمد في الأرواح وعلى جسده في الأجساد وعلى قبره في القبور

मन सल्ला अला रूहि मुहम्मदिन फिल् अर्वाहि व अला-ज-स
दिही फिल् अज्सादि व अला कबिर् (कबीर) ही फिल कुबूरि0

وانها لكبيرة الا على الخاشعين الذين يظنون انهم ملاقوا ربهم وانهم اليه راجعون

व इन्नहाल कबीर तुन इल्ला अलल् खाशिलीनल्लजीन यजुन्नून
अन्नहुम मुलाकू रब्बिहिन व अन्नहुम इलैहि राजिऊन0
(फजाइले आमाल से लेख समाप्त)

सार :- इससे सिद्ध है कि प्रभु कबीर नाम से है तथा आकार में है, ऊपर सत्यलोक में अपने तख्त पर रहता है।

उपरोक्त दोनों धर्मों के शास्त्रों बाईबल तथा कुरान ने भी मिल-जुल कर सिद्ध कर दिया कि परमेश्वर मनुष्य सदृश शरीर युक्त है तथा उसका नाम कबीर है। पाठकों ने उपरोक्त विवरण में कुरान शरीफ व फजाईले आमाल पुस्तकों में ढ़ेर सारे प्रमाण पढ़ें।

''किसने देखा परमेश्वर''

जिन आँखों वालों (पूर्ण सन्तों) ने सूर्य (पूर्ण परमात्मा) को देखा उन में से कुछ के नाम हैं :-

(क) आदरणीय धर्मदास साहेब जी (ख) आदरणीय दादू साहेब जी (ग) आदरणीय मलूक दास साहेब जी (घ) आदरणीय गरीबदास साहेब जी (ड़) आदरणीय नानक साहेब जी (च) आदरणीय घीसा दास साहेब जी आदि।

❑ (क) आदरणीय धर्मदास साहेब जी, बांधवगढ़ मध्य प्रदेश वाले, जिनको पूर्ण परमात्मा जिंदा महात्मा के रूप में मथुरा में मिले, सतलोक दिखाया। वहाँ सत्लोक में दो रूप दिखा कर जिंदा वाले रूप में पूर्ण परमात्मा वाले सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा आदरणीय धर्मदास साहेब जी को कहा कि मैं ही काशी (बनारस) में नीरू-नीमा के घर आया हुआ हूँ। वहाँ धाणक (जुलाहे) का कार्य करता हूँ आदरणीय श्री रामानन्द जी मेरे गुरु जी हैं। यह कह कर श्री धर्मदास जी की आत्मा को वापिस शरीर में भेज दिया। श्री धर्मदास जी का शरीर दो दिन बेहोश रहा, तीसरे दिन होश आया तो काशी में खोज करने पर पाया कि यही काशी में

आया धाणक ही पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) है। आदरणीय धर्मदास साहेब जी ने पवित्र कबीर सागर, कबीर साखी, कबीर बीजक नामक सद्ग्रन्थों की आँखों देखे तथा पूर्ण परमात्मा के पवित्र मुख कमल से निकले अमृत वचन रूपी विवरण से रचना की। अमृत वाणी में प्रमाण :-

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।टेक।।
सत्यलोक से चल कर आए, काटन जम की जंजीर।।1।।
थारे दर्शन से म्हारे पाप कटत हैं, निर्मल होवै जी शरीर।।2।।
अमृत भोजन म्हारे सतगुरु जीमैं, शब्द दूध की खीर।।3।।
हिन्दू के तुम देव कहाये, मुस्लमान के पीर।।4।।
दोनों दीन का झगड़ा छिड़ गया, टोहे ना पाये शरीर।।5।।
धर्मदास की अर्ज गोसांई, बेड़ा लंघाईयो परले तीर।।6।।

❑(ख) आदरणीय दादू साहेब जी (अमृत वाणी में प्रमाण) कबीर परमेश्वर के साक्षी -

आदरणीय दादू साहेब जी जब सात वर्ष के बालक थे तब पूर्ण परमात्मा जिंदा महात्मा के रूप में मिले तथा सत्यलोक ले गए। तीन दिन तक दादू जी बेहोश रहे। होश में आने के पश्चात् परमेश्वर की महिमा की आँखों देखी बहुत-सी अमृतवाणी उच्चारण की :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोइ सतगुरु हमार।
दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सृजन हार।।
दादू नाम कबीर की, जै कोई लेवे ओट।
उनको कबहू लागे नहीं, काल बज्र की चोट।।
दादू नाम कबीर का, सुनकर कांपे काल।
नाम भरोसे जो नर चले, होवे न बंका बाल।।
जो जो शरण कबीर के, तरगए अनन्त अपार।
दादू गुण कीता कहे, कहत न आवै पार।।
कबीर कर्ता आप है, दूजा नाहिं कोय।
दादू पूरन जगत को, भक्ति दृढावत सोय।।
ठेका पूरन होय जब, सब कोई तजै शरीर।
दादू काल गँजे नहीं, जपै जो नाम कबीर।।
आदमी की आयु घटै, तब यम घेरे आय।
सुमिरन किया कबीर का, दादू लिया बचाय।।
मेटि दिया अपराध सब, आय मिले छनमाँह।
दादू संग ले चले, कबीर चरण की छांह।।
सेवक देव निज चरण का, दादू अपना जान।
भृंगी सत्य कबीर ने, कीन्हा आप समान।।
दादू अन्तरगत सदा, छिन–छिन सुमिरन ध्यान।
वारु नाम कबीर पर, पल–पल मेरा प्रान।।
सुन–2 साखी कबीर की, काल नवावै भाथ।

धन्य–धन्य हो तिन लोक में, दादू जोड़े हाथ।।
केहरि नाम कबीर का, विषम काल गज राज।
दादू भजन प्रतापते, भागे सुनत आवाज।।
पल एक नाम कबीर का, दादू मनचित लाय।
हस्ती के अश्वार को, श्वान काल नहीं खाय।।
सुमरत नाम कबीर का, कटे काल की पीर।
दादू दिन दिन ऊँचे, परमानन्द सुख सीर।।
और संत सब कूप हैं, केते झरिता नीर।
दादू अगम अपार है, दरिया सत्य कबीर।।
अबही तेरी सब मिटै, जन्म मरन की पीर।
स्वांस उस्वांस सुमिरले, दादू नाम कबीर।।
कोई सर्गुन में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय।
दादू गति कबीर की, मोते कही न जाय।।

❑ (ग) आदरणीय मलूक दास साहेब जी कविर्देव के साक्षी -

42 वर्ष की आयु में श्री मलूक दास साहेब जी को जिंदा सन्त के वेश में पूर्ण परमात्मा कबीर जी मिले तथा दो दिन तक श्री मलूक दास जी अचेत रहे। फिर निम्न वाणी उच्चारण की :

जपो रे मन सतगुरु नाम कबीर।।टेक।। जपो रे मन परमेश्वर नाम कबीर।
एक समय गुरु बंसी बजाई कालंद्री के तीर।
सुर–नर मुनि थक गए, रूक गया दरिया नीर।।
काँशी तज गुरु मगहर आये, दोनों दीन के पीर।
कोई गाढ़े कोई अग्नि जरावै, ढूंडा न पाया शरीर।
चार दाग से सतगुरु न्यारा, अजरो अमर शरीर।
दास मलूक सलूक कहत हैं, खोजो खसम कबीर।।

❑ (घ) आदरणीय गरीबदास साहेब जी छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा वाले (अमृत वाणी में प्रमाण) प्रभु कबीर (कविर्देव) के साक्षी -

आदरणीय गरीबदास साहेब जी का आर्विभाव सन् 1717 में हुआ तथा साहेब कबीर जी के दर्शन दस वर्ष की आयु में सन् 1727 में नला नामक खेत में हुए तथा सत्लोक वास सन् 1778 में हुआ। आदरणीय गरीबदास साहेब जी को भी परमात्मा कबीर साहेब जी सशरीर जिंदा रूप में मिले। आदरणीय गरीबदास साहेब जी अपने नला नामक खेतों में अन्य साथी ग्वालों के साथ गाय चरा रहे थे। जो खेत कबलाना गाँव की सीमा से सटा है। ग्वालों ने जिन्दा महात्मा के रूप में प्रकट कबीर परमेश्वर से आग्रह किया कि आप खाना नहीं खाते हो तो दूध ग्रहण करो क्योंकि परमात्मा ने कहा था कि मैं अपने सतलोक गाँव से खाना खाकर आया हूँ। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मैं कुँआरी गाय का दूध पीता हूँ। बालक गरीबदास जी ने एक कुँआरी गाय को परमेश्वर कबीर जी के पास लाकर कहा कि बाबा जी यह बिना ब्याई (कुँआरी) गाय कैसे दूध दे सकती है ? तब कविर्देव

(कबीर परमेश्वर) ने कुँआरी गाय अर्थात् बच्छिया की कमर पर हाथ रखा, अपने आप कुँआरी गाय (अध्नया धेनु) के थनों से दूध निकलने लगा। पात्र भरने पर रूक गया। वह दूध परमेश्वर कबीर जी ने पीया तथा प्रसाद रूप में कुछ अपने बच्चे गरीबदास जी को पिलाया तथा सतलोक के दर्शन कराये। सतलोक में अपने दो रूप दिखाकर फिर जिंदा वाले रूप में कुल मालिक रूप में सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा कहा कि मैं ही 120 वर्ष तक काशी में धाणक (जुलाहा) रूप में रहकर आया हूँ। मैं पहले हजरत मुहम्मद जी को भी मिला था। पवित्र कुरान शरीफ में जो कबीरा, कबीरन्, खबीरा, खबीरन्, अल्लाहु अक्बर आदि शब्द हैं वे मेरा ही बोध कराते हैं तथा मैं ही श्री नानक जी को बेई नदी पर जिंदा महात्मा के रूप में ही मिला था {मुस्लमानों में जिंदा महात्मा होते हैं, वे काला चौगा (ओवर कोट जैसा) घुटनों से नीचे तक तथा सिर पर चोटे वाला काला टोप पहनते हैं} तथा मैं ही बलख शहर में नरेश श्री अब्राहीम सुलतान अधम जी तथा श्री दादू जी को मिला था तथा चारों पवित्र वेदों में जो कविर अग्नि, कविर्देव (कविरंघारिः) आदि नाम हैं वह मेरा ही बोध है।

''कबीर बेद हमारा भेद है, मैं मिलु बेदों से नांही। जौन बेद से मैं मिलूं, वो बेद जानते नांही।।''

मैं ही वेदों से पहले भी सतलोक में विराजमान था।

(गाँव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) में आज भी उस जंगल में जहाँ पूर्ण परमात्मा, का सन्त गरीबदास जी को मानव शरीर में साक्षात्कार हुआ था, एक यादगार विद्यमान है।) आदरणीय गरीबदास जी की आत्मा अपने परमात्मा कबीर बन्दी छोड़ के साथ चले जाने के बाद उन्हें मृत जान कर चिता पर रख कर जलाने की तैयारी करने लगे, उसी समय आदरणीय गरीबदास साहेब जी की आत्मा को पूर्ण परमेश्वर ने शरीर में प्रवेश कर दिया। दस वर्षीय बालक गरीब दास जीवित हो गए। उसके बाद उस पूर्ण परमात्मा का आँखों देखा विवरण अपनी अमृत वाणी में ''सद्ग्रन्थ'' नाम से ग्रन्थ की रचना की। उसी अमृत वाणी में प्रमाण :-

अजब नगर में ले गया, हमकूं सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं कुल के सृजन हार।।
गैबी ख्याल विशाल सतगुरु, अचल दिगम्बर थीर है।
भक्ति हेत काया धर आये, अविगत सत् कबीर हैं।।
हरदम खोज हनोज हाजर, त्रिवैणी के तीर हैं।
दास गरीब तबीब सतगुरु, बन्दी छोड़ कबीर हैं।।
हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जात जुलाहा भेद नहीं पाया,काशी माहे कबीर हुआ।।
सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि हैं तीर।
दास गरीब सतपुरुष भजो, अविगत कला कबीर।।
जिंदा जोगी जगत् गुरु, मालिक मुरशद पीर।
दहूँ दीन झगड़ा मंड्या, पाया नहीं शरीर।।

गरीब जिस कूं कहते कबीर जुलाहा। सब गति पूर्ण अगम अगाहा।।

उपरोक्त वाणी में आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज ने स्पष्ट कर दिया कि काशी वाले धाणक (जुलाहे) ने मुझे भी नाम दान देकर पार किया, यही काशी वाला धाणक ही (सतपुरुष) पूर्ण ब्रह्म है।

परमेश्वर कबीर ही सतलोक से जिन्दा महात्मा के रूप में आकर मुझे अजब नगर (अद्भुत नगर सतलोक) में लेकर गए। जहाँ पर आनन्द ही आनन्द है, कोई चिन्ता नहीं, जन्म-मृत्यु, अन्य प्राणियों के शरीर में कष्ट आदि का शोक नहीं है। इसी काशी में धाणक रूप में आए सतपुरुष ने भिन्न-भिन्न समय में प्रकट होकर आदरणीय श्री अब्राहीम सुल्तान अधम साहेब जी तथा आदरणीय दादू साहेब जी व आदरणीय नानक साहेब जी को भी सतनाम देकर पार किया। वही कविर्देव जिसके एक रोम कूप में करोड़ो सूर्यों जैसा प्रकाश है तथा मानव सदृश है, अति तेजोमय अपने वास्तविक शरीर के ऊपर हल्के तेजपुंज का चोला (भद्रा वस्त्रा अर्थात् तेजपुंज का शरीर) डाल कर हमें मृत्य लोक (मनुष्य लोक) में मिलता है। क्योंकि उस परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप के प्रकाश को चर्म दृष्टि सहन नहीं कर सकती।

आदरणीय गरीबदास साहेब जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है 'सर्व कला सतगुरु साहेब की, हरि आए हरियाणे नुँ''। भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा कविर हरि (कविर्देव) जिस क्षेत्र में आए उसका नाम हरयाणा अर्थात् परमात्मा के आने वाला पवित्र स्थल, जिस के कारण आस-पास के क्षेत्र को हरिआना (हरयाणा) कहने लगे। सन् 1966 को पंजाब प्रान्त के विभाजन होने पर इस क्षेत्र का नाम हरिआणा (हरयाणा) पड़ा। लगभग 236 वर्ष पूर्व कही वाणी 1966 में सिद्ध हुई कि समय आने पर यह क्षेत्र हरयाणा प्रान्त नाम से विख्यात होगा। जो आज प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इसीलिए गुरुग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर अपनी अमृतवाणी महला 1 में श्री नानक जी ने कहा है कि -

हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदीगार। नानक बुगोयद जनु तुरा, तेरे चाकरां पाखाक।।

इसी का प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहिब के राग ''सिरी'' महला 1 पृष्ठ नं. 24 पर शब्द नं. 29 (शब्द)

एक सुआन दुई सुआनी नाल, भलके भौंकही सदा बिआल
कुड़ छुरा मुठा मुरदार, धाणक रूप रहा करतार।।1।।
मै पति की पंदि न करनी की कार। उह बिगड़ै रूप रहा बिकराल।।
तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस एहो आधार।
मुख निंदा आखा दिन रात, पर घर जोही नीच मनाति।।
काम क्रोध तन वसह चंडाल, धाणक रूप रहा करतार।।2।।
फाही सुरत मलूकी वेस, उह ठगवाड़ा ठगी देस।।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।3।।
मैं कीता न जाता हरामखोर, उह किआ मुह देसा दुष्ट चोर।
नानक नीच कह बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।4।।

''श्री नानक देव जी का गुरु जी कौन था ?''

श्री नानक जी के गुरु जी कौन हैं ? इस विषय पर अभी तक भ्रान्तियाँ थी। सिख समाज का मानना है कि श्री नानक देव जी का कोई गुरु नहीं था। सिख समाज का यह भी मानना है कि भाई बाले ने जो कुछ भी जन्म साखी बाबा नानक की में लिखा है। वह बाबा नानक जी के वचन हैं या अन्य किसी सिद्ध या संत से की गई गोष्ठी यथार्थ को रूप में लिखा है।

❑आओ ''भाई बाले वाली जन्म साखी'' से जाने की श्री नानक देव जी का गुरु जी कौन था ?

भाई बाले वाली जन्म साखी (हिन्दी भाषा वाली) के पृष्ठ 280-281 ''साखी और चली'' में श्री नानक जी ने कहा है कि ''मर्दाना ! मुझे उस ईश्वर ने इतना बड़ा गुरु मिलाया है जो करतार का ही रूप है। मर्दाने ने कहा हे महाराज ! जिस गुरु का आपने जिक्र किया है, उसका नाम जानना चाहता हूँ। गुरु नानक जी ने कहा उसका नाम बाबा जिंदा कहते हैं। जल, पवन, अग्नि तथा पृथ्वी उसी की आज्ञा में चल रहे हैं। उसी को बाबा (दादा) कहना उचित है, अन्य को नहीं। मर्दाने ने पूछा कि हे महाराज हम आपके साथ ही रहते हैं आपको वह बाबा अर्थात् आपका गुरु कब तथा कहाँ मिला था। श्री नानक जी ने कहा कि ''मर्दाना ! सुलतान पुर में (बेई नदी में) जब डुबकी लगाई थी। उस समय तीन दिन उसी के साथ रहे थे। उसका रंग लाल है। उसके रोम स्वर्ण वर्ण के हैं।

यही प्रमाण ''प्राण संगली'' भाग-1 में जीवन चरित्र बाबा नानक साहेब जी में पृष्ठ 15 पर लिखा है कि संवत् 1554 (सन् 1497) में बेई नदी पर एक नौकर के साथ स्नान करने के लिए गए। वहां उसकी भेंट एक साधु से हुई। जिसने चेताया कि बाबा नानक जी तुम किस काम के लिए इस संसार में भेजे गए हो और क्या कर रहे हो? गुरु जी उस साधु के साथ बेई नदी में घुसकर तीन दिन तक गुप्त रहे। फिर लौटे तो सच्चखण्ड तथा सतनाम तथा वाहेगुरु आदि के विषय में जानकारी देने लगे। देखें फोटो कापी ''प्राण संगली'' पृष्ठ 15 की इसी पुस्तक धरती पर अवतार के पृष्ठ 121 पर।

फिर ''भाई बाले वाली जन्म साखी'' के पृष्ठ 189 पर एक काजी रूकनदीन सूरा के प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री नानक देव जी ने कहा :-

खालक आदम सिरजिआ <u>आलम बड़ा कबीर।</u>
काइम दाइम कुदरती सिर पीरां दे पीर।
सयदे (सजदे) करे खुदाई नूं <u>आलम बड़ा कबीर।</u>

विवेचन :- पृष्ठ 280-281 जन्म साखी के ''साखी और चली'' तथा ''प्राण संगली'' के प्रकरणों में स्पष्ट है कि श्री नानक देव जी ने कहा है कि मुझे उस ईश्वर ने इतना बड़ा गुरु मिलाया है। जो करतार का ही रूप है। पवित्र ''कबीर सागर'' ग्रन्थ भी '''भाई बाले वाली जन्म साखी'' के समान है। कबीर सागर में परमेश्वर

कबीर जी तथा भक्त धर्मदास जी की वार्ता है। जो धर्मदास जी ने लीपीबद्ध किया था। इसके ''स्वसमबेद बोध'' नामक अध्याय में भी स्पष्ट है कि ''लिखा है कि प्रभु कबीर जी जिंदा बाबा का वेश धारण करके पंजाब प्रांत में श्री नानक साहेब जी को मिले थे। सच्चखण्ड लेकर गये थे। श्री नानक साहेब जी ने परमेश्वर कबीर जी को गुरु बनाया था।'' कृप्या देखें फोटो कापी ''कबीर सागर'' ''स्वसमबेद बोध'' पृष्ठ 158-159 की इसी पुस्तक के पृष्ठ 123 पर। इस से स्पष्ट है कि श्री नानक देव को जो गुरु मिला वह परमात्मा से अन्य था। परन्तु शक्ति में परमात्मा से कम नहीं था। फिर अपने गुरु जी का नाम बताते हुए श्री नानक देव जी ने कहा कि उस का नाम बाबा जिंदा कहते हैं। जब मैंने सुलतान पुर के पास बह रही बेई नदी में डुबकी लगाई थी, उस समय मिला था, उसके साथ मैं तीन दिन रहा था। फिर पृष्ठ 189 पर काजी रूकनदीन के साथ वार्ता में श्री नानक देव जी ने बताया है कि :-

खालक आदम सिरजिआ आलम बड़ा कबीर।
काइम दाइम कुदरती सिर पीरां दे पीर।
सयदे (सजदे) करे खुदाई नूं आलम बड़ा कबीर।

भावार्थ है कि जिस परमात्मा ने आदम जी की उत्पति की वह सबसे बड़ा परमात्मा कबीर है। वही सर्व उपकार करने वाला है तथा सब गुरुओं में शिरोमणी गुरु है। उस सब से बड़े कबीर परमेश्वर को सिजदा करो अर्थात् प्रणाम करो, उसी की पूजा करो।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि श्री नानक देव जी के गुरु देव जी बाबा जिंदा वेश में कबीर परमेश्वर ही बेई नदी में स्नान करते समय मिले थे। जिनके साथ श्री नानक देव जी तीन दिन रहे तथा सच्चखण्ड गए थे, तीसरे दिन वापिस आये थे। परमेश्वर ने कहा था कि मैं काशी शहर में जुलाहा रूप में रह रहा हूँ। इस की जांच के लिए श्री नानक देव जी ने पहली उदासी यात्रा काशी (बनारस) कि की थी :- काशी शहर में परमेश्वर कबीर जी धाणक (जुलाहा) रूप में लीला कर रहे थे तथा यथार्थ भक्ति मार्ग का उपदेश भी किया करते थे। जब श्री नानक देव जी ने परमेश्वर कबीर जी को बनारस (काशी) शहर में एक झोंपड़ी में धाणक का कार्य करते देखा तो कहा :-

फाई सूरत मलूकि वेश, उह ठगवाड़ा ठगी देश।
खरा सिआणा बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 24 पर महला 1 की वाणी में उपरोक्त प्रमाण है। फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 731 पर श्री नानक देव ने फिर स्पष्ट किया है कहा है :-

अंधुला नीच जाति परदेशी खिन आवै तिल जावै।
ताकी संगति नानक रहंदा किउ करि मूड़ा पावै।। **(4/2/9)**

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि श्री नानक देव जी के गुरु जी परमेश्वर कबीर जी काशी वाले धाणक (जुलाहे) थे।

❑ सन्त गरीबदास जी (गांव छुड़ानी, जिला झज्जर हरियाणा) को भी परमेश्वर कबीर जी बाबा जिन्दा महात्मा के रूप में अमर लोक से आकर अपने

साथ अपने लोक सच्चखण्ड में लेकर गए थे। सन्त गरीबदास जी को मृत जानकर चिता पर रखकर अन्तिम संस्कार करने वाले थे। परमेश्वर कबीर जी ने सन्त गरीबदास जी को सच्चखण्ड से वापिस भेजा तथा शरीर में प्रवेश किया तथा उनका ज्ञान योग खोल दिया। सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान तथा अपना परिचय देकर कहा अब आप जाकर मेरी महिमा का गुणगान करो। चिता से उठकर सन्त गरीबदास जी चल पड़े तथा सच्चखण्ड का आँखों देखा वर्णन करने लगे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि हे गरीबदास ! मैं ही श्री नानक देव जी को तथा श्री दादू दास जी को तथा अब्राहिम सुलतान (बलख बुखारे के राजा) को भी इसी तरह मिला था। उनको भी तेरे की तरह यहां सच्चखण्ड से तथा अपनी महिमा से परिचित कराके वापिस पृथ्वी पर छोड़ा था।

सन्त गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी में फरमाया है :-

अजब नगर में ले गए, हम कूँ सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।
गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी माहें कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

उपरोक्त प्रमाणों से यह स्पष्ट हुआ कि श्री नानक देव जी को जिंदा बाबा रूप में जो गुरु जी मिले थे, वे काशी वाले कबीर जी धाणक (जुलाहे) थे। वे ही पूर्ण परमात्मा हैं। श्री नानक देव ने इस शंका का भी निवारण कर दिया है। जिसमें कुछ व्यक्ति यह कहते हैं कि ''कबीर'' का अर्थ बड़ा होता। ''जनम साखी भाई बाले वाली'' के पृष्ठ 189 पर कहा है ''खालक आदम सिरजिआ आलम बड़ा कबीर।

भावार्थ है कि जिस परमेश्वर ने आदम जी को उत्पन्न किया वह बड़ा परमेश्वर कबीर है। यहां पर ''कबीर'' का अर्थ बड़ा नहीं कर सकते क्योंकि ''बड़ा'' शब्द भी साथ है।

विशेष :- उसी सबसे बड़े परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि मैं ही कलयुग में पुनः अवतार धारण करके संत गरीबदास जी वाले पंथ में आऊंगा। सर्व अज्ञान का नाश करके सर्व मानव समाज को एक करूंगा। वही अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज वर्तमान में धरती पर विराजमान हैं। कृप्या प्रमाण के लिए पढ़ें इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 28 पर।

❑(ड़) श्री गुरु नानक जी को जिंदा बाबा के वेश में परमेश्वर कबीर जी मिले थे।

कृप्या देखें फोटो कापी कबीर सागर स्वस्मवेद बोध पृष्ठ 158-159 की पृष्ठ 123 पर तथा भाई बाले वाली जन्म साखी में काजी रूकनदीन सूरा से गोष्टी पृष्ठ 189 की व ''साखी और चली'' पृष्ठ 280-281 (हिन्दी वाली जन्म साखी में) की फोटो कापीइसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 120-122 पर। जिनमें स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर जी ही श्री नानक देव जी को गुरु रूप में मिले थे।

आदरणीय श्री नानक साहेब जी प्रभु कबीर (धाणक) जुलाहा के साक्षी - श्री नानक देव का जन्म विक्रमी संवत् 1526 (सन् 1469) कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को हिन्दु परिवार में श्री कालु राम मेहत्ता (खत्री) के घर माता श्रीमति तृप्ता देवी की पवित्र कोख (गर्भ) से पश्चिमी पाकिस्तान के जिला लाहौर के तलवंडी नामक गाँव में हुआ। इन्होंने फारसी, पंजाबी, संस्कृत भाषा पढ़ी हुई थी। श्रीमद् भगवत गीता जी को श्री बृजलाल पांडे से पढ़ा करते थे। श्री नानक देव जी के दो लड़के थे। श्री नानक जी अपनी बहन नानकी की सुसराल शहर सुल्तान पुर में अपने बहनोई श्री जयराम जी की कृपा से सुल्तान पुर के नवाब के यहाँ मोदी खाने की नौकरी किया करते थे। प्रभु में असीम प्रेम था क्योंकि यह पुण्यात्मा युगों-युगों से पवित्र भक्ति ब्रह्म भगवान(काल) की करते हुए आ रहे थे। सत्ययुग में यही नानक जी राजा अम्ब्रीष थे तथा ब्रह्म भक्ति विष्णु जी को इष्ट मानकर किया करते थे। दुर्वासा जैसे महान तपस्वी ऋषि भी इनके दरबार में हार मान कर क्षमा याचना करके गए थे।

त्रेता युग में श्री नानक जी की आत्मा राजा जनक विदेही बने। जो सीता जी के पिता कहलाए। उस समय सुखदेव ऋषि जो महर्षि वेदव्यास के पुत्र थे जो अपनी सिद्धि से आकाश में उड़ जाते थे। परन्तु गुरु से उपदेश नहीं ले रखा था। जब सुखदेव ऋषि श्री विष्णुलोक के स्वर्ग में गए तो गुरु न होने के कारण वापिस आना पड़ा। विष्णु जी के आदेश से राजा जनक को गुरु बनाया तब स्वर्ग में स्थान प्राप्त हुआ। फिर कलियुग में यही राजा जनक की आत्मा एक हिन्दु परिवार में श्री कालुराम महत्ता (खत्री) के घर उत्पन्न हुए तथा श्री नानक नाम रखा गया।

बाबा नानक देव जी प्रातःकाल प्रतिदिन सुल्तानपुर के पास बह रही बेई दरिया में स्नान करने जाया करते थे तथा घण्टों प्रभु चिन्तन में बैठे रहते थे। एक दिन एक जिन्दा फकीर बेई दरिया पर मिले तथा नानक जी से कहा कि आप बहुत अच्छे प्रभु भक्त नजर आते हो। कृप्या मुझे भी भक्ति मार्ग बताने की कृपा करें। मैं बहुत भटक लिया हूँ। मेरा संशय समाप्त नहीं हो पाया है।

श्री नानक जी ने पूछा कि आप कहाँ से आए हो? आपका क्या नाम है? क्या आपने कोई गुरु धारण किया है?

तब जिन्दा फकीर का रूप धारण किए कबीर जी ने कहा मेरा नाम कबीर है, बनारस (काशी) से आया हूँ। जुलाहे का काम करता हूँ। मैंने पंडित रामानन्द स्वामी जी से नाम उपदेश ले रखा है।

श्री नानक जी ने बन्दी छोड़ कबीर जी को एक जिज्ञासु जानकर भक्ति मार्ग बताना प्रारम्भ किया :-

श्री नानक जी ने कहा हे जिन्दा! गीता में लिखा है कि एक 'ओ३म' मंत्र का जाप करो। श्री विष्णु जी (जो श्री कृष्ण रूप में अवतरित हुए थे) ही पूर्ण परमात्मा है। स्वर्ग प्राप्ति का एक मात्र साधारण-सा रास्ता है। गुरु के बिना मोक्ष नहीं, निराकार ब्रह्म की एक 'ओम् 'मंत्र की साधना से स्वर्ग प्राप्ति होती है।

जिन्दा रूप में कबीर परमेश्वर ने कहा गुरु किसे बनाऊँ? कोई पूरा गुरु मिल

ही नहीं रहा जो संशय समाप्त करके मन को भक्ति में लगा सके।

स्वामी रामानन्द जी मेरे गुरु हैं परन्तु उन से मेरा संशय निवारण नहीं हो पाया है(यहाँ पर कबीर परमेश्वर अपने आप को छुपा कर लीला करते हुए कह रहे हैं तथा साथ में यह उद्देश्य है कि इस प्रकार श्री नानक जी को समझाया जा सकता है।)।

श्री नानक जी ने कहा मुझे गुरु बनाओ, आप का कल्याण निश्चित है।

जिन्दा महात्मा के रूप में कबीर परमेश्वर ने कहा कि मैं आप को गुरु धारण करता हूँ, परन्तु मेरे कुछ प्रश्न हैं, उनका आप से समाधान चाहूँगा। श्री नानक जी बोले - पूछो।

जिन्दा महात्मा के रूप में कबीर परमेश्वर ने कहा हे गुरु नानक जी! आपने बताया कि तीन लोक के प्रभु (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) है। त्रिगुण माया सृष्टी, स्थिति तथा संहार करती है। श्री कृष्ण जी ही श्री विष्णु रूप में स्वयं आए थे, जो सर्वेश्वर, अविनाशी, सर्व लोकों के धारण व पोषण कर्ता हैं। यह सर्व के पूज्य हैं तथा सृष्टी रचनहार भी यही हैं। इनसे ऊपर कोई प्रभु नहीं है। इनके माता-पिता नहीं है, ये तो अजन्मा हैं। श्री कृष्ण ने ही गीता ज्ञान दिया है (यह ज्ञान श्री नानक जी ने श्री बृजलाल पाण्डे से सुना था, जो उन्हें गीता जी पढ़ाया करते थे)। परन्तु गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अर्जुन! मैं तथा तू पहले भी थे तथा यह सर्व सैनिक भी थे, हम सब आगे भी उत्पन्न होंगे। तेरे तथा मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता मैं जानता हूँ। इससे तो सिद्ध है कि गीता ज्ञान दाता भी नाशवान है, अविनाशी नहीं है। गीता अध्याय 7 श्लोक 15 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि जो त्रिगुण माया (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिवजी) के द्वारा मिलने वाले क्षणिक लाभ के कारण इन्हीं की पूजा करके अपना कल्याण मानते हैं, इनसे ऊपर किसी शक्ति को नहीं मानते अर्थात् जिनकी बुद्धि इन्हीं तीन प्रभुओं (त्रिगुणमयी माया) तक सीमित है वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले, मूर्ख मुझे भी नहीं पूजते। इससे तो सिद्ध हुआ कि श्री विष्णु (सतगुण) आदि पूजा के योग्य नहीं है तथा अपनी साधना के विषय में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि मेरी (गति) पूजा भी (अनुत्तमाम्) अति घटिया है। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 4, अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सनातन परम धाम सतलोक चला जाएगा। जहाँ जाने के पश्चात् साधक का जन्म-मृत्यु का चक्र सदा के लिए छूट जाएगा। वह साधक फिर लौट कर संसार में नहीं आता अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है। उस परमात्मा के विषय में गीता ज्ञान दाता प्रभु ने कहा है कि मैं नहीं जानता। उस के विषय में पूर्ण (तत्व) ज्ञान तत्वदर्शी संतों से पूछो। जैसे वे कहें वैसे साधना करो। प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में। श्री नानक जी से परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा कि क्या वह तत्वदर्शी संत आपको मिला है जो पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि बताएगा? श्री नानक जी ने कहा नहीं मिला। परमेश्वर कबीर जी ने कहा जो भक्ति

आप कर रहे हो यह तो पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है। उस पूर्ण परमात्मा के विषय में पूर्ण ज्ञान रखने वाला मैं ही वह तत्वदर्शी संत हूँ। बनारस (काशी) में धाणक (जुलाहे) का कार्य करता हूँ। गीता ज्ञान दाता प्रभु स्वयं को नाशवान कह रहा है, जब स्वर्ग तथा महास्वर्ग (ब्रह्मलोक) भी नहीं रहेगा तो साधक का क्या होगा ? जैसे आप ने बताया कि श्रीमद् भगवत गीता में लिखा है कि ओ३म मंत्र के जाप से स्वर्ग प्राप्ति हो जाती है। वहाँ स्वर्ग में साधक जन कितने दिन रह सकते हैं?

श्री नानक जी ने उत्तर दिया जितना भजन तथा दान के आधार पर उनका स्वर्ग का समय निर्धारित होगा उतने दिन स्वर्ग में आनन्द से रह सकते हैं।

जिन्दा फकीर ने प्रश्न किया कि तत् पश्चात् कहाँ जाएँगे?

उत्तर (नानक जी का) - फिर इस मृत लोक में आना होता है तथा कर्माधार पर अन्य योनियाँ भी भोगनी पड़ती हैं।

प्रश्न (जिन्दा रूप में कबीर साहेब का)- क्या जन्म मरण मिट सकता है?

उत्तर (श्री नानक जी का) - नहीं, गीता में कहा है अर्जुन तेरे और मेरे अनेक जन्म हो चुके हैं और आगे भी होंगे अर्थात् जन्म-मरण बना रहेगा (गीता अध्याय 2 श्लोक 12 तथा अध्याय 4 श्लोक 5)। शुभ कर्म ज्यादा करने से स्वर्ग का समय अधिक हो जाता है।

प्रश्न {जिन्दा फकीर (कबीर जी का) का} - गीता अध्याय न. 8 के श्लोक न. 16 में लिखा है कि ब्रह्मलोक से लेकर सर्वलोक नाशवान हैं। उस समय कहाँ रहोगे? जब न पृथ्वी रहेगी, न श्री विष्णु रहेगा, न विष्णुलोक, न स्वर्ग लोक तथा पूरा ब्रह्मण्ड विनाश होवेगा। इसलिए गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि किसी तत्वदर्शी संत की खोज कर, फिर जैसे उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति की विधि वह संत बताए उसके अनुसार साधना कर। उसके पश्चात् उस परम पद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए, जहाँ पर जाने के पश्चात् साधक का फिर जन्म-मृत्यु कभी नहीं होता अर्थात् फिर लौट कर संसार में नहीं आते। जिस परमेश्वर से सर्व ब्रह्मण्डों की उत्पत्ति हुई है। मैं (गीता ज्ञान दाता) भी उसी पूर्ण परमात्मा की शरण में हूँ (गीता अध्याय 4 श्लोक 34, अध्याय 15 श्लोक 4) इसलिए कहा है कि अर्जुन सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सतलोक स्थान अर्थात् सच्चखण्ड में चला जाएगा(गीता अध्याय 18 श्लोक 62)। उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ओम-तत्-सत् केवल यही मंत्र है (गीता अध्याय 17 श्लोक 23)।

उत्तर नानक जी का - इसके बारे में मुझे ज्ञान नहीं।

जिन्दा फकीर (कबीर साहेब) ने श्री नानक जी को बताया कि यह सर्व काल की कला है। गीता अध्याय न. 11 के श्लोक न. 32 में स्वयं गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि मैं काल हूँ और सभी को खाने के लिए आया हूँ। वही निरंकार कहलाता है। उसी काल का ओंकार (ओम्) मंत्र है।

गीता अध्याय न. 11 के श्लोक न. 21 में अर्जुन ने कहा है कि आप तो ऋषियों को भी खा रहे हो, देवताओं को भी खा रहे हो जो आपही का स्मरण स्तुति

वेद विधि अनुसार कर रहे हैं। इस प्रकार काल वश सर्व साधक साधना करके उसी के मुख में प्रवेश करते रहते हैं। आपने इसी काल (ब्रह्म) की साधना करते करते असंखों युग हो गए। साठ हजार जन्म तो आपके महर्षि तथा महान भक्त रूप में हो चुके हैं। फिर भी काल के लोक में जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रहे हो।

सर्व सृष्टी रचना सुनाई तथा श्री ब्रह्मा (रजगुण), श्री विष्णु (सतगुण) तथा श्री शिव (तमगुण) की स्थिति बताई। श्री देवी महापुराण तीसरा स्कंद (पृष्ठ 123, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, मोटा टाईप) में स्वयं विष्णु जी ने कहा है कि मैं (विष्णु) तथा ब्रह्मा व शिव तो नाशवान हैं, अविनाशी नहीं हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होता है। आप (दुर्गा/अष्टांगी) हमारी माता हो। दुर्गा ने बताया कि ब्रह्म (ज्योति निरंजन) आपका पिता है। श्री शंकर जी ने स्वीकार किया कि मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर भी आपका पुत्र हूँ तथा ब्रह्मा भी आपका बेटा है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे नानक जी! आप इन्हें अविनाशी, अजन्मा, इनके कोई माता-पिता नहीं हैं आदि उपमा दे रहे हो। यह दोष आप का नहीं है। यह दोष दोनों धर्मों (हिन्दू तथा मुसलमान) के ज्ञानहीन गुरुओं का है जो अपने-अपने धर्म के सद्ग्रन्थों को ठीक से न समझ कर अपनी-अपनी अटकल से दंत कथा (लोकवेद) सुना कर वास्तविक भक्ति मार्ग के विपरीत शास्त्र विधि रहित मनमाना आचरण (पूजा) का ज्ञान दे रहे हैं। दोनों ही पवित्र धर्मों के पवित्र शास्त्र एक पूर्ण प्रभु का (मेरा) ही ज्ञान करा रहे हैं। कुर्आन शरीफ में सूरत फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 में भी मुझ कबीर का वर्णन है।

श्री नानक जी ने कहा कि यह तो आज तक किसी ने नहीं बताया। इसलिए मन स्वीकार नहीं कर रहा है। तब जिन्दा फकीर जी (कबीर साहेब जी) श्री नानक जी की अरूचि देखकर चले गए। उपस्थित व्यक्तियों ने श्री नानक जी से पूछा यह भक्त कौन था जो आप को गुरुदेव कह रहा था? नानक जी ने कहा यह काशी में रहता है, नीच जाति का जुलाहा(धाणक) कबीर था। बेतुकी बातें कर रहा था। कह रहा था कि कृष्ण जी तो काल के चक्र में है तथा मुझे भी कह रहा था कि आपकी साधना ठीक नहीं है। तब मैंने बताना शुरू किया तब हार मान कर चला गया। {इस वार्ता से सिक्खों ने श्री नानक जी को परमेश्वर कबीर साहेब जी का गुरु मान लिया।}

श्री नानक जी प्रथम वार्ता पूज्य कबीर परमेश्वर के साथ करने के पश्चात् यह तो जान गए थे कि मेरा ज्ञान पूर्ण नहीं है तथा गीता जी का ज्ञान भी उससे कुछ भिन्न ही है जो आज तक हमें बताया गया था। इसलिए हृदय से प्रतिदिन प्रार्थना करते थे कि वही संत एक बार फिर आए। मैं उससे कोई वाद-विवाद नहीं करूंगा, कुछ प्रश्नों का उत्तर अवश्य चाहूँगा। परमेश्वर कबीर जी तो अन्तर्यामी हैं तथा आत्मा के आधार व आत्मा के वास्तविक पिता हैं, अपनी प्यारी आत्माओं को ढूंढते रहते हैं। कुछ समय के ऊपरान्त जिन्दा फकीर रूप में कबीर जी ने उसी बेई नदी के किनारे पहुँच कर श्री नानक जी को राम-राम कहा। उस समय श्री नानक जी कपड़े उतार कर स्नान के लिए तैयार थे। जिन्दा महात्मा केवल श्री

नानक जी को दिखाई दे रहे थे अन्य को नहीं। श्री नानक जी से वार्ता करने लगे। कबीर जी ने कहा कि आप मेरी बात पर विश्वास करो। एक पूर्ण परमात्मा है तथा उसका सतलोक स्थान है जहाँ की भक्ति करने से जीव सदा के लिए जन्म-मरण से छूट सकता है। उस स्थान तथा उस परमात्मा की प्राप्ति की साधना का केवल मुझे ही पता है अन्य को नहीं तथा गीता अध्याय न. 18 के श्लोक न. 62, अध्याय 15 श्लोक 4 में भी उस परमात्मा तथा स्थान के विषय में वर्णन है।

पूर्ण परमात्मा गुप्त है उसकी शरण में जाने से उसी की कृपा से तू (शाश्वतम्) अविनाशी अर्थात् सत्य (स्थानम्) लोक को प्राप्त होगा। गीता ज्ञान दाता प्रभु भी कह रहा है कि मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर नारायण की शरण में हूँ। श्री नानक जी ने कहा कि मैं आपकी एक परीक्षा लेना चाहता हूँ। मैं इस दरिया में छुपूँगा और आप मुझे ढूंढ़ना। यदि आप मुझे ढूंढ दोगे तो मैं आपकी बात पर विश्वास कर लूँगा। यह कह कर श्री नानक जी ने बेई नदी में डुबकी लगाई। जिन्दा फकीर (कबीर पूर्ण परमेश्वर) भी श्री नानक देव जी के साथ दरिया में प्रवेश हो गए। श्री नानक जी को अन्तर्ध्यान करके जिधर से पानी आ रहा था उस ओर लगभग तीन किलो मीटर दूर ले गए।

(प्रमाण श्री गुरु ग्रन्थ साहेब सीरी रागु महला पहला, घर 4 पृष्ठ 25) -

तू दरीया दाना बीना, मैं मछली कैसे अन्त लहा।
जह-जह देखा तह-तह तू है, तुझसे निकस फूट मरा।
न जाना मेऊ न जाना जाली। जा दुःख लागै ता तुझै समाली।1।रहाऊ।।

नानक जी ने कहा कि इस संसार रूपी समुन्द्र में मैं मछली समान जीव, आपने कैसे ढूंढ लिया? हे परमेश्वर! आप तो दरीया के अंदर सूक्ष्म से भी सूक्ष्म वस्तु को जानने वाले हो। मैं इस दरिया में छुपा था। मुझे तो जाल डालने वाले(जाली) ने भी नहीं जाना तथा गोताखोर (मेऊ) ने भी नहीं जाना अर्थात् नहीं जान सका। आप ने मुझे खोज लिया। अब मुझे ज्ञान हो गया है कि जब से आप के सतलोक से निकल कर अर्थात् आप से बिछुड़ कर आए हैं तब से कष्ट पर कष्ट उठा रहा हूँ। जब दुःख आता है तो आपको ही याद करता हूँ, मेरे कष्टों का निवारण आप ही करते हो? (उपरोक्त वार्ता बाद में काशी में प्रभु के दर्शन करके हुई थी)।

तब नानक जी ने कहा कि अब मैं आपकी सर्व वार्ता सुनने को तैयार हूँ।

नोट :- यही प्रमाण पुस्तक ''प्राण संगली'' भाग-1 पृष्ठ 15 पर अध्याय ''जीवन चरित्र'' में भी लिखा है कि सन् 1554 में श्री नानक जी प्रतिदिन की तरह नौकर को साथ लेकर सुलतान पुर शहर के पास बेई नदी में प्रातः स्नान के लिए गए तो वहां उनकी भेंट एक साधु से हुई। उस फकीर के साथ नानक जी बेई नदी में प्रवेश कर गए। तीन दिन बाद दिखाई दिए। कृप्या प्रमाण के लिए पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 121 पर।

कबीर परमेश्वर ने वही सृष्टी रचना पुनर् सुनाई तथा कहा कि मैं पूर्ण परमात्मा हूँ मेरा स्थान सच्चखण्ड (सत्यलोक) है। आप मेरी आत्मा हो। काल (ब्रह्म) आप सर्व आत्माओं को भ्रमित ज्ञान से विचलित करता है तथा नाना प्रकार

से प्राणियों के शरीर में बहुत परेशान कर रहा है। मैं आपको सच्चानाम (सत्यनाम/वास्तविक मंत्र जाप) दूँगा जो किसी शास्त्र में नहीं है। जिसे काल (ब्रह्म) ने गुप्त कर रखा है। श्री नानक जी ने कहा कि मैं अपनी आँखों अकाल पुरूष तथा सच्चखण्ड को देखूं तब आपकी बात को सत्य मानूं। तब कबीर साहेब जी पुण्यात्मा श्री नानक जी को सत्यलोक ले गए। स्वप्रकाशित सच्च खण्ड में श्री नानक जी ने देखा कि एक असीम तेजोमय मानव सदृश शरीर युक्त प्रभु तख्त पर बैठे थे। यह प्रमाण ''भाई बाले वाली जन्म साखी'' में ''आगे साखी सच्चखण्ड दी चली'' में पंजाबी भाषा वाली में पृष्ठ 275-276 पर लिखा है कि ''श्री नानक साहेब जी ने बताया कि सतलोक में प्रकाश ही प्रकाश है उस प्रकाश में निरंकार परमेश्वर तख्त पर बैठा है। उसने कहा है कि नानक जी तुझे सतनाम का प्रकाश करने को भेजा वह पूरा करो। श्री नानक साहेब जी ने कहा कि जहां-२ आप की आज्ञा होवेगी। वहां-२ सतनाम का प्रकाश करूंगा, और आप की रजा में रह कर वहीं-वहीं सतनाम का प्रकाश किया है। भावार्थ है कि श्री नानक जी को परमेश्वर कबीर जी ने सतनाम सार्वजनिक करने से मना किया था। कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 141 पर। वही परमेश्वर सच्चखण्ड में विराजमान अपने ही दूसरे स्वरूप कबीर साहेब जिन्दा महात्मा के रूप पर चंवर करने लगे। तब श्री नानक जी ने सोचा कि अकाल मूर्त तो यह रब है जो गद्दी पर बैठा है। कबीर तो यहाँ का सेवक होगा। उसी समय जिन्दा रूप में परमेश्वर कबीर साहेब उस गद्दी पर विराजमान हो गए तथा जो तेजोमय शरीर युक्त प्रभु का दूसरा रूप था वह खड़ा होकर तख्त पर बैठे जिन्दा वाले रूप पर चंवर करने लगा। फिर वह तेजोमय रूप नीचे से गये जिन्दा (कबीर) रूप में समा गया तथा गद्दी पर अकेले कबीर परमेश्वर जिन्दा रूप में बैठे थे और चंवर अपने आप ढुरने लगा।

तब नानक जी ने कहा कि वाहे गुरु, सत्यनाम से प्राप्ति तेरी। इस प्रक्रिया में तीन दिन लग गए। नानक जी की आत्मा को साहेब कबीर जी ने वापस शरीर में प्रवेश कर दिया। तीसरे दिन श्री नानक जी होश में आए। उधर श्री जयराम जी ने (जो श्री नानक जी का बहनोई था) श्री नानक जी को दरिया में डूबा जान कर दूर-२ तक गोताखोरों से तथा जाल डलवा कर खोज करवाई। परन्तु कोशिश निष्फल रही और मान लिया कि श्री नानक जी दरिया के अथाह वेग में बह कर मिट्टी के नीचे दब गए। तीसरे दिन जब नानक जी उसी नदी के किनारे सुबह-सुबह दिखाई दिए तो बहुत से व्यक्ति एकत्रित हो गए, बहन नानकी तथा बहनोई श्री जयराम भी दौड़े गए, खुशी का ठिकाना नहीं रहा तथा घर ले आए।

श्री नानक जी अपनी नौकरी पर चले गए। मोदी खाने का दरवाजा खोल दिया तथा कहा जिसको जितना चाहिए, ले जाओ। पूरा खजाना लुटा कर शमशान घाट पर बैठ गए। जब नवाब को पता चला कि श्री नानक खजाना समाप्त करके शमशान घाट पर बैठा है। तब नवाब ने श्री जयराम की उपस्थिति में खजाने का हिसाब करवाया तो सात सौ साठ रूपये अधिक मिले। नवाब ने क्षमा याचना की

तथा कहा कि नानक जी आप सात सौ साठ रूपये जो आपके सरकार की ओर अधिक हैं ले लो तथा फिर से नौकरी पर आ जाओ। तब श्री नानक जी ने कहा कि अब सच्ची सरकार की नौकरी करूँगा। उस पूर्ण परमात्मा के आदेशानुसार अपना जीवन सफल करूँगा। वह पूर्ण परमात्मा है जो मुझे बेई नदी पर मिला था।

नवाब ने पूछा ''वह पूर्ण परमात्मा कहाँ रहता है तथा यह आदेश आपको कब हुआ?''

श्री नानक जी ने कहा वह सच्चखण्ड में रहता है। बेई नदी के किनारे से मुझे स्वयं आकर वही पूर्ण परमात्मा सच्चखण्ड (सत्यलोक) लेकर गया था। वह इस पृथ्वी पर भी आकार में आया हुआ है। उसकी खोज करके अपना आत्म कल्याण करवाऊँगा। उस दिन के बाद श्री नानक जी घर त्याग कर पूर्ण परमात्मा की खोज पृथ्वी पर करने के लिए चल पड़े। श्री नानक जी सतनाम तथा वाहे गुरु की रटना लगाते हुए बनारस पहुँचे। इसीलिए अब पवित्र सिक्ख समाज के श्रद्धालु केवल सत्यनाम श्री वाहे गुरु कहते रहते हैं। सत्यनाम क्या है तथा वाहे गुरु कौन है यह मालूम नहीं है। जबकि सत्यनाम (सच्चानाम) गुरु ग्रन्थ साहेब में लिखा है, जो अन्य मंत्र है।

जैसा की कबीर साहेब ने बताया था कि मैं बनारस (काशी) में रहता हूँ। धाणक (जुलाहे) का कार्य करता हूँ। मेरे गुरु जी काशी में सर्व प्रसिद्ध पंडित रामानन्द जी हैं। इस बात को आधार रखकर श्री नानक जी ने संसार से उदास होकर पहली उदासी यात्रा बनारस (काशी) के लिए प्रारम्भ की (प्रमाण के लिए देखें ''जीवन दस गुरु साहिब'' (लेखक :- सोढ़ी तेजा सिंह जी, प्रकाशक=चतर सिंघ, जीवन सिंघ) पृष्ठ न. 50 पर।)।

परमेश्वर कबीर साहेब जी स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में प्रतिदिन जाया करते थे। जिस दिन श्री नानक जी ने काशी पहुँचना था उससे पहले दिन कबीर साहेब ने अपने पूज्य गुरुदेव रामानन्द जी से कहा कि स्वामी जी कल मैं आश्रम में नहीं आ पाऊँगा। क्योंकि कपड़ा बुनने का कार्य अधिक है। कल सारा दिन लगा कर कार्य निपटा कर फिर आपके दर्शन करने आऊँगा।

काशी (बनारस) में जाकर श्री नानक जी ने पूछा कोई रामानन्द जी महाराज है ? सब ने कहा वे आज के दिन सर्व ज्ञान सम्पन्न ऋषि हैं। उनका आश्रम पंचगंगा घाट के पास है। श्री नानक जी ने श्री रामानन्द जी से वार्ता की तथा सच्चखण्ड का वर्णन शुरू किया। तब श्री रामानन्द स्वामी ने कहा यह पहले मुझे किसी शास्त्र में नहीं मिला परन्तु अब मैं आँखों देख चुका हूँ, क्योंकि वही परमेश्वर स्वयं कबीर नाम से आया हुआ है तथा मर्यादा बनाए रखने के लिए मुझे गुरु कहता है परन्तु मेरे लिए प्राण प्रिय प्रभु है। पूर्ण विवरण चाहिए तो मेरे व्यवहारिक शिष्य परन्तु वास्तविक गुरु कबीर से पूछो, वही आपकी शंका का निवारण कर सकता है।

श्री नानक जी ने पूछा कि कहाँ हैं (परमेश्वर स्वरूप) कबीर साहेब जी ? मुझे शीघ्र मिलवा दो। तब श्री रामानन्द जी ने एक सेवक को श्री नानक जी के साथ कबीर साहेब जी की झोपड़ी पर भेजा। उस सेवक से भी सच्चखण्ड के विषय में वार्ता करते हुए श्री नानक जी चले तो उस कबीर साहेब के सेवक ने भी सच्चखण्ड

व सृष्टी रचना जो परमेश्वर कबीर साहेब जी से सुन रखी थी सुनाई। तब श्री नानक जी को आश्चर्य हुआ कि मेरे से तो कबीर साहेब के चाकर (सेवक) भी अधिक ज्ञान रखते हैं। इसीलिए गुरुग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर अपनी अमृतवाणी महला 1 में श्री नानक जी ने कहा है कि -

"हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदीगार।
नानक बुगोयद जनु तुरा, तेरे चाकरां पाखाक"

जिसका भावार्थ है कि हे कबीर परमेश्वर जी मैं नानक कह रहा हूँ कि मेरा उद्धार हो गया, मैं तो आपके सेवकों के चरणों की धूर तुल्य हूँ।

जब नानक जी ने देखा यह धाणक (जुलाहा) वही परमेश्वर है जिसके दर्शन सत्यलोक (सच्चखण्ड) में किए तथा बेई नदी पर हुए थे। वहाँ यह जिन्दा महात्मा के वेश में थे यहाँ धाणक (जुलाहे) के वेश में हैं। यह स्थान अनुसार अपना वेश बदल लेते हैं परन्तु स्वरूप (चेहरा) तो वही है। वही मोहिनी सूरत जो सच्चखण्ड में भी विराजमान थी। वही करतार आज धाणक रूप में बैठा है। श्री नानक जी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा उनकी आँखों में आँसू भर गए।

तब श्री नानक जी ने अपने सच्चे स्वामी अकाल मूर्ति को पाकर उनके चरणों में गिरकर सत्यनाम (सच्चानाम) प्राप्त किया। तब शान्ति पाई तथा अपने प्रभु की महिमा देश विदेश में गाई।

पहले श्री नानकदेव जी एक ओंकार(ओम) मन्त्र का जाप करते थे तथा उसी को सत मान कर कहा करते थे एक ओंकार। उन्हें बेई नदी पर कबीर साहेब ने दर्शन दे कर सतलोक(सच्चखण्ड) दिखाया तथा अपने सतपुरुष रूप को दिखाया। जब सतनाम का जाप दिया तब नानक जी की काल लोक से मुक्ति हुई। नानक जी ने कहा कि :

इसी का प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहिब के राग ''सिरी'' महला 1 पृष्ठ नं. 24 पर शब्द नं. 29(शब्द)

एक सुआन दुई सुआनी नाल, भलके भौंकही सदा बिआल
कुड़ छुरा मुठा मुरदार, धाणक रूप रहा करतार।।1।।
मै पति की पंदि न करनी की कार। उह बिगड़ै रूप रहा बिकराल।।
तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस एहो आधार।
मुख निंदा आखा दिन रात, पर घर जोही नीच मनाति।।
काम क्रोध तन वसह चंडाल, धाणक रूप रहा करतार।।2।।
फाही सुरत मलूकी वेस, उह ठगवाड़ा ठगी देस।।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।3।।
मैं कीता न जाता हरामखोर, उह किआ मुह देसा दुष्ट चोर।
नानक नीच कह बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।4।।

इसमें स्पष्ट लिखा है कि एक(मन रूपी) कुत्ता तथा इसके साथ दो (आशा-तृष्णा रूपी) कुतिया अनावश्यक भौंकती (उमंग उठती) रहती हैं तथा सदा नई-नई आशाएँ उत्पन्न (ब्याती हैं) होती हैं। इनको मारने का तरीका(जो सत्यनाम तथा तत्व ज्ञान बिना) झुठा (कुड़) साधन (मुठ मुरदार) था। मुझे धाणक के रूप में हक्का कबीर (सत

कबीर) परमात्मा मिला। उन्होनें मुझे वास्तविक उपासना बताई।

नानक जी ने कहा कि उस परमेश्वर (कबीर साहेब) की साधना बिना न तो पति (साख) रहनी थी और न ही कोई अच्छी करनी (भक्ति की कमाई) बन रही थी। जिससे काल का भयंकर रूप जो अब महसूस हुआ है उससे केवल कबीर साहेब तेरा एक (सत्यनाम) नाम पूर्ण संसार को पार (काल लोक से निकाल सकता है) कर सकता है। मुझे (नानक जी कहते हैं) भी एही एक तेरे नाम की आश है व यही नाम मेरा आधार है। पहले अनजाने में बहुत निंदा भी की होगी क्योंकि काम क्रोध इस तन में चंडाल रहते हैं।

मुझे धाणक (जुलाहे का कार्य करने वाले कबीर साहेब) रूपी भगवान ने आकर सतमार्ग बताया तथा काल से छुटवाया। जिसकी सुरति(स्वरूप) बहुत प्यारी है मन को फंसाने वाली अर्थात् मन मोहिनी है तथा सुन्दर वेश-भूषा में(जिन्दा रूप में) मुझे मिले उसको कोई नहीं पहचान सकता। जिसने काल को भी ठग लिया अर्थात् दिखाई देता है धाणक (जुलाहा) फिर बन गया जिन्दा। काल भगवान भी भ्रम में पड़ गया भगवान (पूर्णब्रह्म) नहीं हो सकता। इसी प्रकार परमेश्वर कबीर साहेब अपना वास्तविक अस्तित्व छुपा कर एक सेवक बन कर आते हैं। काल या आम व्यक्ति पहचान नहीं सकता। इसलिए नानक जी ने उसे प्यार में ठगवाड़ा कहा है और साथ में कहा है कि वह धाणक (जुलाहा कबीर) बहुत समझदार है। दिखाई देता है कुछ परन्तु है बहुत महिमा (बहुता भार) वाला जो धाणक जुलाहा रूप में स्वयं परमात्मा पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) आया है। प्रत्येक जीव को आधिनी समझाने के लिए अपनी भूल को स्वीकार करते हुए कि मैंने(नानक जी ने) पूर्णब्रह्म के साथ बहस(वाद-विवाद) की तथा उन्होनें (कबीर साहेब ने) अपने आपको भी (एक लीला करके) सेवक रूप में दर्शन दे कर तथा (नानक जी को) मुझको स्वामी नाम से सम्बोधित किया। इसलिए उनकी महानता तथा अपनी नादानी का पश्चाताप करते हुए श्री नानक जी ने कहा कि मैं(नानक जी) कुछ करने कराने योग्य नहीं था। फिर भी अपनी साधना को उत्तम मान कर भगवान से सम्मुख हुआ (ज्ञान संवाद किया)। मेरे जैसा नीच दुष्ट, हरामखोर कौन हो सकता है जो अपने मालिक पूर्ण परमात्मा धाणक रूप(जुलाहा रूप में आए करतार कबीर साहेब) को नहीं पहचान पाया? श्री नानक जी कहते हैं कि यह सब मैं पूर्ण सोच समझ से कह रहा हूँ कि परमात्मा यही धाणक (जुलाहा कबीर) रूप में है।

भावार्थ :- श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि यह फांसने वाली अर्थात् मनमोहिनी शक्ल सूरत में तथा जिस देश में जाता है वैसा ही वेश बना लेता है, जैसे जिंदा महात्मा रूप में बेई नदी पर मिले, सतलोक में पूर्ण परमात्मा वाले वेश में तथा यहाँ उत्तर प्रदेश में धाणक(जुलाहे) रूप में स्वयं करतार (पूर्ण प्रभु) विराजमान है। आपसी वार्ता के दौरान हुई नोक-झोंक को याद करके क्षमा याचना करते हुए अधिक भाव से कह रहे हैं कि मैं अपने सत्भाव से कह रहा हूँ कि यही धाणक(जुलाहे) रूप में सत्पुरुष अर्थात् अकाल मूर्त ही है।

दूसरा प्रमाण :- नीचे प्रमाण है जिसमें कबीर परमेश्वर का नाम स्पष्ट लिखा है। श्री गु.ग्र.पृष्ठ नं. 721 राग तिलंग महला पहला में है। और अधिक प्रमाण के

लिए प्रस्तुत है ''राग तिलंग महला 1'' पंजाबी गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार।
<u>हक्का कबीर</u> करीम तू बेएब परवरदगार।।
दूनियाँ मुकामे फानी तहकीक दिलदानी।
मम सर मुई अजराईल गिरफ्त दिल हेच न दानी।।
जन पिसर पदर बिरादराँ कस नेस्त दस्तं गीर।
आखिर बयफ्तम कस नदारद चूँ शब्द तकबीर।।
शबरोज गशतम दरहवा करदेम बदी ख्याल।
गाहे न नेकी कार करदम मम ई चिनी अहवाल।।
बदबख्त हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक।
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकरा पाखाक।।

सरलार्थ :–– (कुन करतार) हे शब्द स्वरूपी कर्ता अर्थात् शब्द से सर्व सृष्टी के रचनहार (गोश) निर्गुणी संत रूप में आए (करीम) दयालु (हक्का कबीर) सत कबीर (तू) आप (बेएब परवरदिगार) निर्विकार परमेश्वर हैं। (पेश तोदर) आपके समक्ष अर्थात् आप के द्वार पर (तहकीक) पूरी तरह जान कर (यक अर्ज गुफतम) एक हृदय से विशेष प्रार्थना है कि (दिलदानी) हे महबूब (दुनियां मुकामे) यह संसार रूपी ठिकाना (फानी) नाशवान है (मम सर मूई) जीव के शरीर त्यागने के पश्चात् (अजराईल) अजराईल नामक फरिश्ता यमदूत (गिरफ्त दिल हेच न दानी) बेरहमी के साथ पकड़ कर ले जाता है। उस समय (कस) कोई (दस्तं गीर) साथी (जन) व्यक्ति जैसे (पिसर) बेटा (पदर) पिता (बिरादरां) भाई चारा (नेस्तं) साथ नहीं देता। (आखिर बेफ्तम) अन्त में सर्व उपाय (तकबीर) फर्ज अर्थात् (कस) कोई क्रिया काम नहीं आती (नदारद चूं शब्द) तथा आवाज भी बंद हो जाती है (शबरोज) प्रतिदिन (गशतम) गसत की तरह न रूकने वाली (दर हवा) चलती हुई वायु की तरह (बदी ख्याल) बुरे विचार (करदेम) करते रहते हैं (नेकी कार करदम) शुभ कर्म करने का (मम ई चिनी) मुझे कोई (अहवाल) जरीया अर्थात् साधन (गाहे न) नहीं मिला (बदबख्त) ऐसे बुरे समय में (हम चु) हमारे जैसे (बखील) नादान (गाफील) ला परवाह (बेनजर बेबाक) भक्ति और भगवान का वास्तविक ज्ञान न होने के कारण ज्ञान नेत्र हीन था तथा ऊवा–बाई का ज्ञान कहता था। (नानक बुगोयद) नानक जी कह रहे हैं कि हे कबीर परमेश्वर आप की कृपा से (तेरे चाकरां पाखाक) आपके सेवकों के चरणों की धूर डूबता हुआ (जनु तूरा) बंदा पार हो गया।

<u>केवल हिन्दी अनुवाद</u> :-- हे शब्द स्वरूपी राम अर्थात् शब्द से सर्व सृष्टी रचनहार दयालु <u>''सतकबीर''</u> आप निर्विकार परमात्मा हैं। आप के समक्ष एक हृदय से विनती है कि यह पूरी तरह जान लिया है हे महबूब यह संसार रूपी ठिकाना नाशवान है। हे दाता! इस जीव के मरने पर अजराईल नामक यम दूत बेरहमी से पकड़ कर ले जाता है कोई साथी जन जैसे बेटा पिता भाईचारा साथ नहीं देता। अन्त में सभी उपाय और फर्ज कोई क्रिया काम नहीं आता। प्रतिदिन गश्त की तरह न रूकने वाली चलती हुई वायु की तरह बुरे विचार करते रहते हैं। शुभ कर्म करने का मुझे कोई जरिया या साधन नहीं मिला। ऐसे बुरे समय कलियुग में हमारे जैसे नादान

लापरवाह, सत मार्ग का ज्ञान न होने से ज्ञान नेत्र हीन था तथा लोकवेद के आधार से अनाप-सनाप ज्ञान कहता रहता था। नानक जी कहते हैं कि मैं आपके सेवकों के चरणों की धूर डूबता हुआ बन्दा नानक पार हो गया।

भावार्थ - श्री गुरु नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे हक्का कबीर (सत् कबीर)! आप निर्विकार दयालु परमेश्वर हो। आप से मेरी एक अर्ज है कि मैं तो सत्यज्ञान वाली नजर रहित तथा आपके सत्यज्ञान के सामने तो निर्उत्तर अर्थात् जुबान रहित हो गया हूँ। हे कुल मालिक! मैं तो आपके दासों के चरणों की धूल हूँ, मुझे शरण में रखना।

इसके पश्चात् जब श्री नानक जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि पूर्ण परमात्मा तो गीता ज्ञान दाता प्रभु से अन्य ही है। वही पूजा के योग्य है। पूर्ण परमात्मा की भक्ति तथा ज्ञान के विषय में गीता ज्ञान दाता प्रभु भी अनभिज्ञ है। परमेश्वर स्वयं ही तत्वदर्शी संत रूप से प्रकट होकर तत्वज्ञान को जन-जन को सुनाता है। जिस ज्ञान को वेद भी नहीं जानते वह तत्वज्ञान केवल पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) ही स्वयं आकर ज्ञान कराता है। श्री नानक जी का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में होने के कारण पवित्र गीता जी के ज्ञान पर पूर्ण रूपेण आश्रित थे। फिर स्वयं प्रत्येक हिन्दू श्रद्धालु तथा ब्राह्मण गुरुओं, आचार्यों से गीता जी के सात श्लोकों के विषय में पूछते थे। सर्व गुरुजन निरुतर हो जाते थे, परन्तु श्री नानक जी के विरोधी हो जाते थे। उस समय शिक्षा का अभाव था। उन झूठे गुरुओं की दाल गलती रही। गुरुजन जनता को यह कह कर श्री नानक जी के विरुद्ध भड़काते थे कि श्री नानक झूठ कह रहा है। गीता जी में ऐसा नहीं लिखा है कि श्री कृष्ण जी से ऊपर कोई शक्ति है। कबीर प्रभु से तत्वज्ञान से परिचित होकर श्री नानक जी पवित्र मुसलमान धर्म के श्रद्धालुओं तथा काजी व मुल्लाओं तथा पीरों (गुरुओं) से पूछा करते थे कि पवित्र कुर्आन शरीफ की सूरत फुर्कानि स. 25 आयत 19, 21, 52 से 58, 59 में कुर्आन शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, सर्व पाप (गुनाहों) का नाश (क्षमा) करने वाला जिसने छः दिन में सृष्टी रचना की तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, जो सर्व के पूजा(इबादिह कबीरा) योग्य है, वह कबीर परमेश्वर है। काफिर लोग (अल्लाह कबीर) कबीर प्रभु को समर्थ नहीं मानते, आप उनकी बातों में मत आना। मेरे द्वारा दिए इस कुर्आन शरीफ के ज्ञान पर विश्वास रखकर उनके साथ ज्ञान चर्चा रूपी संघर्ष करना। उस अल्लाहु अकबिर् अर्थात् अल्लाहु अकबर (कबीर प्रभु) की भक्ति तथा प्राप्ति के विषय में मैं (कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता प्रभु) नहीं जानता। उसके विषय में किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो। पवित्र मुसलमान धर्म के मार्ग दर्शकों से पूछा कि यह स्पष्ट है कि श्री कुर्आन शरीफ के ज्ञान दाता प्रभु (जिसे हजरत मुहम्मद जी अपना अल्लाह मानते थे) के अतिरिक्त कोई और समर्थ परमेश्वर है जिसने सारे संसार की रचना की है। वही पूजा के योग्य है। कुर्आन शरीफ का ज्ञान दाता प्रभु अपनी साधना के विषय में तो बता चुका है कि पाँच समय निमाज करो, रोजे रखो, बंग दो। फिर वही प्रभु किसी अन्य समर्थ प्रभु की पूजा के लिए कह रहा है। क्या वह

बाखबर(तत्वदर्शी) संत आप किसी को मिला है ? यदि मिला होता तो यह साधना नहीं करते। इसलिए आपकी पूजा वास्तविक नहीं है। क्योंकि पूजा के योग्य पूर्ण मोक्ष दायक पाप विनाशक तो केवल कबीर नामक प्रभु है। आप प्रभु को निराकार कहते हो। कुर्आन शरीफ में सूरत फुर्कानि स. 25 आयत 58-59 में स्पष्ट किया है कि कबीर अल्लाह (कबीर प्रभु) ने छः दिन में सृष्टी रची तथा ऊपर तख्त पर जा बैठा। इससे तो स्पष्ट हुआ कि कबीर नामक अल्लाह साकार है। क्योंकि निराकार के विषय में एक स्थान पर बैठना नहीं कहा जाता। इसी की पुष्टि 'पवित्र बाईबल' उत्पत्ति विषय में कहा है कि प्रभु ने छः दिन में सृष्टी की रचना की तथा सातवें दिन विश्राम किया अर्थात् आकाश में जा बैठा तथा प्रभु ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया। इससे भी स्वसिद्ध है कि परमेश्वर का शरीर भी मनुष्य जैसा है अर्थात् प्रभु साकार है।

आपकी कुर्आन शरीफ सही है परन्तु आप न समझ कर अपना तथा अपने अनुयाईयों का जीवन व्यर्थ कर रहे हो। आओ आप को अल्लाह कबीर सशरीर दिखाता हूँ। बहुत से श्रद्धालु श्री नानक जी के साथ पूज्य कबीर परमेश्वर की झोंपड़ी के पास गए। श्री नानक जी ने कहा कि यही है वह अल्लाहु अकबर, मान जाओ मेरी बात। परन्तु भ्रमित ज्ञान में रंगे श्रद्धालुओं को विश्वास नहीं हुआ। मुल्ला, काजी तथा पीरों ने कहा कि नानक जी झूठ बोल रहे हैं, कुर्आन शरीफ में उपरोक्त विवरण कहीं नहीं लिखा। क्योंकि सर्व समाज अशिक्षित था, वही अज्ञान अंधेरा अभी तक छाया रहा, अब तत्वज्ञान रूपी सूर्य उदय हो चुका है। गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश :-

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृ. 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृ. 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृ. 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृ. 439)

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब (प्रभु) एक ही है तथा मेरे गुरु जी ने मुझे उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका करता है। शास्त्र विरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मृत्यु व कर्मफल की आग में जलते देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भाग कर मैंने गुरु जी के चरणों में शरण ली।

बलिहारी गुरु आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।
आपीनै आप साजिओ आपीनै रचिओ नाउ।

दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।
तूं जाणोइ सभसै दे लैसहि जिंद कवाउ करि आसणु डिठो चाउ। (पृ. 463)

भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा जिंदा का रूप बनाकर बेई नदी पर आए अर्थात् जिंदा कहलाए तथा स्वयं ही दो दुनियाँ ऊपर(सतलोक आदि) तथा नीचे(ब्रह्म व परब्रह्म के लोक) को रचकर ऊपर सत्यलोक में आकार में आसन पर बैठ कर चाव के साथ अपने द्वारा रची दुनियाँ को देख रहे हो तथा आप ही स्वयम्भू अर्थात् माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, स्वयं प्रकट होते हो। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मं. 8 में है कि कविर् मनीषि स्वयम्भूः परिभू व्यवधाता, भावार्थ है कि कबीर परमात्मा सर्वज्ञ है (मनीषि का अर्थ सर्वज्ञ होता है) तथा अपने आप प्रकट होता है। वह सनातन (परिभू) अर्थात् सर्वप्रथम वाला प्रभु है। वह सर्व ब्रह्मण्डों का (व्यवधाता)अर्थात् भिन्न-भिन्न सर्व लोकों का रचनहार है।

एहू जीउ बहुते जनम भरमिआ, ता सतिगुरु शबद सुणाइया।। (पृ. 465)

भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा यह जीव बहुत समय से जन्म तथा मृत्यु के चक्र में भ्रमता रहा अब पूर्ण सतगुरु ने वास्तविक नाम प्रदान किया।

श्री नानक जी के पूर्व जन्म - सतयुग में राजा अम्ब्रीष, त्रेतायुग में राजा जनक हुए थे और फिर नानक जी हुए तथा अन्य योनियों के जन्मों की तो गिनती ही नहीं है। श्री नानक देव जी के पूर्व जन्मों का विवरण ''भाई बाले वाली जन्म साखी'' श्री नानक देव जी की के पृष्ठ 518 पर ''अजीते रणधावे दी साखी'' के श्लोक 6 में लिखा है।

श्लोक :- सतगुरु गुरु मेहरबान, त्रेतै जनम बदेह।
हरिचन्द द्वापर गुरु, कलजुग नानक देव।।

इस निम्न लेख में भी प्रमाणित है कि कबीर साहेब तथा नानक जी की वार्ता हुई है। यह भी प्रमाण है कि राजा जनक विदेही भी श्री नानक जी थे तथा श्री सुखदेव जी भी राजा जनक का शिष्य हुआ था।

पराण संगली (पंजाबी लीपी में) संपादक : डॉ. जगजीत सिह खानपुरी पब्लिकेशन ब्यूरो पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला। प्रकाशित सन् 1961 के पृष्ठ न. 399 से सहाभार

गोष्टी बाबे नानक और कबीर जी की

(कबीर जी)उह गुरु जी चरनि लागि करवै, बीनती को पुन करीअहु देवा।
अगम अपार अभै पद कहिए, सो पाईए कित सेवा।।
मुहि समझाई कहहु गुरु पूरे, भिन्न–भिन्न अर्थ दिखावहु।
जिह बिधि परम अभै पद पाईये, सा विधि मोहि बतावहु।
मन बच करम कृपा करि दीजै, दीजै शब्द उचारं।।
कहै कबीर सुनहु गुरु नानक, मैं दीजै शब्द बीचारं।।1।।
(नानक जी)नानक कह सुनों कबीर जी, सिखिया एक हमारी।
तन मन जीव ठौर कह ऐकै, सुंन लागवहु तारी।।

करम अकरम दोऊँ तियागह, सहज कला विधि खेलहु।
जागत कला रहु तुम निसदिन, सतगुरु कल मन मेलहु।।
तजि माया र्निमायल होवहु, मन के तजहु विकारा।
नानक कह सुनहु कबीर जी, इह विधि मिलहु अपारा।।2।।

(कबीर जी)गुरु जी माया सबल निरबल जन तेरा, क्युं अस्थिर मन होई।
काम क्रोध व्यापे मोकु, निस दिन सुरति निरत बुध खोई।।
मन राखऊ तवु पवण सिधारे, पवण राख मन जाही।
मन तन पवण जीवैं होई एकै, सा विधि देहु बुझाई।।3।।

(नानक जी) दृढ़ करि आसन बैठहु वाले, उनमनि ध्यान लगावहु।
अलप–अहार खण्ड कर निन्द्रा, काम क्रोध उजावहु।।
नौव दर पकड़ि सहज घट राखो, सुरति निरति रस उपजै।
गुरु प्रसादी जुगति जीवु राखहु, इत मंथत साच निपजै।।4।।

(कबीर जी) (कबीर कवन सुखम कवन स्थूल कवन डाल कवन है मूल)
गुरु जी किया लै बैसऊ, किआ लेहहु उदासी।
कवन अग्नि की धुणी तापऊ कवन मड़ी महि बासी।।5।।

(नानक जी) (नानक ब्रह्म सुखम सुंन असथुल, मन है पवन डाल है मूल)
करम लै सोवहु सुरति लै जागहु, ब्रह्म अग्नि ले तापहु।
निस बासर तुम खोज खुजावहु, सुंन मण्डल ले डूम बापहु।।6।।
(सतगुरु कहै सुनहे रे चेला, ईह लछन परकासे)
(गुरु प्रसादि सरब मैं पेखहु, सुंन मण्डल करि वासे)

(कबीर जी) सुआमी जी जाई को कहै, ना जाई वहाँ क्या अचरज होई जाई।
मन भै चक्र रहऊ मन पूरे, सा विध देहु बताई।।7।।
(अपना अनभऊ कहऊ गुरु जी, परम ज्योति किऊं पाई।)

(नानक जी) ससी अर चड़त देख तुम लागे, ऊहाँ कीटी भिरणा होता।
नानक कह सुनहु कबीरा, इत बिध मिल परम तत जोता।।8।।

(कबीर जी) धन धन धन गुरु नानक, जिन मोसो पतित उधारो।
निर्मल जल बतलाइया मो कऊ, राम मिलावन हारो।।9।।

(नानक जी) **जब हम भक्त भए सुखदेवा, जनक विदेह किया गुरुदेवा।**
कलि महि जुलाहा नाम कबीरा, ढूंड थे चित भईआ न थीरा।।
बहुत भांति कर सिमरन कीना, इहै मन चंचल तबहु न भिना।
जब करि ज्ञान भए उदासी, तब न काटि कालहि फांसी।।
जब हम हार परे सतिगुरु दुआरे, दे गुरु नाम दान लीए उधारे।।10।।

(कबीर जी) सतगुरु पुरुख सतिगुरु पाईया, सतिनाम लै रिदै बसाईआ।
जात कमीना जुलाहा अपराधि, गुरु कृपा ते भगति समाधी।।
मुक्ति भइआ गुरु सतिगुरु बचनी, गईया सु सहसा पीरा।
जुग नानक सतिगुरु जपीअ, कीट मुरीद कबीरा।।11।।

सुनि उपदेश सम्पूर्ण सतगुरु का, मन महि भया अनंद।
मुक्ति का दाता बाबा नानक, रिंचक रामानन्द।।12।।

ऊपर लिखी वाणी 'प्राण संगली' नामक पुस्तक से लिखी हैं। इस में आप जी देखेंगे कि परमेश्वर कबीर जी तथा बाबा नानक जी की गोष्ठि में वाणी संख्या 6 की प्रथम पंक्ति में श्री नानक जी ने कहा है कि ''नानक ब्रह्म सूक्ष्म, सुन्न अस्थूल मन है पवन डाल हैं मूल'' इस से यह प्रमाणित होता है कि परमेश्वर कबीर से वार्ता के समय तक श्री नानक देव जी को केवल ब्रह्म तक का ही ज्ञान था, पारब्रह्म का नहीं। जब बाबा जिंदा अर्थात् कबीर परमेश्वर जी के साथ बेई नदी से सच्चखण्ड जाने के पश्चात् उन्होंने पारब्रह्म शब्द प्रयोग किया है। इससे सिद्ध है कि सन् 1507 में श्री नानक जी जिस समय परमेश्वर कबीर जी से वार्ता कर रहे थे। पूर्ण ज्ञानी नहीं थे। जबकि कबीर परमेश्वर जी ने श्री धर्मदास जी को पारब्रह्म अर्थात् सतपुरूष का ज्ञान सन् 1440 को करा दिया था तथा सन् 1403 में महर्षि रामानन्द जी को सच्चखण्ड दिखा दिया था तथा सत्यपुरूष का ज्ञान करा दिया था तब स्वामी रामानन्द जी ने कहा था :-

दोहूं ठौर है एक तूं भया एक से दो। गरीबदास हम कारने आए हो मग जोय।।
बोलत रामानन्द जी सुन कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में तूं ही बोलणहार।।

इस से स्पष्ट हुआ कि श्री नानक जी के गुरु जी परमेश्वर कबीर जी थे। इस की पुष्टि सन्त गरीबदास जी (गांव-छुड़ानी, जिला-झज्जर) ने की है।

गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी मांहे कबीर हुआ।।

इसमें यह भी स्पष्ट है कि वाणी संख्या 9 तक दोहों में पूरी पंक्ति के अंतिम अक्षर मेल खाते हैं। परन्तु वाणी संख्या 10 की पाँच पंक्तियां तथा वाणी संख्या 11 की पहली दो पक्तियां चौपाई रूप में हैं तथा फिर दो पंक्तियां दोहा रूप में है तथा फिर वाणी संख्या 12 में केवल दो पंक्तियां हैं जो फिर दोहा रूप में है। इससे सिद्ध है कि वास्तविक वाणी को निकाला गया है जो वाणी कबीर साहेब जी के विषय में श्री नानक जी ने सतगुरु रूप में स्वीकार किया होगा। नहीं तो दोहों में चलती आ रही वाणी फिर चौपाईयों में नहीं लिखी जाती। फिर बाद में दोहों में लिखी है। यह सब जान-बूझ कर प्रमाण मिटाने के लिए किया है। वाणी संख्या 10 की पहली पंक्ति 'जब हम भक्त भए सुखदेवा, जनक विदेही किया गुरुदेवा' **स्पष्ट करती है कि श्री नानक जी कह रहे हैं कि मैं जनक रूप में था उस समय मेरा शिष्य (भक्त) श्री सुखदेव ऋषि हुए थे। यही प्रमाण भाई बाले वाली जन्म साखी पंजाबी वाली के पृष्ठ 518 पर भी है। इस वाणी संख्या 10 को नानक जी की ओर से कही मानी जानी चाहिए तो स्पष्ट है कि नानक जी कह रहे है कि मैं हार कर गुरू कबीर के चरणों में गिर गया उन्होंने नाम दान करके मेरा उद्धार किया। वास्तव में यह 10 नं. वाणी कही अन्य वाणी से है। यह पंक्ति भी परमेश्वर कबीर साहेब जी की ओर से वार्ता में लिख दिया है। क्योंकि परमेश्वर कबीर साहेब जी ने अपनी शक्ति से श्री नानक जी**

को पिछले जन्म की चेतना प्रदान की थी। तब नानक जी ने स्वीकार किया था कि वास्तव में मैं जनक था तथा उस समय सुखदेव मेरा भक्त हुआ था।

वाणी संख्या 11 में चार पंक्तियां हैं जबकि वाणी संख्या 10 में पाँच पंक्तियां लिखी हैं। वास्तव में प्रथम पंक्ति 'जब हम भक्त भए सुखदेवा ... ' **वाली में अन्य तीन पंक्तियां थी, जिनमें कबीर परमेश्वर को श्री नानक जी ने गुरु स्वीकार किया होगा। उन्हें जान बूझ कर निकाला गया लगता है।**

वाणी संख्या 1 व 2 में 6-6 पंक्तियाँ है, वाणी संख्या 3 व 4 में 4-4 पंक्तियाँ, वाणी संख्या 5 व 6 में 3-3 पंक्तियाँ है, वाणी संख्या 7 में 4 पंक्तियाँ हैं, वाणी संख्या 8 में 3 पंक्तियाँ है, वाणी संख्या 9 में 2 पंक्तियाँ है, वाणी संख्या 10 में 5 पंक्तियाँ हैं, वाणी संख्या 11 में 4 पंक्तियाँ है तथा वाणी संख्या 12 में 2 पंक्तियाँ है। यदि ये वाणी पूरी होती तो सर्व वाणियों (कलियों) में एक जैसी वाणी संख्या होती।

श्री नानक जी ने दोनों की वार्ता जो प्रभु कबीर जी से हुई थी, लिखी थी। परन्तु बाद में प्राण संगली तथा गुरु ग्रन्थ साहिब में उन वाणियों को छोड़ दिया गया जो कबीर परमेश्वर जी को श्री नानक जी का गुरुदेव सिद्ध करती थी। इसी का प्रमाण कृप्या निम्न देखें। दो शब्दों में प्रत्यक्ष प्रमाण है(श्री गुरू ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 1189, 929, 930 पर)।

आगे श्री गुरु ग्रन्थ पृष्ठ नं. 1189 राग बसंत महला 1

चंचल चित न पावै पारा, आवत जात न लागै बारा।
दुख घणों मरीअै करतारा, बिन प्रीतम के कटै न सारा।।1।।
सब उत्तम किस आखवु हीना, हरि भक्ति **सचनाम** पतिना(रहावु)।
औखद कर थाकी बहुतेरे, किव दुख चुकै बिन गुरु मेरे।।
बिन हर भक्ति दुःख घणोरे, दुख सुख दाते ठाकुर मेरे।।2।।
रोग वडो किंवु बांधवु धिरा, रोग बुझै से काटै पीरा।
मैं अवगुण मन माहि सरीरा, ढुडत खोजत गुरूि मेले बीरा।।3।।

नोट :-- यहाँ पर स्पष्ट है कि अक्षर कबीरा की जगह 'गुरु मेले बीरा' लिखा है। जबकि लिखना था 'ढुंडत खोजत गुरि मेले कबीरा'

गुरु का शब्द दास हर नावु, जिवै तू राखहि तिवै रहावु।
जग रोगी कह देखि दिखाऊ, हरि निमाईल निर्मल नावु।।4।।
घट में घर जो देख दिखावै, गुरु महली सो महलि बुलावै।
मन मैं मनुवा चित्त में चीता, अैसे हर के लोग अतीता।।5।।
हरख सोग ते रहैहि निरासा, अमृत चाख हरि नामि निवासा।।
आप पीछाणे रह लिव लागा, जनम जीति गुरुमति दुख भागा।।6।।
गुरु दिया सच अमृत पिवैऊ, सहज मखु जीवत ही जीवऊ।
अपणे करि राखहु गुरु भावै, तुमरो होई सु तुझहि समावै।।8।।
भोगी कऊ दुःख रोग बिआपै, घटि–घटि रवि रहिया प्रभु आपै।
सुख दुःख ही तै गुरु शब्द अतीता, नानक राम रमै हरि चीता।।9(4)।।

इस ऊपर के शब्द में प्रत्यक्ष प्रमाण है कि श्री नानक जी का कोई आकार रूप में गुरु

था जिसने सच्चनाम (सतनाम) दिया तथा उस गुरुदेव को ढूंडते-खोजते काशी में कबीर गुरु मिला तथा वह सतनाम प्राणियों को कर्म-कष्ट रहित करता है तथा हरदम गुरु के वचन में रह कर गुरुदेव द्वारा दिए सत्यनाम (सच्चनाम) का जाप करते रहना चाहिए।

राग रामकली महला 1 दखणी औंकार (गुरु ग्रन्थ पृष्ठ नं. 929-30)
औंकार ब्रह्मा उत्पति। औंकार किया जिन चित।।
औंकार सैल जुग भए। औंकार वेद निरमए।।
औंकार शब्द उधरे। औंकार गुरु मुख तरे।।
ओंम अखर सुन हुँ विचार। ओम अखर त्रिभूवण सार।।
सुण पाण्डे किया लिखहु जंजाला, लिख राम नाम गुरु मुख गोपाला।।1।।रहाऊ।।
ससै सभ जग सहज उपाइया, तीन भवन इक जोती।
गुरु मुख वस्तु परापत होवै, चुण लै मानक मोती।।
समझै सुझै पड़ि–पड़ि बुझै अति निरंतर साचा।
गुरु मुख देखै साच समाले, बिन साचे जग काचा।।2।।
धधै धरम धरे धरमा पुरि गुण करी मन धीरा। {ग्रन्थ साहेब में एक ही पंक्ति है।}

यहाँ पंक्ति अधूरी(अपूर्ण) छोड़ रखी है। प्रत्येक पंक्ति में अंतिम अक्षर दो एक जैसे है। जैसे ऊपर लिखी वाणी में ''ज्योति'' फिर दूसरी में ''मोती''। फिर ''साचा'' दूसरी में ''काचा''। यहाँ पर ''धीरा'' अंतिम अक्षर वाली एक ही पंक्ति है। इसमें साहेब कबीर का नाम प्रत्यक्ष था जो किसी कारण से ग्रन्थ की छपाई करते समय निकाल दी गई है। क्योंकि कबीर साहेब जुलाहा जाति में माने जाते हैं जो उस समय अछूत जानी जाती थी। कहीं गुरु नानक जी का अपमान न हो जाए कि एक जुलाहा नानक जी का पूज्य गुरु व भगवान था।

नोट :- वाणी संग्रह करते समय श्री अर्जुन देव जी ने श्री नानक देव जी द्वारा रची पुस्तक ''प्राण संगली'' को भी जल प्रवाह कर दिया था। किसी साधु ने निकाल ली जो कितनी महत्वपूर्ण वाणियाँ अंकित हैं। सतनाम जो दो अक्षर का है, उसका भेद लिखा है। प्राण संगली को छापते समय भी उन वाणियों को नहीं छपवाया गया जिनमें सतनाम का विशेष वर्णन है तथा श्री नानक देव जी ने स्वीकारा है कि कबीर धाणक नीच जाति वाला ही मेरे गुरु जी हैं।

श्री गुरु ग्रन्थ पृष्ठ 24 पर लिखा है कि नानक जी ने कहा है कि ''धाणक रूप रहा करतार'' फिर 731 पर श्री नानक जी ने कहा है कि ''नीच जाति परदेशी मेरा खिन्न आवै तिल जावै, जाकि संगत नानक रहंदा किऊ कर मौडां पावै**''**

फिर प्रमाण है ''राग बसंत महला पहला**'' पौड़ी नं. 3 आदि ग्रन्थ (पंजाबी) पृष्ठ नं. 1188**

नानक हवमों शब्द जलाईया, सतगुरु साचे दरस दिखाईया।।

इस वाणी से भी अति स्पष्ट है कि नानक जी कह रहे हैं कि सत्यनाम (सत्यशब्द) से विकार-अहम्(अभिमान) जल गया तथा मुझे सच्चे सतगुरु ने दर्शन दिए अर्थात् मेरे गुरुदेव के दर्शन हुए। इससे स्पष्ट है कि नानक जी को कोई सतगुरु आकार रूप में अवश्य मिला था। वह ऊपर तथा नीचे पूर्ण प्रमाणित है।

स्वयं कबीर साहेब पूर्ण परमात्मा(अकाल मूर्त) स्वयं सच्चखण्ड से तथा दूसरे रूप में काशी बनारस से आकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर सच्चखण्ड (सत्यलोक) भ्रमण करवा के सच्चा नाम उपदेश काशी (बनारस) में प्रदान किया।

आदरणीय गरीबदास जी महाराज {गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर(हरियाणा)} को भी परमेश्वर कबीर जिन्दा महात्मा के रूप में जंगल में मिले थे। इसी प्रकार सतलोक दिखा कर वापिस छोड़ा था। परमेश्वर ने बताया कि मैंने ही श्री नानक जी तथा श्री दादू जी को पार किया था। जब श्री नानक जी ने पूर्ण परमात्मा को सतलोक में भी देखा तथा फिर बनारस (काशी) में जुलाहे का कार्य करते देखा तब उमंग में भरकर कहा था ''वाहेगुरु सत्यनाम'' वाहेगुरु-वाहेगुरु तथा इसी उपरोक्त वाक्य का उच्चारण करते हुए काशी से वापिस आए। जिसको श्री नानक जी के अनुयाइयों ने जाप मंत्र रूप में जाप करना शुरु कर दिया कि यह पवित्र मंत्र श्री नानक जी के मुख कमल से निकला था, परन्तु वास्तविकता को न समझ सके। अब उन से कौन छुटाए, इस नाम के जाप को जो सही नहीं है। क्योंकि वास्तविक मंत्र को बोलकर नहीं सुनाया जाता। उसका सांकेतिक मंत्र 'सत्यनाम' है तथा वाहे गुरु कबीर परमेश्वर को कहा है। इसी का प्रमाण संत गरीबदास साहेब ने अपने सतग्रन्थ साहेब में फुटकर साखी का अंग पृष्ठ न. 386 पर दिया है।

गरीब – झांखी देख कबीर की, नानक कीती वाह।
वाह सिक्खों के गल पड़ी, कौन छुटावै ताह।।
गरीब – हम सुलतानी नानक तारे, दादू कुं उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, कांशी माहे कबीर हुआ।।

प्रमाण के लिए ''जीवन दस गुरु साहिबान'' पृष्ठ न. 42 से 44 तक
(लेखक - सोढी तेजा सिंघ जी) - (प्रकाशक - चतर सिंघ जीवन सिंघ)

बेई नदी में प्रवेश

"जीवन दस गुरु साहेब से ज्यों का त्यों सहाभार"

गुरु जी प्रत्येक प्रातः बेई नदी में जो कि शहर सुलतानपुर के पास ही बहती है, स्नान करने के लिए जाते थे। एक दिन जब आपने पानी में डुबकी लगाई तो फिर बाहर न आए। कुछ समय ऊपरान्त आप जी के सेवक ने, जो कपड़े पकड़ कर नदी के किनारे बैठा था, घर जाकर जै राम जी को खबर सुनाई कि नानक जी डूब गए हैं तो जै राम जी तैराकों को साथ लेकर नदी पर गए। आप जी को बहुत ढूंढा किन्तु आप नहीं मिले। बहुत देखने के पश्चात् सब लोग अपने अपने घर चले गए।

भाई जैराम जी के घर बहुत चिन्ता और दुःख प्रकट किया जा रहा था कि तीसरे दिन सवेरे ही एक स्नान करने वाले भक्त ने घर आकर बहिन जी को बताया कि आपका भाई नदी के किनारे बैठा है। यह सुनकर भाईआ जैराम जी बेई की तरफ दौड़ पड़े और जब जब पता चलता गया और बहुत से लोग भी वहाँ पहुँच गए। जब इस तरह आपके चारों तरफ लोगों की भीड़ लग गई आप जी चुपचाप अपनी दुकान पहुँच गए। आप जी के साथ स्त्री और पुरूषों की भीड़ दुकान पर आने लगी। लोगों की भीड़ देख कर गुरु जी ने

मोदीखाने का दरवाजा खोल दिया और कहा जिसको जिस चीज की जरूरत है वह उसे ले जाए। मोदीखाना लुटाने के पश्चात् गुरु जी फकीरी चोला पहन कर शमशानघाट में जा बैठे। मोदीखाना लुटाने और गुरु जी के चले जाने की खबर जब नवाब को लगी तो उसने मुंशी द्वारा मोदीखाने की किताबों का हिसाब जैराम को बुलाकर पड़ताल करवाया। हिसाब देखने के पश्चात् मुंशी ने बताया कि गुरु जी के सात सौ साठ रूपये सरकार की तरफ अधिक हैं। इस बात को सुनकर नवाब बहुत खुश हुआ। उसने गुरु जी को बुलाकर कहा कि उदास न हो। अपना फालतू पैसा और मेरे पास से ले कर मोदीखाने का काम जारी रखें। पर गुरु जी ने कहा अब हमने यह काम नहीं करना हमें कुछ और काम करने का भगवान् की तरफ से आदेश हुआ है। नवाब ने पूछा क्या आदेश हुआ है ? तब गुरु जी ने मूल–मंत्र उच्चारण किया।

1 ओंकार सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरू अकाल मूरति अजूनी सब गुरप्रसादि।

नवाब ने पूछा कि यह आदेश आपके भगवान् ने कब दिया ? गुरु जी ने बताया कि जब हम बेई में स्नान करने गए थे तो वहाँ से हम सच्चखण्ड अपने स्वामी के पास चले गए थे वहाँ हमें आदेश हुआ कि नानक जी यह मंत्र आप जपो और बाकियों को जपा कर कलयुग के लोगों को पार लगाओ। इसलिए अब हमें अपने मालिक के इस हुक्म की पालना करनी है। इस सन्दर्भ को भाई गुरदास जी वार 1 पउड़ी 24 में लिखते हैं–

बाबा पैधा सचखण्ड नउनिधि नाम गरीबी पाई।।

अर्थात्–बाबा नानक जी सचखण्ड गए। वहाँ आप को नौनिधियों का खजाना नाम और निर्भयता प्राप्त हुई। यहाँ बेई किनारे जहाँ गुरु जी बेई से बाहर निकल कर प्रकट हुए थे, गुरु द्वारा संत घाट अथवा गुरुद्वारा बेर साहिब, बहुत सुन्दर बना हुआ है। इस स्थान पर ही गुरु जी प्रातः स्नान करके कुछ समय के लिए भगवान् की तरफ ध्यान करके बैठते थे। (जीवन दस गुरु साहेब नामक पुस्तक से लेख समाप्त)

"पवित्र कबीर सागर में प्रमाण"

विशेष विचार :- पूरे गुरु ग्रन्थ साहेब में कहीं प्रमाण नहीं है कि श्री नानक जी, परमेश्वर कबीर जी के गुरु जी थे। जैसे गुरु ग्रन्थ साहेब आदरणीय तथा प्रमाणित है, ऐसे ही पवित्र कबीर सागर भी आदरणीय तथा प्रमाणित सद्ग्रन्थ है तथा श्री गुरुग्रन्थ साहेब से पहले का है। इसीलिए तो लगभग चार हजार वाणी 'कबीर सागर' सद्ग्रन्थ से गुरु ग्रन्थ साहिब में ली गई हैं।

पवित्र कबीर सागर में विस्तृत विवरण है नानक जी तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी की वार्ता का तथा श्री नानक जी के पूज्य गुरुदेव कबीर परमेश्वर थे। कृप्या निम्न पढ़ें। विशेष प्रमाण के लिए कबीर सागर (स्वसमवेदबोध) पृष्ठ न. 158 से 159 से सहाभार :-

नानकशाह कीन्हा तप भारी। सब विधि भये ज्ञान अधिकारी।।
भक्ति भाव ताको समिझाया। तापर सतगुरु कीनो दाया।।
जिंदा रूप धरयो तब भाई। हम पंजाब देश चलि आई।।

अनहद बानी कियौ पुकारा। सुनिकै नानक दरश निहारा।।
सुनिके अमर लोककी बानी। जानि परा निज समरथ ज्ञानी।।

नानक वचन

आवा पुरूष महागुरु ज्ञानी। अमरलोकी सुनी न बानी।।
अर्ज सुनो प्रभु जिंदा स्वामी। कहँ अमरलोक रहा निजधामी।।
काहु न कही अमर निजबानी। धन्य कबीर परमगुरु ज्ञानी।।
कोई न पावै तुमरो भेदा। खोज थके ब्रह्मा चहुँ वेदा।।

जिन्दा वचन

नानक तव बहुतै तप कीना। निरंकार बहुते दिन चीन्हा।।
निरंकारते पुरूष निनारा। अजर द्वीप ताकी टकसारा।।
पुरूष बिछोह भयौ तुव जबते। काल कठिन मग रोंक्यौ तबते।।
इत तव सरिस भक्त नहिं होई। क्यों कि परमपुरूष न भेटेंउ कोई।।
जबते हमते बिछुरे भाई। साठि हजार जन्म भक्त तुम पाई।।
धरि धरि जन्म भक्ति भलकीना। फिर काल चक्र निरंजन दीना।।
गहु मम शब्द तो उतरो पारा। बिन सत शब्द लहै यम द्वारा।।
तुम बड़ भक्त भवसागर आवा। और जीवकी कौन चलावा।।
निरंकार सब सृष्टी भुलावा। तुम करि भक्तिलौटि क्यों आवा।।

नानक वचन

धन्य पुरूष तुम यह पद भाखी। यह पद हमसे गुप्त कह राखी।।
जबलों हम तुमको नहिं पावा। अगम अपार भर्म फैलावा।।
कहो गोसाँई हमते ज्ञाना। परमपुरूष हम तुमको जाना।।
धनि जिंदा प्रभु पुरूष पुराना। बिरले जन तुमको पहिचाना।।

जिन्दा वचन

भये दयाल पुरूष गुरु ज्ञानी। दियो पान परवाना बानी।।
भली भई तुम हमको पावा। सकलो पंथ काल को ध्यावा।।
तुम इतने अब भये निनारा। फेरि जन्म ना होय तुम्हारा।।
भली सुरति तुम हमको चीन्हा। अमर मंत्र हम तुमको दीन्हा।।
स्वसमवेद हम कहि निज बानी। परमपुरूष गति तुम्हैं बखानी।।

नानक वचन

धन्य पुरूष ज्ञानी करतारा। जीवकाज प्रकटे संसारा।।
धनि करता तुम बंदी छोरा। ज्ञान तुम्हार महाबल जोरा।।
दिया नाम दान किया उबारा। नानक अमरलोक पग धारा।।

भावार्थ :- परम पूज्य कबीर प्रभु एक जिन्दा महात्मा का रूप बना कर श्री नानक जी से (पश्चिमी पाकिस्तान उस समय पंजाब प्रदेश हिन्दूस्तान का ही अंश था) मिलने पंजाब में गए तब श्री नानक साहेब जी से वार्ता हुई। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आप जैसी पुण्यात्मा जन्म-मृत्यु का कष्ट भोग रहे हो फिर

आम जीव का कहाँ ठिकाना है? जिस निरंकार को आप प्रभु मान कर पूज रहे हो पूर्ण परमात्मा तो इससे भी भिन्न है। वह मैं ही हूँ। जब से आप मेरे से बिछुड़े हो साठ हजार जन्म तो अच्छे-2 उच्च पद भी प्राप्त कर चुके हो जैसे सतयुग में यही पवित्र आत्मा राजा अम्ब्रीष तथा त्रेतायुग में राजा जनक(जो सीता जी के पिता जी थे) हुए तथा कलियुग में श्री नानक साहेब जी हुए। फिर भी जन्म मृत्यु के चक्र में ही हो। मैं आपको सतशब्द अर्थात् सच्चा नाम जाप मन्त्र बताऊंगा उससे आप अमर हो जाओगे। श्री नानक साहेब जी ने प्रभु कबीर से कहा कि आप बन्दी छोड़ भगवान हो, आपको कोई बिरला सौभाग्यशाली व्यक्ति ही पहचान सकता है।

अमृतवाणी कबीर सागर (अगम निगम बोध, बोध सागर से) पृष्ठ नं. 44

।।नानक वचन।। ''शब्द''

वाह वाह कबीर गुरु पूरा है।
पूरे गुरु की मैं बलि जावाँ जाका सकल जहूरा है।।
अधर दुलिचे परे है गुरुनके शिव ब्रह्मा जह शूरा है।।
श्वेत ध्वजा फहरात गुरुनकी बाजत अनहद तूरा है।।
पूर्ण कबीर सकल घट दरशै हरदम हाल हजूरा है।।
नाम कबीर जपै बड़भागी नानक चरण को धूरा है।।

विशेष विवेचन :- बाबा नानक जी ने उस कबीर जुलाहे (धाणक) काशी वाले को सत्यलोक (सच्चखण्ड) में आँखों देखा तथा फिर काशी में धाणक (जुलाहे) का कार्य करते हुए तथा बताया कि वही धाणक रूप (जुलाहा) सत्यलोक में सत्यपुरुष रूप में भी रहता है तथा यहाँ भी वही है।

श्री नानक जी ने बचपन में श्री बृजलाल पाण्डे जी से गीता जी को समझा था। पूर्ण परमेश्वर कबीर जी के दर्शन के पश्चात् उन्हीं से प्राप्त तत्वज्ञान के आधार से उसी पाण्डे से गीता जी के सात श्लोकों के विषय में पूछा। श्री बृजलाल पाण्डा निरूतर हो गया। अपनी बेइज्जती जान कर श्री नानक जी से ईर्ष्या करने लगा तथा श्री नानक जी के माता-पिता को तथा अन्य हिन्दूओं को कहा कि श्री नानक तो अपने भगवानों का अपमान करता है। जिससे लोगों ने श्री नानक जी की बातों को ध्यान से नहीं सुना। वे सात श्लोक निम्न हैं :-

श्री बृजलाल पाण्डे से श्री नानक जी ने पूछा आप कहते हो कि गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने बोला तथा श्री कृष्ण जी ही श्री विष्णु अवतार हैं। श्री विष्णु जी अजन्मा, सर्वेश्वर, अविनाशी हैं। इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। आप यह भी कहते हो कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है। यही त्रिगुण माया है। परन्तु गीता ज्ञान दाता प्रभु (1.) गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में तथा (2.)अध्याय 4 श्लोक 5 में अपने आप को नाशवान कह रहा है कि मेरे तो जन्म तथा मृत्यु होते हैं तथा (3.) अध्याय 15 श्लोक 4 तथा (4.) अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता प्रभु किसी अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कह रहा है तथा उसी की साधना से सर्व सुख तथा पूर्ण मोक्ष संभव है। मैं (गीता ज्ञान दाता) भी उसी की

शरण में हूँ। (5.) गीता अध्याय 7 श्लोक 15 में गीता ज्ञान दाता प्रभु कह रहा है कि जिनका ज्ञान त्रिगुण माया के द्वारा हरा जा चुका है। भावार्थ है कि जो साधक तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की पूजा करते हैं। इनसे अन्य प्रभु की साधना नहीं करते। जिनकी बुद्धि इन्हीं तक सीमित है वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले, मूर्ख मुझे नहीं भजते। उपरोक्त तीनों प्रभुओं (गुणों) की पूजा मना है। फिर गीता ज्ञान दाता ब्रह्म (काल) (6.) अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी साधना को (अनुत्तमाम्) अति घटिया कह रहा है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि पूर्ण मोक्ष तथा परम शान्ति के लिए उस परमेश्वर की शरण में जा, (7.) गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में प्रमाण है कि उसके लिए किसी तत्वदर्शी संत की खोज कर। मैं उस परमात्मा के विषय में पूर्ण जानकारी नहीं रखता। उसी तत्वदृष्टा संत द्वारा बताए ज्ञान अनुसार उस परमेश्वर की भक्ति कर। यही प्रश्न परमेश्वर कबीर साहेब जी ने श्री नानक जी से बेई दरिया के किनारे किया था। जिस तत्वज्ञान को समझ कर तथा कबीर परमेश्वर के सतपुरुष रूप में सतलोक (सच्चखण्ड) में तथा धाणक रूप में बनारस (काशी में) दर्शन करके समर्पण करके तत्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।

विशेष :- पवित्र सिक्ख समाज इस बात से सहमत नहीं है कि श्री नानक साहेब जी के गुरु जी काशी वाला धाणक (जुलाहा) कबीर साहेब जी थे। इसके विपरीत श्री नानक साहेब जी को पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब जी का गुरु जी कहा है। परन्तु श्री नानक साहेब जी के पूज्य गुरु जी का नाम क्या है? इस विषय में पवित्र सिक्ख समाज मौन है, जबकि स्वयं श्री गुरु नानक साहेब जी श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी में महला 1 की अमृतवाणी में स्वयं स्वीकार करते हैं कि मुझे गुरु जी जिंदा रूप में आकार में मिले। वही धाणक(जुलाहा) रूप में सत् कबीर (हक्का कबीर) नाम से पृथ्वी पर भी थे तथा ऊपर अपने सच्चखण्ड में भी वही विराजमान है जिन्होंने मुझे अमृत नाम प्रदान किया।

आदरणीय श्री नानक साहेब जी का आविर्भाव सन् 1469 तथा सतलोक वास सन् 1539 ''पवित्र पुस्तक जीवनी दस गुरु साहिबान''। आदरणीय कबीर साहेब जी धाणक रूप में मृतमण्डल में सन् 1398 में सशरीर प्रकट हुए तथा सशरीर सतलोक गमन सन् 1518 में ''पवित्र कबीर सागर''। दोनों महापुरुष 49 वर्ष तक समकालीन रहे। श्री गुरु नानक साहेब जी का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में हुआ। प्रभु प्राप्ति के बाद कहा कि ''न कोई हिन्दू न मुसलमाना'' अर्थात् अज्ञानतावश दो धर्म बना बैठे। सर्व एक परमात्मा सतपुरुष के बच्चे हैं। श्री नानक देव जी ने कोई धर्म नहीं बनाया, बल्कि धर्म की बनावटी जंजीरों से मानव को मुक्त किया तथा शिष्य परम्परा चलाई। जैसे गुरुदेव से नाम दीक्षा लेने वाले भक्तों को शिष्य बोला जाता है, उन्हें पंजाबी भाषा में सिक्ख कहने लगे। जैसे आज संत रामपाल दास जी महाराज के लगभग बारह लाख शिष्य हैं, परन्तु यह धर्म नहीं है। सर्व पवित्र धर्मों की पुण्यात्माऐं

आत्म कल्याण करवा रही हैं। यदि आने वाले समय में कोई धर्म बना बैठे तो वह दुर्भाग्य ही होगा। भेदभाव तथा संघर्ष की नई दीवार ही बनेगी, परन्तु लाभ कुछ नहीं होगा।

विशेष :- केवल एक ही बात को ''कि कौन किसका गुरु तथा कौन किसका शिष्य है'' वाद-विवाद का विषय न बना कर सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए। कुछ देर के लिए श्री नानक साहेब जी को परमात्मा कबीर साहेब (कविर्देव) जी का गुरु जी मान लें। यह विचार करें कि इन महापुरुषों ने गुरु-शिष्य की भूमिका करके हमें जो अनमोल आध्यात्मिक ज्ञान दिया है। हम कितना उनका अनुशरण कर पा रहे हैं?

आज किसी व्यक्ति का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में है, वह अपनी साधना तथा इष्ट को सर्वोच्च मान रहा है। मृत्यु उपरान्त उसी पुण्यात्मा का जन्म पवित्र सिक्ख धर्म में हुआ तो फिर वह उसी साधना को उत्तम मान कर निश्चिंत हो जाएगा, फिर पवित्र मुसलमान धर्म में जन्म मिला तो उपरोक्त साधनाओं के विपरीत पूजा पर आरूढ़ होगा तथा फिर पवित्र ईसाई धर्म में जन्म हुआ तो केवल उसी पूजा पर आधारित हो जाएगा। फिर कभी पवित्र आर्य समाज में वही पुण्यात्मा जन्म लेगी तो केवल हवन यज्ञ करने को ही मुक्ति मार्ग कहेगा। यदि वही पुण्यात्मा पवित्र जैन धर्म में पहुँचेगी तो हो सकता है निवस्त्र रह कर या मुख पर कपड़ा बांध कर नंगे पैरों चलना ही मुक्ति का अन्तिम साधन होगा। उपरोक्त जन्म पूर्ण परमात्मा की भक्ति न मिलने तक होते रहेंगे, क्योंकि द्वापर युग तक अपने पूर्वज एक ही थे तथा वेदों अनुसार पूजा करते थे, अन्य धर्मों की स्थापना नहीं हुई थी। जब श्री गुरु गोबिन्द साहेब जी ने पाँच प्यारों को चुना उनमें से 1. श्री दयाराम जी लाहौर के खत्री परिवार से हिन्दू थे। 2. श्री धर्मदास जी इन्द्रप्रस्थ(दिल्ली) के जाट(हिन्दू) थे। 3. भाई मुहकम चन्द जी 'छीबे' हिन्दू द्वारका वासी 4. भाई साहिब चन्द जी 'नाई' हिन्दू बीदर निवासी 5. भाई हिम्मतमल जी 'झींवर' हिन्दू जगन्नाथ पुरी (उड़ीसा) निवासी थे(''जीवन दस गुरु साहिबान'' लेखक सोढ़ी तेजा सिंह, प्रकाशक भाई चतर सिंघ, जीवन सिंघ अमृतसर, पृष्ठ नं. 343-344)। इसलिए अपने संस्कार मिले-जुले हैं। भले ही उपरोक्त पंच प्यारे उस समय अपनी भक्ति साधना गुरुग्रन्थ साहेब के अनुसार गुरूओं की आज्ञा अनुसार कर रहे थे परन्तु सर्व हिन्दू समाज से सम्बन्ध रखते थे। उस समय गुरूओं के अनुयाइयों को सिक्ख कहते थे। हिन्दी भाषा में शिष्य कहते हैं। इस कारण से एक अलग भक्ति मार्ग पर चलने वाले जन समूह को सिक्ख कहने लगे। अब यह एक अलग धर्म का रूप धारण कर गया है। जैसे वर्तमान में कई पंथों के लाखों अनुयाई हैं। उनको भी अन्य नामों से सम्बोधित किया जाता है। जैसे राधास्वामी पंथ के अनुयाइयों को कहते हैं ये तो राधास्वामी हैं। परन्तु ये सर्व धर्मों के व्यक्तियों का समूह है। हो सकता है आने वाले समय में यह एक अलग धर्म का रूप धारण करले तो यह दुर्भाग्य की बात होगी। परन्तु वर्तमान में इस पंथ में अधिकतर हिन्दू समाज और सिक्ख समाज के व्यक्ति हैं।

जो व्यक्ति मांस आहार, मदिरापान तथा अन्य नशीली वस्तु जैसे तम्बाकु(बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि) सेवन करता है तथा लूट-खसौट, जीव हिंसा करता है तथा

बहन-बेटियों को बुरी नजर से देखता है वह न तो हिन्दू है - न मुसलमान - न सिक्ख - न ईसाई। क्या उपरोक्त बुराई करने का सर्व पवित्र धर्मों के सद्ग्रन्थों में विवरण है? नहीं। उपरोक्त बुराई युक्त व्यक्ति कभी प्रभु प्राप्ति नहीं कर सकता तथा न ही वह धार्मिक हो सकता।

एक समय यह दास एक दोस्त सिक्ख अधिकारी के साथ किसी सिक्ख की शादी में गया। वहाँ पर श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी के अखण्ड पाठ का भोग पड़ा। सर्व उपस्थित व्यक्तियों ने प्रसाद लिया। फिर खाना खाने के लिए साथ में ही लगे टैंट में प्रवेश हुए। जहाँ पवित्र अमृतवाणी का भोग पड़ा था तथा जहाँ खाना खाया, दोनों के बीच केवल कनात (कपड़ा) लगी थी। खाने को मांस तथा पीने को मदिरा सरे आम थी। जो पाठ कर रहे थे वे भी सर्व प्रथम उसी अखाद्य पदार्थ को खा रहे थे। इसलिए सर्व प्रथम हिन्दू तो हिन्दू बने, मुसलमान बने मुसलमान, ईसाई बने ईसाई तथा सिक्ख बने सिक्ख। फिर हम प्रभु भक्ति करने योग्य होंगे। प्रभु साधना भी अपने सद्ग्रन्थों में वर्णित विधि अनुसार करने से प्रभु प्राप्ति होगी अन्यथा मानव शरीर व्यर्थ हो जाएगा।

हम एक कुल मालिक की संतान हैं। सत्ज्ञान न होने से हिन्दू-मुसलमान के झगड़े, हिन्दू-सिक्ख के झगड़े, मुसलमान-ईसाई के झगड़े धर्म के श्रेष्ठता और अश्रेष्ठता के कारण हैं। विश्व युद्ध में भी इतना रक्तपात नहीं हुआ होगा, जितना धर्म के खतरे की आड़ में हो चुका है। धार्मिकता के खतरे की तरफ ध्यान न देने से जो बुराईयां सर्व पवित्र धर्मों में घर कर गई हैं। सर्व पवित्र धर्मों में एक प्रतिशत व्यक्ति होते हैं जो 99 प्रतिशत को आपस में लड़वा कर मरवा देते हैं। इसके विपरीत हिन्दू-हिन्दू को मार रहा है, सिक्ख-सिक्ख को काट रहा है, मुसलमान - मुसलमान को परेशान कर रहा है, ईसाई - ईसाई का दुश्मन बना हुआ है, आर्य समाजी - आर्य समाजी पर ही मुकद्मे किए बैठा है, कबीर पंथी - कबीर पंथियों के दुश्मन बने हैं तथा अन्य आश्रमों तथा डेरों के महन्तों व सन्तों के आपस में कत्ले आम तथा मुकद्मे तत्वज्ञान के अभाव के कारण ही हैं।

शंका तथा समाधान :- पाठकों को भ्रम उत्पन्न होगा कि परमेश्वर कबीर जी मां से जन्म नहीं लेते। फिर रामपाल दास रूप में कबीर जी कैसे आए। इनका जन्म तो माता पिता से हुआ है।

परमात्मा के अन्दर सर्व सिद्धी हैं। गरीबदास जी ने कहा है :-

सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धी हैं तीर।
दास गरीब सत पुरूष भजो, अविगत कला कबीर।।

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी के पास सर्व सिद्धियाँ हैं ''एक सिद्धि तन हंस नियारा'' भावार्थ है कि एक ऐसी सिद्धि है जिसके प्रताप से जीव शरीर से भिन्न हो जाता है तथा शरीर भी जीवित रहता है। इसी आधार से परमात्मा कबीर जी मां के गर्भ में नहीं रहते। परन्तु शरीर गर्भ में तैयार हो जाता है तथा गर्भ से बाहर आ जाता है। तब उसमें अपने अंश को प्रवेश कर देते हैं। वह कबीर परमेश्वर वाली शक्ति लिए लीला करता है।

उदाहरण :- एक समय सिद्ध मच्छंदर नाथ अपने शरीर को एक गुफा में छोड़ कर उससे अलग होकर एक राजा के मृत शरीर में प्रवेश कर गया तथा उस शरीर से दो संतान उत्पन्न की तब तक उसने अपना शरीर सिद्धि से जीवित रखा। इसी प्रकार उपरोक्त लीला जानें।

कृप्या देखें जन्म साखी हिन्दी वाली के पृष्ठ 280की फोटो कापी।

जन्म साखी (२८०) भाई बाले वाली

खुले ताले ॥ ३ ॥

यह सुन कर भंगर नाथ भी लज्जित हो कर चला गया । तब मरदाने ने कहा–हे महाराज ! आप की शक्ति अपार है आप के आगे तो कोई भी नहीं ठहर सकता।

तब गुरू नानक देव जी महाराज ने कहा हे मरदाना ! हमें उस ईश्वर ने इतना बड़ा गुरू मिलाया है। जो करतार का ही रूप है हे मर्दाना ! अनेक महापुरुष हो चुके हैं। उन को इस देह के साथ अकाल पुरुष का दरशन नहीं हुवा । तब मर्दाने ने कहा–हे गुरू देव आप में और निरंकार ईश्वर में कोई भी भेद नहीं है। गुरू जी ने कहा–हे मरदाने परमात्मा को सभी जीव समान रूप से प्रिय हैं। मरदाने ने कहा अब आप चलने की कृपा करो । तब गुरू जी मीनां परबत पर गये।

॥ साखी और चली ॥

पूर्व प्रकार गुरू जी आपने साथीयों के साथ क्षणभर में मीना परबत पर आ गये। मर्दाने ने पूछा हे गुरू जी ! अब हम कहां आ गये हैं । गुरू जी ने कहा इस स्थान का नाम मीना गिरि है। मर्दाने के पूछने पर गुरू जी ने कहा कि हम पहिले स्थान से सोलह सहस्र योजन ऊपर आ गये हैं । मर्दाने ने पूछा–कि यहां से सुमेर कितनी दूरी पर हैं ? गुरू जी ने उत्तर दिया । यहां से सुमेर एक सहस्र योजन दूर है। मरदाने ने कहा हे महाराज जिस गुरू का आप ने जिकर किया है । उन का नाम जानना चाहता हूं । गुरू जी ने कहा–उस का नाम बाबा जिंदा कहते है । जल और पवन उसी की आग्या में चल रहे हैं । अग्नि और मृत्तिका भी उसी की आग्या मानते चले आ रहे हैं उसी को बाबा कहना उचित है अन्य को नहीं । मर्दाने ने शंका की । कहा–हम भी तो आप के साथ ही यात्रा कर रहे हैं। वह बाबा आप को कहां और कब मिला है ? गुरू जी ने कहा हे मर्दाना जब सुलतान पुर में हम ने डुबकी लगाई थी । उस समय तीन

कृप्या देखें जन्म साखी हिन्दी वाली के पृष्ठ 281 की फोटो कापी।

जन्म साखी (२८१) भाई बाले वाली

दिन उसी के ही रहे थे, इस बात को भाई बाला जानता है, हे मर्दाना वह ऐसा गुरू है कि उस की सत्ता समस्त संसार में आश्रय रूप हो कर बिराज रही हैं, उस को जिंदा कहा जाता है, वह काल के वश में नहीं हैं, तब मर्दाने ने कहा–हे कृपा नाथ! उस का रंग कैसा है? और उस का आसन कहां हैं? गुरू जी ने कहा–हे मर्दानां उस का रंग लाल है परंतु संसार की कोई भी लाली उस के सदृश्य नहीं है, और उस के रोम स्वर्ण वर्ण हैं। परंतु स्वर्ण भी उस के तुल्य नहीं है, और वह जिव्हा से बोलता भी नहीं है, उसके रोम रोम से गहिर गंभीर शब्द की ध्वनी हो रही है, तब मर्दाने ने कहा–आप धन्य हो आप के बगैर हमारी शंकायें कोई भी दूर नहीं कर सकता, मर्दाने ने कहा–हे महाराज! अब आप सुमेर पर चलने की कृपा करो, गुरू जी ने कहा—अभी तो सिद्ध समाज में विचार ही हो रहा है, कुछ काल मौन रहो।

कृप्या देखें फोटो कापी 'प्राण संगली'' ग्रंथ के ''जीवन चरित्र''पृष्ठ-15 की।

संवत् १५५४ में गुरूजी एक दिन नियमानुसार पहर रात रहे सेवक के साथ वेईं नदी पर स्नान को गये तो वहाँ एक साधू[१] से भेंट हुई जिसनें चेताया कि बाबा नानकजी तुम किस काम के लिये इस संसार में भेजे गये हो, तुम्हारे लिये सच्चे दरबार से क्या आज्ञा है और कर क्या रहे हो! इस पर गुरूजी उस साधु के साथ वेईं नदी में घुसकर तीन दिन तक गुप्त रहे। लोग अपनी-अपनी समझ के अनुसार कोई कहते थे कि डूब गये, कोई और कुछ अनुमान करते थे परन्तु वास्तव में गुरूजी अपने शरीर को योगबल से

यह फोटो कापी ''प्राण संगली'' नामक ग्रंथ के ''जीवन चरित्र'' पृष्ठ-15 की है जिसके निवेदन कर्ता तथा अनुवाद कर्ता सम्पूरण सिंह (तरनतारन, पंजाब) हैं तथा इसके प्रकाशक :- बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स 56 ए/13, मोतीलाल नेहरू रोड़, इलाहबाद-211002 हैं।

इस फोटो कापी में वर्णित विवरण से स्पष्ट है कि श्री नानक देव जी को बेई नदी पर स्नान करते समय जो साधु मिला था। वह जिन्दा बाबा था। जिसके साथ दरिया में प्रवेश हुए वह साधु वेश में परमेश्वर कबीर जी थे। जिसके विषय में भाई बाले वाली जन्म साखी पृष्ठ 280-281 हिन्दी वाली में प्रमाण है कि श्री नानक साहेब जी को बाबा जिन्दा वेशधारी गुरु मिले थे। जो उनको बेई नदी में डुबकी लगाते ही अन्तर्ध्यान करके सचखण्ड लेकर गये तथा तीन दिन में वापिस छोड़ा।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि श्री नानक साहेब जी के गुरु जी परमेश्वर कबीर साहेब जी थे।

कृप्या देखें जन्म साखी हिन्दी वाली के पृष्ठ 189 की फोटो कापी।

जन्म साखी ((१८१)) भाई बाले वाली

धरिआं नाउं ॥ दोजक दुनिआं बंदगी जिउं अगनी झलूठे काउं । राखन जुसा पाक बहु अंदरों मैल न जाइ । बाझ निताड़े किरबती बाझ इबादत नाहि। चार कतेबी इक है चारों कौल खुदाइ। चारों कदम सबद दे काजी दिल विच लाइ। अव्वल दुनी मुसलमी दूजी खराइत जान । तीजी नीयत रास कर हरम हलाल पछान। चौथा होइ महिमान रहु जनम मरन भौ डार । होत सवाब मुसलमी जलदी उमत तार। चार वरण चार मजहबा इको नर खुदाइ ॥ दूजा होया न होयगा नानक सचा अलाइ। नानक आखे रुकनदीन सचा सुनहु जवाब। चारों कुंट सलाम कर तां तुहि होइ सवाब । खालक आदम सिरजिआ आलम वडा कबीर । काइम दाइम कुदरती सिर पीरां दे पीर। तिस विच आलम बहुत है आवे जाइ अनंत ॥ आलम वडा सलामता कोइ न जाणै अंत । आफ़ताब महिताब दुई इह आदत के नेत। एनां बाझ न सुझई नानक कहे बिबेक। चरख फिरे असमान विच रैन दिवस के माहि । सभो फिरतिआं उम्मती लख चौरासी आहि । सयदे करे खुदाइ नूं आलम वडा कबीर। निउंदा चारे कुंट को जानण पीर फ़कीर । काइम कुरसी अरश है कुतब सतारा एक। तूं भी कायम रुकनदीन जे सभ महि जाणहि एक ।

यह फोटो कापी भाई बाले वाली जन्म साखी श्री नानक देव जी की है। इसमें श्री नानक जी ने उस शंका का भी समाधान कर रखा है जिसमें कुछ संत कहते हैं कि कबीर का अर्थ अरबी भाषा में बड़ा होता है। यहां पर श्री नानक देव जी ने बड़ा (बड़ा) शब्द भी ''कबीर'' शब्द के साथ प्रयोग किया है। इस वाणी का अर्थ है कि जिस परमेश्वर ने श्री आदम जी की उत्पति की वह बड़ा परमेश्वर कबीर जी है। उसी को सजदा करो अर्थात् उसी की पूजा करनी चाहिए। आगे फोटो कापी ''कबीर सागर'' की है। जिनमें स्पष्ट है कि नानक जी को परमेश्वर कबीर जी ही जिन्दा बाबा का रूप धारण करके सुलतानपुर शहर में बेई नदी के किनारे मिले थे। उनको सतलोक लेकर गए थे। उसी के विषय में उपरोक्त जन्म साखी में पृष्ठ 189 पर वर्णन है।

कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी कबीर सागर पृष्ठ 158 की।

(१५८) बोधसागर

अथ नानकशाहजीकी कथा--चौपाई

नानकशाह कीन तप भारी । सब विधि भये ज्ञान अधिकारी॥
भक्ति भाव ताको लखि पाया । तापर सतगुरु कीनो दाया ॥
जिंदा रूप धर्‌यो तब साँई । प्रभु पंजाब देश चलि आई ॥
अनहद बानी कियौ पुकारा । सुनिकै नानक दरश निहारा ॥
सुनिके अमर लोककी बानी । जानि परा निज समरथ ज्ञानी॥

नानक वचन

आवा पुरुष महागुरु ज्ञानी । अमरलोककी सुनी न बानी ॥
अर्ज सुनो प्रभु जिंदा स्वामी । कहँ अमरलोक रहा निजुधामी॥
काहु न कही अमर निजुबानी । धन्य कबीर परमगुरु ज्ञानी ॥
कोई न पावै तुमरो भेदा । खोज थके ब्रह्मा चहुँ वेदा ॥

जिन्दा वचन

जब नानक बहुतै तप कीना । निरंकार बहुते दिन चीन्हा ॥
निरंकारते पुरुष निनारा । अजर द्वीप ताकी टकसारा ॥
पुरुष बिछोह भयौ तुव जबते । काल कठिन मग रोंक्यौ तबते॥
इत तुव सरिस भक्त नहिं होई । क्यों परपुरुष न भेटेंउ कोई ॥
जबते हमते बिछुरे भाई । साठि हजार जन्म तुम पाई ॥
धरि धरि जन्म भक्ति भलकीना । फिर काल चक्र निरंजन दीना॥
गहु मम शब्द तो उतरो पारा । बिन सतशब्द लहै यम द्वारा॥

कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी कबीर सागर पृष्ठ 159 की।

स्वसमवेदबोध (१५९)

तुम बड़ भक्त भवसागर आवा । और जीवको कौन चलावा ॥
निरंकार सब सृष्टि भुलावा । तुम करि भक्तिलौटिक्योंआवा॥

नानक वचन

धन्य पुरुष तुम यह पद भाखी । यह पद अमर गुप्त कह राखी॥
जबलों हम तुमको नहिं पावा । अगम अपार भर्म फैलावा ॥
कहो गोसाँई हमते ज्ञाना । परमपुरुष हम तुमको जाना ॥
धनि जिंदा प्रभु पुरुष पुराना । बिरले जन तुमको पहिचाना॥

जिन्दा वचन

भये दयाल पुरुष गुरु ज्ञानी । गहो पान परवाना बानी ॥
भली भई तुम हमको पावा । सकलो पंथ कालको धावा ॥
तुम इतने अब भये निनारा । फेरि जन्म ना होय तुम्हारा ॥
भली सुरति तुम हमको चीन्हा । अमरमंत्र हम तुमको दीन्हा॥
स्वसमवेद हम कहि निज बानी । परमपुरुष गति तुम्हैं बखानी॥

नानक वचन

धन्य पुरुष ज्ञानी करतारा । जीवकाज प्रकटे संसारा ॥
धनि करता तुम बंदी छोरा । ज्ञान तुम्हार महा बल जोरा ॥
दिया दान गुरु किया उबारा । नानक अमरलोक पग धारा ॥

यह फोटो कापी कबीर सागर के अध्याय स्वस्मवेद बोध पृष्ठ 159 के सम्बंधित

प्रकरण की है जो श्री नानक जी को कबीर परमेश्वर जी ने बेई नदी पर एक साधु के रूप में दिए तथा सतलोक की जानकारी देकर शिष्य बनाया था।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी में गुरु जी की महिमा

कृप्या पढ़ें श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी में निम्न पृष्ठों पर ढेर सारे प्रमाण कि श्री नानक जी को गुरु जी मिले थे। जिन्होंने नानक जी को दीक्षा दी थी। श्री नानक जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि वक्त गुरु के बिना भक्ति सफल नहीं हो सकती। यह भी जोर देकर कहा है कि गुरु पूरा हो। जो श्रद्धालु वक्त गुरु की शरण में नहीं जाते, वे श्री गुरु नानक देव जी की आज्ञा की अवहेलना कर रहे हैं।

विचारणीय विषय है कि श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी महापुरूषों की अमृतवाणी है तथा आदरणीय है तथा श्री मद्भगवत गीता तथा पवित्र चारों वेद, परमेश्वर कबीर जी की अमृतवाणी जो पांचवा वेद है। यह तो परमात्मा का विधान है। जैसे देश का संविधान है। वह प्रधान मन्त्री नहीं है। प्रधान मन्त्री कि आवश्यकता इसलिए है कि वह उस विधान अनुसार जनता की सुरक्षा करे। उनको उनका अधिकार दिलाए।

श्री नानक देव जी ने पृष्ठ 1342 पर कहा है :-

''गुरु सेवा बिन भक्ति ना होई, अनेक जतन करै जे कोई''

श्री गुरु नानक जी ने पृष्ठ 946 पर कहा है :-

''बिन सतगुरु भेंटे मुक्ति न कोई, बिन सतगुरु भेंटे महादुःख पाई।''

श्री गुरु नानक जी ने पृष्ठ 437 पर भी कहा है :-

''नानक गुरु समानि तीरथु नहीं कोई साचे गुरु गोपाल।''

गुरु साहेबानों का जनता को संदेश है कि पूरे गुरु की खोज करो। पूरा गुरु परमात्मा समान ही होता है। पूरा गुरु वह होगा जो श्री नानक देव जी जैसा परमेश्वर का कृपा पात्र होगा। जैसे भाई बाले वाली जन्म साखी (पंजाबी भाषा वाली) के पृष्ठ 272-273 पर मरदाना ने प्रह्लाद से पूछा कि यहां और कौन आए हैं। प्रह्लाद ने कहा कि यहां केवल दो महापुरूष आऐ हैं। प्रथम (परमेश्वर) कबीर जी दूसरे श्री नानक देव जी, केवल एक और आवैगा जो इन जैसा ही होगा, वह पंजाब की धरती पर जाट जाति से होगा। कृप्या देखें फोटो कापी पृष्ठ 272-273 जन्म साखी की इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 17 पर।

सर्व मानव समाज से प्रार्थना है कि तीसरा महापुरूष जो श्री नानक देव तथा परमेश्वर कबीर जैसा आध्यात्मिक ज्ञान लिए है। वह सन्त रामपाल दास जी महाराज हैं। सर्व सिख गुरु साहेबानों ने यह कहा है कि गुरु बिन मोक्ष नहीं हो सकता। वक्त गुरु नाम उपदेश देवेगा, जो अधिकारी होगा। उसी से नाम लेने से लाभ होगा। बिना अधिकारी के नाम प्राप्त करना भी मोक्षदायक नहीं है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 946 पर स्पष्ट किया है कि :-

बिन सतगुरु सेवे जोग न होई। बिन सतगुरु भेटे मुक्ति न होई।
बिन सतगुरु भेटे नाम पाइआ न जाई। बिन सतगुरु भेटे महा दुःख पाई।
बिन सतगुरु भेटे महा गरबि गुबारि। नानक बिन गुरु मुआ जन्म हारि।

इस अमर संदेश में श्री नानक जी ने स्पष्ट किया है कि बिना वक्त गुरु की शरण में जाए न तो मोक्ष होगा न जीव का अहंकार नाश होगा। जो जीव को परमात्मा से दूर रखता है। सतगुरु के सेवे अर्थात् शरण में जाए बिना जोग अर्थात् साधना सफल नहीं हो सकती। गुरु जी की शरण बिना नाम नहीं मिल सकता। नाम बिना मुक्ति नहीं हो सकती। झूठे गुरु से भी कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। बिना सतगुरु के महादुःख होगा तथा बिना गुरु की शरण मानव जन्म को जुऐ में हारे जुआरी की तरह जन्म हार कर मर जाएगा। श्री गुरु नानक देव जी सख्ती के साथ कह रहे हैं कि पूरे गुरु की शरण प्राप्त करके जन्म सफल करो। यह मानव जीवन अनमोल है बार-२ प्राप्त नहीं होगा। कृप्या प्रमाण के लिए पढ़ें निम्न वाणी :-

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1342 (गुरु महिमा) प्रभाती असटपदीआ महला 1 बिभास

सतिगुरु पूछि सहज घरू पावै।।३।। रागि नादि मनु दूजै भाइ।। अंतरि कपटु महा दुखु पाइ।। सतिगुरु भेटै सोझी पाइ।। सचै नामि रहै लिव लाइ।।४।। सचै सबदि सचु कमावै।। सची बाणी हरि गुण गावै ।। निज घरि वासु अमर पदु पावै।। ता दरि साचै सोभा पावै।।५।। गुर सेवा बिनु भगति न होई ।। अनेक जतन करै जे कोई।।
गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी।। बिनु सतिगुरु भेटे कोई न जाणी।। सगल सरोवर जोति समाणी।। आनद रूप विटहू कुरबाणी।।३।। भाउ भगति गुरमती पाए।। हउमै विचहु सबदि जलाए।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1039 (गुरु महिमा) राग मारु सोलहे महला 1

ऐसे जन विरले संसारे।। गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे।। आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ।।११।। घरू दरू मंदरू जाणै सोई जिसु पूरे गुर ते सोझी होई।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 946 (गुरु महिमा) रामकली महला 1 सिध गोसटि

नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे।। नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे।।६८।। गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ।। गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ।। गुरमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइ।। गुरमुखि निज घरि वासा होइ।। गुरमुखि जोगी, जुगति पछाणै।। गुरमुखि नानक एको जाणै।।६६।। बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई।। बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई।। बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइआ न जाइ।। बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ।। बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि।। नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि।।७०।। गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि।। गुरमुखि साचु रखिआ उर धारि।। गुरमुखि जुगु जीता जमकालु मारि बिदारि।। गुरमुखि दरगह न आवै हारि।। गुरमुखि मेलि मिलाए सुो जाणै।। नानक गुरमुखि सबदि पछाणै।।७१।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 466 (गुरु महिमा) आसा महला 1

मः १।। मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुमिआर।। घड़ि भाँडे इटा कीआ जलदी करे पुकार।। जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर।। नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारू।।२।। पउड़ि।। बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुरु किनै न पाइआ।। सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ।। सतिगुर

मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ।। उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ।। जगजीवनु दाता पाइआ।।६।। किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि।। नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि।।२।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1171 (गुरु महिमा) महला 1 बसंतु हिंडोल घरू 2

बसंतु हिंडोल महला १ ।। साचा साहु गुरु सुखदाता हरि मेले भुख गवाए।। करि किरपा हरि भगति दृड़ाए अनदिनु हरि गुण गाए।।१।। मत भूलहि रे मन चेति हरि।। बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ नामु हरि।।१।।रहाउ।। बिनु भगति नहीं सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी।। बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी।।२।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1040 (गुरु महिमा) मारू सोलहे महला 1

मारू महला १।। सचु कहहु सचै घरि रहणा।। जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा।। गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लंघाइआ।।१।। हउमै ममता लोभ बिनासनु।। नउ दर मुकते दसवै आसनु।। ऊपरि परै परै अपरम्परू जिनि आपे आपु उपाइआ।।२।। गुरमति लेवहु हरि लिव तरीऐ।। अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ।। जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरू न दुतीआ गाइआ।।३।। सचु हरि नामु सचु है सरणा।। सचु गुर सबदु जितै लगि तरणा।। अकथु कथै देखै अपरम्परू फुनि गरभि न जोनी जाइआ।।४।। सच बिनु सतु संतोखु न पावै।। बिनु गुर मुकति न आवै जावै।। मूल मंत्रु हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 33 (गुरु महिमा) सिरी राग महला 3

सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ।।१।। भाई रे गुरमुखि बूझे कोइ।। बिनु बूझे कर्म कमावणे जनमु पदारथु खोइ।।१।। रहाउ।। गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ।।१।। सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा।। गुर पदसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा।।१।। रहाउ।। त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु।। पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि।। सतगुरु मिलिऐ तृकृटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु।।२।। गुर तो मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु।। सबदि मरे ता उधरै पाए मोख दुआरु।। गुर परसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु।।३।। इहु मनुआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ।। दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ।। नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ।।४।।१८।।५१।। सिरीरागु महला ३।। किरपा करे गुरु पाईऐ हरि नामो देइ दृड़ाइ।। बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ।। मनमुख कर्म कमावणे दरगह मिलै सजाइ।।१।। मन रे दूजा भाउ चुकाइ।। अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ।। रहाउ।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1348 महला 5 (गुरु महिमा) बिभास प्रभाती महला 5 असटपदीआ

बिनु सतिगुर किनै न पाई पर्म गते।। पूछहु सगल बेद सिम्मृते।। मनमुख कर्म करै अजाई।। जिउ बालू घर ठउर न ठाई।।७।। जिस नो भए गोबिंद दइआला।। गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला।। कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ।। नानकु तिन के संगि तराइआ।।८।। जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ।। आपि तरै सभु कुटम्बु तराईऐ।।१।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 436 (गुरु महिमा) रागु आसा महला 1 छंत घरू 1

आसा महला १ ।। अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम।। मेरा मनो मेरा मनु राता

लाल पिआरे राम।। अनदिनु राता मनु बैरागी सुन्न मंडलि घरु पाइआ।। आदि पुरखु अपरम्परु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ।। आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे।। नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ।।१।। तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम।। सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम।। सचु सबदु कमाईऐ निज घर जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना।। तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना।। जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ।। नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ।।२।। गुरु सागरो

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 437 (गुरु महिमा) राग आसा महला 1 छंत घरू 1

रतनागरु तितु रतन घणेरे राम।। करि मजनो सपत सरे मन निर्मल मेरे राम।। निर्मल जलि नाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे।। कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे।। हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला।। नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला।।३।। हउ बनु बनो देखि रही तृणु देखि सबाइआ राम।। तृभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम।। तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही।। तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही।। अण्मंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा।। राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा।।४।।२।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 879 (गुरु महिमा) रामकली महला 1 घरू 1 चउपदे

रामकली महला १ ।। जा हरि प्रभि किरपा धारी।। ता हउमै विचहु मारी।। सो सेवकि राम पिआरी।। जो गुर सबदी बीचारी।।१।। सो हरि जनु हरि प्रभ भावै।। अहिनिसि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुण गावै।।१।। रहाउ।। धुनि वाजे अनहद घोरा।। मनु मानिआ हरि रसि मोरा।। गुर पूरै सचु समाइआ।। गुरु आदि पुरखु हरि पाइआ।।२।। सभि नाद बेद गुरबाणी।। मनु राता सारिगपाणी।। तह तीर्थ वरत तप सारे।। गुर मिलिआ हरि निसतारे।।३।। जह आपु गइआ भउ भागा।। गुर चरणी सेवकु लागा।। गुरि सतिगुरि भरमु चुकाइआ।। कहु नानक सबदि मिलाइआ।।४।।१०।।

गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश -

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृ. 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृ. 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृ. 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृ. 439)

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब(प्रभु) एक ही है तथा मेरे गुरु जी ने मुझे उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका करता है। शास्त्र विरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मृत्यु व कर्मफल की आग में जलते

देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भाग कर मैंने गुरु जी के चरणों में शरण ली।

बलिहारी गुरु आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।
आपीनै आप साजिओ आपीनै रचिओ नाउ।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।
तूं जाणोइ सभसै दे लैसहि जिंद कवाउ करि आसणु डिठो चाउ। (पृ. 463)

भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा जिंदा का रूप बनाकर बेई नदी पर आए अर्थात् जिंदा कहलाए तथा स्वयं ही दो दुनियाँ ऊपर(सतलोक आदि) तथा नीचे(ब्रह्म व परब्रह्म के लोक) को रचकर ऊपर सत्यलोक में आकार में आसन पर बैठ कर चाव के साथ अपने द्वारा रची दुनियाँ को देख रहे हो तथा आप ही स्वयम्भू अर्थात् माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, स्वयं प्रकट होते हो। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मं. 8 में है कि कविर् मनीषि स्वयम्भूः परिभू व्यवधाता, भावार्थ है कि कबीर परमात्मा सर्वज्ञ है (मनीषि का अर्थ सर्वज्ञ होता है) तथा अपने आप प्रकट होता है। वह सनातन (परिभू) अर्थात् सर्वप्रथम वाला प्रभु है। वह सर्व ब्रह्मण्डों का (व्यवधाता)अर्थात् भिन्न-भिन्न सर्व लोकों का रचनहार है।

एहू जीउ बहुते जनम भरमिआ, ता सतिगुरु शबद सुणाइया।। (पृ. 465)

भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा यह जीव बहुत समय से जन्म तथा मृत्यु के चक्र में भ्रमता रहा अब पूर्ण सतगुरु ने वास्तविक नाम प्रदान किया।

फिर प्रमाण है ''राग बसंत महला पहला'' पौड़ी नं. 3 आदि ग्रन्थ(पंजाबी) पृष्ठ नं. 1188

नानक हवमों शब्द जलाईया, सतगुरु साचे दरस दिखाईया।।

इस वाणी से भी अति स्पष्ट है कि नानक जी कह रहे हैं कि सत्यनाम (सत्यशब्द) से विकार-अहम्(अभिमान) जल गया तथा मुझे सच्चे सतगुरु ने दर्शन दिए अर्थात् मेरे गुरुदेव के दर्शन हुए। स्पष्ट है कि नानक जी को कोई सतगुरु आकार रूप में अवश्य मिला था। वह ऊपर तथा नीचे पूर्ण प्रमाणित है। स्वयं कबीर साहेब पूर्ण परमात्मा(अकाल मूर्त) स्वयं सच्चखण्ड से तथा दूसरे रूप में काशी बनारस से आकर प्रत्यक्ष दर्शन देकर सच्चखण्ड (सत्यलोक) भ्रमण करवा के सच्चा नाम उपदेश काशी (बनारस) में प्रदान किया।

''श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी में साकार परमात्मा के प्रमाण''

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 567 ,1257, 764 पर महला 1 की वाणी है जो निम्न अंकित है। इनमें श्री नानक देव जी ने स्पष्ट किया है कि बड़ा साहिब आप है।

भावार्थ है कि सर्व शक्तिमान परमात्मा के भेद को कोई नहीं जानता मैंने देखा है उसका दर्शन किया है। हे सर्व शक्तिमान परमात्मा ! आप की सुन्दर आँखें हैं। सुन्दर दांत हैं। आप का नाक भी अति सुन्दर है। आप के बाल चमकीले लम्बे हैं। आप का शरीर स्वर्ण जैसा है। आप की चाल मोहक है। आप की वाणी मधुर है, कोयल जैसी

सुरीली है। आप सारंग पक्षी के समान ठुमक-ठुमक कर चलते हो। आपके सफेद कपड़े हैं, लम्बा नाक, आँखें काली सुन्दर हैं। क्या किसी आत्मा ने कभी परमात्मा को देखा है ? भावार्थ है कि यदि किसी से परमेश्वर का साक्षात्कार हुआ होता तो उसे निराकार नहीं कहते। फिर पृष्ठ 1257 पर महला 3 में यह भी स्पष्ट है कि श्री नानक जी जिसे निरंकार कहा करते थे। वह वास्तव में आकार में मानव सदृश है।

गुरु ग्रन्थ साहिब पृष्ठ 24 पर महला 1 में कहा है कि

''फाई सुरत मलूकि वेश, उह ठगवाड़ा ठगी देश,
खरा सिआणा बहुता भार धाणक रूप रहा करतार''

पृष्ठ 731 पर महला 1 में कहा है कि :-

अंधुला नीच जाति परदेशी मेरा खिन आवै तिल जावै।
ताकी संगत नानक रहंदा किउ कर मूड़ा पावै।।(**4/2/9**)

जन्म साखी भाई बाले वाली पृष्ठ 280-281 पर श्री नानक देव जी ने बताया है कि मैंने जब बेई नदी में डुबकी लगाई थी। उसी समय बाबा जिन्दा के वेश में गुरु जी मिले थे। मैं तीन दिन उन्हीं के साथ रहा था। वह बाबा जिन्दा परमेश्वर के समान शक्तिशाली है।

भाई बाले वाली जन्म साखी पृष्ठ 189 (हिन्दी वाली) में कहा है कि :-

खालक आदम सिरजिया आलम बड़ा कबीर।
काईम दाइम कुदरती सिर पीरा दे पीर।।

भावार्थ है कि नानक जी एक काजी को बता रहे हैं कि जिस परमेश्वर ने आदम जी को उत्पन्न किया। वह बड़ा परमात्मा कबीर है। वह सब गुरुओं का गुरु अर्थात् जगत् गुरु है। उस सबसे बड़े परमात्मा कबीर जी की उपासना (भक्ति) करो।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी के पृष्ठ 1257 पर वाणी इस प्रकार लिखी है :-

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1257 (साकार परमात्मा) मलार महला 1 घरू 2

मलार महला १ ।। बागे कापड़ बोले बैण।। लम्मा नकु काले तेरे नैण।। कबहूं साहिबु देखिआ भैण।।१।। ऊडाँ ऊडि चड़ाँ असमानि।। साहिब सम्मृथ तेरै ताणि।। जलि थलि डूंगरि देखाँ तीर।। थान थनंतरि साहिबु बीर।।२।। जिनि तनु साजि दीए नालि खम्भ।। अति तृसना उडणै की डंझ।। नदरि करे ताँ बंधाँ धीर।। जिउ वेखाले तिउ वेखाँ बीर।।३।। न इहु तनु जाइगा न जाहिगे खम्भ।। पउणै पाणी अगनी का सनबंध।। नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरू।। सचि समावै एहु सरीरू।।४।।४।।६।।

इस अमृत वाणी में वाणी संख्या 2 में लिखा है ''थान थनंतरि साहिब बीर'' **इस वाणी में लगता है कबीर शब्द था जो प्रिन्ट करते समय छुट गया है अन्यथा एक ''भजन'' में दो बार बीर शब्द नहीं आता। क्योंकि इसी अमृत वाणी पृष्ठ 1257 पर एक वाणी और लिखी है। जो इस प्रकार है। वाणी संख्या 3 के अन्त में ''जिउ वेखाले तिउ वेखां बीर'' यहां फिर ''बीर'' शब्द है। इन दोनों में से एक में ''कबीर'' शब्द होना चाहिए। किसी कारण से छुट गया लगता है। अन्य प्रमाण देखें पृष्ठ 103 पर।**

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि श्री नानक देव जी का गुरु था। उसको बाबा जिंदा

कहते हैं। वही बाबा जिंदा पूर्ण परमात्मा भी है। उसका नाम कबीर है। वह धाणक रूप में काशी में लीला किया करता था। परमेश्वर साकार है, नराकार है। जैसे श्री नानक देव जी जैसे महापुरूष ने भी वक्त गुरु से नाम दान लेकर कल्याण कराया। इसी प्रकार सर्व भक्त समाज को वक्त गुरु की आवश्यकता है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है :-

कबीर गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान। गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो बेद, पुराण।।
कबीर राम कृष्ण से कौन बड़ा, उन्हूं भी गुरु कीन्ह। तीन लोक के वे धणी, गुरु आगे आधीन।।

भावार्थ है कि कबीर परमेश्वर जी अमर संदेश दे रहे हैं कि जो व्यक्ति गुरु बिन नाम जाप साधना करते हैं या दान देते हैं। वह व्यर्थ है। इसलिए पूरा गुरु खोज कर अपना जीवन सफल करना चाहिए। हिन्दू समाज श्री रामचन्द्र तथा श्री कृष्णचन्द्र जी से बड़ा प्रभु किसी को नहीं मानता। परमेश्वर कबीर जी बताना चाहते है कि आप के श्री राम जी तथा श्री कृष्ण जो तीन लोक के स्वामी हैं। उन्होंने भी गुरु बनाए थे। श्री राम ने वशिष्ट मुनि को तथा श्री कृष्ण जी ने ऋषि दुर्वासा जी को गुरु बनाया था (ध्यान रहे श्री कृष्ण जी के संदीपनी ऋषि अक्षर ज्ञान गुरु थे, आध्यात्मिक गुरु ऋषि दुर्वासा जी थे) तथा अपने गुरु जी का विशेष सत्कार करते थे तो अन्य प्राणियों को समझ लेना चाहिए कि आप की क्या स्थिति है। यदि गुरु शरण प्राप्त करके भक्ति नहीं की तो अनमोल मानव जीवन व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए सर्व से प्रार्थना है कि सन्त रामपाल दास जी महाराज वर्तमान में पूर्ण सतगुरु हैं। इनके पास से सतनाम (जो दो अक्षर हैं) प्राप्त करें। फिर आदि नाम (सारनाम) प्राप्त करके जाप करें तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्त करें।

कृप्या प्रमाण के लिए पढ़ें निम्न अमृत वाणी :-

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 567 (साकार परमात्मा) वडहंसु महला 1

एहु चुकावहे।। बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा।। वड़ा साहिबु है आपि अलख अपारा।।६।। तेरे बंके लोइण दंत रीसाला।। सोहणे नक जिन लम्मड़े वाला।। कंचन काइआ सुइने की ढाला।। सोवन्न ढाला कृसन माला जपहु तुसी सहेलीहो।। जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो।। हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला।। बंके लोइण दंत रीसाला।।७।। तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी।। कुहकनि कोकिला तरल जुआणी।। तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए।। सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरण।। स्रीरंग राती फिरे माती उदकु गंगा वाणी।। बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी।।८।।२।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1257 (साकार परमात्मा) मलार महला 1 घरू 2

मलार महला १ ।। बागे कापड़ बोले बैण।। लम्मा नकु काले तेरे नैण।। कबहूं साहिबु देखिआ भैण।।१।। ऊडाँ ऊडि चड़ाँ असमानि।। साहिब सम्मृथ तेरै ताणि।। जलि थलि डूंगरि देखाँ तीर।। थान थनंतरि साहिबु बीर।।२।। जिनि तनु साजि दीए नालि खम्भ।। अति तृसना उडणै की डंझ।। नदरि करे ताँ बंधाँ धीर।। जिउ वेखाले तिउ वेखाँ बीर।।३।। न इहु तनु जाइगा न जाहिगे खम्भ।। पउणै पाणी अगनी का सनबंध।। नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरू।। सचि समावै एहु सरीरू।।४।।४।।६।।

मलार महला ३ चउपदे घरू १ ੧ੳ सतिगुर प्रसादि।।
निरंकारू आकारू है आपे आपे भरमि भुलाए।। करि करि करता आपै वेखै जितु भावै तितु लाए।।

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 764 (साकार परमात्मा) रागु सूही महला 1 घरु 3

रागु सूही महला १ घरु ३ ੧ੳ सतिगुर प्रसादि।।
आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम।। घरि आपनड़ै खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम।। मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा।। दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा।।

(प्रमाण श्री गुरु ग्रन्थ साहेब सीरी रागु महला पहला, घर 4 पृष्ठ 25) -

तू दरीया दाना बीना, मैं मछली कैसे अन्त लहा।
जह–जह देखा तह–तह तू है, तुझसे निकस फूट मरा।
न जाना मेऊ न जाना जाली। जा दुःख लागै ता तुझै समाली।1।रहाऊ।।

नानक जी ने कहा कि इस संसार रूपी समुन्द्र में मैं मछली समान जीव, आपने कैसे ढूंढ लिया? हे परमेश्वर! आप तो दरिया के अंदर सूक्ष्म से भी सूक्ष्म वस्तु को जानने वाले हो। मुझे तो जाल डालने वाले(जाली) ने भी नहीं जाना तथा गोताखोर(मेऊ) ने भी नहीं जाना अर्थात् नहीं जान सका। जब से आप के सतलोक से निकल कर अर्थात् आप से बिछुड़ कर आए हैं तब से कष्ट पर कष्ट उठा रहा हूँ। जब दुःख आता है तो आपको ही याद करता हूँ, मेरे कष्टों का निवारण आप ही करते हो? (उपरोक्त वार्ता बाद में काशी में प्रभु के दर्शन करके हुई थी)।

तब नानक जी ने कहा कि अब मैं आपकी सर्व वार्ता सुनने को तैयार हूँ।

गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश -

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृ. 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृ. 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृ. 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृ. 439)

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब (प्रभु) एक ही है तथा उनका (श्री नानक जी का) कोई मनुष्य रूप में वक्त गुरु भी था जिसके विषय में कहा है कि पूरे गुरु से तत्वज्ञान प्राप्त हुआ तथा मेरे गुरु जी ने मुझे (अमृत नाम) अमर मन्त्र अर्थात् पूर्ण मोक्ष करने वाला उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही मेरा गुरु नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी काशी नगर में विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका कर रहा है। शास्त्र विरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मृत्यु व कर्मफल की आग में जलते देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भाग कर मैंने गुरु जी के चरणों में शरण ली।

बलिहारी गुरु आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।
आपीनै आप साजिओ आपीनै रचिओ नाउ।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।
तूं जाणोइ सभसै दे लैसहि जिंद कवाउ करि आसणु डिठो चाउ। (पृ. 463)

भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा जिंदा का रूप बनाकर बेई नदी पर आए अर्थात् जिंदा कहलाए तथा स्वयं ही दो दुनियाँ ऊपर (सतलोक आदि) तथा नीचे (ब्रह्म व परब्रह्म के लोक) को रचकर ऊपर सत्यलोक में आकार में आसन पर बैठ कर चाव के साथ अपने द्वारा रची दुनियाँ को देख रहे हो तथा आप ही स्वयम्भू अर्थात् माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, स्वयं प्रकट होते हो। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मं. 8 में है कि कविर् मनीषि स्वयम्भूः परिभू व्यवधाता, भावार्थ है कि कवीर परमात्मा सर्वज्ञ है (मनीषि का अर्थ सर्वज्ञ होता है) तथा अपने आप प्रकट होता है। वह (परिभू) सनातन अर्थात् सर्वप्रथम वाला प्रभु है। वह सर्व ब्रह्मण्डों का (व्यवधाता) भिन्न-भिन्न अर्थात् सर्व लोकों का रचनहार है।

एहू जीउ बहुते जनम भरमिआ, ता सतिगुरु शबद सुणाइया।। (पृ. 465)

भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा यह जीव बहुत समय से जन्म तथा मृत्यु के चक्र में भ्रमता रहा अब पूर्ण सतगुरु ने वास्तविक नाम प्रदान किया।

''सतनाम का रहस्य''

(यह निम्नलिखित विवरण सन्त रामपाल दास जी महाराज के सत्संगों से लिया गया है)

''प्राण संगली'' में राग केदार गौड महला-1 पृष्ठ 201 (पंजाब यूनिवर्सिटि = पंजाबी भाषा वाली) पर श्री नानक साहेब जी ने कहा :-

पिंड पड़े जीव चाल सी सिर काल कड़के आई।
नानक सचे नाम बिना जमपुर बंधा जाई।।

भावार्थ :- श्री नानक जी कह रहे हैं कि सच्चेनाम (सतनाम) बिन जीव को काल पकड़ लेता है। उसी को यमलोक में डाला जाता है।

''प्राण संगली'' नामक ग्रन्थ श्री नानक साहेब जी के श्री मुख से उच्चारित पवित्र वाणी है। जो महला पहला की अमृतवाणी है। इसमें सत्यनाम का स्पष्ट वर्णन है। इस सत्यनाम में दो अखर ओम्-सोहम् हैं। यह भेद कलयुग के 5505 वर्ष बीत जाने तक छुपा कर रखना था। जो कबीर परमेश्वर जी का आदेश था। इसीलिए ''प्राण संगली'' भाग-1 के प्रथम पृष्ठ पर ''आवश्यक सूचना'' नामक हैडिंग है इसमें उल्लेख है कि श्री नानक साहेब जी ने सिंगलादीप के राजा शिवनाभ से कहा था - ''इह ग्रंथ मेरी देह है, मेरा स्थूल रूप है, प्राणों मेरिओं का संग्रह कह्ये कवच है, जगत समुंद्र का इह पुल है। इह प्राण–संगली मैं तैनूँ बषशी है, इह अजर वस्तु है, सो तैं ही जरी है। इह प्राण–संगली अंम्रित प्रवाह है; तेरे ही मुख विषे प्रवेश होई है, होर तिन्न

लोकाँ विच इस वस्तू नूँ सम्हालता कोई नहीं ताँते प्राणों विषे प्राण–संगली रखनी'' **श्री नानक देव जी के इन वचनों से स्पष्ट होता है कि परमेश्वर कबीर देव जी (जिन्दा बाबा) ने श्री नानक साहेब जी को श्री धर्मदास जी की तरह ही इस मूल ज्ञान को तथा दो अक्षर के मूल मंत्र (सत्यनाम=ओम्-सोहम्) को गुप्त रखने की विशेष प्रार्थना की थी। जिस कारणवश से जिन्दा बाबा के वचनों का पालन करते हुए। श्री नानक साहेब जी ने राजा शिवनाभ से कहा कि यह ''प्राण संगली'' ग्रंथ मेरा शरीर है। ये मेरे प्राण हैं, इस के अन्दर एक विशेष विवरण है जो किसी के भी हाथ नहीं लगना चाहिए और तेरे अतिरिक्त तीन लोक में मुझे कोई व्यक्ति नजर नहीं आता जो मेरी इस अनमोल अमानत को सुरक्षित रख सके। इस ''प्राण संगली'' में वह भेद है जो संसार रूपी समुंद्र से पार होने का पुल है।**

इससे स्पष्ट है कि ''प्राण संगली'' में जो सतनाम का विशेष भेद है और इसको काल के दूतों अर्थात् वर्तमान के पंथों के संतों व महंतों से छुपा कर रखना था कि कहीं इन नकली पंथों के संत व महंतों के हाथ यह सतनाम ना लग जाये। जो सतलोक की महिमा बताते हैं और पांचों नाम (ओंकार, ररंकार, ज्योत निरंजन, सोहम् और सतनाम) काल के देते हैं तथा तीन नाम (सतपुरूख, अकाल मूर्त, शब्द स्वरूपी राम) दान करते हैं। ये काल के चलाये हुए पंथ हैं। क्योंकि जिससे यह राधा स्वामी पंथ प्रारम्भ हुआ है। उसका नाम है श्री शिव दयाल सिंह जी सेठ (आगरा, पन्नी गली वाला) है और इसका कोई गुरु नहीं था। देखें प्रमाण इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 26 पर। यदि यह सतनाम दो अखर वाला, इनको पता लग जाता तो ये सभी यही नाम देते लेकिन अधिकारी न होने से इनके द्वारा दिया गया नाम काम नहीं करता और जब परमेश्वर द्वारा भेजा हुआ अपना अंश अवतार धरती पर आता तो ये सभी पंथों के संत-महंत यही नाम देते मिलते जिस कारण से असली और नकली की भिन्नता करना कठिन हो जाता और सभी श्रद्धालु काल के मुख में चले जाते। यह महापरोपकार आदरणीय नानक साहेब जी ने हम कलयुग के जीवों पर किया है और काल को इसकी भिनक भी नहीं लगने दी। श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी के अंदर ''प्राण संगली'' की अमृत वाणियों को इसीलिए शामिल नहीं किया गया कि कहीं इस मंत्र (सतनाम=ओम्-सोहम् जो दो अक्षर का है) का ज्ञान काल के संतों-महंतों को न हो जाए। इस रहस्य को बनाए रखने के लिए श्री नानक साहेब जी ने एक अजीबो-गरीब लीला की थी जिसका वर्णन भाई बाले वाली जन्म साखी के अध्याय ''समुन्द्र की साखी'' में है कि एक बार बाला तथा मरदाना ने प्रार्थना की कि हे गुरुदेव हमें श्री लंका दिखाओ। इस पर श्री नानक साहेब जी ने कहा कि तुम आँखें बंद करो, आँखें बंद करके खोला तो समुन्द्र के किनारे खड़े थे। तब श्री नानक साहेब जी ने कहा कि मेरे पीछे-२ जल के ऊपर चले आओ तथा मुख से ''वाहे गुरु-वाहे गुरु'' का जाप करते रहो। जब जल के ऊपर चल रहे थे तो श्री नानक साहेब जी सतनाम के दो अक्षर (ओम्-सोहम्) का जाप कर रहे थे। मरदाने ने सोचा कि गुरु जी ओम्-सोहम् (सतनाम) जपते हुए जा रहे हैं। मरदाना

भी ओम्-सोहम् जपने लगा तो जल में डूबने लगा और चिल्लाया। तब श्री नानक साहेब जी ने कहा कि मरदाना गुरु जी की नकल नहीं करनी चाहिए, आज्ञा का पालन करना चाहिए। आज्ञा की अवहेलना करने वाले का यही परिणाम होता है। तूं फिर वही मंत्र जाप कर। मरदाना ने फिर से ''वाहे गुरु-वाहे गुरु'' कहना शुरू किया तो पुनः जल के ऊपर थल की तरह चलने लगा। इस घटना से पूरे सिख समाज में यह धारण फैल गई कि किसी ने भी ''ओम्-सोहम्'' का जाप नहीं करना है और यदि जाप किया तो मरदाना जैसा परिणाम होगा। भावार्थ है कि जो गुरुदेव जी की आज्ञा की अवहेलना करके ओम्-सोहम् जाप करेगा उसको बहुत हानि होगी। जैसे मरदाना को हुई। इसलिए जिस समय पांचवें गुरु श्री अर्जुनदेव जी ने सब वाणियों को संग्रह करके ग्रंथ का रूप दिया। उस समय प्राण संगली नामक ग्रंथ को सिंगला दीप से ग्रंथ साहेब में शामिल करने के उद्देश्य से मंगवाया। प्राण संगली को पढ़ने से पता चला कि इसमें वही मंत्र (ओम्-सोहम्) बहुत बार लिखा है। पंजाब युनिवर्सिटी पटियाला के डा. चतर सिंह खानपुरी द्वारा सम्पादित ''प्राण संगली'' (पंजाबी भाषा में लिखी है) इसकी भूमिका में कहा है कि ''प्राण संगली'' के कुल 113 अध्याय थे। उनमें से केवल 80 अध्याय ही प्रकाश में आए हैं शेष छोड़ दिए गए हैं।

विचारणीय विषय है कि सम्पूर्ण ''प्राण संगली'' क्यों प्रकाशित नहीं की गई। कारण यही था कि इस ग्रंथ में सतनाम तथा सारनाम का भेद था। पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी ने सोचा कि यदि प्राण संगली को गुरु ग्रंथ साहेब में शामिल कर लिया गया तो कही सिख समाज इस मंत्र (ओम्-सोहम् जो सतनाम है) का भी जाप न करने लग जाए और श्री गुरु नानक साहेब जी की आज्ञा का उल्लंघन ना हो जाए। इस बात को मद्दे नजर रखते हुए इन वाणियों को गुरु ग्रंथ साहेब में शामिल नहीं किया गया और अभी तक यह ग्रंथ लुप्त प्राय ही रहा तथा सतनाम का रहस्य बना रहा और नकली संतों महंतों को जो काल के दूत हैं उनको यह पता ही नहीं लगा कि वह ''सतनाम'' वस्तु क्या है। इसका प्रमाण देखें फोटो कापी पुस्तक ''सारवचन राधा स्वामी वार्तिक'' जिसके प्रकाशक है :- जगदीश चन्द्र सेठी, सेक्रेटरी, राधास्वामी सत्संग ब्यास, डेरा बाबा जैमल सिंह, पंजाब, तथा मुद्रक :- लक्ष्मी ऑफसेट प्रिन्टर्स, दिल्ली, के उन पृष्ठों की जिसमें राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक श्री शिव दयाल जी के सत्संग वचनों का संग्रह है। जिसमें सतनाम की परिभाषा बताई गई है जो कोरी उआ-बाई है। जो इस प्रकार है इस पुस्तक के पृष्ठ 13 दफा 1 में लिखा है कि ''बस काम इतना है कि इंसान आपनी रूह को इसके खजाने और निकास यानि मुकाम सतनाम और राधास्वामी में पहुँचावे'' **फिर पृष्ठ 14 दफा 3 में कहा है कि** ''सिर्फ संत मंजिल पांचवी यानि सतनाम पर और कोई बिरले संत मंजिल आठवीं यानि राधास्वामी पद तक पहुँचे'' **यहां दोनों पृष्ठों 13 व 14 अर्थात् दफा 1 तथा 2 में श्री शिवदयाल जी ने (राधा स्वामी पंथ के प्रवर्तक ने) सिद्ध कर दिया कि सतनाम को स्थान कहते हैं। फिर पृष्ठ 15 पर दफा नं. 4 में सतनाम को इस प्रकार परिभाषित किया है :-** ''अब समझना चाहिए कि राधास्वामी पद सबसे ऊँचा मुकाम है और यही नाम

कुल मालिक और सच्चे साहिब और सच्चे खुदा का है और इस मुकाम से दो स्थान नीचे सतनाम का मुकाम है कि जिसको सन्तों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरूष करके बयान किया है। इससे मालूम होगा कि यह दो स्थान विश्राम सन्त और परम सन्त के हैं और सन्तों का दर्जा इसी सबब से सबसे ऊँचा है। इन स्थानों पर माया नहीं है और मन भी नहीं है और यह स्थान कुल नीचे के स्थानों पर माया नहीं है और मन भी नहीं है और यह स्थान कुल नीचे के स्थानों और तमाम रचना के मुहीत हैं यानि सब रचना इसके नीचे और इसके घेर में है।

राधास्वामी पद को अकह और अनाम भी कहते हैं, क्योंकि यही पद अपार और अनन्त और अनादि है और बाकी के सब मुकाम इसी से प्रकट यानि पैदा हुए और सच्चा ला—मकान जिसको स्थान भी नहीं कह सकते, इसी को कहते हैं।''

यह उपरोक्त व्याख्या श्री शिवदयाल जी राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक की है जिससे पता चलता है कि इस महाशय को सतनाम का क ख का भी ज्ञान नहीं था अर्थात् यह पूर्ण रूप से अज्ञानी था और यह गुरु ग्रंथ साहेब जी को पढ़ा करता था और इसका कोई गुरु भी नहीं था और यह काल भगवान (ज्योति निरंजन) से प्रेरित तथा उसी का भेजा हुआ दूत था। यदि इसको इस दो अक्षर के नाम अर्थात् सतनाम (ओम्-सोहम्) का पता लग जाता तो यह सारा समुदाय यही दो अक्षर के नाम सतनाम का जाप कर रहा होता और इससे प्राप्त नाम सतनाम से किसी को भी कोई लाभ नहीं होना था, क्योंकि यह अधिकारी नहीं था। क्योंकि इसका स्वयं कोई गुरु नहीं था। कबीर साहेब जी कहते हैं :-

कबीर गुरु बिन माला फेरते गुरु बिन देते दान,
गुरु बिन दोनों निष्फल हैं,चाहे पूछो वेद पुराण।।

श्री नानक साहेब जी ने भी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ 946 पर स्पष्ट किया है कि :-

बिन सतगुरु सेवे जोग न होई। बिन सतगुरु भेटे मुक्ति न होई।
बिन सतगुरु भेटे नाम पाइआ न जाई। बिन सतगुरु भेटे महा दुःख पाई।
बिन सतगुरु भेटे महा गरबि गुबारि। नानक बिन गुरु मुआ जन्म हारि।

इस अमर संदेश में श्री नानक जी ने स्पष्ट किया है कि बिना वक्त गुरु की शरण में जाए न तो मोक्ष होगा और न ही जीव का अहंकार नाश होगा। जो जीव को परमात्मा से दूर रखता है। सतगुरु के सेवे अर्थात् शरण में जाए बिना जोग अर्थात् साधना भी सफल नहीं हो सकती। गुरु जी की शरण बिना नाम नहीं मिल सकता और नाम बिना मुक्ति नहीं हो सकती। झूठे गुरु से भी कोई कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। बिना सतगुरु के महादुःख होगा तथा बिना गुरु की शरण ग्रहण किए जुऐ में हारे हुए जुआरी की इस मानव जन्म को हार कर मर जाएगा। श्री गुरु नानक देव जी सख्ती के साथ कह रहे हैं कि पूरे गुरु की शरण प्राप्त करके जन्म सफल करो। यह मानव जीवन अनमोल है बार-२ प्राप्त नहीं होगा। कृप्या प्रमाण के लिए पढ़ें निम्न वाणी :-

श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी पृष्ठ 1342 (गुरु महिमा) प्रभाती असटपदीआ महला 1 बिभास

सतिगुरु पूछि सहज घरू पावै।।३।। रागि नादि मनु दूजै भाइ।। अंतरि कपटु महा दुखु पाइ।। सतिगुरु भेटै सोझी पाइ।। सचै नामि रहै लिव लाइ।।४।। सचै सबदि सचु

कमावै।। सची बाणी हरि गुण गावै ।। निज घरि वासु अमर पदु पावै।। ता दरि साचै सोभा पावै।।५।। गुर सेवा बिनु भगति न होई ।। अनेक जतन करै जे कोई।।

जैसा कि कबीर परमेश्वर जी ने तथा श्री नानक साहेब जी ने कहा है कि जो व्यक्ति बिना गुरु के साधना करता है। उसको कोई अध्यात्मिक लाभ नहीं हो सकता चाहे कितना ही यत्न करे। इसी के परिणामस्वरूप श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक) अधोगति को प्राप्त हुए। क्योंकि सतनाम जो दो अक्षर का है। उसको पूरे संत से अर्थात् अधिकारी से प्राप्त करके साधना करने से मोक्ष प्राप्ति होती है। इस सतनाम के देने वाले अधिकारी संत की खोज श्री शिवदयाल जी ने नहीं की तथा स्वयंभू गुरु बनकर औरों को दीक्षा देने लगा। जिस कारण से प्रेत योनि को प्राप्त होकर अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश हुआ और फिर उसी तरह हुक्का पीने लगा तथा बुक्की के माध्यम से ही खाना खाने लगा। मोक्ष प्राप्त प्राणी के यह लक्षण नहीं होते। जब इस राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक की ही ये दुर्दशा हुई है तो सहज में समझ लेना चाहिए कि अनुयाइयों का क्या होगा। वही दशा होगी जो श्री शिवदयाल जी की हुई।

प्रमाण के लिए कृप्या देखें फोटो कापी जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज अर्थात् शिव दयाल जी का जीवन चरित्र। इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 26 से 27 पर।

श्री शिव दयाल जी के वचनों के आधार से श्री सावन सिंह जी ने ''संतमत प्रकाश'' पुस्तक को कई भागों में लिखा है। उसमें भी सतनाम के विषय में जानकारी दी गई जो कोरा अज्ञान भरा है। जो इस प्रकार है :- श्री खेमामल जी के गुरु श्री सावन सिंह जी ने संतमत प्रकाश भाग-3 के पृष्ठ 102 पर कहा है कि ''सतनाम या सचखण्ड यह तीसरा लोक है'' **फिर पृष्ठ 107 पर चार रामों का वर्णन करते हुए कहा है कि** ''सतनाम चौथा राम है। यह असली राम है'' **फिर संतमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ 262 पर कहा है कि** ''सतनाम हमारी जाति है'' **पूर्वोक्त वर्णन श्री शिवदयाल सिंह जी (एक राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक) के सत्संगों का संग्रह है तथा उपरोक्त वर्णन श्री सावन सिंह जी (बाबा जैमल सिंह के शिष्य डेरा ब्यास) के सत्संगों का संग्रह है। जिनको सतनाम का ही पता नहीं कि वास्तव में यह क्या वस्तु है। ये सतनाम (दो अक्षर=ओम्-सोहम्) के जाप की साधना न करके काल के पांचों नामों का जाप करते रहे, जिनके विषय में श्री तुलसी साहेब जी हाथरस वाले ने अपने द्वारा रचित पुस्तक घट रामायण भाग-2 के पृष्ठ 27 पर लिखा है कि** ''पांचों नाम काल के जानों'' **(ररंकार, ओंकार, ज्योति निरंजन, सोहं तथा सतनाम) इन से अन्य हट कर छटवां नाम ''सतनाम'' तथा अन्य ''आदिनाम'' के विषय में कहा है कि इन (सतनाम तथा आदि नाम=सारनाम) से मोक्ष होगा। ये नाम इन पंथों (राधास्वामी पंथ, सच्चा सौदा सिरसा वाले पंथ) के पास नहीं हैं। इसलिए इनका मोक्ष नहीं हो सकता। क्योंकि पांच नामों का जाप करने वाले श्री शिवदयाल जी (राधास्वामी पंथ के प्रवर्तक) की महादुर्दशा हुई। वह स्वयं प्रेत बनकर अपनी शिष्या बुक्की में प्रवेश होकर समय व्यतीत किया करता था और बुक्की में प्रवेश करके**

हुक्का पीता था, खाना खाता था तथा संगत की शंकाओं का समाधान करता था। देखें प्रमाण फोटो कापी जीवन चरित्र स्वामी जी महाराज की इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 26 से 27 पर। तो अन्य अनुयाइयों की भी यही दशा होगी।

श्री सावन सिंह के शिष्य श्री खेमामल जी (शाह मस्ताना जी) थे। श्री सावन सिंह जी से ही उपदेश प्राप्त करके श्री खेमामल जी (शाह मस्ताना जी) ने सच्चा सौदा सिरसा में डेरे की स्थापना की है तथा मनमुखी तीन नाम (अकाल मूर्त, शब्द स्वरूपी राम, सतपुरूख) का जाप संगत को दान करने लगा। जो कि किसी भी संत की वाणी में प्रमाण नहीं है। जिनको परमात्मा पाया हो तथा न ही किसी सद्शास्त्र में इन तीन नामों का प्रमाण है। इसी के परिणाम स्वरूप श्री खेमामल जी इन्जैक्शन रियेक्शन से मृत्यु को प्राप्त हुए। (प्रमाण :- पुस्तक ''सतगुरु के परमार्थी करिश्मों का वृतान्त पृष्ठ 31 पर जिसके प्रकाशक=इन्द्रसैन प्रबन्धक डेरा सच्चा सौदा सिरसा, हरियाणा) ये सभी काल के दूत थे। यदि इनमें से किसी को भी सतनाम का पता लग जाता तो ये इसी मंत्र का जाप अपनी संगत को दे जाते तथा जब भक्तियुग आता अर्थात् पूर्ण परमात्मा का अवतारी संत आता तो नकली और असली पंथ में भिन्नता करना कठिन हो जाता। इसलिए परमेश्वर कबीर जी के आदेशानुसार श्री नानक साहेब जी ने मरदाना को यह दो अक्षर (ओम्-सोहम्) का जाप न करने की आज्ञा दी थी और स्वयं उच्चारण करके वह दो अक्षर का नाम उजागर भी कर दिया था ताकि प्रमाण रहे कि नानक साहेब जी यही सतनाम (ओम्-सोहम्) जाप करके मोक्ष को प्राप्त हुए और इसी से आगे मोक्ष होगा अन्य किसी मंत्र से नहीं हो सकता। वाहे गुरु-वाहे गुरु जपने को इसलिए कहा गया था कि यह नाम पूर्ण परमात्मा कबीर जी की महिमा का बोधक है। जैसे संत गरीबदास जी महाराज (गांव छुड़ानी, जिला झज्जर, हरियाणा) ने अपनी अमर वाणी में कहा कि :-

झांखी वेख कबीर की नानक कीति वाह, वाह सिखों के गल पड़ी कौन छुड़ावै ता।

भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी को परमेश्वर कबीर साहेब जी जिन्दा बाबा के वेश में सुलतानपुर शहर के पास बेई नदी पर मिले थे और उनको अपने साथ सच्चखण्ड (सतलोक) लेकर गये थे। सतलोक के अंदर परमेश्वर रूप में जिन्दा बाबा को देखकर श्री नानक साहेब जी ने परमेश्वर की महिमा को सांकेतिक शब्दों में वर्णन करते हुए कहा है वाहे गुरु-वाहे गुरु। इसका भावार्थ है कि धन्य है यह परमेश्वर कबीर जी जो मुझे बेई नदी पर मिले और सतनाम जो दो अक्षर (ओम्-सोहम्) का है वह प्रदान किया जिससे मोक्ष सम्भव है। इसलिए इस ''वाहे गुरु'' शब्द के बोलने से प्रभु की महिमा अर्थात् स्तुति का लाभ प्राप्त होता है। जिससे सांसारिक सुख तो प्राप्त हो जाते हैं परन्तु मोक्ष नहीं और न ही किसी संकट का निवारण होता है। इस मंत्र का पूरे गुरु से (जो श्री नानक साहेब जी जैसा हो) नाम लेकर जाप करने से मानव शरीर भी प्राप्त हो सकता है परन्तु मोक्ष नहीं।

परमेश्वर कबीर जी के आदेशानुसार श्री नानक साहेब जी ने सतनाम के दो अक्षर (ओम्-सोहम्) का जाप न देकर के ''वाहे गुरु'' जाप करने का आदेश दिया।

इस विचार से कि जब तक कलयुग 5505 वर्ष बीतेगा उस समय सतनाम के दो अक्षर (ओम्-सोहम्) का जाप देने का समय आयेगा। तब तक इस ''वाहे गुरु'' मंत्र के जाप से इन पुण्यात्माओं को पुनः मनुष्य जन्म मिलते रहेगें। जब यह कलयुग के 5505 वर्ष बीत जाने पर मोक्ष समय आयेगा। तब अपना अवतार धरती पर परमेश्वर कबीर जी भेजेंगे। उससे वास्तविक मंत्र (ओम्-सोहम्) प्राप्त करके सभी शरणागत् जीवात्माऐं सतलोक चले जायेंगी। वह अवतार संत रामपाल दास जी महाराज हैं। जिनको परमेश्वर कबीर जी ने सन् 1997 में जब कलयुग 5505 वर्ष पूरा हुआ तब सतनाम (ओम-सोहम्) का नाम दान करने का सही समय बताया तथा सारनाम (आदि नाम) को सार्वजनिक करने तथा दान करने का आदेश दिया। क्योंकि उस समय तक सभी काल के दूतों द्वारा चलाऐं गये पंथों के संतों व महंतों द्वारा बताई गई मोक्ष विधि जो शास्त्रविरूद्ध है। सबको बता चुके होगें और फिर वह परमेश्वर का भेजा हुआ अवतार सद्ग्रन्थों तथा परमात्मा प्राप्त महापुरूषों की वाणी से सिद्ध करेगा कि कौन सी साधना सत्य है तथा कौन सी असत्य है।

इस तुलनात्मक तरीके से सभी पहचान जायेंगे कि धरती पर अवतार (संत रामपाल दास जी महाराज) अवतरित हो चुके हैं श्रद्धालु भक्त उन नकली पंथों के महंतों संतों को त्यागकर वास्तविक मंत्र सतनाम (ओम्-सोहम्) तथा आदि नाम (सारनाम) प्राप्त करके अपना कल्याण करवायेंगे।

प्राण संगली के पृष्ठ ''आवश्यक सूचना'' पर यह भी लिखा है कि :- इस वचन से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ प्राणों का संग्रह रूप है। जिसमें प्राणपिंड का निर्णय और प्राणों से मन के निरोध का पूरा भेद लिखा है। संभव है कि इसको ''गुरु ग्रंथ साहेब'' जिल्द में शामिल न करने की वजह यही हो कि गुरु अर्जुनदेव जी ने समयानुसार इसे हर एक छोटे-बड़े की दृष्टि में लाना उचित न समझा।

इस दुर्लभ ग्रन्थ के छापने का हमारा कदापि साहस न होता यदि संत संपूरण सिंह सरीखे तरनतारन के नानक-पंथी महात्मा जिनकी गहरी जानकारी और अनुभव विचार का उनकी टिप्पणी प्रत्यक्ष प्रमाण है इस कारण को अपने जिम्मे न लेते।

विवेचन :- जैसा कि इस उपरोक्त उल्लेख में अनुवादकर्ता ने स्पष्ट किया है कि प्राण संगली को गुरु ग्रंथ साहेब में शामिल न करने की यही वजह रही होगी कि श्री गुरु अर्जुन देव जी ने समय अनुसार इसे हर एक छोटे-बड़े की दृष्टि में लाना उचित न समझा। श्री गुरु ग्रंथ साहेब में प्राण संगली को शामिल न करने तथा श्री नानक साहेब जी ने इस ग्रंथ का नाम प्राण संगली क्यों रखा इसके कारण की वास्तविकता को तो वही बता सकता है जिसकी गति उनकी सी हो अर्थात् जो श्री नानक साहेब जी जैसा परमात्मा का अवतार हो। इसी संदर्भ में भाई बाले वाली जन्म साखी पृष्ठ 272-273 पंजाबी वाली में प्रहलाद भक्त ने कहा है कि मरदाना यहां पर पहले (परमेश्वर) कबीर जी आए थे तथा अब श्री नानक साहेब जी तथा एक और आयेगा जो जाट जाति में पंजाब की धरती पर जन्म लेगा तथा इन्हीं जैसा होगा अर्थात् धरती पर अवतार होगा।

उपरोक्त जानकारी संत रामपाल जी महाराज ने स्पष्ट की है कि किस कारण से प्राण संगली को श्री गुरु ग्रंथ साहेब में शामिल नहीं किया गया।

प्रश्न : इस ग्रंथ का नाम ''प्राण संगली'' क्यों रखा ?

उत्तर : (संत रामपाल दास जी महाराज का) :- जैसा कि भाई बाले वाली जन्म साखी के अध्याय समुद्र की साखी में प्रमाण है कि नानक साहेब जी ने ओम्-सोहम् का जाप मौखिक करके सुनाया परन्तु जाप करने की विधि नहीं बताई थी और यह प्रमाणित करना भी आवश्यक था कि श्री नानक साहेब जी यह दो अक्षर का नाम जाप करके ही मोक्ष को प्राप्त हुए। वास्तव में इस मंत्र का जाप प्राणों से (स्वांस-उस्वांस से) जाप करना होता है। इसलिए इस विधि को रहस्यमय रखना था तथा उनको ये मालूम था कि जब परमेश्वर कबीर साहेब धरती पर अवतार भेजेंगे। वह अवतार इसके रहस्य को उजागर करेगा तथा श्रद्धालुओं को यथार्थ भक्ति प्रदान करके कृतार्थ करेगा अर्थात् सच्चखण्ड (सतलोक) भेज देगा। इसलिए इस ग्रंथ का नाम ''प्राण संगली'' रखा गया। ध्यान रहे कि भाई मरदाना वाली घटना को मद्दे नजर रखते हुए सतनाम के दो अक्षर (ओम्-सोहम्) का जाप सिख धर्म के शेष गुरुओं जी ने भी नहीं किया। श्री नानक साहेब जी को छोड़ शेष 9 गुरु साहेबान आदि नाम (सारनाम) से अपरिचित थे। श्री गुरु ग्रन्थ साहेब जी के पृष्ठ 1171 पर लिखा है कि :-

जै तू पढ़या पंडित बिन, दोय अख्खर बिन दोय नावां।
प्रणवत नानक एक लंघाए, जे कर सच्च समावां।।

भावार्थ है की श्री नानक साहेब जी ने कहा है कि हे पंडित! यदि आप को दो अक्षर (ओम्-सोहम्) से बने सतनाम का ज्ञान नहीं है। ये तुझे पढ़ने को नहीं मिले तो इन शास्त्रों के पढ़ने से मोक्ष नहीं है। जिनमें दो अक्षर के सतनाम का ज्ञान नहीं है। फिर श्री नानक साहेब जी ने कहा है कि इस सतनाम से भिन्न एक (आदि नाम) भी है मर्यादा में रहते हुए उपरोक्त मन्त्रों का जाप करने वाला संसार सागर को लांघ जाएगा अर्थात् पार हो जाएगा।

यह उपरोक्त सर्व जानकारी (1. प्राण संगली को श्री गुरु ग्रंथ साहेब में क्यों नहीं शामिल किया गया तथा इसका नाम प्राण संगली कैसे रखा गया।) वर्तमान में धरती पर अवतरित संत रामपाल दास जी महाराज ने दी है। इससे सिद्ध हुआ कि निःसंदेह वह धरती पर अवतार संत रामपाल दास जी महाराज हैं।

२६ जीवन—चरित्र

गुरू जी महाराज राजा की प्रेम भरी और दीनतामय विनय से प्रसन्न होकर धर्मशाला में जा पधारे जहाँ राजा ने बड़े उत्साह के साथ रानी सहित उनकी षोड़श प्रकार की पूजा करके स्वर्ण थाल में विधिवत आरती की और सच्चा शिष्य बन कर गुरू साहेब से अष्टयोग तथा भक्तियोग (सुरत शब्द) का सांगोपांग उपदेश पाकर मुक्ति का परवाना हासिल किया। गुरू साहेब ने राजा के प्रेम के बश कुछ काल वहाँ रहकर और ११३ अध्याय रूप ''प्राण संगली'' की रचना द्वारा सब प्रकार के योग में उसे दृढ़ करके उस योग कलानिधि रूप अनमोल ग्रंथ को इस आज्ञा के साथ राजा के अर्पण कर दिया कि उसे अपने पास सँभाल कर रक्खे और जब कोई शिष्य गुरू साहेब के देश का लेने को आवे तो उसे दे देवे।

यह फोटो कापी ''प्राण संगली'' के ''निवेदन'' पृष्ठ 26 की है। जिसके

प्रकाशक हैं = बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स 56 A/13, मोतीलाल नेहरू रोड़, इलाहाबाद-211002 की है तथा इसके अनुवाद कर्ता श्री सम्पूर्ण सिंह (तारनतरन-पंजाब के रहने वाले हैं) इसमें स्पष्ट है कि श्री नानक देव जी ने सुनियोजित तरीके से ''प्राण संगली'' की रचना करके राजा शिवनाभ के पास सुरक्षित रखकर निर्देश दिया था कि यह अनमोल ग्रंथ अभी गुप्त रखना तथा मेरी प्रेरणा से कोई शिष्य मेरे देश का लेने आए तो उसे दे देना।

निवेदन

श्रीगुरु नानक साहब के पंचम स्थान पर श्रीगुरु अर्जन देव जी हुए हैं; जिन्होंने गुरबाणी की बीड़ बांधते समय भाई पैड़ा नामी एक शिष्य को संगलादीप भेज कर राजा शिवनाभ के पौत्र के पास से यह ग्रन्थ मँगाया था जिसे किसी कारण विशेष से श्री गुरू ग्रन्थ साहब की बीड़ में रखना उचित न समझ कर सर्वथाही जल प्रवाहित कर दिया था। जो कि एक परम प्रेमी साधू की अत्यंत प्रार्थना से द्रवीभूत हुए गुरु साहब के बचन अनुसार जल से निकलवाया और जैसे का तैसा उसे ही वषशिश कर दिया गया था जिसका प्रसंग गुर प्रताप सूर्ज प्रकाश नामक प्रमाणिक इतिहास की त्रितिया राशिगत ३२वें अंशु में लिखा है॥

यह फोटो कापी ''प्राण संगली'' के ''निवेदन'' पृष्ठ 5 की है। जिसके प्रकाशक हैं = बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स 56 A/13, मोतीलाल नेहरू रोड़, इलाहाबाद-211002 की है तथा इसके अनुवाद कर्ता श्री सम्पूर्ण सिंह (तारनतरन-पंजाब के रहने वाले हैं) उपरोक्त दोनों फोटो कापीयाँ पृष्ठ संख्या 5 तथा 26 में स्पष्ट है कि ''पांचवें गुरु अर्जुन देव जी हुए हैं जिन्होंने गुरुबाणी की बीड़ (जिल्द) बांधते समय भाई पैड़ नामक एक शिष्य को संगलादीप भेजकर राजा शिवनाभ के पौत्र के पास से यह (प्राण संगली) ग्रन्थ मंगाया था। जब श्री अर्जुन देव जी ने देखा कि इसमें तो ओम्-सोहम् दो अक्षर का नाम (सतनाम) है स्पष्ट लिखा है। श्री अर्जुन देव जी ने इस ''प्राण संगली'' ग्रन्थ को श्री गुरु ग्रन्थ की बीड़ में रखना उचित न समझ कर सारा का सारा ग्रन्थ जल प्रवाहित कर दिया। फिर एक प्रेमी साधु की प्रार्थना पर उसे पूरा का पूरा वापिस निकाल लिया। जो आज अपने करकमलों में है। ''जल में प्रवाह करने का कारण था कि जो ''समुद्र की साखी'' नामक अध्याय में भाई बाले वाली जन्म साखी में बताया है की जब हम लंका की ओर समुद्र के जल पर थल की तरह श्री नानक साहेब जी की आज्ञा से उन्हीं की शक्ति से चले तो नानक जी ने कहा कि ''तुम दोनों बाला ते मरदाना मेरे पीछे-२ चले आओ तथा ''वाहे-गुरु'' ''वाहे-गुरु'' बोलो तथा स्वयं श्री नानक साहेब जी ओम्-सोहम् दो अक्षर के मंत्र (सतनाम) का उच्चारण करके जाप करते हुए जा रहे थे। तब मरदाना भी ओम्-सोहम् मंत्र का जाप करने लगा तो समुद्र में डूबने लगा। तब श्री नानक जी ने मरदाना को ओम्-सोहम् मन्त्र न जपने को कहा तथा उसे ''वाहे गुरु'' ''वाहे गुरु'' का जाप ही करने को कहा। फिर मरदाना ''वाहे गुरु'' का जाप करने लगा तो पहले की तरह जल पर चलने लगा। श्री गुरु अर्जुन देव

जी ने इसी को मध्य नजर रखते हुए ''प्राण संगली'' नामक ग्रन्थ को जल प्रवाह करने की सोची थी। यदि यह ग्रन्थ (प्राण संगली) उस दिन जल मग्न हो जाता तो सिख समाज के हाथों से कोहिनूर हीरा अर्थात् बहुमूल्य वाणी चली जाती। जिस की हानि की पूर्ति किसी कीमत पर नहीं होती।

प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी भाई बाले वाली जन्म साखी के पृष्ठ 547 पर ''समुद्र दी साखी''

ਸਮੁੰਦਰ ਦੀ ਸਾਖੀ (੫੪੭)

ਸਮੁੰਦਰ ਦੀ ਸਾਖੀ

ਬਾਲਾ ਸੰਧੂ ਵਾਚ॥ ਤਾਂ ਤੇ ਹੇ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਜੀ ਜਦ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਅਜਿਤੇ ਪਾਸੋਂ ਵਿਦਿਆ ਹੋਏ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਕਿਹਾ ਸਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਜੀ ਅਸਾਂ ਸਮੁੰਦਰ ਤਾਂ ਦੇਖਿਆ ਪਰ ਲੰਕਾ ਨਾ ਦੇਖੀ ਜਿਥੇ ਰਾਮਚੰਦ੍ਰ ਜੀ ਚੜ੍ਹਾਈ ਕੀਤੀ ਹੈ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਕਿਹਾ ਚਲੋ ਭਾਈ ਬਾਲਾ ਤੇ ਮਰਦਾਨਾ ਤੁਹਾਨੂੰ ਰੰਜ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਅਖੀਂ ਮੀਟੋ ਜਾਂ ਅਖੀਂ ਮੀਟਕੇ ਖੋਲ੍ਹੀਆਂ ਤਾਂ ਸਮੁੰਦਰ ਦੇ ਕੰਢੇ ਜਾਇ ਖੜੇ ਹੋਏ ਤੇ ਆਖਣ ਲਗੇ ਬਾਲਾ ਤੇ ਮਰਦਾਨਾ ਮੇਰੇ ਪਿਛੇ ਪਿਛੇ ਚਲੇ ਆਓ ਮੁਖੋਂ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਹਿੰਦੇ ਆਓ ਤੇ ਅਗੇ ਅਗੇ ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੁਰ ਪਏ ਜੈਸੇ ਧਰਤੀ ਉਪਰ ਤੁਰਦੇ ਸਨ ਓਸੇ ਤਰਾਂ ਸਮੁੰਦਰ ਉਪਰ ਤੁਰ ਪਏ ਜਾਂ ਚਲੇ ਜਾਵਣ ਤੇ ਪਿਛੇ ਬਾਲਾ ਤੇ ਮਰਦਾਨਾ ਜਾਵਣ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਵਿਚਾਰ ਕੀਤੀ ਕਿ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਓਅੰ ਸੋਹੰ ਜਪਦੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਵੀ ਓਅੰ ਸੋਹੰ ਲਗਾ ਜਪਣ ਤੇ ਲਗਾ ਗੋਤੇ ਖਾਵਣ ਜਾਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਦੇਖਨ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਗੋਤੇ ਖਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕਿਹਾ ਮਰਦਾਨਾ ਗੁਰੂ ਦੀ ਕਰਨੀ ਵਲ ਨਹੀਂ ਦੇਖਣਾ ਗੁਰੂ ਦੇ ਬਚਨਾਂ ਪਰ ਚਲਨਾ ਚਾਹੀਏ ਤੂੰ ਮਰਦਾਨਾ ਓਹੋ ਆਖ ਜੋ ਅਸਾਂ ਆਖਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਫੇਰ ਲਗਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਹਿਣ ਤਾਂ ਫਿਰ ਜਲ ਉਪਰ ਓਸੇ ਤਰਹ ਤੁਰਨ ਲਗਾ।

प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी भाई बाले वाली जन्म साखी के पृष्ठ 275-276 पर ''आगे साखी और चली'' (साखी सच्चखण्ड की)

ਸਾਖੀ ਸੱਚ ਖੰਡ ਦੀ (੨੭੫)

ਆਗੇ ਸਾਖੀ ਸਚਖੰਡ ਦੀ ਚਲੀ

ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਧੁਰ ਸਚਖੰਡ ਦਰਬਾਰ ਮੇਂ ਜਾਇ ਪਹੁੰਚੇ ਜਹਾਂ ਬਡਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹੈ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਰੂਪ ਤਖਤ ਕੇ ਉਪਰ ਸਤ ਨਿਰੰਕਾਰ ਜੋਤੀ ਸਰੂਪ ਬੈਠੇ ਹੈਂ ਸੰਪੂਰਨ ਭਗਤ ਅਵਤਾਰ ਹਾਥ ਜੋੜ ਕਰ ਖੜੇ ਹੈਂ ਅਤੇ ਬਾਬਾ ਨਾਨਕ ਜੀ ਨੇ ਓਹ ਜੋ ਕੋਟਾਨ ਸੂਰਜ ਕੇ ਸਮਾਨ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹੈ ਕੋਟਾਨ ਚੰਦ੍ਰਮਾਂ ਜੈਸਾ ਸੀਤਲ ਇਸ ਕਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਹੈ ਉਸ ਸਚੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਵਿਖੇ ਪਰਵੇਸ਼ ਕੀਆ ਉਸ ਜੋਤ ਰੂਪ ਭਗਵਾਨ ਕੀ ਉਸਤਤ ਕਰੀ ਔਰ ਆਗੇ ਸਤ ਸਰੂਪ ਨਿਰੰਕਾਰ ਵਿਸ਼ਟੂ ਜੀ ਬਿਰਾਜਮਾਨ ਹੈਂ ਸਰਬ ਸਮਰਥ ਸਰਬ ਸ਼ਕਤੀਵਾਨ ਭਗਵੰਤ ਜੀ ਨੇ ਕਹਿਆ ਆਓ ਨਾਨਕ ਭਗਤ ਤੂ ਸਦਾ ਹੀ ਮੇਰੇ ਮੇਂ ਮਿਲਿਆ ਹੈਂ ਤੇਰੇ ਔਰ ਮੇਰੇ ਮੇਂ ਕੋਈ ਭੇਦ ਨਹੀਂ ਪਰ ਜਿਸ਼ ਵਾਸਤੇ ਸੰਸਾਰ ਮੇਂ ਸਤਿਨਾਮ ਉਪਦੇਸ਼ ਕੇ ਜਪਾਉਣ ਕੇ ਵਾਸਤੇ ਗਏ ਸੇ ਸੋ ਦ੍ਰਿੜਾਯਾ ਹੈ ਤਾਂ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਕਹਿਆ ਹੇ ਸਰਬੱਗ ਸਵਾਮੀ! ਜਹਾਂ ਆਪ ਦੀ ਆਗਿਆ

(੨੭੬) ਸਾਖੀ ਸੱਚ ਖੰਡ ਦੀ

ਭਈ ਤਹਾਂ ਸਤਿਨਾਮ ਦਾ ਚੱਕ੍ਰ ਫੇਰਿਆ ਹੈ ਜਹਾਂ ਜਹਾਂ ਆਪਕਾ ਹੁਕਮ ਹੋਏਗਾ ਤਹਾਂ ੨ ਸਤਿਨਾਮ ਕਾ ਚੱਕ੍ਰ ਫੇਰੇਂਗੇ ਆਗੇ ਜਿਉਂ ਆਪਕੀ ਰਜਾਇ ਹੋਵੇਗੀ ਤਿਉਂ ਹੀ ਹੋਵੇਗਾ ਐਸਾ

{यह फोटो कापी भाई बाले वाली जन्म साखी के पृष्ठ 275-276 से सम्बंधित

प्रकरण की है। इस में भी स्पष्ट किया है कि बाबा नानक को सतनाम का प्रकाश करने अर्थात् लिखने को तो कहा था लेकिन दान किसी को प्रदान करने को नहीं कहा था। जिस कारण से श्री नानक साहेब ने कहा है कि हे सब के स्वामी! जहां-२ आप की आज्ञा होई है, वहां-२ सतनाम का प्रकाश किया है। आगे जो आप की रजा होगी अर्थात् आज्ञा होगी वैसे ही होगा।

यह वार्ता अपुष्ट है फिर भी बहुत कुछ संकेत है कि बाबा नानक जी को परमेश्वर कबीर जी का विशेष संकेत था कि सतनाम को प्रकाशित अवश्य करना परन्तु किसी को मेरी आज्ञा के बिना प्रदान नहीं करना है।}

विवेचन (सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा) :- विचारणीय विषय यह है कि यदि यह नाम जो दो अक्षर (ओम्-सोहम्) का है जिसे सन्तों ने सांकेतिक शब्द सतनाम से पुकारा है। यदि जाप करने का नहीं होता तो स्वयं श्री नानक साहेब जी क्यों जाप करते ? प्राण संगली के ''आवश्यक सूचना'' के प्रथम पृष्ठ पर लिखा है कि राजा शिवनाभ जो सिंगलदीप का राजा था। उससे विशेष निवेदन किया है कि ''इह ग्रंथ मेरी देह है, मेरा स्थूल रूप है, जगत समुद्र से पार निकलने का पुल है। इसे संभाल कर रखना''

आदरणीय श्री नानक साहेब जी के उपरोक्त वचनों को पढ़कर आँखों में आँसू आ जाते हैं। उन्होंने मानव मात्र के हित के लिए इस ग्रन्थ को वर्तमान सन् 1997 तक रहस्य में रखना था। यदि यह पवित्र ग्रंथ जिस में वह दो अक्षर का नाम (ओम्-सोहम्) है जो प्राणी को संसार सागर से पार करेगा। श्री गुरू ग्रन्थ साहेब जी की बीड़ में लगा दिया जाता तो काल के द्वारा भेजे दूतों (सन्तों-महन्तों) के हाथ लग जाता। वे इस नाम के देने के अधिकारी नहीं हैं। उनके द्वारा दिया गया यह मन्त्र (ओम्-सोहम्) कोई लाभ नहीं देता, इस से एक बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा हो जाता। वर्तमान समय में सत्य तथा असत्य भक्ति का अन्तर नहीं हो पाता तथा काल भगवान का दाँव लग जाता। मानव समाज मोक्ष से वंचित रह जाता। अब इस मन्त्र के जाप का आदेश परमेश्वर कबीर जी द्वारा हो चुका हैं। यह दास (संत रामपाल दास जी महाराज) इस मन्त्र को उसी दिन से प्रदान कर रहा है जिस दिन से परमेश्वर कबीर जी ने तथा गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज ने नाम दान करने की आज्ञा दी थी। सन् 1994 से यह मन्त्र प्रदान किया जा रहा हैं। सन् 1997 में परमेश्वर कबीर जी इस दास (रामपाल दास) को फाल्गुन शुदि एकल सवत् 2054 को दिन के 10 बजे मिले थे तब सर्व रहस्य बताया था तथा सतनाम (ओम्-सोहम्) तथा सारनाम (आदि नाम जो गुप्त है, केवल मुझे ही बताया है) शरणागत को देने का उचित समय बताकर अन्तर्ध्यान हो गए थे।

फोटो कापी ''प्राण संगली'' सम्बन्धित विवरण की है।

ਦੋ ਸ਼ਬਦ
(ਪਹਿਲਾ ਸੰਸਕਰਣ)

ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਉੱਦੇਸ਼ਾਂ ਲਈ ਕੀਤੀ ਗਈ ਸੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਇਹ ਵੀ ਸੀ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਅਤੇ ਸਾਹਿੱਤ ਦੀ ਬਹੁ-ਪੱਖੀ ਉੱਨਤੀ ਕੀਤੀ ਜਾਏ। ਇਸ ਮੁੱਦੇ ਨੂੰ ਸਾਹਮਣੇ ਰਖਦਿਆਂ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਵਿਚ ਕਈ ਪ੍ਰਕਾਰ ਦੀਆਂ ਯੋਜਨਾਵਾਂ ਚਲਾਈਆਂ ਗਈਆਂ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਯੋਜਨਾ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਪੁਰਾਣੇ ਹੱਥ-ਲਿਖਤ ਖਰੜਿਆਂ ਨੂੰ ਸੰਪਾਦਿਤ ਕਰਵਾ ਕੇ ਅਤੇ ਗ਼ੈਰ-ਵਿਗਿਆਨਿਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਸੰਪਾਦਿਤ ਹੋਈਆਂ ਪੁਰਾਤਨ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੁਨਰ-ਸੰਪਾਦਿਤ ਕਰਵਾ ਕੇ ਛਾਪਣ ਨਾਲ ਹੈ। ਇਸੇ ਯੋਜਨਾ ਅਧੀਨ 'ਪ੍ਰਾਣ ਸੰਗਲੀ' ਦਾ ਸੰਪਾਦਨ ਹੋਇਆ।

'ਪ੍ਰਾਣ ਸੰਗਲੀ' ਯੋਗ ਸਾਧਨਾ ਸੰਬੰਧੀ ਇਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਣ ਰਚਨਾ ਹੈ। ਇਸ ਦਾ ਰਚਨਾ-ਸੰਬੰਧ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਨਾਲ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਗੁਰੂ ਜੀ ਨੇ ਇਸ ਦਾ ਉਚਾਰਣ ਸਿੰਗਲਾਦੀਪ ਵਿਚ ਰਾਜੇ ਸ਼ਿਵਨਾਭ ਪ੍ਰਤਿ ਕੀਤਾ ਸੀ ਅਤੇ ਇਹ ਉਸੇ ਪਾਸ ਸੁਰੱਖਿਅਤ ਕਰ ਦਿੱਤੀ ਗਈ ਸੀ। ਗੁਰੂ ਅਰਜਨ ਦੇਵ ਜੀ ਨੇ ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ ਦੀ ਬੀੜ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਵੇਲੇ ਉਚੇਚੇ ਤੌਰ ਤੇ ਆਪਣੇ ਸੇਵਕ ਭੇਜ ਕੇ ਇਸ ਨੂੰ ਸਿੰਗਲਾ-ਦੀਪ ਤੋਂ ਮੰਗਵਾਇਆ ਸੀ। ਪਰ ਇਸ ਦੀ ਘੋਖ ਕਰਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਇਸ ਨੂੰ ਅਪਰਮਾਣਿਕ ਬਾਣੀ ਸਮਝ ਕੇ ਬੀੜ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਕਰਨੋਂ ਛੱਡ ਦਿੱਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਦੇ ਕੁਝ ਅਧੂਰੇ ਸੰਸਕਰਣ ਪੱਥਰ ਅਤੇ ਮੋਟੇ ਛਾਪੇ ਵਿਚ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਹੋਏ ਸਨ। ਸੰਤ ਸੰਪੂਰਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਲਿਪੀ ਵਿਚ ਵੀ ਇਸ ਦਾ ਸੰਪਾਦਨ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਇਸ ਰਚਨਾ ਦੇ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਵੇਖਦੇ ਹੋਇਆਂ ਇਸ ਦਾ ਸਹੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਸੰਪਾਦਨ ਕਰਵਾਇਆ ਗਿਆ ਹੈ।

ਆਸ ਹੈ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਨਾਲ 'ਪ੍ਰਾਣ ਸੰਗਲੀ' ਵਿਚ ਰੁੱਚੀ ਰਖਣ ਵਾਲੇ ਵਿਦਵਾਨਾਂ ਅਤੇ ਖੋਜੀਆਂ ਨੂੰ ਲਾਭ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋਵੇਗਾ।

ਪੰਜਾਬੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ,
ਪਟਿਆਲਾ

ਹ. ਕ. ਮਨਮੋਹਨ ਸਿੰਘ
ਵਾਈਸ-ਚਾਂਸਲਰ

यह फोटो कापी ''प्राण संगली'' सम्बन्धित विवरण की है। जो वॉइस चांसलर (पंजाब यूनिर्वसिटी, पटियाला) के विचार हैं। इनमें स्वीकारा है कि यह ''प्राण संगली'' श्री गुरु नानक देव जी की रचना मानी जाती है तथा सर्व प्रथम सन्त सम्पूर्ण सिंह ने इसको देवनागरी लपी में छपवाया था।

फोटो कापी ''प्राण संगली'' सम्बन्धित विवरण की है।

ਭੂਮਿਕਾ
(ਪਹਿਲਾ ਸੰਸਕਰਣ)

ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿੱਤ ਅਧਿਐਨ ਵਿਭਾਗ ਦੀ ਸਥਾਪਨਾ ਦੇ ਮੁੱਖ ਉੱਦੇਸ਼ਾਂ ਵਿਚੋਂ ਇਕ ਇਹ ਵੀ ਸੀ ਕਿ ਪੰਜਾਬੀ ਦੀਆਂ ਕਲਾਸਕੀ ਰਚਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਹੱਥ-ਲਿਖਤਾਂ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਸਹੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਸੰਪਾਦਿਤ ਕਰ ਕੇ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ ਜਾਏ। ਇਸ ਸੰਬੰਧ ਵਿਚ ਜੋ ਪ੍ਰਾਜੈਕਟ ਬਣਾਈ ਗਈ, ਉਸ ਵਿਚ 'ਪ੍ਰਾਣ ਸੰਗਲੀ' ਦਾ ਸੰਪਾਦਨ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਹੈ।

ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਪੁਸਤਕ 'ਪ੍ਰਾਣ ਸੰਗਲੀ' ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤ ਰੂਪ ਹੈ। ਯੋਗ ਅਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਤੌਰ ਤੇ ਹਠ-ਯੋਗ ਅਨੁਸਾਰ ਪ੍ਰਾਣਾਯਾਮ ਦਾ ਪ੍ਰਤਿਪਾਦਨ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਪ੍ਰਾਣ ਸੰਗਲੀ ਇਕ ਅਜਿਹੀ ਪੋਥੀ (ਸੰਕਲਨ) ਹੈ ਜਿਸ ਦੇ ਕਰਤ੍ਰਿਤਵ ਦਾ ਸੰਬੰਧ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਦੇ ਨਾਂ ਨਾਲ ਜੋੜਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। 'ਪ੍ਰਾਣ' ਤੋਂ ਭਾਵ ਸੁਆਸ ਅਤੇ 'ਸੰਗਲੀ' ਤੋਂ ਭਾਵ ਲੜੀ ਜਾਂ ਸ੍ਰਿੰਖਲਾ ਹੈ। ਇਸ ਦੀ ਉਥਾਨਿਕਾ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਇਸ ਦੀ ਰਚਨਾ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਨੇ ਦੱਖਣ ਦੀ ਉਦਾਸੀ ਸਮੇਂ ਰਾਜਾ ਸ਼ਿਵਨਾਭ ਪ੍ਰਥਾਇ ਕੀਤੀ ਅਤੇ ਇਸ ਨੂੰ ਸੈਦੋ ਘੇਹੋ ਨੇ ਲਿਪੀਬੱਧ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਦਾ ਸਹੀ ਆਕਾਰ ਕਿਤਨਾ ਹੈ ਜਾਂ ਇਸ ਵਿਚ ਕਿਤਨੀਆਂ ਰਚਨਾਵਾਂ ਦਰਜ ਹਨ, ਇਸ ਬਾਰੇ ਅਧਿਕਾਰੀ ਢੰਗ ਨਾਲ ਕੁਝ ਨਹੀਂ ਕਿਹਾ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਗੁਰਮੁਖੀ ਲਿਪੀ ਵਿਚ ਪੁਰਾਣੇ ਟਾਈਪ ਵਿਚ ਇਸ ਦੇ ਕੁਝ ਅੰਸ਼ ਹੀ ਛਪੇ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਸੰਤ ਸੰਪੂਰਨ ਸਿੰਘ ਨੇ ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਲਿਖੀ ਵਿਚ ਜਿਸ ਸੰਸਕਰਣ ਦਾ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ ਕੀਤਾ, ਉਸ ਵਿਚ ਕੁਲ 80 ਅਧਿਆਇ ਸ਼ਾਮਲ ਹਨ। ਅੱਸੀਵੇਂ ਅਧਿਆਇ ਦੇ ਅੰਤ ਤੇ ਇਸ ਦੇ ਕੁਲ ਅਧਿਆਇ 113 ਲਿਖੇ ਹਨ। ਇਸ ਸੰਖਿਆ ਦੀ ਪੁਸ਼ਟੀ ਜਨਮ-ਸਾਖੀਆਂ ਤੋਂ ਵੀ ਹੋ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਪਰ ਸੰਤ ਸੰਪੂਰਨ ਸਿੰਘ ਨੇ 160 ਅਧਿਆਵਾਂ ਦੀ ਹੋਂਦ ਦੀ ਸੰਭਾਵਨਾ ਵਲ ਸੰਕੇਤ ਕੀਤਾ ਹੈ।

यह फोटो कापी पंजाब यूनिवर्सिटी पटियाला, पंजाब से 1999 में प्रकाशित, पंजाबी भाषा वाली ''प्राण संगली'' की ''भूमिका'' की है। इसमें सम्पादक ने स्पष्ट किया है कि प्राण संगली के कुल अध्याय 160 का संकेत है। परन्तु श्री सम्पूरन सिंह जी ने केवल 80 अध्याय ही लिखे हैं। इससे सिद्ध होता है कि प्राण संगली से वह विवरण निकाल दिया गया है। जिसमें दो अक्षर के सतनाम (ॐ-सोहं) का वर्णन था तथा श्री नानक देव जी द्वारा स्पष्ट किया गया था कि उनके पूज्य गुरु जी कबीर परमेश्वर जी हैं।

फोटो कापी ''प्राण संगली'' सम्बन्धित विवरण की है।

आवश्यक सूचना

गुरु नानक साहेब ने यह अपूर्व ग्रन्थ प्राण-संगली किस अवसर पर सिंगलादीप में वहाँ के परम भक्त राजा शिवनाभ जी को उपदेश करके बख्श दिया और फिर उनकी पाँचवीं गद्दी के अधिष्ठाता गुरु अर्जुनदेवजी ने उसे कैसे सिंगलादीप से मँगाया तथा किस कारण से उसे ''गुरुग्रन्थ साहेब'' के संग्रह से अलग रक्खा इसका बर्णन गुरु नानक साहेब के जीवन चरित्र में दूसरी यात्रा के आखिरी हिस्से में, और टिप्पनकार के ''निवेदन'' में लिखा है। गुरु नानक साहेब ने इस अनमोल ग्रंथ का नाम ''प्राण-संगली'' क्यों रक्खा यह तो पक्के तौर पर वही कह सकता है जिसकी गति उनकी सी हो, तौ भी कुछ लखाव उसका उनके उस वचन से होता है जो निज मुख से उन्होंने राजा शिवनाभ से कहा— ''इह ग्रंथ मेरी देह है, मेरा स्थूल रूप है, प्राणों मेरिओं का संग्रह कह्वे कवच है, जगत समुंद्र का इह पुल है। इह प्राण-संगली मैं तैनूँ बषशी है, इह अजर वस्तु है, सो तैं ही ज़री है। इह प्राण-संगली अंम्रित प्रवाह है; तेरे ही मुख विषे प्रवेश होई है, होर तिन्न लोकाँ विच इस वस्तू नूँ सम्हालता कोई नहीं ताँते प्राणों विषे प्राण-संगली रखनी'' इस वचन से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ प्राणों का संग्रह रूप है जिसमें प्राणपिंड का निर्णय और प्राणों से मन के निरोध का पूरा भेद लिखा है। संभव है कि इसको ''गुरु ग्रंथ साहेब'' की जिल्द में शामिल न करने की वजह यही हो कि गुरु अर्जुनदेवजी ने समयानुसार इसे हरएक छोटे बड़े की दृष्टि में लाना उचित न समझा।

इस दुर्लभ ग्रन्थ के छापने का हमारा कदापि साहस न होता यदि संत संपूरण सिंह सरीखे तरनतारन के नानक-पंथी महात्मा जिनकी गहरी जानकारी और अनुभव विचार का उनकी टिप्पनी प्रत्यक्ष प्रमाण है इस काम को अपने जिम्मे न लेते।

यह फोटो कापी श्री गुरु नानक साहेब की ''प्राण संगली'' के प्रथम पृष्ठ की है। यह प्राण संगली भाग-1 जिसके अनुवादकर्ता श्री सम्पूरण सिंह (तरनतारन निवासी-पंजाब प्रान्त) है तथा इसके प्रकाशक :- बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स 56 ए/13 मोतीलाल नेहरू रोड़ इलाहाबाद-211002 हैं।

कृप्या देखें फोटो कापी हिन्दी वाली ''प्राण संगली'' भाग-२ के पृष्ठ 103 की

प्राण संगली भाग दूसरा १०३

आदि अंत प्रभ सषा सहाई। सो हरि प्रीत्म रह्या समाई॥
अहिनिशि निर्मल हिरदै हरि भाउ। नानक दर्शन कउ बलि जाउ॥
हरि दर्शन परसे भया अनंद। नानक सर्ब सषा गोइंद॥
दर्शन परसै गुरुमति धीरु। नवनिध गुण गावै देख हजूर॥
शब्द गुरू उपदेश दिढ़ाया। सतिगुर परचे परम पद पाया॥
अमर अजोनी सचु पसाउ।
कीता पसाउ एको कवाउ। नानक होवै लख द्रयाउ॥ २७॥
अपने धर्म कउ निहचल पालै। ज्यों प्रीत्म गऊ गोपाले बालै॥
ऐसा हरि जन ज्यों जल मीना। हरि सिऊँ प्रीति प्रीत्म मनु लीना॥
नानक सललै सलल मिलाया। त्रिभवन एको जोति लिउ लाया॥
बिन सतिगुर मेलि न सकै कोई। सतिगुर मिलै मुक्तिवर होई॥ २८॥
सतिगुर शब्द भगत जसु गाया। अलष पुरुष इक चलत दिखाया॥
सतिगुर मिलिआ मनु पत्याया॥
करि करि वेखै आपि सुजाँन। संत जनाँ हरि भगत निशाँन॥
अकय अपार की अकथ कहानी। नानक मुक्ते पद निरबानिं॥ २९॥
पंच मिलहि अपने घरि पूरा। तिस घटि बाजहि अनहद तूरा॥
कार्ज सिद्ध सहज बैरागा। हरि भगत हेत पूरे वड भागा॥
साध संग जस पावै देवा। नानक आदि अंति प्रभ सेवा॥ ३०॥
हउमै दुख का भया बिनास। सहज भाय जनु दासन दास॥
शरनि परे लाज राख अपारु। तूँ बेप्रवाह मैं दीन बीचारु॥
अकथ कथा का तत्तु बीचारु। तूँ भै भंजन अलख अपारु॥
निकट बसहि संगी मनु माहि। सहज भाय मिलिआ बुध ताहि॥ ३१॥
साध संगति मिल ज्ञानु प्रगासै। साध संगति मिल कवल बिंगासै॥
साध संगति मिलिआ मनु माना। ना मैं ना हऊँ- सोहं जाना॥
सगल भवन महि एका जोति। सतिगुर पाया सहज सरोत॥
नानक किलविष काट तहाँ ही। सहजि मिलै अंम्रित सीचाही॥ ३२॥
सहजि मिलै मनु सुत्र समाना। सहजि मिलै मनु ते मनु माना॥
सहजि मिलै घर लहै निधानु। सहजि मिलै दंरगहि प्रवानु॥

यह फोटो कापी हिन्दी वाली ''प्राण संगली'' के पृष्ठ 103 की है जो श्री संत सम्पूर्ण सिंह द्वारा सन् 1902 में छपवाई गई है। इसके सम्पादक भी संत सम्पूर्ण सिंह जी (तरनतारन-पंजाब वाले) ही हैं। इसमें वाणी संख्या 32 में दूसरी पंक्ति इस प्रकार है :-

साध संगति मिल मन माना ना मैं ना हऊँ–सोहम् जाना।

इसी प्रकार पंजाबी भाषा वाली में अंकित है। वास्तव में यह वाणी ऐसे लिखी जानी चाहिए :-

साध संगति मिल मन माना। ना में नाह ऊँ–सोहम् जाना।।

गलती से यह ऊँ-सोहम् दो अखर का मंत्र ''हऊँ-सोहम्'' लिखा गया। जिस कारण से प्रकाशक (सम्पादक) समझ नहीं पाए। जिस कारण से इस पंक्ति

को काट नहीं पाए। यह है सतनाम, दो अखर का जिसमें 1. ओम् (ॐ) + 2. सोहम्। दो अक्षर हैं। जैसे श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है कि ''ओम् इति एक अक्षरम् ब्रहम् व्यवहारन् माम् अनुस्मरण'' भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता ब्रहम् श्री कृष्ण में प्रवेश करके बोला है कि मुझ ब्रहम् का यह एक ॐ अक्षर है उच्चारण करके सुमिरण करने का है।

इसी प्रकार ॐ= एक अक्षर तथा सोहम्=दूसरा अक्षर =यह ॐ-सोहम् जो (सतनाम) परमात्मा प्राप्ति, मोक्ष प्राप्ति का एक मात्र सर्व नामों में श्रेष्ठ नाम है। श्री नानक जी ने कहा है कि ना में नाह ॐ-सोहम् जाना। भावार्थ है कि परमात्मा के बहुत सारे नाम कहे जाते हैं परन्तु उन सर्व नामों में ॐ-सोहम् जो दो अक्षर का नाम है यही सर्व श्रेष्ठ परमात्मा का नाम जाप का है।

आदरणीय गरीब दास जी (गांव छुड़ानी, जिला झज्जर, प्रान्त हरियाणा) को भी परमेश्वर कबीर जी ऐसे ही सच्चखण्ड लेकर गए थे। जैसे आदरणीय श्री नानक साहेब जी को लेकर सतलोक गए थे। फिर पृथ्वी पर छोड़ा था। उनको भी परमेश्वर कबीर जी ने यह ॐ-सोहम् का दो अक्षर का राम नाम जाप करने को कहा था।

यह ''प्राण संगली'' पंजाब युनिवर्सिटी पटियाला से प्रकाशित तथा सम्पादित है। जो सन् 1999 में दूसरी बार छपवाई है। इसके पृष्ठ 190 की यह फोटो कापी है। इसकी भूमिका में (पहिला सस्करण) की कापी लाई है। इसमें लिखा है कि संत सम्पूर्ण सिंह जी ने जो प्राण संगली सन् 1902 में देवनागरी लीपी में हिन्दी भाषा में प्रकाशन किया है। उसमें केवल 80 अध्याय ही शामिल किए है तथा 80 वें अध्याय के अन्त में 113 अध्याय लिखें हैं।

कृप्या देखें फोटो कापी पंजाबी वाली ''प्राण संगली'' भाग-२ के पृष्ठ 190 की।

190 ਪ੍ਰਾਣ ਸੰਗਲੀ

ਸਾਧ ਸੰਗ ਜਸ ਪਾਵੈ ਦੇਵਾ, ਨਾਨਕ ਆਦਿ ਅੰਤਿ ਪ੍ਰਭ ਸੇਵਾ ॥੩੧॥
ਹਉਮੈ ਦੁਖ ਕਾ ਭਇਆ ਬਿਨਾਸ, ਸਹਜ ਭਾਇ ਜਨ ਦਾਸਨ ਦਾਸ।
ਮਰਨਿ ਪਰੇ ਲਾਜ ਰਾਖ ਅਪਾਰ, ਤੂੰ ਬੇਪਰਵਾਹ ਮੈ ਦੀਨ ਬੀਚਾਰੁ।
ਅਕਥ ਕਥਾ ਕਾ ਤਤੁ ਬੀਚਾਰੁ, ਤੂੰ ਭੈ ਭੰਜਨ ਅਲਖ ਅਪਾਰੁ।
ਨਿਕਟ ਬਸਹਿ ਸੰਗੀ ਮਨੁ ਮਾਹਿ, ਸਹਜ ਭਾਇ ਮਿਲਿਆ ਬੁਧਿ ਤਾਹਿ ॥੩੨॥
ਸਾਧ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲ ਗਿਆਨ ਪ੍ਰਗਾਸੈ, ਸਾਧ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲ ਕਵਲ ਬਿਗਾਸੈ।
ਸਾਧ ਸੰਗਤਿ ਮਿਲਿਆ ਮਨੁ ਮਾਨਾ, ਨਾ ਮੈਂ ਨਾ ਹਉਂ ਸੋਹੰ ਜਾਨਾ।
ਸਗਲ ਭਵਨ ਮਹਿ ਏਕਾ ਜੋਤਿ, ਸਤਿਗੁਰ ਪਾਇਆ ਸਹਜ ਸਰੋਤਿ।
ਨਾਨਕ ਕਿਲਵਿਖ ਕਾਟ ਤਹਾਂ ਹੀ, ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਸੀਚਾਹੀ ॥੩੩॥
ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਮਨੁ ਸੁੰਨ ਸਮਾਨਾ, ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਮਨੁ ਤੇ ਮਨੁ ਮਾਨਾ।
ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਘਰ ਲਹੈ ਨਿਧਾਨੁ, ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਦਰਗਹਿ ਪਰਵਾਨੁ।
ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਸਚੁ ਨੀਸਾਨੁ, ਸਹਜਿ ਮਿਲੈ ਨਾਨਕ ਘਰੁ ਜਾਨੁ ॥੩੪॥

यह पृष्ठ 190 की फोटो कापी है जो पंजाब युनिवर्सिटी पटियाला द्वारा

सम्पादित है। सन् 1999 में दूसरा सस्करण छपा है। इसमें वाणी संख्या 33 में एक विशेष रहस्य दो अक्षर के सतनाम का है। यही वाणी संत सम्पूर्ण सिंह द्वारा सम्पादित हिन्दी भाषा वाली ''प्राण संगली'' के पृष्ठ 103 पर वाणी संख्या 32 में हैं।

परमेश्वर की असीम कृप्या है कि सतनाम सुरक्षित है। प्राण संगली को प्रकाशित करने वालों की दृष्टि में नहीं पड़ा अन्यथा इसको भी निकाल दिया जाता। परमेश्वर ने इस साक्ष्य को कैसे रहस्यमय तरीके से बचाया है।

आदरणीय सन्त गरीबदास जी को भी आदरणीय धर्मदास (बांधवगढ़) की तरह कहा था कि यह दो अक्षर का मंत्र आप अपनी वाणी में प्रमाण के लिए लिखवा देना तथा स्वयं तो जाप करना परन्तु अपने शिष्यों को यह सतनाम (ॐ-सोहम्) ना देना। केवल पांच नाम दान करना जो कमलों को विकसित करने के हैं। आदरणीय गरीब दास जी की वाणी में लिखा है :- राम नाम जाप कर थिर होई। ॐ–सोहम् मंत्र दोई।

भावार्थ है कि राम का वास्तविक नाम ॐ-सोहम् है इसका जाप करने से जन्म-मृत्यु रूपी रोग का नाश होता है। चिर स्थान (स्थाई स्थान) प्राप्त होता है। अमर लोक प्राप्त होता है। वहां स्थाई निवास प्राप्त होता है। फिर सन्त गरीबदास जी ने कहा है :-

हम सुलतानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया। जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी माहें कबीर हुआ।।

नामा छीपा ॐ तारी, पीछे सोहम् भेद बिचारी। सारशब्द पाया जद लोई, आवा–गवन बहुत न होई।।

आदरणीय धर्मदास जी को भी परमेश्वर कबीर जी इसी प्रकार मिले थे। उनको भी सच्चखण्ड (सतलोक) से परिचित करा के वापिस छोड़ा था तथा यही दो अक्षर का नाम प्रदान किया था। इनको भी यह आदेश दिया था कि :-

धर्मदास मोरी लाख दोहाई, मूल नाम कहीं बार ना जाई।
मूल नाम (वास्तविक नाम) बाहर जो पड़ही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तिर ही।

इसी प्रकार आदरणीय नानक साहेब जी को भी परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनको भी यह दो अक्षर का नाम प्रदान किया था तथा आदेश दिया था कि यह सतनाम (दो अक्षर वाला) आप जाप करना परन्तु अभी किसी को नहीं बताना। इसको तब तक गुप्त रखना है जब तक कलयुग 5505 वर्ष (पचपन सौ पांच वर्ष) न बीत जाए। इसी प्रकार उपरोक्त सर्व आदरणीय महान् आत्माओं को परमेश्वर का यही आदेश था। जिस का उन्होंने दृढ़ता से पालन किया। जिस कारण से यह अनमोल धरोहर अभी तक बची रही। काल के दूतों (संतों-महंतों) के हाथ नहीं लगी। ''भाई बाले वाली जन्म साखी'' में ''समंदर की साखी'' में स्पष्ट है कि श्री नानक साहेब जी यही दो अक्षर का सतनाम (ॐ-सोहम्) जाप किया करते थे। इन्होंने भी परमेश्वर कबीर जी के आदेश का दृढ़ता से पालन किया तथा ऐसी लीला की कि सर्व सिख समाज ने इसको श्री नानक देव जी की आज्ञा की अवहेलना जानकर स्वयं भी जाप नहीं किया तथा जहां-२ आदरणीय नानक जी की अमृत वाणी में अंकित था वहां से निकाल दिया। जिसका जीवित प्रमाण है कि अनमोल ग्रंन्थ ''प्राण संगली'' को श्री गुरु ग्रंथ साहेब जी में जिल्द करते समय शामिल नहीं किया। इसको नदी में जल प्रवाह कर दिया गया। परमेश्वर जी की असीम कृपा से एक साधु ने पांचवे सिख गुरु श्री अर्जुन देव जी से विशेष प्रार्थना करके नदी के जल से निकाल लिया। वह उसी को दे दी गई। परमेश्वर की असीम कृपा से आज उसका

नाम-निशान बचा है। ऐसे पवित्र ग्रंथ को नदी जल में प्रवाह करने का कारण क्या था :-

1. इस में सतनाम जो (ॐ-सोहम्) दो अक्षर का है वह अंकित था। इस सतनाम का प्राणों (स्वासों) से सुमिरण किया जाता है। उसके सुमिरण की विधि को छोड़ कर शेष विवरण विस्तार से लिखा था। अधिक विवरण इसी पुस्तक के पृष्ठ 132 पर से पढ़ें।

2. दूसरा कारण यह था :- कि ''प्राण संगली'' में आदरणीय श्री नानक साहेब जी ने परमेश्वर कबीर जी को गुरु धारण करने का वर्णन विस्तार से लिखा होगा। जिस कारण से श्री नानक देव जी की मान हानि के डर से श्री गुरु ग्रंथ साहेब में शामिल नहीं किया गया। एक पवित्र ग्रंथ को गुरु ग्रंथ साहेब में शामिल न होने देना भी परमेश्वर की सुनियोजित लीला थी। जिसका विवरण पूर्व में लिख दिया है।

कृप्या देखें फोटो कापी ''प्राण संगली'' (सन्त सम्पूर्ण सिंह द्वारा सम्पादित) के पृष्ट 150 की।

१५० प्राण संगली भाग दूसरा

सतिगुर की सीख्या सुन रे पूत। नानक जुग जुग सतिगुर अवधूत॥ २२॥
अंतरजामी मिलै सुहेला। जागत अवस्था मन मारि इकेला॥
क्षमा सरि भरिआ माणकु मोती। अमरापुर चढ़ि किन माल परोती॥
परचा छोड़ि अरचे दरि खोलै। तीन चार दुइ सम करि टोलै॥
नऊं दरि मूंद इकतु घरि जाय। सुन्न गुफा की सीझी पाय॥
उस दर का खूलै दरवाजा। तां सुणि देखै अनहदि बाजा॥
ऊहां सर सुभर अंम्रित स्यों भरिआ। एक बूंद रसु कार्ज सरिआ॥
ऊँदरि[२] के शब्दि बिलाई भागी। नानक कहै सोई बैरागी॥ २४॥

१. पीछे कहा गया।
२. ॐ + दरि = ॐ से भाव ॐकार शब्द का है परन्तु यहाँ गुरू साहब को ॐकार पद का कहिना अभीष्ट है सो ॐकार पद के दरि= दरवाजे

कृप्या देखें फोटो कापी ''प्राण संगली'' (सन्त सम्पूर्ण सिंह द्वारा सम्पादित) के पृष्ट 151 की।

प्राण संगली भाग दूसरा १५१

जल दीपक तत्त का तेला। सुरत कर बाती सहज सौं मेला॥
पंचहुं मेल चांदनां करै। तित चांदनै गढ़ ऊपर चढ़ै॥
उत गढ़ बैसि होवै बड़ भागी। नानक कहै सोई बैरागी॥ २६॥
बिन संजम बैराग न पाया। भरमतु फिरिआ जन्म गवाया॥
क्या होया जो औध बधाई। क्या होया जु बिभूति चढ़ाई॥
क्या होया जु सिंगी बजाई। क्या होया जु नाद बजाई॥
क्या होया जु कनूआ फूटा। क्या होया जु ग्रहिते छूटा॥
क्या होया जु उश्न शीत सहै। क्या होया जु बन खंड रहै॥
क्या होया जो मोनी होता। क्या होया जो बक बक करता॥
सोहं जाप जपै दिन राता। मन ते त्यागै दुविधा भ्रांता॥
आवत सोधै जावत बिचारै। नौंदर मूँदै तषते मारै॥
दे प्रदक्खणां दस्वें चढ़ै। उस नगरी सभ सौझी पड़ै॥
त्रैगुण त्याग चौथे अनुरागी। नानक कहै सोई बैरागी॥ २७॥

कृप्या देखें फोटो कापी ''प्राण संगली'' (सन्त सम्पूर्ण सिंह द्वारा सम्पादित) के पृष्ट 147 की।

प्राण संगली भाग दूसरा १४७

ऐसा मारगु (सति) गुरू दिखाया। दहदिशि ढूढि सहजि घरि आया।।
अठसठि गंठी खोले कोई। नानक कहे उदासी सोई।। ४।।
प्रथमे पूर्ब कउ दृष्टि धरै। दुतीआ दक्षण कउ गवनु करै।।
दक्षण ते जो पछिम जाय। तउ हाट पटन की सोझी पाय।।
पछम ते जो चढै सुमेर। आवै परदक्षणा कै फेरि।।
पुरीआँ[१] सप्त ऊपरि कउलासनु। तिथै पारब्रह्म का आसनु।।
जिन हीरै रत्नी माल परोई। नानक कहै उदासी सोई।। ५।।
कहाँ सु गगन देव का भउणु। अहिनिशि सदा मनावै[२] सउणु।।
महाँ सूरा पूरा कौन। अहिनिशि जूझै[३] (जागै) दुरजन दौन[४]।।
बाँधै वैसंतर[५] पानी पौन।।
गगन मंडल जिनि गऊआ चोई। नानक कहै उदासी सोई।। ६।।
गुर का भगतु इंद्री का जती। हिरदे का मुक्ता मुख का सती।।
द्रिष्टि का दैयाल दया करि दानु। जे घट निविआँ ताँ निविआँ जानु।।
बचनु शब्दु का सफलिउ होता। नानक कहै सोई अवधूता।। ७।।
चंचल चाय न जाय तमाशे। जूऐ जाय न खेलै पासे।।
अंगै चंगैं चित्तु न लाये। गुरु का दीआ[६] अंकि हँढाए[७]।।
पर घरि जाय न कीजै कथा[८]। सतिगुर केरी एहा नथा[९]।।
गुर की सीख सुणहु रे पूता। नानक कहे सोई अवधूता।। ८।।

(संत रामपाल दास जी महाराज के सत्संग का अंश)

ऊपर ''प्राणी संगली-2'' (सन्त सम्पूर्ण सिंह तरन तारन द्वारा सम्पादित) के पृष्ट 150 पर वाणी संख्या 24 में अंकित वाणी में ॐ (ओम्) अक्षर की महिमा कही है। विचार करें ॐ (ओम्) एक अक्षर के विषय में श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि ''मुझ ब्रह्म का यह एक अक्षर ओम् (ॐ) है इसके जाप करने से मेरे स्तर की मुक्ति हो जाएगी अर्थात् ॐ नाम के जाप से ब्रह्म लोक प्राप्ति होती हैं। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म है। वह श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके बोल रहा हैं। गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9 में, अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 10 श्लोक 2 में, अध्याय 7 श्लोक 18, अध्याय 8 श्लोक 16 में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि मेरा एक अक्षर ओम् (ॐ) है तथा यह भी स्पष्ट किया है कि हे अर्जुन ! मेरे तथा तेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। मेरी गति अनुत्तम अर्थात् घटिया हैं। क्योंकि मुझे प्राप्त साधक ब्रह्म लोक में जाता है। ब्रह्मलोक में गए प्राणी भी पुनरावृति में हैं अर्थात् ब्रह्म लोक तक सर्व प्राणी आवा-गवन में हैं। इनका आवा-गवन (जन्म-मरण) का निवारण (समाप्त) नहीं हो सकता।

इसलिए श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में तथा गीता अध्याय 8 श्लोक 1,3,5 से 10 में तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 23 तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 का सारांश इस प्रकार है।

श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4, 16 से 17 में उल्टे लटके संसार रूपी वृक्ष का उदाहरण बता कर समझाया है (1-4) तथा श्लोक 16-17 में तीन पुरूष (प्रभु) कहे हैं।

1. क्षरपुरूष (ब्रह्म) 2. अक्षर पुरुष 3. परम अक्षर पुरूष अर्थात् सतपुरूष है। हमने सत पुरूष को प्राप्त करना हैं। उस की साधना के लिए गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि ॐ तत्-सत् ये तीन मन्त्र तीनों पुरूषों (प्रभुओं के हैं)

ॐ (ओम्) नाम = क्षरपुरूष अर्थात् काल ब्रह्म का

तत् मन्त्र सोहं है = यह अक्षर पुरूष का नाम है। ये दोनों मन्त्र ॐ तथा सोहं मिल कर सतनाम दो अक्षर का नाम (सतनाम) है।

इस सतनाम (ॐ-सोहं) का जाप स्वासों से सुमिरण करना होता है। इस सतनाम से आवागवन का निवारण होता है। केवल ॐ (ओम्) इस एक अक्षर से आवागवन का निवारण नहीं हो सकता। वाणी संख्या 24 (पृष्ठ 150) में अन्तिम पंक्ति में इस प्रकार लिखा है ॐ दरि के शब्दि बिलाई भागी, नानक कहै सोई बैरागी(24) तथा पृष्ठ 151 वाणी संख्या 27 में पंक्ति हैं :-

सोहं जाप जपै दिन राता। मन से त्यागै दुविधा भ्राता।।
आवत सोधै जावत बिचारै। नौ दर मुँदै तषते मारै।।

उपरोक्त वाणी संख्या 24 में दोनों अक्षरों जो सतनाम के (ॐ-सोहं) का लाभ भिन्न-2 बताया है कि ॐ नाम के जाप से (बिलाई) शंका भाग गई। दोनों अक्षरों ॐ नाम तथा सोहं नाम का स्वासों द्वारा सुमिरण करने से पाप नाश होते हैं। पूर्ण मोक्ष प्राप्ति में सहयोग मिलता है। इनके बाद आदिनाम जिसे सारनाम भी कहते हैं। इसको पूर्ण सतगुरु ही दे सकता है। इस प्रकार पाँच नाम जो केवल प्राथमिक उपचार (फस्ट एड) है, सतनाम तथा आदि नाम पूर्ण रूप से जन्म-मरण का रोग नाश करते हैं अर्थात् आवागमन को पूर्ण रूप से समाप्त करते हैं। यह पूरी साधना केवल परमेश्वर या उसका भेजा गया ''धरती पर अवतार'' ही जानता है। वह सन्त रामपाल दास जी महाराज हैं। सतनाम ये है वाणी संख्या 27 में संकेत भी किया है कि ''आवत सोधै जावत बिचारै'' **भावार्थ है कि स्वांस-उस्वांस से सुमिरण का संकेत है। ये दोनों अक्षरों (ॐ-सोहं) को सतनाम कहा है।**

यही प्रमाण प्राण संगली-2 हिन्दी (सन्त सम्पूर्ण सिंह जी द्वारा सम्पादित) पृष्ठ 103 पर वाणी संख्या 32 में श्री नानक देव जी ने कहा है :-

साध संगति मिलिया मन माना, ना में नाह ॐ–सोहं जाना।।

भावार्थ :- सब नामों में श्रेष्ठ नाम ''ॐ-सोहं'' है यह दो अक्षर का सतनाम मैनें अच्छी तरह जान लिया हैं। यहां पर ''ना'' शब्द किस का बोधक है? ''ना'' शब्द ''नाम'' का बोधक है।

प्रमाण के लिए :- प्राण संगली हिन्दी भाषा वाली भाग-२ (सन्त सम्पूर्ण सिंह तरनतारन द्वारा सम्पादित) पृष्ठ 124 पर ''राग सूही महला 1 वाणी संख्या 15 में स्पष्ट है कि ना=नाँ=नाम का बोधक है वाणी इस प्रकार है :-

घर दर नदरि न आवई नाँ उरवारु न पारु।।
नाँ गुरु शब्द न भेदीअै क्यों सोहै गुरु द्वआरू।।

भावार्थ है ''गुरु द्वारा बक्शा गया (नाँ) नाम जो गुरु शब्द है उसका रहस्य

न जाना तो गुरु जी के घर अर्थात् सच्चखण्ड में कैसे शोभा पाएगा। क्योंकि वह अमर लोक नजर नहीं आता तथा बिना गुरु के (नाँ) नाम को जाना नहीं जा सकता। क्योंकि सतनाम का किसी को वार-पार का ज्ञान नहीं है।

उपरोक्त वाणी संख्या 15 पृष्ठ 124 में नाँ=ना का अर्थ नाम स्पष्ट है क्योंकि इस ''ना'' शब्द भी साथ है। इसलिए पूर्वोक्त वाणी संख्या 32 पृष्ठ 103 पर अंकित ''ना में नाह ॐ–सोहं जाना'' **में ना का अर्थ नाम सिद्ध हुआ।**

पाँच नामों का प्रमाण :- प्राण संगली भाग -2 (हिन्दी सन्त सम्पूर्ण सिंह तरनतारन) के पृष्ठ 103, 146 तथा 151 पर व पृष्ठ 146 पर कहा है :-

त्रिहुँ का मारि मिलावै मानु। पंचाँ माहि रहै परधानु।।
इन पंचाँ का जो जाणै भेउ। सोई कर्ता सोई देउ।।

प्राण संगली भाग-2 पृष्ठ 151 पर कहा है :-

जत्न दीपक तत्त का तेला। सुरत कर बाती सहज सौं मेला।।
पंचहुं मेल चांदना करै। तित चांदनै गढ़ ऊपर चढ़ै।।
उत गढ़ बैसि होवै बड़ भागी। नानक कहै सोई बैरागी।।२६।।

भावार्थ :- पांच नाम जो कमलों के हैं। इन का पूर्ण ज्ञान जो सन्त जानता है। उसे परमेश्वर ही जानों। इन पांचों का विधि से जाप करने से साधना करने से त्रिकुटि गढ़ में प्राणी पहुँच जाता है। इन पांचों कमलों (मूल कमल, स्वाद कमल, नाभि कमल, हृदय कमल तथा कण्ठ कमल) में पाँचों प्रधानों का वास है। (1) मूल कमल में श्री गणेश जी (2) स्वाद कमल में श्री सावित्री जी तथा ब्रह्मा जी (3) नाभि कमल में श्री लक्ष्मी जी तथा श्री विष्णु जी (4) हृदय कमल में श्री पार्वती जी तथा श्री शिव जी (5) कण्ठ कमल में श्री देवी दुर्गा जी का वास है। श्री नानक जी ने कहा है कि ''इन पंचाँ का जो जाणै भेउ। सोई कर्ता सोई देउ'' **इनको जानने वाले को परमात्मा ही जानो। सहज मार्ग से साधना करने से सफलता मिलती है। यह भी संकेत दिया है कि** ''त्रिहुँ का मारि मिलावै मानु'' **तीन मंत्रों का मर्म (रहस्य) जानकर मन को इनमें संलिप्त कर। तीन मंत्र कौन-२ से हैं। (1) ॐ (2) सोहं (3) आदि नाम जो सांकेतिक है यहां नहीं लिखा जा सकता। वह केवल उपदेशी को ही बताया जाता है। ॐ-सोहं यह दो अक्षर का ''सतनाम'' है तथा सत् मंत्र (गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में तत् सत् शब्द लिखें हैं) जो ''सत्'' है यह आदिनाम है इसे ''सारनाम'' भी कहते हैं और यह भी सांकेतिक है। इसके बारे में तत्वदर्शी संत रामपाल दास जी महाराज ही बता सकते हैं।**

प्राण संगली भाग-2 पृष्ठ 147 पर वाणी संख्या 7-8 में यह भी स्पष्ट किया है कि गुरू से शब्द (नाम) प्राप्त करके जाप करने से ही साधना सफल होती है। केवल ग्रन्थों से ज्ञान प्राप्त करके रटा लगाने से नहीं।

पृष्ट 147 पर वाणी संख्या 5 में यही संकेत किया है कि ''पुरीआँ सप्त ऊपरि कउलासनु। तिथै पारब्रह्म का आसनु'' **सप्त पुरियों के ऊपर परमेश्वर (सतपुरूष) का राज दूत भवन इस ब्रह्माण्ड में भी है। वहां कमल आसन पर पारब्रह्म (सतपुरूष) विराजमान है।**

उपरोक्त विवरण को जान कर सन्त की पहचान करके अपना कल्याण कराऐं।

इस पवित्र ग्रंथ ''प्राण संगली'' के प्रति इसके रचनाकार श्री नानक साहेब जी ने जो संगलादीप के राजा शिवनाभ से ये वचन कहे थे। ''इह ग्रंथ मेरी देह है, मेरा स्थूल रूप है, प्राण मेरियों का संग्रह कह्यो कवच है। जगत समुंद्र का इह पुल है। इह ''प्राण–संगली'' मैं तैनूं बख्शी है, इस अजर वस्तु है सो तैं ही जरी है। इह प्राण–संगली अंम्रित प्रवाह; तेरे ही मुख विषे प्रवेश होई है, होर तीन्न लोकाँ विच इस वस्तू नूँ सम्हालता कोई नहीं ताँते प्राणों विषे प्राण संगली रखनी''

श्री नानक साहेब जी के इन वचनों को पढ़कर मुझ दास (संत रामपाल दास जी महाराज) की आँखें गीली हो जाती हैं। जिस महापुरूष ने जिस अपनी रचना को अपना शरीर बताया है। उस ग्रंथ को जल प्रवाह करते समय धरती क्यों न फटी?

श्री नानक साहेब जी ने इस ''प्राण संगली'' ग्रंथ को अपनी देह इसलिए कहा है कि जिस पांच तत्व के शरीर से परमात्मा प्राप्त हुआ तथा उसी शरीर में यह अनमोल ज्ञान मिला। वही ज्ञान कागज पर लिख कर स्थूल शरीर से बाहर कर दिया तो स्थूल शरीर में अर्थात् श्री नानक जी में तथा इस ''प्राण संगली'' ग्रंथ या अन्य अमृत वाणी जो जनहित में श्री नानक जी ने कही तथा लिखी-लिखवाई है। उनमें कोई अन्तर नहीं है। इसको श्री नानक साहेब जी ही जाने। जैसे कोई राजा किसी व्यक्ति को लाभ-या हानि करता है और आदेश लिखकर दे देता है तो वह सामान्य लेख नहीं होता तथा न ही वह कागज सामान्य होता है।

जैसे दूसरे शब्दों में यदि कोई व्यक्ति एक करोड़ रूपये का ड्राफ्ट बना कर किसी के नाम लिख देता है तो वह कागज सामान्य कागज नहीं है। वह एक करोड़ रूपये हैं। इसी प्रकार महापुरूषों के अनुभव की अमृतवाणी को उनकी उपस्थिति ही जाने। उनकी देह ही जाने। भावार्थ है कि उनको हाजर-नाजर जानकर उनकी आज्ञा का पालन करके लाभ उठाऐं।

प्रश्न :- श्री नानक साहेब जी का सिख समाज को क्या आदेश है ?

उत्तर (संत रामपाल दास जी महाराज) :- कृप्या इसका उत्तर पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 132 पर ''सतनाम का रहस्य'' नामक अध्याय में जिससे आप को स्पष्ट होगा कि श्री नानक जी का अपने अनुयाइयों के लिए क्या आदेश है। फिर भी कुछ संक्षेप में लिखा जाता है :-

श्री नानक जी ने कहा है (श्री गुरु ग्रंथ साहेब पृष्ठ 1342 महला 1 बिभास) :-

सतिगुरु पूछि सहज घरू पावै, सतिगुरु भेटै सोझी पाई।
सचै नाम रहे लिव लाई, निज घरि वासु अमर पदु पावै।
गुरु सेवा बिनु भगति न होई, अनेक जतन करै जे कोई।

भावार्थ :- इस अमृतवाणी में अर्थात् अमर आदेश में श्री नानक जी आदेश दे रहे हैं कि वक्त गुरु बिन आध्यात्मिक ज्ञान जाना नहीं जा सकता। सच्चे नाम (सतनाम) का जाप करने से मूल स्थान सतलोक प्राप्त हो जाता है। वह अमर पद प्राप्त हो जाता है।

वक्त गुरु जी के सानिध्य बिना भक्ति नहीं हो सकती, चाहे कितना ही प्रयत्न साधक करता रहे अर्थात् गुरु बिना साधना व्यर्थ है। जैसे वेद, श्री मद्भगवत् गीता,

श्री गुरु ग्रंथ साहेब का केवल अध्ययन करने से मोक्ष नहीं हो सकता। क्योंकि सद्ग्रंथों के गूढ़ रहस्यों को गुरु बिना जाना नहीं जा सकता।

कबीर, वस्तु कहां खोजे कहाँ, किस विद्य लागै हाथ। एक पलक में पाईयो भेदी ले लो साथ।।

एक सेठ था। उसकी मृत्यु हो गई। पहले समय में बैंक सुविधा नहीं थी। अपने धन को घर में गड्डा खोद कर दबा दिया करते थे। वह स्थान बच्चों से गुप्त रखा जाता था। उसका सांकेतिक चिन्ह लिख दिया जाता था। पिता जी की अचानक मृत्यु के उपरांत उस बही (पैड) को टटोला जिसमें उनको सम्भावना थी की शायद इसमें धन दबाने की जगह लिखी हो। सेठ ने घर में एक मन्दिर बनवा रखा था। वह मन्दिर घर के प्रांगण में स्थित था। बही में (पैड में) लिखा था चांदनी चौदस रात्री के 12 बजे मन्दिर के गुमज में सर्व धन दबा रखा है। सेठ के लड़कों ने मन्दिर का गुमज फोड़ डाला। परन्तु धन नहीं मिला। बहुत दुःखी हुए सोचा कि पिता जी ने ठीक से स्थान नहीं लिखा। एक दिन सेठ का मित्र शोक व्यक्त करने आया। उसको सर्व वृतांत बताया कि हमारे पिता जी ने स्थान गलत लिख दिया, धन नहीं मिल रहा। हम लुट गये-पिट गये। सेठ के मित्र ने कहा मुझे वह लेख दिखाओ, जो आप के पिता जी ने लिखा है। सेठ के मित्र ने लेख को पढ़ा तथा कहा बच्चो आप इस मन्दिर को फिर से उसी प्रकार बनवाओ। मन्दिर बनवाया गया। चांदनी चौदस (शुक्ल पक्ष की चौदस) को रात्री के 12 बजे मन्दिर के गुमज की छाया घर के आंगन में थी। उसी स्थान को निशान लगा कर सेठ के मित्र ने कहा कि यहां खोदिए। जब उस स्थान को खोदा गया तो सर्व धन मिल गया।

इसी प्रकार अपने सद्ग्रंथों में लिखे सांकेतिक गूढ़ रहस्यों को जानने के लिए सतगुरु की आवश्यकता है। स्वयं सद्ग्रन्थों के गूढ़ रहस्य को न जानकर मानव जीवन नष्ट हो रहा है। वर्तमान में संत रामपाल दास जी महाराज के अतिरिक्त अन्य कोई सद्ग्रन्थों को जानने वाला विश्व में नहीं है। यह अभिमान न जानना, सत्य का आवाहन् है।

कबीर, गुरु बिन काहु न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुष छिड़ै मूढ़ किसाना।
कबीर, गुरु बिन बेद पढ़े जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।।
कबीर, नौ मन सूत उल्लझीया ऋषि रहे झक मार,
सतगुरु ऐसा सुलझा दे, उल्झे ना दूजी बार।

प्रश्न : सतनाम (जो दो अक्षर का है) तथा आदि नाम अर्थात् सारनाम के बिना आत्मकल्याण नहीं हो सकता फिर श्री नानक देव जी ने अपने अनुयाइयों को ''वाहे गुरु-वाहे गुरु तथा एक ओंकार सतिनामु करता पुरूखु निरभउ निरवैरू अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरु प्रसादि'' मंत्र जाप करने को कहा इसका क्या कारण था ? भाई बाले वाली जन्म साखी में ''समुद्र दी साखी'' में प्रमाण है कि श्री नानक जी स्वयं ''ओम्-सोहं'' मंत्र का जाप कर रहे थे, जो दो अक्षर का सतिनाम है तथा मर्दाना को मना किया कि ''ओम्-सोहं'' का जाप मत कर, वाहे गुरु-वाहे गुरु कर, कारण क्या था ?

उत्तर : इसका कारण पूर्व में लिख दिया है कि दो अक्षर के सतनाम (ओम्-सोहं) मंत्र का जाप किसी को दान करने का आदेश श्री नानक जी को नहीं था। परमेश्वर

कबीर जी जो बाबा जिन्दा के वेश में श्री नानक जी को मिले थे। वे ही श्री नानक जी के गुरु जी (सतगुरु जी) थे। वे स्वयं ही परमेश्वर (अकाल मूर्ति) हैं। उस कबीर परमेश्वर ने सतनाम (दो अक्षर= ओम्-सोहं) को सार्वजनिक न करने का विशेष आदेश श्री नानक देव जी को दिया था। जिसका श्री नानक देव जी ने आजीवन दृढ़ता के साथ पालन किया था। उसी के परिणामस्वरूप सतनाम (दो अक्षर=ओम्-सोहं) किसी को दान नहीं किया गया। अन्य मंत्र :- 1. वाहे गुरु-वाहे गुरु 2. एक ओंकार सतिनामु करता पुरूखु निरभउ निरवैरू अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरु प्रसादि। ये मंत्र मोक्षदायक नहीं हैं। इन के जाप करने से ज्ञान यज्ञ का फल मिलता है। जन्म-मृत्यु भी बनी रहती है। इन मंत्रों अर्थात् ज्ञान यज्ञ से मनुष्य जन्म अधिक प्राप्त हो जाते हैं तथा भविष्य के जन्मों में जब कभी मनुष्य जन्म मिलता है तो परमात्मा प्राप्ति की प्रेरणा भी बनी रहती है। प्राणी नास्तिक नहीं होता। फिर कलयुग के इस मोक्ष काल (बिचली पीढ़ी) में मानव जन्म प्राप्त करके वास्तविक मंत्र सतनाम (सतिनाम) जो दो अक्षर (ओम्-सोहं) को परमात्मा के भेजे अवतार से अर्थात् सतगुरु से प्राप्त करके तथा सारनाम जो एक नाम (आदि नाम) है उसको प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर लेता है। यदि यह ''सतनाम'' तथा आदिनाम (सारनाम) पहले सार्वजनिक कर दिया जाता तो काल के भेजे नकली सन्तों के हाथ पड़ जाता। वे अनाधिकारी होने के कारण इन मंत्रों का लाभ साधक को नहीं होता। साधक का जीवन नाश हो जाता तथा अब (बिचली पीढ़ी) में असली तथा नकली सन्त की पहचान न होने के कारण काल का दाव लग जाता। अब सर्व विदित है कि वर्तमान में मुझ दास (सन्त रामपाल दास जी महाराज) के अतिरिक्त कोई भी सन्त इन वास्तविक पूर्ण मोक्षदायक मंत्रों से परिचित नहीं है।

''प्राण संगली'' नामक पुस्तक (हिन्दी वाली जो सन्त सम्पूर्ण सिंह द्वारा सम्पादित है) के भाग-2 के पृष्ठ 40 तथा 42 पर स्पष्ट किया है।

पृष्ठ 40 पर वाणी इस प्रकार है :-''जब अपने प्रान पिंड की जानी, तब प्रगटि वाह–वाह की बानी**'' भावार्थ है कि श्री नानक जी ने कहा है कि जब मुझे अपने जीवन तथा शरीर का ज्ञान हुआ कि यह जीव सतलोक से आया है, वहां जन्म-मरण, हिन्दू-मुसलमान नहीं हैं। वहां यह पांच तत्व का पिण्ड (शरीर) नहीं है। उस लोक में सर्व सुख है, तब वह वाह-वाह का वचन अपने आप मुख से निकलने लगा।**

पृष्ठ 42 पर वाणी इस प्रकार है :-

तहँ वाह–वाह आपि अषाइँदा, गुर शब्दी सचु सोई ।।
नानक वाह–वाह करदिआँ, करमि प्राप्त होय ।।
वाह–वाह करती रसना सुहाई । पूरे शब्दि मिलिआ प्रभु आई ।।
वाह–वाह मुखि सहज कढाई । वाह–वाह सिऊँ प्रभ बिन आई ।।

भावार्थ :- श्री नानक देव जी ने कहा है कि वाह-वाह का शब्द आपने आप ही निकलने लगा। वाह-वाह के जाप से केवल (करमि=कर्म) किया कर्म ही प्राप्त होता है। पूरे शब्द अर्थात् मंत्र से परमात्मा सहज मिल जाता है। पूरा शब्द = सतनाम तथा आदिनाम है। इससे परमात्मा प्राप्ति है तथा वाह-वाह से केवल किया कर्म ही मिलता है, मोक्ष नहीं।

2. दूसरा मंत्र :- एक ओंकार सतिनामु करता पुरूखु निरभउ निरवैरू अकाल

मूरति अजूनी सैभं गुरु प्रसादि।

यह मंत्र ऐसा है जैसे हिन्दुओं ने यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 के आगे ओम् मंत्र जोड़कर उस को गायत्री मंत्र कहा है तथा यह भी कहा है कि इस गायत्री मंत्र का जाप करने से मोक्ष प्राप्त हो जाता है।

हिन्दुओं में प्रचलित गायत्री मंत्र :- ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेणीयम् भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

संत रामपाल दास जी महाराज ने अपने सत्संग वचनों में बताया है कि अज्ञानियों ने यजुर्वेद अध्याय 36 के मंत्र 3 के साथ ॐ मंत्र जोड़कर इस मंत्र को महिमाहीन कर दिया। जैसे कोई व्यक्ति प्रधानमंत्री को पत्र लिख रहा हो। उसमें 'प्रधानमंत्री' को 'मुख्यमन्त्री' के नाम से सम्बोधित करे तो वह पत्र व्यर्थ है। इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 में ॐ नाम नहीं है। क्योंकि इस मंत्र में पूर्ण परमात्मा की महिमा लिखी है तथा ॐ नाम क्षर ब्रह्म अर्थात् काल का है। इसलिए जहां पर परम अक्षर ब्रह्म की महिमा लिखी है। वहां पर काल का ॐ (ओंकार) नाम लगाकर तो सतपुरूष की छवि धूमिल करना है। सो ऐसा करके मंत्र की महिमा समाप्त कर दी। जैसे कम्पनी ने मोटर गाड़ी का पिस्टन बना रखा है यदि कोई मूर्ख अपनी महिमा बनाने तथा अपने को इन्जीनियर सिद्ध करने के उद्देश्य से पिस्टन के साथ नट वैल्ड करके कहे कि यह अब सही उपयोगी बन गया है। उसने तो नाश कर दिया पिस्टन का, उपयोगी तो कम्पनी ने बना ही रखा था।

इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 परमात्मा ने सही बना रखा था, जो उपयोगी था। अज्ञानियों ने इसके साथ ॐ मंत्र जोड़कर यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 का नाश कर दिया। जिस कारण से इसके जाप का भी लाभ प्राप्त नहीं हुआ। वेद के किसी मंत्र का जाप करने से या किसी ग्रंथ की वाणी का पाठ करने से केवल ज्ञान यज्ञ का लाभ ही सम्भव है, जो मोक्षदायक नहीं है।

विचार करें :- उपरोक्त दोनों मंत्रों में परमेश्वर की महिमा कही है कि ''सर्व सृष्टि का रचनहार अर्थात् कर्ता परमेश्वर निर्भय है तथा वह किसी से वैर नही रखता अर्थात् सर्व को प्यार देता है। वह अकाल मूर्ति अर्थात् अविनाशी है। वह परमात्मा स्वयंभू है। इस परमेश्वर की प्राप्ति सतनाम तथा आदिनाम को पूरे गुरु से मंत्र प्राप्त करके जाप करने से होगी। यह मंत्र जिस में एक ओंकार (ओम्) मंत्र है, तथा दूसरा तत् (सोहं) मंत्र है। यह दो अक्षर का सतनाम है। इसको गुरु ही प्रदान कर सकता है। उसके आर्शीवाद प्रसाद से इसकी प्राप्ति हो सकती हे। पूरे गुरु बिना इस का ज्ञान व लाभ नहीं हो सकता। यज्ञों को तो ऐसा जानों जैसे रोगी को ग्लूकोज चढ़ाई जाए। ग्लूकोज से रोग नाश नहीं होता। उससे केवल शरीर को ताकत मिलती है। रोग नाश करने की औषधि ग्लूकोज से भिन्न होती है। इसी प्रकार सतनाम तथा आदि नाम रूपी औषधि जन्म मरण के रोग का नाश करने वाली है। जो इनसे वंचित रहे हैं, उनको मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ।

यह जानकारी उपरोक्त मंत्रों से होती है। यदि पूरे गुरु से सम्पर्क न किया तो उपरोक्त मंत्रों के ज्ञान से मोक्ष नहीं हो सकता। मोक्ष होगा इनके कहे अनुसार कार्य करने से।

उदाहरण :- जैसे कहीं पर बिजली की महिमा का वर्णन लिखा हो कि विद्युत अंधेरे को उजाले में बदल देती है, पशुओं का चारा काट देती हैं, आटा बना देती हैं, जमीन से जल निकाल देती है, जिससे फसल की सिंचाई होती है, कारखानों को चलाती है। विद्युत से लाभ प्राप्त करने के लिए कनैक्शन लेना चाहिए, विद्युत विभाग से कनैक्शन मिलता है। बिजली से होने वाले लाभ को जानकर भद्र पुरूष उस की प्रशंसा करता हुआ, कहा करता है वाह-वाह यह विद्युत इतनी लाभदायक है, मुझे तो अब पता चला है।

निष्कर्ष :- वाह-वाह कहने से तथा विद्युत के ऊपर लिखित गुणों को नित्य पाठ करने से विद्युत का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। उस में लिखे कनेक्शन लेने से विद्युत का लाभ प्राप्त होता है।

इसी प्रकार पूर्वोक्त मंत्रों = वाहे गुरु-वाहे गुरु कहने से तथा एक ओंकार सतिनाम--------तथा गायत्री मंत्र का प्रतिदिन जाप करने से मोक्ष नहीं हो सकता केवल परमात्मा की महिमा का ज्ञान ही होगा। आत्मकल्याण तो सतनाम (दो अक्षर=ओम्-सोहं) तथा आदि नाम (सारनाम=?) को पूरे सतगुरु से प्राप्त करके जाप करने से होगा। श्री नानक देव जी ने बहुत जोर देकर कहा है कि :-

साध संगति मिलिया मन माना, ना में नाह ॐ–सोहं जाना।

भाई बाले वाली जन्म साखी में समुद्र की साखी में भी प्रमाण है कि श्री नानक देव जी भी यह मंत्र जाप किया करते थे। कृप्या देखें फोटो कापी ''समुद्र की साखी'' पृष्ठ 547 की ।

प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी भाई बाले वाली जन्म साखी के पृष्ठ 547 पर ''समुद्र की साखी''

ਸਮੁੰਦਰ ਦੀ ਸਾਖੀ (੫੪੭)

ਸਮੁੰਦਰ ਦੀ ਸਾਖੀ

ਬਾਲਾ ਸੰਧੂ ਵਾਚ॥ ਤਾਂਤੇ ਹੇ ਗੁਰੂ ਅੰਗਦ ਜੀ ਜਦ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਅਜਿਤੇ ਪਾਸੋਂ ਵਿਦਿਆ ਹੋਏ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਕਿਹਾ ਸਚੇ ਪਾਤਸ਼ਾਹ ਜੀ ਅਸਾਂ ਸਮੁੰਦਰ ਤਾਂ ਦੇਖਿਆ ਪਰ ਲੰਕਾ ਨਾ ਦੇਖੀ ਜਿਥੇ ਰਾਮਚੰਦ੍ਰ ਜੀ ਚੜਾਈ ਕੀਤੀ ਹੈ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਕਿਹਾ ਚਲੋ ਭਾਈ ਬਾਲਾ ਤੇ ਮਰਦਾਨਾ ਤੁਹਾਨੂੰ ਰੰਜ ਨਹੀਂ ਕਰਨਾ ਅਖੀਂ ਮੀਟੋ ਜਾਂ ਅਖੀਂ ਮੀਟਕੇ ਖੋਲ੍ਹੀਆਂ ਤਾਂ ਸਮੁੰਦਰ ਦੇ ਕੰਢੇ ਜਾਇ ਖੜੇ ਹੋਏ ਤੇ ਆਖਣ ਲਗੇ ਬਾਲਾ ਤੇ ਮਰਦਾਨਾ ਮੇਰੇ ਪਿਛੇ ਪਿਛੇ ਚਲੇ ਆਓ ਮੁਖੋਂ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਹਿੰਦੇ ਆਓ ਤੇ ਅਗੇ ਅਗੇ ਗੁਰੂ ਜੀ ਤੁਰ ਪਏ ਜੈਸੇ ਧਰਤੀ ਉਪਰ ਤੁਰਦੇ ਸਨ ਓਸੇ ਤਰਾਂ ਸਮੁੰਦਰ ਉਪਰ ਤੁਰ ਪਏ ਜਾਂ ਚਲੇ ਜਾਵਣ ਤੇ ਪਿਛੇ ਬਾਲਾ ਤੇ ਮਰਦਾਨਾ ਜਾਵਣ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਵਿਚਾਰ ਕੀਤੀ ਕਿ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਓਅੰ ਸੋਹੰ ਜਪਦੇ ਜਾਂਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਵੀ ਓਅੰ ਸੋਹੰ ਲਗਾ ਜਪਣ ਤੇ ਲਗਾ ਗੋਤੇ ਖਾਵਣ ਜਾਂ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਜੀ ਦੇਖਨ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਗੋਤੇ ਖਾਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਗੁਰੂ ਜੀ ਕਿਹਾ ਮਰਦਾਨਾ ਗੁਰੂ ਦੀ ਕਰਨੀ ਵਲ ਨਹੀਂ ਦੇਖਣਾ ਗੁਰੂ ਦੇ ਬਚਨਾਂ ਪਰ ਚਲਨਾ ਚਾਹੀਏ ਤੂੰ ਮਰਦਾਨਾ ਓਹੋ ਆਖ ਜੋ ਅਸਾਂ ਆਖਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਫੇਰ ਲਗਾ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਕਹਿਣ ਤਾਂ ਫਿਰ ਜਲ ਉਪਰ ਓਸੇ ਤਰਹ ਤੁਰਨ ਲਗਾ।

यह फोटो कापी भाई बाले वाली जन्म साखी हिन्दी वाली के पृष्ठ 550-551 की है।

जन्म साखी (५५०) भाई बाले वाली

॥ साखी समुन्द्र की ॥

एक दिन मर्दाने ने कहा हे महाराज ! मेरा मन चाहता है कि समुंद्र में जो लंका है वहां का भ्रमण किया जाय, गुरू जी ने कहा अच्छा आप लोग अपने नेत्र बंद करो। जब मैं और मर्दाने ने नेत्र बंद करके क्षण के पीछे खोले तो हम लोग गुरू जी के साथ महान समुंद्र के तट पर खड़े थे, अब गुरू जी ने हमें कहा कि तुम लोग समुंद्र के जल पर वाहिगुरू जप

जन्म साखी (५५१) भाई बाले वाली

करते पैदल ही चले आओ, हे गुरू अंगद जी ! हम लोग गुरू जी के पीछे २ उसी प्रकार जा रहे थे जैसे सूखी पृथिवी पर चला जाता है। आगे २ गुरू जी ओम सोहं का यप करते चले जा रहे थे, तब मर्दाने ने सोचा कि हम भी ओम सोहं का जप क्यों न करें। अब मर्दाना भी ओम सोहं की रट लगाने लगा, बस वह लगा गोते खाने। गुरू जी ने पीछे देखा तो हंस कर कहने लगे, हे मर्दाना ! शिश्य का धर्म है कि वह गुरू के बताये मार्ग पर चले, इस लिये तू वाहिगुरू ही जप तेरा उसी में कल्याण है। जब मर्दाने ने वाहिगुरू नाम की रट लगाई तब फिर पूर्व प्रकार पानी पर चलने लगा, गुरू जी ने कहा–हे मर्दाना ! तुम जब कभी मनमानी करते हो तभी तुमें कष्ट होता है। यदि हमारी आज्ञा में रहो तो तुमें कदापि दुख न हो, गुरू की करनी की ओर ध्यान देना शिष्य का कर्तव्य नहीं। शिश्य का कर्तव्य तो गुरू आज्ञानुगामी होना है, इसी प्रकार चलते २ हम लोग मान

प्रश्न :- एक सच्चे सिख के लिए पाँच चीज अनिवार्य हैं। 1. केश 2. कंघा 3. कच्छा 4. कड़ा 5. कृपाण (तलवार) इस विषय में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर (सन्त रामपाल दास का) :- यह पाँच वस्तुऐं एक सिंघ (सिंह) के लिए अनिवार्य हैं न कि एक सिख के लिए। सिख (शिष्य) उसको कहते हैं जिसने कोई वक्त गुरु बना रखा है। उसके लिए ये अनिवार्य हैं 1. शराब न पीए 2. मांस न खाए 3. तम्बाकू सेवन न करे 4. चोरी न करे 5. जारी (परस्त्रीगमन) न करे। जो वस्तुऐं आप अनिवार्य कह रहे हो उनकी आवश्यकता कब पड़ी सुनों ! एक समय कश्मीर के पंड़ित नौंवे सिख गुरु श्री तेग बहादुर जी के पास आए तथा उनसे अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना की थी। मुसलमान राजा ओरंगजेब हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बना रहा था। श्री तेग बहादुर जी ने उनकी सहायता का वचन दे दिया। जिसके परिणाम स्वरूप श्री तेग बहादुर जी को अपने प्राणों की आहुति भी देनी पड़ी। उनके पश्चात् उनके शूरवीर पुत्र श्री गोबिन्द राय जी सिख गद्दी पर दसवें सिख गुरु जी के रूप में उत्तराधिकारी हुए। उन्होंने भी अपने पिता द्वारा दिए गए वचन की दृढ़ता से पालना

की तथा मुसलमानों से अपने पिता का प्रतिशोध लेने के लिए क्रूर राजा को ललकारा। उसके लिए श्री गोविन्द सिंह जी ने लड़ाकू शूरवीर सिखों का चुनाव किया तथा उनको सिंघ (सिंह) की उपमा दी गई। उनके लिए उपरोक्त वस्तुए अनिवार्य बताई गई थी। जो उस समय अति आवश्यक थी। उन सिंघों के लिए श्री गोबिन्द सिंह जी ने यहां तक कहा था कि जो ये पांच वस्तुऐं (केश, कंघा, कच्छा, कड़ा तथा कृपाण) धारण नहीं करेगा वह मेरा सिंह नहीं होगा। वह पांचों वस्तुऐं उस समय की लड़ाई के लिए तथा बचाव के लिए अनिवार्य थी। वर्तमान में इनकी आवश्यकता नहीं है। जैसे मुसलमान लोग कभी भी सिंघों पर आक्रमण कर देते थे। उनसे निपटने के लिए केश, कड़ा तथा कृपाण, कच्छा तथा कंघा कैसे अनिवार्य थे ?

1. केश = सिर पर केश अधिक होने से लाठी तथा कृपाण के वार से बचाव होता था।

2. कंघा = बालों को संवारने के लिए कंघा अनिवार्य था।

3. कड़ा = भी अचानक आक्रमण होने पर ढाल की तरह अड़ाने के लिए काम आता था।

4. कच्छा = घुटनों तक का कच्छा (Under Wear) तथा उसके ऊपर एक चद्दर (तहमंद) पहनना अनिवार्य था। लड़ाई के समय चद्दर को सिर पर पगड़ी के स्थान पर बाँध लेते थे तथा कच्छा दौड़ने, चलने में सुविधा जनक था।

5. कृपाण = तलवार का कार्य तो सर्व विदित है।

ये उपरोक्त पांचों वस्तुऐं उस समय अनिवार्य थी। जब सिखों व मुसलमानों का झगड़ा हो रहा था। हिन्दू धर्म तथा सिख धर्म की रक्षा के लिए श्री गोबिन्द सिंह जी ने अपने दोनों पुत्रों को बली चढ़ा दिया तथा अपने प्राणों की भी आहुति दे दी। मुसलमान बनना हिन्दुओं के लिए क्यों गंवारा नहीं था ? क्योंकि मुसलमान मांस खाते थे तथा मुसलमान धर्म को स्वीकार करने वाले के लिए मांस खाना अनिवार्य था जो हिन्दुओं और सिखों को नापसंद था। इसी कारण से उपरोक्त घटनाऐं घटी। वर्तमान में हिन्दू तथा सिख अधिकतर मांस खाने लग गए हैं। जो पांच वस्तुऐं सिंघों के लिए अनिवार्य कही गई थी। उनकी वर्तमान में आवश्यकता नहीं है। उस समय अनिवार्य थी।

शंका :- यह हमारे गुरु जी का आदेश है। हमारे लिए शिरोधार्य है। उन्होंने कहा है कि जो ये पांच वस्तुऐं धारण नही करेगा। वह मेरा सिंघ (सिंह) नहीं है।

समाधान :- एक पिता ने अपनी सन्तान को सर्दी के मौसम में कहा ''जो बच्चा पैरों में जुराब, जूते, शरीर पर जर्सी, कम्बल धारण नहीं करेगा वह मेरा बच्चा नहीं है। अचानक पिता की मृत्यु हो गई। वे बच्चे गर्मियों के मौसम में जुराब, जूते, जर्सी तथा कम्बल धारण किए हों और उनसे कोई कहे कि बच्चों अब गर्मी का मौसम है। जर्सी कम्बल तो कम से कम उतार दो। वे बच्चे कहे कि हमारे पिता जी का आदेश है, हमारे लिए शिरोधार्य है। हम नहीं उतारेंगे। तो उन बच्चों को कुछ विवेक से भी काम लेना चाहिए।

यही स्थिति अब है जो कहते हैं कि हमारे श्री गुरु जी का आदेश है कि जो ये पांच वस्तुएं धारण नहीं करेगा वह सिंह नहीं है। उन्हें विचार करना पड़ेगा की इन वस्तुओं की वर्तमान में आवश्यकता नहीं है। अब आपसी लड़ाई नहीं है। अब शांति है।

सर्दी का मौसम नहीं है अर्थात् सब धर्मों के व्यक्ति प्यार से रह रहे हैं। अब कृपाण की लड़ाई नहीं रही है। केश तथा कड़े से भी कोई बचाव वर्तमान की लड़ाई में नहीं है। पहले कृपाण तीन-चार फुट की लम्बी होती थी। वर्तमान के सिंह छः इन्च की छुरी नुमा कृपाण लटका कर सिंह बने हैं। यह केवल परम्परा बन कर रह गई है। इसका समाधान बुद्धिमान मानव विवेक से करें। फिर भी कोई न माने तो न माने मुझ दास (संत रामपाल दास जी महाराज) का मात्र सुझाव है।

''महर्षि दयानन्द की अज्ञानता''

विवेचन :- हिन्दुओं द्वारा नित्य जाप किए जाने वाले गायत्री मंत्र का किसी को पता नहीं था कि यह गायत्री मन्त्र कहां से उद्घृत किया गया है। महर्षि दयानन्द ने अपने द्वारा लिखी पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' के समुल्लास 3 पृष्ठ 38 पर (वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ दीनानगर से प्रकाशित तथा आचार्य प्रिन्टिंग प्रेस दयानन्द मठ गोहाना मार्ग रोहतक से मुद्रित) गायत्री मन्त्र का उल्लेख किया है, लिखा है कि ''भूः भुवः स्वः'' ये तीन वचन तैतरीय आरण्यक के हैं। मंत्र के शेष भाग के विषय में महर्षि दयानन्द मौन है। उन्हें यह नहीं पता कि यह कहां से लिया गया है। इससे सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द को वेद ज्ञान नहीं था। यदि वेद ज्ञान होता तो स्पष्ट कहता कि यह मंत्र जिसे गायत्री मंत्र कहते हैं, यजुर्वेद अध्याय 36 का मंत्र 3 का है। ''सत्यार्थ प्रकाश'' की रचना सन् 1875 में करके, समाज में पढ़ने के लिए प्रवेश कर दिया। उसके दो वर्ष बाद वेदों का अनुवाद करना प्रारम्भ किया। यजुर्वेद का अनुवाद जनवरी सन् 1877 में प्रारम्भ किया तथा नवम्बर 1882 को छः वर्ष में पूरा किया। यजुर्वेद अध्याय 36 के मंत्र 3 का अनुवाद महर्षि दयानन्द का अपना ज्ञान है तथा सत्यार्थ प्रकाश में इसे गायत्री मंत्र बनाकर अनुवाद लिखा है यह महर्षि दयानन्द ने किसी की नकल करके लिखा है। इसलिए एक दूसरे से मेल नहीं करता। जब महर्षि दयानन्द यजुर्वेद का अनुवाद कर रहा था। इसको यह भी याद नहीं था कि मैंने इस मंत्र का अनुवाद सत्यार्थ प्रकाश में क्या किया है? इससे सिद्ध है कि महर्षि दयानन्द का ''सत्यार्थ प्रकाश'' का ज्ञान वेद ज्ञान विरूद्ध है। क्योंकि सत्यार्थ प्रकाश में लिखे गायत्री मन्त्र के अंश का ज्ञान कराया है कहा है कि ये तीन वचन (भूः भुवः स्वः) तैतरीय आरण्यक के हैं। यदि वेद ज्ञान होता तो लिखता कि यह मंत्र यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 है। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक के अध्याय ''कौन तथा कैसा है परमेश्वर'' में पृष्ठ 60 पर।

विशेष :- यह उपरोक्त ज्ञान सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा बताया गया है। ऐसा ज्ञान परमेश्वर के भेजे अवतार बिना कोई बताने में सक्षम नहीं है। इसलिए इस अद्वितीय आध्यात्मिक ज्ञान के दाता सन्त रामपाल दास जी महाराज ही धरती पर अवतार धारण करके महापरोपकार का कार्य कर रहे हैं।

सर्व मानव समाज से प्रार्थना है कि सतलोक आश्रम बरवाला जिला हिसार, प्रांत-हरियाणा (भारत) में अविलम्ब पहुँच कर वास्तविक मोक्ष मार्ग प्राप्त करें।

सत साहेब।

कृप्या देखें फोटो कापी महर्षि दयानन्द द्वारा अनुवादित यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 की।

षट्त्रिंशोऽध्यायः १११५

भूर्भुवः स्वः । तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि ।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त् ॥३॥

११५६ यजुर्वेदभाषाभाष्ये

पदार्थः—हे मनुष्यो ! जैसे हम लोग (**भूः**) कर्मकाण्ड की विद्या (**भुवः**) उपासना काण्ड की विद्या और(**स्वः**) ज्ञानकाण्ड की विद्या को संग्रहपूर्वक पढ़के (**यः**) जो (**नः**) हमारी (**धियः**) धारणावती बुद्धियों को (**प्रचोदयात्**) प्रेरणा करे उस (**देवस्य**) कामना के योग्य (**सवितुः**) समस्त ऐश्वर्य के देने वाले परमेश्वर के (**तत्**) उस इन्द्रियों से न ग्रहण करने योग्य परोक्ष (**भर्गः**) सब दुःखों के नाशक तेजस्वरूप का (**धीमहि**) ध्यान करें वैसे तुम लोग भी इस का ध्यान करो ॥३॥

यह फोटो कापी यजुर्वेद अध्याय 36 के मंत्र 3 की है जो महर्षि दयानन्द के करकमलों से अनुवादित है। इस मंत्र के पहले ॐ अक्षर लगा कर इसे गायत्री मंत्र कहा गया। इसका अनुवाद सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 3 में किए गए अनुवाद से मेल नही खाता। जो नीचे लगे सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 3 के पृष्ठ 38 के सम्बंधित विवरण की फोटो कापी है। जो एक दूसरे से मेल नहीं खाती। क्योंकि 'सत्यार्थ प्रकाश में लिखा इसी मंत्र का अनुवाद महर्षि दयानन्द ने किसी की नकल करके लिखा है और यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 में किया गया अनुवाद महर्षि दयानन्द का अनुभव है। जिसका कोई सिर पैर नहीं है।

कृप्या देखें फोटो कापी महर्षि दयानन्द द्वारा रचित पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' के समु. 3 की।

३८ सत्यार्थप्रकाशः

अध्यापक अपने लड़का–लड़कियों को अर्थसहित गायत्रीमन्त्र का उपदेश करदें। वह मन्त्र—

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि।
धियो॒ यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्।।

इस मन्त्र में जो प्रथम ओङ्कार है, उसका अर्थ प्रथमसमुल्लास में कर दिया है, वहीं से जान लेना। अब तीन महाव्याहृतियों के अर्थ संक्षेप में लिखते हैं—**'भूरिति वै प्राणः' 'यः प्राणयति चराऽचरं जगत् स भूः स्वयम्भूरीश्वरः'** जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है उस प्राण का वाचक होके 'भूः' परमेश्वर का नाम है। **'भुवरित्यपानः' 'य सर्वं दुःखमपानयति सोऽपानः'** जो सब दुःखों से रहित, जिसके संग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं, इसलिए परमेश्वर का नाम 'भुवः' है। **'स्वरिति व्यानः' 'यो विविधं जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः'** जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सबका धारण कर रहा है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'स्वः' है। ये तीनों वचन तैत्तिरीय आरण्यक के हैं।

(सवितुः) **'यः सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत् स सविता तस्य'** जो सब जगत् का उत्पादक और सब ऐश्वर्य का दाता है (देवस्य) **'यो दीव्यति दीव्यते वा स देवः'** जो सर्वसुखों का देनेहारा और जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं उस परमात्मा का जो (वरेण्यम्) **'वर्तुमर्हम्'** स्वीकार करने योग्य अतिश्रेष्ठ (भर्गः) **'शुद्धस्वरूपम्'** शुद्धस्वरूप और पवित्र करनेवाला चेतन ब्रह्मस्वरूप है (तत्) उसी परमात्मा के स्वरूप को हम लोग (धीमहि) **'धरेमहि'** धारण करें। किस प्रयोजन के लिए कि (यः) जो सविता देव परमात्मा (नः) हमारी (धियः) बुद्धियों को (प्रचोदयात्) प्रेरणा करे अर्थात् बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे।

यह फोटो कापी महर्षि दयानन्द द्वारा रचित पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3

पृष्ठ 38 की है। इसमें महर्षि दयानन्द ने कहा है कि भूः भुवः स्वः ये तीन वचन तैत्तिरीय आरण्यक के हैं। विचार करें क्या महर्षि दयानन्द को वेद ज्ञान था। क्योंकि ॐ शब्द को छोड़ कर शेष पूरा मंत्र यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 है। यदि उसे वेद ज्ञान होता तो स्पष्ट लिखता कि यह मंत्र यजुर्वेद का है। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश वेद विरूद्ध ज्ञान से भरा पड़ा है। जबकि दयानन्द ने दुहाई दी है कि मैंने वेदों के अनुसार सत्यार्थ प्रकाश की रचना की है। कृप्या दोनों फोटो कापीयों (यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 तथा सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 पृष्ठ 38) में देखें प्रत्यक्ष प्रमाण जो आप जी के समक्ष है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में क्या बकवास भर रखी है, कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 164 से 166 पर।

❑ समुल्लास 7 पृष्ठ 154 पर लिखा है परमात्मा निराकार है।

❑ समुल्लास 7 पृष्ठ 155 तथा 163 पर लिखा है कि परमात्मा साधक के पाप नाश नहीं कर सकता। महर्षि दयानन्द का यह भी कहना है कि ''सत्यार्थ प्रकाश'' में वेदों का ज्ञान ही सरल करके लिखा है। जबकि यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में छः बार लिखा है कि परमात्मा दान देने वाले अपने भक्त के घोर पाप को भी नाश कर देता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि ''सत्यार्थ प्रकाश'' वेद विरूद्ध ज्ञान युक्त है अर्थात् झूठार्थ प्रकाश है।

❑ समुल्लास 4 पृष्ठ 70 पर लिखा है कि विवाह के समय पिता के गोत्र तथा माता के कुल (गोत्र) की छः पीढ़ियों को छोड़ कर लड़के -लड़की का विवाह करें।

जिस किसी कुल में किसी एक व्यक्ति को निम्न रोगों में से एक भी रोग हो तो उस पूरे कुल के लड़के तथा लड़की से विवाह न करें। वे रोग हैं :- बवासीर, दमा, खांसी, अमाश्य (पेट की गड़बड़ी) मिरगी, श्वेत कुष्ट और गलित कुष्ट रोग तथा जिन व्यक्तियों के शरीर पर बड़े-२ बाल हों उनके पूरे कुल को त्याग दें। जो वेदों का अध्ययन न करते हों उनके कुल को त्याग दें।

विचार करें :- क्या महर्षि दयानन्द के विद्यान अनुसार बच्चों का विवाह हो सकेगा? यदि विवाह होते ही कोई उपरोक्त रोग कन्या या वर को लग जाए तो वह कुल भी गया काम से, वाह रे भांग के नशेड़ी, तेरा ''सत्यार्थ प्रकाश'' का ज्ञान। कृप्या देखें फोटो कापी समुल्लास 4 पृष्ठ 70 की इसी पुस्तक के पृष्ठ 162 पर।

❑ समु. 4 पृष्ठ 71 पर लिखा है कि कैरी आँखों वाली लड़की से विवाह मत करो, दांत युक्त लड़की से विवाह करो, किसी का नाम पार्वती, गोदावरी, गोमति आदि नदियों और पर्वतों पर हो उस लड़की से विवाह मत करो।

❑समुल्लास 4 पृष्ठ 71 पर ही लिखा है कि 24 वर्ष की स्त्री 48 वर्ष के पुरूष का विवाह करना उत्तम है।

❑ समुल्लास 4 पृष्ठ 82 पर लिखा है कि नवजात बच्चे को माता केवल छः दिन दूध पिलाए फिर अपने स्तनों से दूध बन्द करने के लिए कोई पदार्थ लगाए। बच्चे को दूध पिलाने के लिए ऐसी दाई रखो जिसके स्तनों में दूध हो वह उस नवजात बच्चे को अपना दूध पिलाए। विचार करें यदि एक गांव में एक दिन तीन-चार स्त्रियों को बच्चे

उत्पन्न हो जाऐं तो इतनी दाई कहां से उपलब्ध होगी। एक दाई कोई मिल्क प्लांट नहीं है कि सर्व बच्चों को दूध पिला देगी या उसी समय सर्व दाईयाँ भी बच्चों को जन्म दें। फिर दयानन्द के विधान अनुसार वे अपने बच्चों को पालेंगी या अन्य के बच्चों को ?

❑ समु. 4 के पृष्ठ 96-97 पर महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि विधवा स्त्री का पुनः विवाह इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि पुन:विवाह से उसका पति व्रत धर्म नष्ट हो जाएगा। इसलिए नियोग करें।

महर्षि दयानन्द का नियोग नियम :- स्त्री यदि विधवा हो जाए तो उसको चाहिए कि वह किसी अन्य पुरूष से गर्भ धारण करले। वह सन्तान स्त्री के विवाहित पति की ही मानी जाएगी। उसी का गोत्र होगा। वीर्य दाता का नहीं। गर्भ धारण (करने के) पश्चात् उस स्त्री व गैर पुरूष का कोई नाता न रहे बच्चों की परवरिश भी अकेली स्त्री स्वयं करें। वीर्य दाता बच्चों के पालन में कोई सहयोग न दे। अपने-अपने घर में रहें।

❑ महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के समु. 4 पृष्ठ 102 पर अपने अनुयाईयों की सुहागिन स्त्रियों को भी आदेश दिया है कि वे भी किसी गैर पुरूष से पशु तुल्य कर्म अर्थात् नियोग करें, लेकिन निम्न परिस्थितियों में :-

❑ यदि किसी का पति धन कमाने विदेश गया हो और तीन वर्ष घर न आए तो वह स्त्री किसी गैर पुरूष से गर्भ धारण करके सन्तान उत्पति करले। वह सन्तान उसके जीवित विवाहित पति की ही मानी जाएगी। (समु. 4 पृष्ठ 102 पर)

❑ समु. 4 पृष्ठ 102 पर ही लिखा है कि यदि किसी का पति मारता पिटता हो तो उस स्त्री को चाहिए कि वह किसी अन्य पुरूष के पास जाकर गर्भ धारण करले तथा सन्तान उत्पति करले। वह गैर सन्तान भी विवाहित जीवित पति की मानी जाएगी। उसकी सम्पत्ति की भागीदार मानी जाएगी।

❑ समु. 4 पृष्ठ 96-97 पर लिखा है कि 'यदि विधवा का पुनः विवाह कर दिया तो उसका पतिव्रत धर्मनष्ट हो जाएगा' फिर पृष्ठ 101 पर लिखा है कि एक स्त्री ग्यारह पुरूषों तक नियोग अर्थात् पशु तुल्य कर्म कर सकती हैं।

विचार करें बुद्धिमान समाज क्या ऐसी बातें महर्षि या विद्धान या समाज सुधारक कह सकता हैं ऐसा विधान तथा नियम या तो महामुर्ख या भांग पीकर ही कह सकता है। उपरोक्त विचारों से ही पता चल जाता है कि आर्य समाज प्रवर्तक दयानन्द कितना विद्धान था। इन विचारों से अधिक अभ्रद बातें ''सत्यार्थ प्रकाश'' में लिखी हैं जो यहां लिखी भी नहीं जा सकती।

❑ फिर महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 8 पृष्ठ 197-198 पर लिखा है कि सूर्य पर पृथ्वी की तरह सब प्रजा बसती हैं। इसी प्रकार सर्व पदार्थ हैं। इन्हीं वेदों को सूर्य (आग के गोले) पर रहने वाले मनुष्य पढ़ते हैं।

वाह रे ! महर्षि दयानन्द तेरे अमृत वचन। अधिक ज्ञान वृद्धि के लिए कृप्या पढ़े ''सत्यार्थ प्रकाश'' महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत गुरूकुल झज्जर, हरियाणा से लेकर क्योंकि यह प्रकाशन वहीं से उपलब्ध होता है।

''सत्यार्थ प्रकाश में कोरी बकवास''

दो सूर्य चन्द्र होते तो रात और कृष्णपक्ष का होना भी नष्ट–भ्रष्ट होता। इसलिये एक भूमि के पास एक चन्द्र और अनेक चन्द्र, अनेक भूमियों के मध्य में एक सूर्य रहता है।

प्रश्न–सूर्य, चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है, वा नहीं ?

उत्तर–ये सब भूगोल लोक और इनमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती हैं, क्योंकि–

एतेषु हीद॒ᳪ सर्वं वसु हितमेते हीद॒ᳪ सर्वं वासयन्ते तद्यदिद॒ᳪ सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति।। –शत० कां० १४।।

पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इनका वसु नाम इसलिये है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा वसती हैं और ये ही सबको वसाते हैं। जिसलिये वास के, निवास करने के घर हैं इसलिये इनका नाम 'वसु' है। जब पृथिवी के समान सूर्य, चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं, पश्चात् उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह ? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा–सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे ? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं

होता तो इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है ? इसलिये सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है।

प्रश्न–जैसे इस देश में मनुष्यादि सृष्टि की आकृति अवयव हैं वैसे ही अन्य लोकों में होंगे वा विपरीत ?

उत्तर–कुछ–कुछ आकृति में भेद होने का सम्भव है, जैसे इस देश में चीने, हबशी और आर्य्यावर्त्त, यूरोप में अवयव और रंग–रूप और आकृति का भी थोड़ा–थोड़ा भेद होता है, इसी प्रकार लोक–लोकान्तरों में भी भेद होते हैं। परन्तु जिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश में है, वैसी जाति ही की सृष्टि अन्य लोकों में भी है। जिस–जिस शरीर के प्रदेश में नेत्रादि अङ्ग हैं, उसी–उसी प्रदेश में लोकान्तर में भी उसी जाति के अवयव भी वैसे ही होते हैं। क्योंकि–

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

–ऋ०। मं० १०। सू० १९०।।

'धाता' परमात्मा ने जिस प्रकार के सूर्य, चन्द्र, द्यौ, भूमि, अन्तरिक्ष और तत्रस्थ सुखविशेष पदार्थ पूर्वकल्प में रचे थे, वैसे ही इस कल्प अर्थात् इस सृष्टि में रचे हैं, तथा सब लोक–लोकान्तरों में भी बनाये हैं। भेद किंचित्मात्र नहीं होता।

प्रश्न–जिन वेदों का इस लोक में प्रकाश है, उन्हीं वेदों का उन लोकों में भी प्रकाश है, वा नहीं ?

उत्तर–उन्हीं का है। जैसे एक राजा की राज्यव्यवस्था नीति सब देशों में समान होती है, उसी प्रकार परमात्मा राजराजेश्वर की वेदोक्त नीति अपने सृष्टिरूप सब राज्य में एक–सी है।

कृप्या देखें महर्षि दयानन्द कृत पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' की फोटो कापीयाँ

जो वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित है तथा आचार्य प्रिन्टिंग प्रैस दयानन्द मठ गोहाना मार्ग रोहतक से मुद्रित है।

यह फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 8 पृष्ठ 198 की है तथा इससे पूर्व पृष्ठ 197 की फोटो कापी है। इनमें महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि सूर्य, चांद तथा तारों पर पृथ्वी की तरह मनुष्य आदि सृष्टि है अर्थात् मनुष्य तथा पशु पक्षी भी सूर्य पर रहते हैं। सूर्य पर सर्व पदार्थ अर्थात् गेहूं, चने, ज्वार, बाजरा, काजू, किशमिश नदी, पहाड़ आदि सर्व पदार्थ हैं। सूर्य पर रहने वाले व्यक्ति इन्ही वेदों को पढ़ते हैं। महर्षि दयानन्द ने अपनी जीवनी में स्वयं लिखा है कि संवत् 1913 में अर्थात् सन् 1856 में भांग पीना प्रारम्भ किया। संवत् 1939 (सन् 1882) में दूसरी बार सत्यार्थ प्रकाश को शुद्ध करके छपवाया। इससे स्व सिद्ध है कि तब तक भी वह भांग पीता था। वि. संवत् 1940 (सन् 1883) में दयानन्द की मृत्यु हो गई थी। दयानन्द के भक्त कहते हैं कि बाद में भांग पीना त्याग दिया था।

विचार करें यदि भांग पीना त्याग दिया होता तो सन् 1882 (संवत् 1939) में सत्यार्थ प्रकाश को दूसरी बार शुद्ध करके लिखने का दावा महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में किया है, तो यह भी शुद्ध करना चाहिए था। जहां समुल्लास 8 के पृष्ठ 197-198 पर लिखा है कि सूर्य पर मनुष्य तथा अन्य पशु पक्षी भी रहते हैं। वहां सर्व पदार्थ हैं तथा वहां रहने वाले मनुष्य इन्हीं वेदों को पढ़ते हैं।

➢ महर्षि दयानन्द की जीवनी जो आर्य समाजियों द्वारा छपाई गई है। उसमें लिखा है कि महर्षि दयानन्द भांग पीता था, तम्बाकू खाता था, तम्बाकू सूंघता था, हुक्का पीता था, अभ्रक भस्म खाता था, चाय पीता था, नंगा रहता था, कभी-२ रेशमी कोट, गले में अंगोछा, किनारीदार धोती, गले में घड़ी, सिर पर पगड़ी बांध कर पूरा सज-धज कर चलता था। महर्षि दयानन्द के भक्तों का कहना है कि बाद में भांग पीना, हुक्का पीना, तम्बाकू खाना, सूंघना आदि दोष छोड़ दिये थे।

विचार करें :- यदि कोई चोर था उसने बुराई छोड़ दी तथा भक्त बन गया। कुछ दिन बाद फिर चोरी करने लगा तो फिर चोर हो गया। यही दशा महर्षि दयानन्द की है।

जो साधक साधना काल में भी व्यसन करता है तो उसकी साधना निष्फल हो जाती है। यह परमात्मा का विधान है। महर्षि दयानन्द साधना काल में उपरोक्त प्रयोग न करने योग्य पदार्थ प्रयोग किया करता था जो एक भक्त के लिए निषेध होते हैं।

➢ जैसे सन् 1882 (संवत् 1939) को सत्यार्थ प्रकाश को दोबारा छपवाया। तब तक तो भांग का नशा करता ही था। क्योंकि उसको यही नहीं समझ में आया कि मैं सूर्य (आग के गोले पर जिसका तापमान लगभग 10000 डी.ग्री. फार्नहाईट है) पर मनुष्य रहते हैं लिख चुका हूँ, अब तो ठीक कर दूँ।

➢ सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना की और सन् 1877 में स्वयं हुक्का पी रहा था, खाक समाज सुधारक था ? छः वर्ष पश्चात् सन् 1883 (संवत् 1940) में 59 वर्ष की आयु में महर्षि दयानन्द एक महीना भुगत कर मरा। जो इनकी जीवनी श्रीमद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 437 तथा दयानन्द चरित के पृष्ठ 216 पर लिखा है की आश्विन (आसौज) मास में स्वामी दयानन्द जी को ठण्ड लग गई। उस दिन

एकादशी बदी (ग्यास) थी। ठण्ड के कारण अस्वस्थ चल रहे दयानन्द ने चतुदर्शी को केवल दूध पीया और सो गया। उसके पश्चात् उसका रोग बढ़ता ही चला गया। जो भी औषधी देते वह विपरित कार्य (रियैक्शन) करने लगी। फिर श्रीम्ददयानन्द प्रकाश पुस्तक के पृष्ठ 444-447 पर लिखा है कि स्वामी दयानन्द के पूरे शरीर पर, जिव्हा पर, गले में छाले पड़ गए। एक घूंट जल भी अन्दर न जा पा रहा था। उसका मल-मूत्र (ट्टी-पेशाब) भी समय कुसमय वस्त्रों में ही निकल जाता था। इस प्रकार एक महीना भुगतकर कार्तिक मास अमावस्या संवत् 1940 को महर्षि दयानन्द की मृत्यु हुई। कृप्या देखें फोटो कापी दयानन्द जी के भक्तों द्वारा लिखी पुस्तकों की इसी पुस्तक धरती पर अवतार के पृष्ठ 174 से 179 पर।

महर्षि दयानन्द के भक्त दावा किया करते थे कि महर्षि दयानन्द को कई बार विष दिया गया अपनी यौगिक क्रियाओं से विष निकाल दिया करते थे, और मरने से बच जाया करते थे। परन्तु उस बार काँच (शीशा) पीस कर पिला दिया था। जिस कारण से उनकी मृत्यु हो गई। यह दावा भी झूठा था। ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'' पुस्तक सन् 1918 (संवत् 1975) को श्री सत्यानन्द जी ने लिखा है तथा इसका प्रकाशन ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली द्वारा किया गया है। मुद्रक :- प्रिन्स आफसैट पटौदी हाऊस दरिया गंज नई दिल्ली है। अधिक जानकारी के लिए पढ़ें फोटो कापियाँ ''महर्षि दयानन्द की दुर्गति'' की इसी पुस्तक के पृष्ठ 174 से 179 पर। महर्षि दयानन्द की दुर्दशा का कारण यह था कि इसकी भक्ति शास्त्र अनुकूल नहीं थी तथा इसने सर्व पंथों तथा धर्मों व अन्य महापुरूषों की मिथ्या आलोचना की जो सच्चाई से दूर थी। इसने महापाप तो उस समय प्राप्त किया जब ग्यारहवें समुल्लास में परमेश्वर कबीर जी की मिथ्या आलोचना (निन्दा) की। इन सर्व कारणों से ही महर्षि दयानन्द की मृत्यु के समय इतनी दुर्दशा हुई।

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि सत्यार्थ प्रकाश में कोरा गँद भरा है तथा महर्षि दयानन्द सर्व विकार करता था। जो ऊपर वर्णित हैं। ये कोई महर्षि-वहर्षि नहीं था, यह तो महामूर्ख व्यक्ति था।

''सत्यार्थ प्रकाश से विवाह और नियोग का प्रकरण''

विशेष :- (वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित तथा आचार्य प्रिटिंग प्रैस दयानन्द मठ रोहतक से मुद्रित)

सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास के पृष्ठ 70 के पृष्ठ की फाटो कापी आगे लगी है। इसमें महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि विवाह करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें।

1. पिता के एक गोत्र माता की छः पीढ़ी अर्थात् छः पीढ़ी के गोत्र में विवाह करना अच्छा नहीं समीप देश (स्थान) में भी विवाह करना अच्छा नहीं ? फिर कहा है कि इस फोटो कापी में लिखे दस कुल (गोत्र) भी छोड़ दें। जिनको खांसी, दमा, मिर्गी, बवासीर आदि-२ रोग हों। विचार करें यदि विवाह के तुरंत बाद रोग हो जाए तो पूरा गोत्र ही रिजैक्ट हो गया। ऊपर के विवरण में महर्षि दयानन्द ने कहा कि किसी कुल (गोत्र) के एक व्यक्ति को भी उपरोक्त एक रोग भी हो तो पूरे कुल (गोत्र) को ही त्याग दें। उसके लड़के-लड़कीयों से विवाह न करें। विचार करो बुद्धिमानों !

क्या महर्षि दयानन्द द्वारा बताए विधान अनुसार विवाह सम्भव है ?

यह फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश के चौथे समुल्लास के पृष्ठ 70 की है।

इत्यादि कारणों से पिता के एक गोत्र, माता की छः पीढ़ी और समीप देश में विवाह करना अच्छा नहीं।

महान्त्यपि समृद्धानि गोऽजाविधनधान्यतः।
स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत्।।१।। —मनु०।।

चाहे कितने ही धन, धान्य, गाय, अजा, हाथी, घोड़े, राज्य, श्री आदि से समृद्ध ये कुल हों तो भी विवाह–सम्बन्ध में निम्नलिखित दश कुलों का त्याग करदे।।१।।

हीनक्रियं निष्पुरुषं निश्छन्दो रोमशार्शसम्।
क्षय्यामयाव्यपस्मारिश्वित्रिकुष्ठिकुलानि च।।२।। —मनु०।।

जो कुल सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख=पृथक्, शरीर पर बड़े–बड़े लोम अथवा बवासीर, क्षयी=दम खांसी, आमाशय, मिरगी, श्वेतकुष्ठ और गलितकुष्ठयुक्त कुलों की कन्या वा वर के साथ विवाह न होना चाहिये, क्योंकि ये सब दुर्गुण और रोग विवाह करनेवाले के कुल में भी प्रविष्ट होजाते हैं, इसलिए उत्तम कुल के लड़के और लड़कियों का आपस में विवाह होना चाहिए।।२।।

नोद्वहेत्कपिलां कन्यां नाऽधिकाङ्गीं न रोगिणीम्।
नालोमिकां नातिलोमां न वाचाटान्न पिङ्गलाम्।।३।। —मनु०।।

न पीले वर्णवाली, न अधिकाङ्गी अर्थात् पुरुष से लम्बी–चौड़ी अधिक बलवाली, न रोगयुक्त, न लोमरहित, न बहुत लोमवाली, न बकवाद करनेहारी और न भूरे नेत्रवाली।

नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीं नान्त्यपर्वतनामिकाम्।
न पक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीं न च भीषणनामिकाम्।।४।। —मनु०।।

न ऋक्ष अर्थात् अश्विनी, भरणी, रोहिणी आदि नक्षत्र नामवाली; पीपल, बड़ आदि वृक्ष नामवाली; गङ्गा, जमुना, आदि नदी नामवाली; चाण्डाली, (पर्वत) विन्ध्या, हिमालया, पार्वती आदि, (पक्षी) काकी, श्येनी आदि'; नागी, भुजङ्गा आदि, दासी आदि और भीमा, भयंकरी, काली, चण्डी आदि नामवाली कन्या के साथ विवाह न करना चाहिए।।४।। किन्तु–

अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम्।
तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम्।।५।। —मनु०।।

जिसके सरल सूधे अङ्ग हों, विरुद्ध न हों; जिसका नाम सुन्दर हो अर्थात् यशोदा, सुखदा आदि; हंस और हथिनी के तुल्य चाल हो; सूक्ष्म लोम, केश और दांतयुक्त और जिसके सब अङ्ग कोमल हों, वैसी स्त्री के साथ विवाह करना चाहिए।।५।।

प्रश्न—विवाह का समय और प्रकार कौन–सा अच्छा है ?

उत्तर—सोलहवें वर्ष से लेके चौबीसवें वर्ष तक कन्या और पच्चीसवें वर्ष से लेके अड़तालीसवें वर्ष तक पुरुष का विवाह समय उत्तम है। इसमें जो सोलह और पच्चीस में विवाह करे तो 'निकृष्ट', अठारह–बीस की स्त्री, तीस–पैंतीस वा चालीस वर्ष के पुरुष का 'मध्यम', चौबीस वर्ष की स्त्री और अड़तालीस वर्ष के पुरुष का विवाह 'उत्तम' है।

यह फोटो कापी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के चौथे

समुल्लास के पृष्ठ 71 की है। इसमें स्पष्ट है कि जिस लड़की के भूरे (कैरे) नेत्र हों या जिसका नाम पार्वती, गंगा, काली आदि-२ हों तो उनसे विवाह न करें। विचार करें फिर तो भगवान शिव जी से भी गलती बन गई कि उसने ''पार्वती'' नाम की लड़की से विवाह कर लिया। महर्षि दयानन्द ''नशेड़ी'' ने लिखा है कि दांतयुक्त (दातों वाली) लड़की से विवाह करें। विचार करें :- बिना दांतों वाली लड़की तो छः महिने की आयु की हो सकती है या फिर 60-70 वर्ष की वृद्धा हो सकती है। दोनों ही विवाह के अयोग्य हैं। फिर दयानन्द ''भांगी'' ने लिखा है कि जिस लड़की की हथिनी के तुल्य चाल हो। वाह रे भांगी दयानन्द! यह नया नियम और लागू कर दिया जो ''हथिनी'' की तरह मटक-२ कर चले उससे विवाह करो। इसी पृष्ठ 71 की फोटो कापी में महर्षि दयानन्द ने विवाह का समय बताया है :-

16 वें वर्ष से लेकर 24 वें वर्ष तक तो कन्या तथा 25 वें वर्ष से लेकर 48 वें वर्ष तक पुरूष का विवाह समय है। उसको आगे परिभाषित किया है :-

1. 16 वर्ष की कन्या तथा 25 वर्ष के पुरूष का विवाह समय अर्थात् ऐसा जोड़ा तो निकृष्ट (घटिया) विवाह समय है।

2. 18-20 वर्ष की स्त्री तथा 30-35 वर्ष के पुरूष का विवाह मध्यम (काम चलाऊ) है।

3. महर्षि दयानन्द नशेड़ी (भांग पीने वाले व्यक्ति) ने स्पष्ट किया है कि :- 24 वर्ष की स्त्री तथा 48 वर्ष के पुरूष का विवाह करने का उचित समय है।

वाह रे अज्ञानी दयानन्द ! यह तो पिता पुत्री की आयु के तुल्य अन्तर है, कौन 24 वर्ष की लड़की 48 वर्ष के प्रौढ़ से विवाह करना पसंद करेगी ? (भूतो न भविष्यति) ऐसा आज तक हुआ न होगा।

८२ सत्यार्थप्रकाशः

जब सन्तान का जन्म हो तब स्त्री और लड़के के शरीर की रक्षा बहुत सावधानी से करे। अर्थात् शुण्ठीपाक अथवा सौभाग्यशुण्ठीपाक प्रथम ही बनवा रक्खे। उस समय सुगन्धियुक्त उष्ण जल, जो कि किञ्चित् उष्ण रहा हो, उसी से स्त्री स्नान करे और बालक को भी स्नान करावे।
जहाँ का वायु शुद्ध हो, उसमें सुगन्धित घी का होम प्रातः और सायं किया करे और उसी में प्रसूता स्त्री तथा बालक को रक्खे। छः दिन तक माता का दूध पिये और स्त्री भी अपने शरीर के पुष्टि के अर्थ अनेक प्रकार के उत्तम भोजन करे और योनिसंकोचादि भी करे।

छठे दिन स्त्री बाहर निकले और सन्तान के दूध पीने के लिये कोई धायी रक्खे। उसको खान–पान अच्छा करावे। वह सन्तान को दूध पिलाया करे और पालन भी करे। परन्तु उसकी माता लड़के पर पूर्ण दृष्टि रक्खे कि किसी प्रकार का अनुचित व्यवहार उसके पालन में न हो। स्त्री दूध बन्ध करने के अर्थ स्तन के अग्रभाग पर ऐसा लेप करे कि जिससे दूध स्रवित न हो।

यह फोटो कापी ''सत्यार्थ प्रकाश'' के समुल्लास (Chapter) 4 के पृष्ठ 82 की है। महर्षि दयानन्द ने कहा है कि बच्चे को जन्म देने वाली माता का दूध बच्चे को केवल छः दिन पिलाए फिर बच्चे को जन्म देने वाली माता अपने स्तन के अगले

भाग अर्थात् दूध निकलने वाले छिद्रों पर कोई पदार्थ लगाए जिससे दूध बाहर आना बंद हो जाए। नवजात शिशु के पालन पोषण के लिए दाई लाओ जिसके स्तनों में दूध आता हो। वह दाई अपना दूध उस नवजात शिशु को पिलाए। उस दाई (धायी) को पौष्टिक आहार कराऐं। वह उस नवजात बच्चे को दूध पिलाया करे और बालक का पालन भी करे।

विचार करें :- सभ्य समाज से विनम्र निवेदन है कि कृप्या विचार करें अज्ञानी महर्षि दयानन्द के अज्ञान विधान पर।

एक गांव में कुल मिलाकर तीन या चार धाई (दाई) होती हैं। गांव में तीन-चार बच्चों का जन्म महीने दो महिने के अन्तराल में हो जाए तब इतनी दूध वाली दाई कहां से लाऐंगे। यह भी आवश्यक नहीं कि दाईयों को भी उसी समय सन्तान उत्पन्न हो। यदि इतफाक से ऐसा कभी-कभार हो जाए तो दाई अपने बच्चे को दूध पिलाएगी या उस समय उत्पन्न हुए तीन-चार बच्चों को दूध पिलाएगी? एक दाई कोई **Milk Plant** (दूध की डेरी) नहीं है। उसकी भी सीमा है। भावार्थ है कि कुल मिलाकर महर्षि दयानन्द महा अज्ञानी व भांग का नशेड़ी था, अर्धचेतना में उसने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की थी जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण आप जी के समक्ष है।

यह फोटो कापी महर्षि दयानन्द द्वारा लिखी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के अध्याय 4 के पृष्ठ 96-97 के सम्बन्धित विवरण कि है। इससे स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द विधवा के पुनर्विवाह का विरोधी या उसके लिए नियोग (पशु तुल्य कर्म) का प्रावधान किया है। विधवा स्त्री तथा जिस पुरूष की स्त्री मर जाए वे दोनों पुनर्विवाह न करें। अपितु नियोग करें।

महर्षि दयानन्द ने नियोग के लाभ तथा पुनर्विवाह के दोष बताते हुए कहा है कि ''पुनर्विवाह करने से दोनों साथ-२ एक घर में रहेंगे। जिस कारण से उन दोनों का प्रेम कम (न्यून) हो जाएगा। पुनर्विवाह का एक दोष और बताया है कि स्त्री का पतिव्रत (पतिभ्रता) धर्म नष्ट हो जाएगा। फिर इसी समुल्लास के पृष्ठ 101 पर अज्ञानी महर्षि ने लिखा है कि एक स्त्री नियोग (पशु तुल्य कर्म) ग्यारह व्यक्तियों तक कर सकती है। इसी प्रकार पुरूष भी ग्यारह स्त्रियों से नियोग (अभ्रद कर्म) कर सकता है'' वाह ! रे महर्षि दयानन्द ''भांगी'', क्या ग्यारह पुरूष से विलास (भोग) करने से उस स्त्री का पतिव्रता धर्म सुरक्षित रह जाएगा ? पुण्यात्माओं ऐसे महामूर्ख व्यक्ति महर्षि कहलाते रहे। क्योंकि मानव समाज शिक्षित नहीं था, अब इन नकली महर्षियों की उपाधी समाप्त हो जाऐगी तथा मानव समाज को नई सत्य दिशा प्राप्त होगी।

➢ इस अज्ञानी महर्षि ने इस समुल्लास 4 पृष्ठ 97 में (आगे फोटो कापियों में) लिखा है कि विधवा स्त्री किसी अन्य पुरूष से नियोग (पशु तुल्य कर्म) करके अपने लिए दो सन्तान उत्पन्न करे। नियोग नियमानुसार अकेली स्त्री ही बच्चों का पालन करे। वह पुरूष जिससे नियोग किया था बच्चों के पालन में कोई सहयोग नहीं दे। इसी प्रकार वह स्त्री दो सन्तान उस पुरूष के लिए उत्पन्न करे तथा दो-तीन वर्ष तक अकेली पालन पोषण करके उस सन्तान को उस मलंग पुरूष को दे दे जिस से गर्भ धारण किया था।

प्रश्न—पुनर्विवाह में क्या दोष है ?

उत्तर—(एक) स्त्री पुरुष में प्रेम न्यून होना। क्योंकि जब चाहे तब पुरुष को स्त्री और स्त्री को पुरुष छोड़कर दूसरे के साथ सम्बन्ध करले।

(चौथा) पातिव्रत्य और स्त्रीव्रत धर्म नष्ट होना, इत्यादि दोषों के अर्थ द्विजों में पुनर्विवाह वा अनेक विवाह कभी न होना चाहिये।

प्रश्न—पुनर्विवाह और नियोग में क्या भेद है ?

उत्तर—(एक) जैसे विवाह करने में कन्या अपने पिता का घर छोड़ पति के घर को प्राप्त होती है और पिता से विशेष सम्बन्ध नहीं रहता। और विधवा स्त्री उसी विवाहित पति के घर में रहती है।

(दूसरा) उसी विवाहिता स्त्री के लड़के उसी विवाहित पति के दायभागी होते हैं। और विधवा स्त्री के लड़के वीर्यदाता के न पुत्र कहलाते, न उसका गोत्र होता और {न} उसका स्वत्व उन लड़कों पर रहता, किन्तु वे मृतपति के पुत्र बजते, उसी का गोत्र रहता और उसी के पदार्थों के दायभागी होकर उसी घर में रहते हैं।

(तीसरा) विवाहित स्त्री–पुरुष को परस्पर सेवा और पालन करना अवश्य है और नियुक्त स्त्री–पुरुष का कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहता।

(चौथा) विवाहित स्त्री–पुरुष का सम्बन्ध मरणपर्यन्त रहता है और नियुक्त स्त्री–पुरुष का कार्यसिद्धि के पश्चात् छूट जाता है।

(पांचवां) विवाहित स्त्री–पुरुष आपस में गृह के कार्यों की सिद्धि करने में यत्न किया करते हैं और नियुक्त स्त्री–पुरुष अपने–अपने घर के काम किया करते हैं।

प्रश्न—विवाह और नियोग के नियम एकसे है वा पृथक्–पृथक्?

उत्तर—कुछ थोड़ासा भेद है, जितने पूर्व कह आये और दूसरा यह कि विवाहित स्त्री–पुरुष एक पति और एक ही स्त्री मिलके दश सन्तान तक उत्पन्न कर सकते हैं और नियुक्त स्त्री–पुरुष दो वा चार से अधिक सन्तानोत्पत्ति नहीं कर सकते। अर्थात् जैसा कुमार–कुमारी ही का विवाह होता है, वैसा जिसकी स्त्री वा पुरुष मर जाता है, उन्हीं का नियोग होता है, कुमार–कुमारी का नहीं। जैसे विवाहित स्त्री–पुरुष सदा संग में रहते हैं, वैसे नियुक्त स्त्री–पुरुष का व्यवहार नहीं, किन्तु बिना ऋतुदान समय के इकट्ठे न हों। जो स्त्री अपने लिये नियोग करे तो जब दूसरा गर्भ रहे, उसी दिन से स्त्री–पुरुष का सम्बन्ध छूट जाय और जो पुरुष अपने लिये करे तो भी दूसरे गर्भ रहने से सम्बन्ध छूट जाय। परन्तु वही नियुक्त स्त्री दो–तीन वर्ष पर्यन्त उन लड़कों का पालन करके नियुक्त पुरुष को दे देवे। ऐसे एक विधवा स्त्री दो अपने लिए और और दो–दो अन्य चार नियुक्त पुरुषों के लिये सन्तान कर सकती और एक मृतस्त्री पुरुष भी दो अपने लिये और दो–दो अन्य–अन्य चार विधवाओं के लिये उत्पन्न कर सकता है।

विचार करें :- क्या अकेली स्त्री बच्चों का पालन कर सकती है ? उसको कितनी कठनाई का सामना करना पड़ेगा। प्रसव काल मे तीन महीने पहले तथा जब तक बच्चा छोटा रहता है उस सहित कार्य करना कितना कठिन होगा?

कौन स्त्री अपने कलेजे को निकाल कर अर्थात् संतान को पाल-पोष कर अन्य पुरूष को दे सकती है ? भावार्थ है कि अपने द्वारा उत्पन्न सन्तान को तीन वर्ष पालकर कैसे किसी अन्य को थमा देगी ?

भावार्थ है कि महर्षि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश कोरी बकवादों से भरा है। यह सभ्य समाज में पढ़ने योग्य भी नहीं है। आर्यसमाज के भोले-भाले व्यक्ति इस बेहूदी पुस्तक को महर्षि रचित मानकर वेदों का ज्ञान मान कर अपनी कन्याओं को दहेज रूप में अनमोल भेंट कह कर देते हैं। लगता है मुझ (संत रामपाल दास जी महाराज) से पहले इस सत्यार्थ प्रकाश के गन्द का किसी को आभास भी नहीं था अन्यथा इसका पहले ही नाश कर देना उचित था।

कृप्या देखें सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ 101 की फोटो कापी।

चतुर्थसमुल्लासः १०१

प्रश्न—एक स्त्री वा पुरुष कितने नियोग कर सकते हैं ? और विवाहित नियुक्त पतियों का नाम क्या होता है ?

उत्तर—सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः।।

—ऋ० मं० १०। सू० ८५। मं० ४०।।

हे स्त्रि ! जो (ते) तेरा (प्रथमः) पहिला विवाहित (पतिः) पति तुझ को (विविदे) प्राप्त होता है, उसका नाम (सोमः) सुकुमारतादि गुणयुक्त होने से 'सोम'; जो दूसरा नियोग होने से (विविदे) वह (गन्धर्वः) अर्थात् एक स्त्री से सम्भोग करने से 'गन्धर्व'; जो (तृतीय उत्तरः) दो के पश्चात् तीसरा पति होता है, वह (अग्निः) अत्युष्णतायुक्त होने से 'अग्नि' संज्ञक; और जो (ते) तेरे (तुरीयः) चौथे से लेके ग्यारहवें तक नियोग से पति होते हैं, वे (मनुष्यजाः) 'मनुष्य' नाम से कहाते हैं। जैसा (इमां त्वमिद्र०) इस मन्त्र में ग्यारहवें पुरुष तक स्त्री नियोग कर सकती है, वैसे पुरुष भी ग्यारहवीं स्त्री तक नियोग कर सकता है।

कृप्या देखें सत्यार्थ प्रकाश के पृष्ठ 98 की फोटो कापी।

९८ सत्यार्थप्रकाशः

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु।
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि।।

—ऋ०। मं० १०। सू० ८५। मं० ४५।

हे (मीढ्व, इन्द्र) वीर्यसेचन में समर्थ ऐश्वर्ययुक्त पुरुष ! तू इस विवाहित स्त्री वा विधवा स्त्रियों को श्रेष्ठपुत्र और सौभाग्ययुक्त कर। इस विवाहित स्त्री में दश पुत्र उत्पन्न कर और ग्यारहवीं स्त्री को मान। हे स्त्रि ! तू भी विवाहित पुरुष वा नियुक्त पुरुषों से दश सन्तान उत्पन्न कर और ग्यारहवां पति को समझ।

➢ विष को अमृत कहा दयानन्द ने :-

सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 4 पृष्ठ 101 पर महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 85 मन्त्र 40 का प्रमाण देकर अपना अज्ञान सिद्धान्त सिद्ध करने की कुचेष्टा की है। वेद में ग्यारह पुरूषों तक स्त्री के नियोग करने का विद्यान है।

कृप्या देखें फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 85 मन्त्र 40 की इसी पुस्तक ''धरती पर अवतार'' के पृष्ठ 172 पर जो महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा अनुवादित

है। इस में कहीं उपरोक्त प्रमाण नहीं। इस से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द ने भोले मानव समाज को वेदों का नाम (अमृत का नाम) लेकर वेद विरूद्ध अपना अज्ञान विद्यान (विष पान कराया) बताया।

कृप्या देखें यह फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 85 मन्त्र 40 की

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥४०॥२७॥

पदार्थः—(सोमः प्रथमो विविदे) स्त्री को प्रथम सोम प्राप्त करता है अर्थात् सौम्य गुण-सरलता उसमें होती है, (उत्तरः) फिर (गन्धर्वो विविदे) गन्धर्व प्राप्त करता है, अर्थात् गाना-बजाना शृंगार के भाव आते हैं (तृतीयः+ते पतिः+अग्निः) तीसरा तेरा पति अग्नि रजोधर्म और कामेच्छा है (तुरीयः+ते) चौथा तेरे लिए (मनुष्यजाः) मनुष्य पुत्र होता है ।।४०।।

यह फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 85 मंत्र 40 की है जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से प्रकाशित है। इसका अनुवाद महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश वाले अनुवाद से नहीं मिलती।

महर्षि दयानन्द के अज्ञान का जीवित प्रमाण :- ये फोटो कापियाँ ''सत्यार्थ प्रकाश'' के समु. 4 की हैं। ऊपर पृष्ठ 101 की फोटो कापी है जिसमें ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 85 मन्त्र 40 की फोटो कापी है इस मन्त्र के अन्तर्गत ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 85 मन्त्र 45 का अंश (इमां त्वमिन्द्र०) लेकर सिद्ध करना चाहा है कि इस वेद मन्त्र में प्रमाण है कि ''ग्यारहवें पुरूष तक स्त्री नियोग (पशुतुल्य कर्म) कर सकती हैं।आगे जो फोटो कापी पृष्ठ 98 की लगी है इस पृष्ठ पर महर्षि दयानन्द ने स्वयं ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 85 मन्त्र 45 का अनुवाद भी किया है। इसमें कहीं भी प्रमाण नहीं है कि स्त्री ग्यारहवें पुरूष तक नियोग (दुष्कर्म) कर सकती हैं। स्वयं दयानन्द ने इसका अज्ञान बना कर अनुवाद किया है उस में भी लिखा है कि स्त्री दस सन्तान उत्पन्न कर तथा ग्यारहवां तेरा पति समझ। इससे सिद्ध हुआ कि 1. ''सत्यार्थ प्रकाश'' वेद विरूद्ध ज्ञान हैं, 2. इस का लेखन कार्य भांग या शराब के नशे में किया गया है क्योंकि लेखक को तीन पृष्ठ पीछे लिखे स्वलेख का पता नहीं कि मैंने वहां क्या लिखा हैं। उसी को 101 पृष्ठ पर समर्थन में ले रहा है तथा उसका क्या प्रमाण दे रहा हैं।

वास्तव में उपरोक्त दोनों वेद मन्त्रों का भावार्थ जीवात्मा के विषय में हैं ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 85 मन्त्र 40 में कहा है कि इस का प्रथम पति (सोम) अमर परमात्मा है जो इसका वास्तविक पति अर्थात मालिक हैं। फिर यह स्वइच्छा से ब्रह्म (क्षरपुरूष-काल) के साथ यहां आ गई। यह इसका दूसरा पति (स्वामी) हुआ। फिर इस काल ने इस आत्मा के प्रत्येक कर्म का लेखा रखने के लिए (गन्धर्व) गुप्त देव की डयूटि लगाई है। वह इसका तीसरा पति (मालिक) हुआ तथा चौथा पति मनुष्य अर्थात् राजा है जो इसको यहां नियमित रखता हैं।

पृष्ठ 98 की फोटो कापी में ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 85 मन्त्र 45 का प्रमाण लिया हैं। इसका वास्तविक भावार्थ है कि ''जीवात्मा के साथ 10 इन्द्रियां (पांच कर्म इन्द्रियां तथा पांच ज्ञान इन्द्रियां) लगा रखी हैं। यह इसका परिवार जानों तथा ग्यारहवां इसका पति ''मन'' जानों।

इन वेद मन्त्रों में महर्षि दयानन्द के नियोग (पशु तुल्य कर्म) का कतई समर्थन नहीं हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के इस चतुर्थ समुल्लास में जिन अन्य वेद मन्त्रों को अपने अज्ञान को पुष्ट करने के लिए समर्थन में लिया है। उनका भावार्थ भी अन्य ही है। जैसे ऊपर पृष्ठ 98 तथा 101 पर लिए वेद मन्त्रों का भावार्थ आप के समक्ष स्पष्ट किया है जो महर्षि दयानन्द द्वारा किए अनुवाद के विपरीत तथा यथार्थ है। इसी प्रकार अन्य वेद मन्त्रों को जाने। जो सन्त रामपाल दास जी द्वारा यथार्थ भावार्थ किया गया है। यहां पुस्तक विस्तार के कारण नहीं लिख पा रहा हूँ।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द समाज नाशक था। इसको सत्यार्थ प्रकाश का ज्ञान वेद विरूद्ध है भावार्थ है कि जैसे किसी ने कनस्तर (टीन) में गधे की लीद भर कर ऊपर लिख दिया हो शुद्ध देशी घी। लेकिन परम सन्त रामपाल दास जी महाराज ने वह कनस्तर (सत्यार्थ प्रकाश) खोल कर दिखा दिया हैं कि इसमें वेद ज्ञान (शुद्ध देशी घी) नहीं है बल्कि वेद विरूद्ध ज्ञान (गधे का गोबर) भरा हैं। इस के पढ़ने से ज्ञानहानि होती है तथा अज्ञान वृद्धि होती है।

१०२ सत्यार्थप्रकाशः

प्रश्न—नियोग मरे पीछे ही होता है वा जीते पति के भी ?

उत्तर—जीते जी होता है—

विवाहित स्त्री; जो विवाहित पति धर्म के अर्थ परदेश गया हो तो आठ वर्ष, विद्या और कीर्ति के लिये गया हो तो छः और धनादि कामना के लिये गया हो तो तीन वर्ष तक वाट देख के पश्चात् नियोग करके सन्तानोत्पत्ति करले, जब विवाहित पति आवे तब नियुक्त पति छूट जावे।।१।।

वैसे ही पुरुष के लिये भी नियम है जब विवाह से आठ वर्ष तक स्त्री को गर्भ भी न रहे, वन्ध्या हो तो आठवें, सन्तान होकर मर जायें तो दशवें, जब–जब हो तब–तब कन्या, पुत्र न होवे तो ग्यारहवें और जो स्त्री अप्रिय बोलनेवाली होवे तो सद्यः उसको छोड़के दूसरी स्त्री से नियोग करके सन्तानोत्पत्ति कर लेवे।।२।।

वैसे ही जो पुरुष अत्यन्त दुःखदायक हो तो तुरन्त छोड़ दूसरे से नियोग से सन्तानोत्पत्ति करके उसी विवाहित पति के दायभागी सन्तान कर लेवे। इत्यादि प्रमाण और युक्तियों से स्वयंवर विवाह और नियोग से अपने–अपने कुल की उन्नति करे।

जैसा 'औरस' अर्थात् विवाहित पति से उत्पन्न हुआ पुत्र पिता के पदार्थों का स्वामी होता है, वैसे ही 'क्षेत्रज' अर्थात् नियोग से उत्पन्न हुए पुत्र भी मृतपिता के दायभागी होते हैं।

यह फोटो कापी ''सत्यार्थ प्रकाश'' पुस्तक के समुल्लास 4 के पृष्ठ 102 की है। यह वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित है तथा आचार्य प्रिटिंग प्रैस दयानन्द मठ रोहतक से छपी है। इसमें महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया है कि नियोग (पशु तुल्य कर्म) को जिस स्त्री का पति जीवित हो वह भी कर सकती है। उसके लिए महर्षि दयानन्द ने शर्तें रखी हैं।

जिसका पति धर्म प्रचार के अर्थ (के लिए) प्रदेश गया हो तो वह स्त्री 8 वर्ष तक इन्तजार करके किसी अन्य गैर पुरूष से पशु तुल्य कर्म (नियोग) करके सन्तान उत्पत्ति कर ले। जो धन कमाने अर्थात् रोजगार के लिए प्रदेश गया हो तो तीन वर्ष बाट देखकर (इन्तजार करके) किसी अन्य पुरूष से गर्भ धारण करके (जिस अभ्रद क्रिया को महर्षि दयानन्द ने नियोग नाम दिया है उस नियोग से अर्थात् पशु तुल्य कर्म करके) सन्तान उत्पत्ति कर ले और भी कई प्रकार का विद्यान महर्षि दयानन्द समाज नाशक ने बताया है उसे आप ऊपर लगी फोटो कापी से पढ़ सकते हैं।

महर्षि दयानन्द ने एक विशेष प्रावधान किया है कि यदि किसी स्त्री का पति अत्यन्त दुःखदायक हो अर्थात् लड़ाई झगड़ा करता हो मार-पीट करता हो तो वह स्त्री किसी अन्य पुरूष के पास जाकर गन्दा कर्म नियोग करके गर्भ धारण करके सन्तानोत्पत्ति कर ले। उस गैर पुरूष से उत्पन्न सन्तान भी विवाहित पुरूष की मानी जाएगी और विवाहित पति की सम्पत्ति के अधिकारी माने जायेंगे।

महर्षि दयानन्द ने यह भी कहा है कि इस प्रकार विवाह व नियोग नियमों का पालन करके अपने-२ कुल की उन्नति करें।

विवेचन :- वाह रे ! अमली (नशेड़ी) महर्षि दयानन्द तेरा समाज नाश का नियोग विद्यान। क्या आर्य समाज या अन्य सभ्य समाज उपरोक्त नियमों का पालन कर सकता है। क्या 1875 से 2008 तक 133 वर्षों में किसी आर्य समाजी अर्थात् महर्षि दयानन्द के अनुयाई ने उपरोक्त नियोग नियम का पालन किया है ? उत्तर होगा, नहीं। तो किसलिए ''सत्यार्थ प्रकाश'' जैसे बेहुदे ज्ञान युक्त पुस्तक को सभ्य समाज में विष को अमृत बता कर बेचा जा रहा है। इससे धन हानि, बहु-बेटियों की मान हानि तथा मानव समाज का चरित्र गिरावट आदि-२ हो रहे हैं। सभ्य समाज इस ''सत्यार्थ प्रकाश'' को एक दिन चौराहों पर डाल कर फूंकेगा तथा महर्षि दयानन्द नाम से चल रही संस्थाओं के नाम बदल डालेगा, इस नाम से भी घृणा हो जाऐगी। जब मानव को ''सत्यार्थ प्रकाश'' में लिखे अभ्रद विवरण की जानकारी होगी।

''महर्षि दयानन्द की दुर्गति''

''महर्षि दयानन्द ने पाप कर्मों का दण्ड भोगा''

पुस्तक दयानन्द चरित की फोटो कापीयाँ

दयानन्दचरित

(103 वर्ष पूर्व प्रकाशित बंगला ग्रन्थ का अनुवाद)

लेखक

श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

अनुवादक

बाबू घासीराम

एम०ए०, एल०एल०बी०

सम्पादक

डॉ० (प्रो०) भवानीलाल भारतीय

विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द

प्रकाशक : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द
4408. नई सड़क, दिल्ली-110006, भारत

संस्करण : वर्ष 2000
मुद्रक : नवशक्ति प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

पुस्तक दयानन्द चरित के पृष्ठ 216 की फोटो कापी।

216 दयानन्दचरित

आश्विन मास में स्वामी जी को एक दिन ठण्ड लग गई। उस दिन बृहस्पतिवार और एकादशी थी। ठण्ड के कारण शरीर के अस्वस्थ होने से चतुर्दशी की रात को दयानन्द केवल दुग्धपान करके सोए। रात्रि में दो–तीन बार वमन हुई। परन्तु वह किसी से भी कुछ न कहकर स्वयं ही आचमन करके सोते रहे। प्रात:काल उठकर भ्रमण करना दयानन्द का दैनिक अभ्यास था। परन्तु उस दिन अपेक्षाकृत विलम्ब से उठे और उठकर एक वार वमन हुई। इस प्रकार वमन पर वमन होने से दयानन्द के मन में सन्देह हुआ। उन्होंने इच्छापूर्वक बहुत–सा जलपान करके और एक बार वमन की। परन्तु उससे भी उनकी वमननिवृत्ति नहीं हुई। तब दुर्गन्ध दूर करने के लिए उन्होंने कमरे में अग्नि जलाने के लिए कहा, और उस अग्निकुण्ड में धूप आदि सुगन्धित द्रव्य डालने लगे। धूपादि की सुगन्ध से वहाँ का दुर्गन्ध तो दूर हो गया, परन्तु उनके उदर में शूल की पीड़ा आरम्भ हो गई। इसलिए डॉक्टर सूरजमल को बुलाया गया। सूरजमल के पीड़ा की कथा को सविस्तर पूछने पर स्वामी जी उदर की असह्य वेदना और पिपासा की कथा पुन:–पुन: कहने लगे। तब सूरजमल की समझ में ठीक व्यवस्था आ गई और प्रस्थान करने के समय स्वामी जी पर लक्ष्यपात करके यह कहकर चले गए कि आपके समान कोई महापुरुष मारवाड़ में कभी नहीं आए, इसलिए कि मारवाड़ के लोग आपके माहात्म्य को कैसे समझ सकते हैं! सूरजमल के चले जाने पर उनकी शूलवेदना क्रमश: यहाँ तक बढ़ी कि नि:श्वास–प्रश्वास की क्रिया के साथ उनकी वेदना का वेग बढ़ने लगा। सुतरां नि:श्वास–प्रश्वास करना स्वामीजी के लिए विशेष क्लेशदायक हो गया।

यह फोटो कापी ''दयानन्द चरित'' नामक पुस्तक के पृष्ठ 216 की है जिसके लेखक है श्री देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय जिन्होंने सन् 1897 में (2000-103=1897) बंगला भाषा में लिखा था। इसका अनुवाद सन् 2000 में 103 वर्ष पश्चात् बाबू घासी राम एम.ए., एल.एल.बी. ने हिन्दी में किया। जिस पुस्तक के सम्पादक हैं। डा. (प्रो.) भवानी लाल भारतीय। इस पृष्ठ 216 में लेखक ने स्पष्ट किया है कि आश्विन मास (आसौज महिने) की बदी एकादशी को महर्षि दयानन्द को ठण्ड लग गई थी। जिस कारण से शरीर अस्वस्थ था। इसलिए चौदह को रात्री में केवल दूध पीकर सोया। रात्री में उल्टियाँ लगी। फिर डाक्टरों का आना आरम्भ हुआ। लेकिन दवाईयों से कोई लाभ नहीं मिला, पेट का दर्द बढ़ता चला गया। स्वांस लेना भी कठिन हो गया। इससे से स्पष्ट हुआ कि महर्षि दयानन्द की मृत्यु कांच या विष देने से नहीं हुई बल्कि ठण्ड लगने से हुई तथा पाप बढ़ जाने के कारण से हुई। दूसरी पुस्तक श्रीमद्दयानन्द प्रकाश की फोटो कापियों में आप पढ़ेंगे कि यह व्यक्ति किस तरह दुर्गति को प्राप्त होकर मरा? जिसे पढ़कर कलेजा मुंह को आता है।

पुस्तक दयानन्द चरित के पृष्ठ 217 की फोटो कापी।

द्वादश परिच्छेद 217

ईश्वरचिन्तन और नामोच्चारण से भिन्न और कुछ नहीं किया। 30वीं सितम्बर को महाराज प्रतापसिंह परिषद्-वर्ग के साथ दयानन्द के पास आए। महाराज के साथ अलीमर्दान खाँ नामक एक डॉक्टर भी आए। अलीमर्दान ने स्वामी जी की सारी अवस्था को जानकर उनके उदर पर ब्लिस्टर लगाया। उस दिन सन्ध्याकाल को रावराजा तेजसिंह भी स्वामी जी के देखने के लिए आए। ब्लिस्टर के लगाने से दयानन्द को विशेष क्लेश होने लगा। दूसरी अक्तूबर को स्वामी जी ने अलीमर्दान को बुलाकर कहा—"हम एक जुलाब लेना चाहते हैं, क्योंकि उससे उदर की यावतीय ग्लानि दूर हो जायगी।" अलीमर्दान उसे युक्तिसंगत विवेचना करके घर चले गए, और स्वामी जी के पास एक विरेचक औषध भेजी। तीसरी अक्तूबर के प्रात:काल डॉक्टर के निर्देशानुकूल दयानन्द ने उस विरेचक औषध का सेवन किया। एक प्रहर तक औषध का फल कुछ नहीं मालूम हुआ, परन्तु दश बजे के पीछे उसका प्रभाव होने लगा। दश बजे से रात्रि तक 30 से न्यून दस्त नहीं आए। दूसरे दिन प्रात:काल डॉक्टर के आने पर स्वामी जी ने धीरे-धीरे कहा—"आपने तो कहा था कि छ: या सात से अधिक दस्त नहीं आएँगे, परन्तु तीस से अधिक दस्त आए।" यह सुनकर डॉक्टर चुप हो गए। पहले दिन के समान उस दिन भी दस्त आने लगे। दो दिन बराबर दस्त आने से स्वामी जी नितान्त निर्बल हो गए, यहाँ तक कि उनकी दोनों आँखें कुछ बाहर को निकल आईं। छठी अक्तूबर को उन्होंने डॉक्टर से कहा—"दस्त बन्द न होंगे, तो मैं नहीं बचूँगा।" इसके उत्तर में डॉक्टर ने कहा—"दस्तों का अपने-आप ही बन्द होना अच्छा है। चेष्टा करके बन्द करने से रोगवृद्धि की सम्भावना है।" इसके पश्चात् दयानन्द के उदर से कण्ठदेश तक सारे स्थल में, मुखविवर में, हाथ में, पैरों के तलुओं में छोटी-छोटी फुंसियाँ दिखाई पड़ने लगीं। इसलिए वह बहुत क्लेश के साथ बातें करने लगे। इसके भिन्न उन्हें हिचकी आने लगी।

इस पृष्ठ 217 की फोटो कापी में आप स्वयं पढ़ें महर्षि दयानन्द की दुर्दशा। यह पृष्ठ 217 की फोटो कापी भी उपरोक्त पुस्तक "दयानन्द चरित" की है। पुस्तक "श्री मद्दयानन्द प्रकाश" के प्रकाशक तथा मुद्रक की फोटो कापी।

।। ओ३म्।।

श्रीमद्दयानन्द-प्रकाश

लेखक

स्वामी सत्यानन्द

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रकाशक

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

प्रकाशक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

३/५ महर्षि दयानन्द भवन, नई दिल्ली-२

सम्वत् २०५६, मई २००२

मुद्रक

प्रिन्स ऑफ सैट पटौदी हाऊस

दरिया गंज, नई दिल्ली-२

पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 437 की फोटो कापी।

चौथा सर्ग] राजस्थान काण्ड ४३७

महाराज का स्वास्थ्य दो चार दिन से कुछ शिथिल था। आश्विन बुदी चतुर्दशी सम्वत् १९४० को रात्रि समय महाराज ने अपने रसोइए से दूध लेकर पान किया और फिर सो गये। थोड़ी ही देर तक आँख लगने पाई थी कि उदर-वेदना की खलबली ने उनको जगा दिया। उसी विकट व्याकुलता में उन्होंने तीन बार वमन की। आप ही जलादि लेकर कुल्ले करते रहे। पास सोये सेवकों को जगाकर कष्ट नहीं दिया।

यह फोटो कापी पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'' के पृष्ठ 437 के आंशिक विवरण की है। इस के लेखक व प्रकाशक तथा मुद्रक की भी फोटो कापी पहले लगी है। इसमें भी स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द कई दिन से अस्वस्थ चल रहे थे। आश्विन बदी चतुर्दशी (चौदस) सम्वत् 1940 (सन् 1882) को केवल दूध पीकर सोए। बस फिर उसके पाप ने इतना बल दिया कि उसको किसी भी औषधि ने लाभ नहीं किया। पाप अधिक बढ़ गया था जिस कारण से औषधि विपरित कार्य (रियैक्शन) करने लगी। आप पढ़ें आगे लगी फोटो कापियाँ जो पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'' की हैं। जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा 3/5 महर्षि दयानन्द भवन नई दिल्ली से प्रकाशित है।

पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 443 की फोटो कापी।

पांचवां सर्ग] राजस्थान काण्ड ४४३

पांचवां सर्ग

उस समय डाक्टर लक्ष्मणदास अजमेर जा रहे थे परन्तु उनका कलेजा इतना भर आया कि वे आबू मार्ग स्टेशन की ओर एक डग भी न उठा सके, और महाराज के साथ साथ ही लौट पड़े।

महाराज को कोई पन्द्रह दिन से हिचकियों का उपद्रव सता रहा था। उनके वेग से सारी अंतड़ियाँ तनी जाती थीं। सम्पूर्ण तन में ऐंठनसी हो रही थी। उदर तो बार बार की खींच से हाथ लगाने पर भी दुखता था। परन्तु प्रेमी लक्ष्मणदासजी की चिकित्सा से यह उपद्रव दूसरे ही दिन दूर हो गया। अतिसार भी बंद हो गये।

यह फोटो कापी पुस्तक श्रीमद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 443 की है। इसमें लिखा है कि 15 दिन तक अतिसार (दस्त) लगे रहे। हिचकियाँ लगी रही। पेट को हाथ लगाने से भी दर्द होता था।

पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 444 की फोटो कापी।

४४४ श्रीमद्दयानन्द प्रकाश [पांचवां सर्ग

आबू से नीचे आते समय, भक्त लक्ष्मण को कई आर्य्य पुरुष ऊपर जाते मिले। उन्होंने भक्तराज को पहचानकर उससे भगवान् का समाचार उतनी ही आतुरता से पूछा, जितनी से पाण्डु-पुत्र ने श्री कृष्ण का ऊधवजी से पूछा था। भक्त ने अनर्गल आँसू बहाते हुए कहा, "भगवान की अवस्था अतीव शोचनीय है। निर्बलता परले पार की बढ़ गई है। उनके कण्ठ में, जीभ पर, मुख में, माथे और सिर पर छाले पड़ गए हैं। पानी का घूंट भी बड़ी कठिनता से गले से नीचे उतरता है।

यह फोटो कापी पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'' के पृष्ठ 444 के आंशिक विवरण की है। इसमें स्पष्ट किया है कि दयानन्द की दुर्गति किस सीमा तक बढ़ी हुई थी। उनके कण्ठ में छाले, जीभ पर छाले, मुख में छाले, माथे पर सिर पर छाले पड़ गए थे। पानी की घूंट भी बड़ी कठिनाई से गले से नीचे जाती थी।
पुस्तक श्री मद्दयानन्द प्रकाश के पृष्ठ 445 की फोटो कापी।

पाँचवाँ सर्ग] राजस्थान काण्ड ४४५

ठाकुर भूपालसिंहजी स्वामीजी के साथ जोधपुर में भी थे। आपने उनकी सेवा में रात दिन कुछ नहीं देखा। यद्यपि आप जिला अलीगढ़ के भूमिहार ठाकुरों में से एक प्रतिष्ठित ठाकुर थे परन्तु उन्होंने महाराज को उलटियों को अपने हाथ से उठाकर दूर बाहर फेंका। वे महाराज का मूत्र-पुरीष तक उठाते रहे। अपनी गोद में उठाकर उनको शौच-स्थान में ले जाते। कई बार उनके हाथों पर ही अतिसार हो गए। वे उनके मलमूत्र के वस्त्रों को भी धोते। जो भी गुरु-सेवा कोई आदर्श सेवक कर सकता है वह ठाकुर महाशय ने की और रातों जागकर की।

कार्तिक कृष्णा द्वादशी से फिर डाक्टर लक्ष्मणदासजी की औषधि आरम्भ हो गई। भक्त लक्ष्मणदास नियत समय पर बदलब दल कर औषधि देते, आप भी अधिक समय वहाँ रहते परन्तु सभी प्रयत्न निष्फल जाते थे। कोई भी औषधि लगती न थी। पल पल, घड़ींघड़ी और दिन दिन में महा-रोग भीषणाकार होता चला गया।

यह फोटो कापी इस पुस्तक ''श्रीमद्दयानन्द प्रकाश की है जिसमें लिखा है कि उसका मल-मूत्र वस्त्रों में ही निकल जाता था। दयानन्द को अतिसार (दस्त) लगे हुए थे। ठाकुर भूपाल सिंह के हाथों पर ही कई बार मल-मूत्र निकल जाता था।

इस प्रकार महापीड़ा को भोगकर, भुगत कर, मृत्यु को प्राप्त हुआ महर्षि दयानन्द। धिक्कार है ऐसी भक्ति को तथा महर्षि को जिससे भक्त के पाप कर्म का कष्ट समाप्त नहीं हुआ।

४४६ श्रीमद्दयानन्द प्रकाश [पांचवां सर्ग

श्रीमन्महाराणा सज्जन-सिंहजी ने, उदयपुर से, पण्डया मोहनलाल जी को पूज्यपादजी का कुशल-समाचार पूछने के लिए भेजा। पण्डयाजी ने जब आकर देखा कि उनके फेफड़े काश-श्वास से धौंकनी की भाँति धौंक रहें हैं, अन्तकालीन वेदना से उनका बदन व्यथित हो गया है, उनकी परिपुष्ट काया अब अस्थि-पिंजरावशेष यष्टि बन गई है, और उनके जीवन-स्रोत के सामने उसे शोषण करने के लिए मृत्यु को महामरुस्थली आपड़ी है तो वे पांव के तलुओं से सिर की चुटिया तक थरथर कांप गये।

कार्त्तिक कृष्णा १४ को महाराज के शरीर पर नाभि तक छाले पड़

पाँचवाँ सर्ग] राजस्थान काण्ड ४४७

गये थे। उनका जी घबराता था गला बैठ गया था। श्वास-प्रश्वास के वेग से उनकी नस नस हिल जाती थी। सारी देह में दाहसी लगी हुई थो

यह फोटो कापी पुस्तक ''श्रीमद् दयानन्द प्रकाश'' के पृष्ठ 446-447 के

आंशिक प्रकरण की है। जिसमें लिखे विवरण को पढ़कर पता चलता है कि महर्षि दयानन्द के ऊपर पाप कर्मों ने कैसा कहर बरसाया था। महर्षि दयानन्द की दुर्दशा को देखकर कलेजा मुंह को आता है। आम आदमी यही सोचेगा कि इस व्यक्ति ने कितनी साधना की फिर भी ऐसी दुर्दशा को प्राप्त हुआ तो क्या रखा है भक्ति में? आम आदमी भी नास्तिक हो जाएगा।

''महर्षि दयानन्द की दुर्गति का कारण''

महर्षि दयानन्द की दुर्दान्त मृत्यु का कारण यह है कि श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर मन-माना आचरण करता है वह न तो सुख को प्राप्त होता है न परमगति को तथा न सिद्धि को ही प्राप्त होता है अर्थात् उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है। इसलिए श्लोक 24 में कहा है कि अर्जुन शास्त्रों में जो प्रमाण हैं उसी आधार से साधना करने से ही भक्ति का लाभ साधक को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द को न तो वेदों का ज्ञान था न श्रीमद्भगवत गीता का, इसलिए हठयोग करके भांग आदि नशीली वस्तुओं का सेवन करके दीवार से कमर लगा कर बैठा रहता। जनता भोली थी वह यह सोचते कि बड़ा योगी पुरूष है, और यह फोड़ रहा था अपने भाग्य को। ऐसे व्यक्ति के विषय में संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है :-

गरीब, डीम्ब करें डूंगर चढ़े, अन्तर झीनि झूल।
जग जाने बन्दगी करें, ये बोवै सूल बबूल।।

महर्षि दयानन्द को स्वयं निश्चय नहीं था कि क्या साधना की जाए ?

उदाहरण :- पुस्तक ''नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' के पृष्ठ 93 पर लिखा है कि महर्षि दयानन्द गायत्री मंत्र का जाप करने को कहते थे। कृप्या गायत्री मंत्र से लाभ क्या है पढ़ें इसी पुस्तक धरती पर अवतार के पृष्ठ 156-157 पर। पुस्तक नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती के पृष्ठ 93 की फोटो कापी।

गांगेय प्रदेश का भ्रमण (१)] [९३

मार्गशीर्ष मास में ही वे रामघाट से चल कर बेलौन (जिला बुलन्दशहर) आ गये। खेरा नामक एक स्थान पर पीपल वृक्ष के नीचे निवास किया। यहां भी गायत्री जप के उपदेश का कार्य यथावत् चलता रहा। गायत्री मंत्र से अनभिज्ञ लोगों को न केवल मंत्र का पाठ ही लिख कर देते, साथ ही उसके नीचे १००० का अंक भी लिख देते, जिसका अर्थ होता कि इस मंत्र का सहस्र बार पाठ अभीष्ट है।

यह फोटो कापी पुस्तक ''नव जागरण के पुरोधा'' ''दयानन्द सरस्वती'' के पृष्ठ 93 की है। इसमें स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ''गायत्री मंत्र का जाप करने को कहा करते थे''।

➢ पुस्तक ''महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र''

जिसके लेखक है पं. लेखराम तथा अनुवादक = श्री कविराज रघुनंदन निर्मल,

प्रकाशक = आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली-6 के पृष्ठ 62 पर लिखा है कि महर्षि दयानन्द अपने चेलों को ''सच्चिदानन्द'' नाम जाप करने को कहता था।

पुस्तक जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती के पृष्ठ 62 की फोटो कापी।

६२ जीवनचरित्र-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

पाखण्ड छोड़कर 'सच्चिदानन्द' नाम जपो—पुजारी ने पूजा छोड़कर डाकखाने में नौकरी करली—शिवदयाल ब्राह्मण पराशरी पुरोहित पुष्कर भूतपूर्व पुजारी मन्दिर श्री ब्रह्माजी **ने कहा** कि जब स्वामी जी पुष्कर पधारे मैं उन दिनों ब्रह्माजी के मन्दिर में पूजा करता था।

मैं ने पूछा कि स्वयं ईश्वर का जो नाम है वह मुझे बता दीजिये क्योंकि बड़े ब्रह्मा को ही विष्णु आदि कहते हैं। तब स्वामी जी ने कहा कि "सच्चिदानन्द" यही नाम जाप किया करो और नहीं।
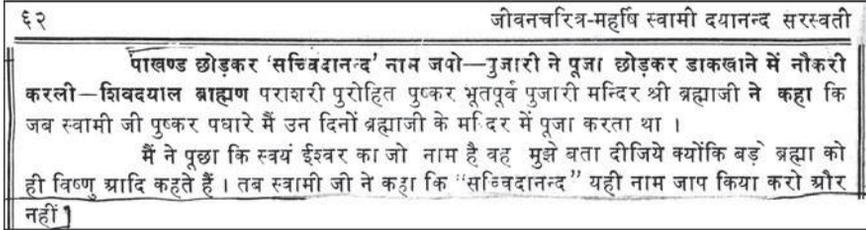
➢ **सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 11 पृष्ठ 263-264 में महर्षि दयानन्द ने कहा है कि नाम जाप करने से कुछ नहीं होता। इससे सिद्ध है कि उन्होंने परमात्मा के नाम का जाप भी त्याग दिया था।**

➢ **देखें फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश समु. 11 पृष्ठ 263-264 कि जिसमें नाम जाप को नकारा है तथा अपना अज्ञान विद्यान पुष्ट किया है कि केवल परमात्मा के गुणों का स्मरण करना चाहिए।**

➢ **सत्यार्थ प्रकाश समु. 1 पृष्ठ 15 पर तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 के अनुवाद में स्पष्ट किया है कि जिस परमात्मा का नाम ''ओम्'' है उसकी उपासना करें। भावार्थ स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ''ओम्'' (ॐ) नाम जाप करने के पक्ष में नहीं है। केवल हठयोग करना तथा भांग पीना, हुक्का पीना आदि बकवाद करके जीवन नाश कर गया तथा लाखों भोले अनुयाईयों का जीवन नरक बना गया। मनमाना आचरण करके दयानन्द की क्या दुर्दशा हुई ? जो आप जी ने पढ़ ली। सर्व मानव समाज से प्रार्थना है कि अब तो सम्भलो! करा लो कल्याण समय जा रहा है :-**

गरीब, यह संसार समझदा नाहीं, कहता शाम दोपहरे नूं।

गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि मानव जीवन बार-२ नहीं मिलता। शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करने वाले व्यक्ति का जीवन नष्ट हो जाता है। उदाहरण के लिए ''महर्षि दयानन्द'' जो आप देख चुके हैं। यह मानव जीवन का समय जा रहा है। फिर इस पहरे अर्थात् समय को याद करके दयानन्द की तरह रोया करोगे।

उपरोक्त निर्णायक ज्ञान सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा दिया गया है। जो एक अवतार ही कर सकता है। इसलिए सन्त रामपाल दास जी इस धरती पर अवतार धार कर जन कल्याण के लिए शास्त्रविधि अनुसार साधना करा रहे हैं। आप भी अविलम्ब प्राप्त करें अपना तथा अपने परिवार व बन्धुओं का भी कल्याण कराऐं।

यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 की फोटो कापी।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तꣳ शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतꣳ स्मर ॥१५॥

पदार्थः - हे (क्रतो) कर्म करने वाले जीव! तू शरीर छूटते समय (ओ३म्) इस नामवाच्य ईश्वर को (स्मर) स्मरण कर (क्लिबे) अपने सामर्थ्य के लिये परमात्मा और अपने स्वरूप का (स्मर) स्मरण कर (कृतम्) अपने किये का (स्मर) स्मरण कर। इस संस्कार का (वायुः) धनञ्जयादिरूप वायु (अनिलम्) कारणरूप वायु को, कारणरूप वायु (अमृतम्) अविनाशी कारण को धारण करता (अथ) इसके अनन्तर (इदम्) यह (शरीरम्) नष्ट होने वाला सुखादि का आश्रय शरीर (भस्मान्तम्) अन्त में भस्म होने वाला होता है ऐसा जानो ॥१५॥

यह फोटो कापी यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 की है जो महर्षि दयानन्द द्वारा अनुवादित है। इसमें स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द ने अनुवाद अनुचित किया है तथा सिद्ध किया है कि ''ओ३म्'' नाम वाच्च अर्थात् जिसका ओम् नाम है उस ईश्वर का स्मरण कर न की ओम् (ॐ) मंत्र का। जबकि मंत्र 15 के मूल पाठ से स्पष्ट है कि =ओ३म् क्रतो स्मर क्लिवे स्मर कृतम् स्मर।

भावार्थ है कि = ॐ नाम का स्मरण (क्रतो) कार्य करते-२ करो (क्लिबे) विशेष श्रद्धा के साथ स्मरण करो तथा मनुष्य जीवन का (कृतम्) मुख्य कर्तव्य जानकर ओ३म नाम का स्मरण करो। यह है यथार्थ भाव यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 का।

➢ महर्षि दयानन्द ओ३म नाम (ॐ नाम) के जाप के पक्ष में नहीं थे अन्य प्रमाण सत्यार्थ प्रकाश समु. 1 पृष्ठ 15 पर भी है। कृप्या देखें फोटो कापी जो नीचे लगी है। इसमें भी स्पष्ट किया है कि ''ओ३म'' जिसका नाम है जिसका नाश कभी नहीं होता उसकी उपासना (हठयोग) करनी चाहिए न कि ''ओ३म'' नाम का जाप। पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के समु. 1 पृष्ठ 15 की फोटो कापी।

प्रथमसमुल्लासः १५

'ओम्' आदि नाम सार्थक हैं—जैसे (ओं खं०) **'अवतीत्योम्, आकाशमिव व्यापकत्वात् खम्, सर्वेभ्यो बृहत्वाद् ब्रह्म'** रक्षा करने से (ओम्), आकाशवत् व्यापक होने से (खम्), सबसे बड़ा होने से ईश्वर का नाम ब्रह्म है।।१।।

(ओमित्येत०) ओ३म् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है, अन्य की नहीं।।२।।

पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश के समु. 11 पृष्ठ 263-264 की फोटो कापी।

एकादशसमुल्लासः २६३

प्रश्न—परमेश्वर निराकार है, वह ध्यान में नहीं आसकता, इसलिये मूर्त्ति का होना अवश्य है। भला कुछ भी नहीं करे तो मूर्त्ति के सामने जाते हैं तब कुछ परमेश्वर का स्मरण करते और नाम लेते हैं।

उत्तर—जब परमेश्वर निराकार है, तब उसकी मूर्त्ति ही नहीं बन सकती। जो मूर्त्ति के देखने से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर की बनाई पृथिवी, जल, अग्नि, वनस्पति आदि, रचनायुक्त पृथिवी पहाड़ आदि परमेश्वर—रचित महामूर्त्तियां कि जिन पहाड़ आदि से ये मनुष्यकृत मूर्त्तियां बनती हैं, देखकर परमेश्वर स्मरण क्या नहीं आसकता ? जो किसी दूसरे को देख दूसरे का स्मरण करे, तो जब वह सामने न रहे, तब परमेश्वर को भी भूल जायें और जब परमेश्वर को मनुष्य भूल जाता है तभी वह एकान्त पाकर अन्याय कर लेता है कि यहां मुझको कोई नहीं देखता।

जो मूर्त्ति को न मान परमेश्वर को व्यापक माने तो वह उसके डर से कि मुझको परमेश्वर देखता है, पाप न करे। नामस्मरण से कुछ भी नहीं होता। जैसा कि मिश्री कहने से मुख न मीठा और नीम कहने से कड़ुवा नहीं होता, किन्तु उसको जीभ से

२६४ सत्यार्थप्रकाशः

चाखने से मीठा वा कड़ुवा होता है। नाम लेने की तुम्हारी रीति उत्तम नहीं। वह इस प्रकार करना चाहिये—जैसे 'न्यायकारी' ईश्वर का नाम है कि जैसे पक्षपातरहित होकर परमात्मा सब का यथावत् न्याय करता है, वैसे नामों के अर्थों को अपने में धारण करे।

यह फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 11 पृष्ठ 263-264 के सम्बंन्धित प्रकरण की है। इनमें महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया है कि ईश्वर का नाम स्मरण नहीं करना चाहिए केवल परमात्मा के गुणों का स्मरण करना चाहिए।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि महर्षि दयानन्द ओ३म नाम का जाप भी नहीं करता था। यह भी स्पष्ट हुआ कि उनको निश्चय भी नहीं था कि परमात्मा प्राप्ति का मार्ग कौन सा है? इसीलिए किसी को कहता था ''सच्चिदानन्द'' नाम जाप करो, किसी को कहता था, गायत्री मंत्र एक हजार बार जाप करो, किसी को कहता था कि ईश्वर का नाम स्मरण करने से कुछ नहीं होता। इसके परिणामस्वरूप नकली महर्षि दयानन्द की दुर्गति से मृत्यु हुई और अधोगति को प्राप्त हुआ।

मेरे पुज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज 108 वर्ष की आयु पूर्ण करके सतनाम (दो अक्षर) का स्मरण करते-२ शरीर त्याग गए। मेरे दादा गुरु जी पं. चिदानन्द जी जिनका आश्रम गांव-गोपालपुर में त. खरखौदा, जि. सोनीपत, हरियाणा प्रान्त में है 80 वर्ष की आयु में नाम स्मरण करते-२ बैठे-२ ही शरीर छोड़ गए। मेरे परम पूज्य परमेश्वर कबीर जी 120 वर्ष की लीलामय आयु में सशरीर स्वधाम चले गए।

''महर्षि दयानन्द का अज्ञान व दुर्व्यसन का प्रमाण''

पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र के पृष्ठ 208 की फोटो कापी।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र

[अमर शहीद पं० लेखराम द्वारा संकलित प्रामाणिक उर्दू-भाषा का आर्य-भाषा में अनुवाद]

अनुवादक - आर्य महोपदेशक श्री कविराज रघुनन्दनसिंह 'निर्मल'

सम्पादक - श्री पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

प्रकाशक - आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली-६

(स्वर्ण-जयन्ति के उपलक्ष में)

प्रथम बार सृष्टि सम्बत् १९६०८५३०७२ मूल्य—कपड़े की जिल्द
२२०० विक्रम-सम्बत् २०२८ ~ 1971 सन् सहित १६ रुपये

२०८ जीवनचरित्र-महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

"**रामगोपाल वैश्य** ने, जो वेदान्ती था, बहुत सी टीकायें गीता की देखीं परन्तु एक श्लोक के विषय में जो उसका सन्देह था वह दूर न हुआ। अन्त में वह एकदिन हमको साथ लेकर स्वामी जी के पास गया और स्वामी जी से कहा कि आपसे कुछ पूछना है। उन्होंने आज्ञा दी तब यह श्लोक पूछा "**सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज**"। स्वामी जी ने कहा कि "शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्" इस वार्तिक से वकार के अकार के आगे (परे जो) अकार रहा उसको तद्रूप हो गया अर्थात् वह शब्द धर्म ही रहा परन्तु वास्तव में अधर्म है ; अर्थ अधर्म होगा। जिससे वह बहुत प्रसन्न हुआ और (उसने) फिर पूछा कि कोई प्रमाण भी है ? स्वामी जी ने ऋग्वेद की दो-तीन **श्रुतियों के प्रमाण दिये।**

पंडित रामप्रकाश जी ने वर्णन किया कि 'स्वामी जी संवत् १९२६ में प्रयाग के माघमेले के पश्चात् यहां आये और ला० रामरतन के बागीचे में उतरे तो हमारा आना-जाना प्रारम्भ हो गया। यहां के पंडित लोग प्रतिदिन शास्त्रार्थ के लिये जाया करते थे और हम सुना करते थे।

स्वामी जी के पास एक सूंघने की डिबिया हुलास की थी। और एक ओर पत्थर पर खाने का तंबाकू रखा था। छोटूगिरि वह उठा कर नाक में भरने लगा। स्वामी जी ने कहा कि यदि सूंघना है तो इस डिबिया को लो परन्तु उसने न लिया।

यह फोटो कापी '' चरित्र महर्षि-दयानन्द सरस्वती'' की है जो अमर शहीद पं. लेखराम द्वारा संकलित प्रामाणिक उर्दू-भाषा का आर्य-भाषा में अनुवाद है। इस के अनुवाद कर्ता ''आर्य महोपदेशक श्री कविराज रघुनन्दन सिंह '' निर्मल'' सम्पादक श्री पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार। प्रकाशक : आर्य समाज नयाबांस दिल्ली-6 (प्रथम बार विक्रमी संवत् 2028=सन् 1971 को छपा)

इस लेख में स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द तम्बाकू सूंघते थे तथा खाते भी थे।

''महर्षि दयानन्द को श्रीमद्भगवत् गीता का भी ज्ञान नहीं था''

ऊपर की फोटो कापी में लिखे वृतान्त से सिद्ध है कि महर्षि दयाननद का अध्यात्मिक ज्ञान शून्य था। प्रकरण इस प्रकार है। एक रामगोपाल वैश्य जो वेदान्ती था। उस ने बहुत सी टीकायें (अनुवाद) गीता की देखी। गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में ''व्रज'' शब्द है श्लोक 66 :- सर्वधमान् परित्यज्य माम् एकम् शरणं व्रज, अहम् त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः (अध्याय 18 श्लोक 66)

इस गीता अध्याय 18 श्लोक 66 के अनुवाद में सर्व टीका कारों (अनुवादकों) ने ''व्रज'' शब्द का विपरित अर्थ ''आना'' किया है। जब कि 'व्रज' का अर्थ जाना होता है। जैसे अंग्रेजी के शब्द (Go) का अर्थ जाना होता है। यदि कोई इसका अर्थ ''आना'' करता है तो वह विपरितार्थ कर रहा है। जिस कारण से उस प्रकरण का यथार्थ भावार्थ नहीं जाना जा सकता। इसी शंका का समाधान कराने के लिए ''रामगोपाल वैश्य ने महर्षि दयानन्द से जानना चाहा कि आप बताईऐ ''व्रज'' का अर्थ ''जाना'' है ''आना'' किस कारण से किया है यह तो उचित नहीं है।

महर्षि दयानन्द ने शंका का समाधान इस प्रकार किया :- कृप्या पढ़ें उपरोक्त फोटो कापी में लिखा है स्वामी जी (महर्षि दयानन्द) ने कहा (उत्तर) दिया :- ''शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्'' इस वार्तिक से वकार के अकार के आगे (परे जो) अकार रहा उसको तद्रूप हो गया अर्थात् वह शब्द धर्म ही रहा परन्तु वास्तव में अधर्म है; अर्थ अधर्म होगा। **यह उत्तर दिया उस अज्ञानी महर्षि दयानन्द ने। लेखक ने लिखा है कि इस उत्तर को सुनकर रामगोपाल वैश्य बहुत प्रसन्न हुआ और (उसने) फिर पूछा कि कोई प्रमाण भी है ? स्वामी जी (महर्षि दयानन्द) ने ऋग्वेद की दो-तीन श्रुतियों के प्रमाण दिये।**

यह समझो की प्रमाण के रूप में ऋग्वेद के दो तीन मंत्र सुना दिए। जिस प्रकार सातवीं कक्षा के विद्यार्थी ने एक अंग्रेज यात्री के रास्ता पूछने पर अंग्रेजी भाषा में उत्तर देना गर्व की बात जान कर छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र (Sick leave Application) सुना दी। अंग्रेज माथे में हाथ मार कर चला गया। यह सोच कर कि इस मूर्ख ने क्या उत्तर दिया। मैंने जानना चाहा था मार्ग और यह सुना रहा है अंग्रेजी में छुट्टी के लिए प्रार्थना पत्र। महर्षि दयानन्द अज्ञानी ने ऐसा समाधान किया। उस रामगोपाल वैश्य के शंका का कृप्या पढ़िए गीता अध्याय 18 श्लोक 66 का यथार्थ अनुवाद सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा किया गया। श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद पुस्तक ''गहरी नजर गीता में''।

विशेष :- उपरोक्त समीक्षा सन्त रामपाल जी द्वारा अपने सत्संगों में बहुत बार की है तथा यथार्थ अनुवाद गीता अध्याय 18 श्लोक 66 का करके बताया है। अज्ञानियों के अज्ञान का पर्दाफास परमात्मा का भेजा अवतार ही कर सकता है। पुस्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र के पृष्ठ 50 की फोटो कापी।

॥ ओ३म् ॥ महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित्र [अमर शहीद पं० लेखराम द्वारा संकलित प्रामाणिक उर्दू संस्करण (१८९७ में प्रकाशित) का आर्यभाषा (हिन्दी) में अनुवाद] अनुवादक-स्व० कविराज रघुनन्दनसिंह 'निर्मल' सम्पादक - डॉ० भवानीलाल भारतीय सेवानिवृत्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष — दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय प्रकाशक — आर्ष साहित्य-प्रचार ट्रस्ट ४५५, खारी बावली, दिल्ली-११०००६	ईस्वी: २००७ मुद्रक : इरानियन आर्ट प्रिण्टर्स १५३४, गली कासिमजान, बल्लीमारान, दिल्ली-६

अपने दुर्व्यसन की स्वीकारोक्ति तथा उसका परित्याग—१ अक्तूबर सन् १८५६ बुधवार तदनुसार आसौज सुदी २ संवत् १९१३ को दुर्गाकुण्ड के मन्दिर पर जो चांडालगढ़[१९९] में स्थित है, पहुंचा। वहां मैंने दस दिन व्यतीत किये। वहां मैंने चावल खाने बिल्कुल छोड़ दिये और केवल दूध पर अपना निर्वाह करके दिन रात योगविद्या के पढ़ने और उसके अभ्यास में संलग्न रहा। दुर्भाग्य से इस स्थान पर मुझे एक बड़ा व्यसन लग गया अर्थात् मुझको भंग सेवन करने का अभ्यास पड़ गया और प्रायः उसके प्रभाव से मैं मूर्छित हो जाया करता था।

50

यह फोटो कापी महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा लिखे गये ''जीवन चरित्र'' की है। जो पहले उर्दू भाषा में पं. लेखराम द्वारा लिखा गया था। उस उर्दू संस्करण का हिन्दी में अनुवाद स्व. कविराज रघुनन्दन सिंह 'निर्मल' ने किया है। इसमें स्पष्ट लिखा है कि महर्षि दयानन्द ने स्वयं अपने द्वारा लिखी जीवनी में कहा है कि मुझे भांग पीने का दोष लग गया। उसके प्रभाव से पूर्ण रूप से बेसुध हो जाता था और योग अभ्यास भी करता था।

विचार करें :- ऐब करने वाला व्यक्ति साधना कर सकता है? बेसुध व्यक्ति अभ्यास रत हो सकता है?

इस प्रकार का व्यक्ति था, यह महर्षि दयानन्द। जो सर्व बुराई करता था, लेकिन दावा करता था, समाज सुधार का। अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें, इसी पुस्तक धरती पर अवतार के पृष्ठ 166 व 185 पर।

पुस्तक नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती के प्रकाशक, मुद्रक व पृष्ठ 38 की फोटो कापियाँ।

नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती

लेखक : डॉ. भवानीलाल भारतीय एम. ए. पी-एच. डी.

प्रोफेसर तथा अध्यक्ष : दयानन्द चेयर फॉर वैदिक स्टडीज

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

प्रकाशक : वैदिक पुस्तकालय,

परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम, अजमेर

प्रकाशक :
वैदिक पुस्तकालय

परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम
केसरगंज, अजमेर

मुद्रक :
सतीशचन्द्र शुक्ल

प्रबन्धक, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर

प्रथम संस्करण

दयानन्द सरस्वती की प्रथम निर्वाण शताब्दी
कार्तिक अमावस्या (दीपावली) २०४० वि.
१९८३ खीस्ताब्द

उपरोक्त मुद्रण की पुस्तक नवजागरण के पुरोधा के पृष्ठ 38 की फोटो कापी।

स्वामी दयानन्द और १८५७ की हलचल

स्वामी दयानन्द के जीवन के ये तीन वर्ष अज्ञात अवस्था के माने जाते हैं। इस अवधि में वे कहाँ रहे, क्या करते रहे आदि प्रश्नों को लेकर अनेक सम्भावनाएँ प्रकट की गई हैं। सर्वप्रथम 'हमारा राजस्थान' पुस्तक के लेखक पृथ्वीसिंह महता विद्यालंकार ने इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा—

"मार्च १८५७ तक वह प्राय: गंगा के साथ साथ गंगोत्तरी और बद्रीनाथ से बनारस तक गढ़वाल, रुहेलखण्ड, दोआब और काशी के प्रदेश में घूमता रहा, जहाँ तक क्रान्ति की तैयारियां जनता में भीतर ही भीतर जोरों से की जा रही थीं।

१८५६ के मई मास में वह नाना के नगर कानपुर में गया और आगे पांच मास तक कानपुर, इलाहाबाद के बीच ही चक्कर काटता रहा। फिर बनारस, मिर्जापुर, चुनार होकर मार्च १८५७ में जब क्रांति की तैयारियाँ लगभग पूरी हो चुकीं और नाना साहब के सैंकड़ों संदेशवाहक साधुओं, फकीरों आदि के रूप में पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण देश के हर कोने में क्रान्ति का संदेश लेकर रवाना हुए और स्वयं नाना साहब और अजीमुल्ला भी क्रान्ति आरंम्भ करने की तारीख निश्चय कर उसकी सारी तैयारी अपनी आंखों से देख लेने को तीर्थयात्रा करने निकले तब दयानन्द भी बनारस से मिर्जापुर, चुनार होकर नर्मदा स्रोतों के लिये दक्षिण की ओर निकल पड़ा। अपने प्रारम्भिक जीवन का परिचय देने के लिये दयानन्द की स्वलिखित जीवनी का यहां आकर एकाएक अन्त हो जाता है। आगे तीन साल क्रान्ति युद्ध के दिनों में वह कहां रहा और क्या करता रहा इसकी कोई विगत उसने कभी नहीं दी।

महर्षि दयानन्द स्वतन्त्रता संग्राम में डर कर तीन वर्ष लापता रहा :- यह ऊपर लगी फोटो कापी महर्षि दयानन्द के भक्तों द्वारा वैदिक पुस्तकालय, परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम, अजमेर (राजस्थान) से प्रकाशित '' नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती'' की है। इसमें स्पष्ट किया है कि महर्षि दयानन्द मार्च 1857 तक तो गंगा नदी के साथ-२ घूमता रहा। जब मई 1857 में स्वतन्त्रता संग्राम की तैयारी चल रही थी, उसी समय लापता हो गया। फिर तीन वर्ष तक उसका कहीं पता नहीं लगा। जून 1857 में स्वतन्त्रता संग्राम हुआ। उसके भय से छुप गया। महर्षि की फोकट महिमा बनाई जाती रही कि स्वतन्त्रता संग्राम में महर्षि दयानन्द का बड़ा योगदान रहा।

विचार करें :- क्या खाक योगदान था स्वतंत्रता संग्राम में, उन दिनों भांग पीकर डर के मारे जंगलों में छुपा रहा और महर्षि दयानन्द के समर्थक कहते हैं कि परमात्मा की खोज में दयानन्द जंगलों, पहाड़ों, गुफाओं में गया। विचार करें परमात्मा कोई गाय-भैंस थोड़े ही है, कि गुम हो गई और वह कहीं जंगल में खोजने गया था। परमात्मा वेदों में वर्णित विधानुसार मिलता है और वेद ज्ञान महर्षि दयानन्द की बुद्धि से परे की बात थी। जिस कारण से अपना अज्ञान अनुभव जो वेद ज्ञान विरूद्ध है ''सत्यार्थ प्रकाश'' में भर दिया जो आप के समक्ष है।

यह फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका के सम्बंधित विवरण की है।

ओ३म्

सच्चिदानन्दायेश्वराय नमो नमः

भूमिका

सत्यार्थप्रकाश को दूसरी वार शुद्ध करके छपवाया है क्योंकि जिस समय मैंने यह ग्रन्थ **'सत्यार्थप्रकाश'** बनाया था, उस समय और उससे पूर्व संस्कृतभाषण करना, पठन–पाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती थी, इत्यादि कारणों से मुझ को इस भाषा का विशेष परिज्ञान न था। अब इसको अच्छे प्रकार भाषा के व्याकरणानुसार जानकर अभ्यास भी कर लिया है, इस समय इसकी भाषा पूर्व से उत्तम हुई है। कहीं--कहीं शब्द वाक्य रचना का भेद हुआ है, वह करना उचित था, क्योंकि उसके भेद किए विना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी, परन्तु अर्थ का भेद नहीं किया गया है, प्रत्युत विशेष तो लिखा गया है। हाँ, जो प्रथम छपने में कहीं–कहीं भूल रही थी, वह वह निकाल शोधकर ठीक–ठीक करदी गई है।

यह ग्रन्थ १४ समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचित हुआ है। इसमें १० दश समुल्लास पूर्वार्द्ध और चार उत्तरार्द्ध में बने हैं, परन्तु अन्त्य के दो समुल्लास और पश्चात् स्वसिद्धान्त किसी कारण से प्रथम नहीं छप सके थे, अब वे भी छपवा दिये हैं।

कृप्या फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ 12 की।

१२ सत्यार्थप्रकाशः

यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे, तथापि बुद्धिमान् लोग यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेंगे, इसलिए मैं अपने परिश्रम को सफल समझता हूं और अपना अभिप्राय सब सज्जनों के सामने धरता हूं। इसको देख दिखला के मेरे श्रम को सफल करें और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मुझ वा सब महाशयों का मुख्य कर्त्तव्य कर्म है।

सर्वात्मा सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे।

।। अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वरशिरोमणिषु।।

।। इति भूमिका।।

स्थान महाराणाजी का उदयपुर **(स्वामी) दयानन्द सरस्वती**

भाद्रपद सम्वत् १९३९

शंका समाधान :- (1) कुछ विरोधी व्यक्ति जो महर्षि दयानन्द की फोकट महिमा सुना कर तथा उनके द्वारा रचित पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' को बेचकर निर्वाह कर रहे थे। वे कहते है कि पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' में ''शास्त्रार्थ विषय'' नामक अध्याय में लिखा है कि महर्षि दयानन्द सन् 1882 (संवत् 1939) तक संस्कृत में भाषण देते थे। यह उचित नहीं है क्योंकि महर्षि दयानन्द ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' की भूमिका में स्पष्ट कर रखा है कि सन् 1874 (संवत् 1931) में जिस समय ''सत्यार्थ प्रकाश'' को प्रथम बार लिखा था। उससे पहले संस्कृत में भाषण देते थे। फिर हिन्दी को जान लिया था।

शंका समाधान :- ऊपर फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश के सम्बंधित विवरण की है। जिसमें महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया है। कि जिस समय सत्यार्थ प्रकाश बनाया था। उस समय मुझे हिन्दी भाषा का विशेष ज्ञान नहीं था। अब अर्थात् संवत् 1939 (सन् 1882) में उदयपुर में स्थान महाराणाजी का उदयपुर भाद्रपद (संवत् 1939=सन् 1882) सत्यार्थ प्रकाश को दूसरी बार छपवाया तब तक महर्षि जी को हिन्दी भाषा का विशेष ज्ञान नहीं था। सन् 1882 में विशेष ज्ञान होने पर सत्यार्थ प्रकाश को शुद्ध करके छपवाया। इससे भी सिद्ध है कि महर्षि दयानन्द जी सन् 1882 (संवत् 1939) तक भी संस्कृत में शास्त्रार्थ किया करते थे।

दूसरा कारण यह है कि दो विद्वान आपस में चर्चा करते थे तो संस्कृत में करते थे। क्योंकि सर्व शास्त्र संस्कृत भाषा में लिखे थे। उनका हिन्दी अनुवाद महर्षि दयानन्द कर ही नहीं सकते थे। क्योंकि वे स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि सन् 1882 (संवत् 1939) तक मुझे हिन्दी भाषा का विशेष ज्ञान नहीं था। सन् 1883 (संवत् 1940) में महर्षि जी की मृत्यु हो गई। इससे सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द सन् 1882 (संवत् 1939) तक संस्कृत भाषा में ही शास्त्रार्थ किया करते थे तथा उनकी हार-जीत का निर्णय संस्कृत भाषा से अपरिचित श्रोता किया करते थे। जिस कारण से दयानन्द जैसे व्यक्ति महर्षि कहलाते रहे।

जबकि महर्षि दयानन्द तथा कृष्णानन्द के शास्त्रार्थ में कृष्णानन्द जी का पक्ष दृढ़ था। जिसमें कृष्णानन्द ने श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 7 का प्रमाण देकर साकार परमात्मा सिद्ध किया था। ''यदा, यदा, हि, धर्मस्य, ग्लानिः, भवति, भारत, ---------- इसका अर्थ गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद्भगवत गीता में इस प्रकार लिखा है :- हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

ध्यान रहे महर्षि दयानन्द द्वारा विषय बदल कर संस्कृत बोलने के कारण संस्कृत भाषा से अपरिचित श्रोताओं ने अपनी हंसी से वेद ज्ञानहीन दयानन्द को विजयी घोषित कर दिया। महर्षि दयानन्द तो विजेता ऐसे हुआ जैसे एक किसान का पुत्र सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उसने कुछ अंग्रेजी भाषा को जान लिया था। एक दिन दोनों पिता पुत्र खेतों में बैल गाड़ी लेकर जा रहे थे। सामने से एक अंग्रेज आ गया। उसने बैलगाड़ी वालों से अंग्रेजी भाषा में रास्ता जानना चाहा। पिता ने पुत्र से कहा बेटा यह अंग्रेज अपने आप को ज्यादा ही शिक्षित सिद्ध करना चाहता है। आप भी तो अंग्रेजी भाषा जानते हो, निकाल दे इसकी मरोड़, सुना दे अंग्रेजी बोल कर। किसान के लड़के ने अंग्रेजी भाषा में बीमारी की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र पूरी सुना दी। अंग्रेज उस नादान बच्चे की नादानी पर सोचने लगा कि पूछ रहा हूँ रास्ता, सुना रहा है बीमारी की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र। अपनी कार लेकर माथे में हाथ मार कर चल पड़ा। किसान ने अपने विजेता पुत्र की कमर थप-थपाई तथा कहा वाह पुत्र! मेरा तो जीवन सफल कर दिया, आज तूने अंग्रेज को अंग्रेजी भाषा में पराजित कर दिया। तब पुत्र ने कहा पिता जी मुझे (My Best Friend) माई बैस्ट फ्रेंड (मेरा खास दोस्त नामक प्रस्ताव) भी याद था। यदि वह

सुना देता तो अंग्रेज कार छोड़ कर भाग जाता।

प्रिय पाठकों यही दशा महर्षि दयानन्द की शास्त्रार्थ में अपने प्रतिद्वन्दी पर विजय की जानो। क्योंकि कि कृष्णानन्द सत्य प्रमाण देने की चेष्टा कर रहा था और दयानन्द विषय छोड़कर निराकार सिद्ध करने की कुचेष्टा करते हुए धारावाहिक संस्कृत बोल रहा था। जिसको संस्कृत भाषा से अपरिचित श्रोता नहीं समझ रहे थे। फिर भी दयानन्द की (Sick leave) सिक लिव को सुनकर हंस दिए और दयानन्द ने परमात्मा को निराकार सिद्ध कर दिया तथा महर्षि की पदवी प्राप्त हुई।

संकट मोचन कष्ट हरण अवतार

''भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की दया

मेरा नाम दीपक दास पुत्र बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढ़ियों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी राधास्वामी पंथ के संत गुरविन्द्र सिंह जी से नाम लिया हुआ था। हम भी गुरविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।

मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उसी दौरान मेरे दादा जी का बीमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे, मेरी बुआ प्रेमवती में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली। (मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ के बताये नामों का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बीमारी के कारण खांसी रहती थी वे बारह साल के बाद भी

ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो क्या आप सतलोक नहीं गई। तब मेरी दादी ने कहा कि बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया तथा अब मृत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई तो फिर मेरी माता जी ने पूछा कि माँ क्या आपको गुरूजी चरण सिंह जी महाराज ने संभाला या नहीं? तो मेरी दादी जी ने कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुःखी हो रही हूँ।

उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश करके बोले और कहा कि मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई। मैं नहाना चाहता हूँ तो मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि आप तो सतलोक में गए थे क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है? फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ में प्रेत बन के घुसा हुआ था) को नहलाने लगी तो वह कहने लगा कि बेटी मैं अपने आप नहा लूंगा तो मेरी माता जी ने हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश था इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये तो मेरा दादा बोला बस बेटी मेरी धोती ले आओ मैं बांध लूंगा। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली। मैंने पूछा कि दादा जी आप सतलोक नहीं गए तो उसने कहा कि बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे भक्ति भी करते थे क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब मेरे दादा जी (जो प्रेतवत् मेरी बुआ जी में प्रवेश था) ने कहा कि उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की और मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।

उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई थी कि कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढ़ने के लिए उसके पास जाता था। वहां पर भक्त संतराम जी ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी आँखे ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है। भक्त संतराम ने कहा कि वह पंथ पूर्ण नहीं है उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा संत ही टाल सकता है।

मेरे पिता जी को सांस की बिमारी थी दस कदम चलने पर ही बेहाल हो जाते थे, सांस की बीमारी के कारण दम फूलने लगता था हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बीमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये। लेकिन तब भी हम यह सोचते रहे कि राधास्वामी

पंथी संत गुरविन्द्र सिंह जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया बड़ी रजा की लेकिन हमने तो सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक सांस टूटते देखा है, बिल्कुल मृत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे क्योंकि दवाईयों का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढ़ा सकते थे बढ़ा चुके थे इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढ़ा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी पंथी गुरूविन्द्र सिंह जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे (प्रेत प्रकोप) की शिकायत रहने लगी। वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि मेरा पैर पकड़ कर कोई खींच रहा है, सोने नहीं दे रहा है, वह भी बहुत बीमार रहने लगा। पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर जी की दया से मुझ दास को 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ तो बीस दिन के अंदर ही पूर्ण संत रामपाल जी महाराज की दया से मेरा चश्मा उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दिया। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम जी ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईदे पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।

उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले हम पहले तो राधास्वामी थे। अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें। दुनिया क्या कहेगी ? तब मैंने कहा कि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते ? परन्तु दुःखी बहुत थे कुछ समय बाद परमेश्वर की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।

सतगुरू कबीर साहेब कहते हैं ''शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे'' **सारे परिवार के नाम लेने के बाद से ही हमारे दिन फिर गये। मेरे भाई का ओपरा ठीक हो गया, पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया और पहले वे दस कदम नहीं चल सकते थे अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। हमारा परिवार आज पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी हैं।**

परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और उसकी जान बच जाए तो उसे उस पैसे का कोई मलाल नहीं होता कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन शास्त्रविरूद्ध साधना (राधास्वामी पंथ द्वारा बताए पांच नामों की साधना) करने से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे हैं),

वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं, क्योंकि चौरासी लाख योनियाँ भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को, जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है उसे बरबाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से नहीं की जा सकती।

हे बंदी छोड़ सतपुरूष रूप सतगुरू रामपाल जी महाराज आपने बड़ी दया कि हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस शास्त्रविरूद्ध साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सत्भक्ति से वंचित रह जाते।

सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सत्भक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं।

।।सत साहेब।। सतगुरु चरणों का दास

दीपक दास मोब. 09992600853

''एक श्रद्धालु की आत्म कथा''

मैं राजेन्द्र दास 200-बी पश्चिम बिहार एक्सटैन्शन नई दिल्ली-63 का रहने वाला हूँ। मैंने राधास्वामी पंथ के सन्त चरणसिंह जी महाराज(डेरा बाबा जैमल सिंह ब्यास जि. अमृतसर पंजाब) से सन् 1980 में नाम दान लिया। गुरू जी के बताए अनुसार 2:30 घण्टे सुबह तथा 2:30 घण्टे शाम साधना शुरू की अभ्यास बढाते-2 अधिक समय करने लगा। मेरे दोनों कुल्हे भी पीड़ा करने लग जाते थे। फिर भी परमात्मा प्राप्ति की तड़फ से कष्ट को सहन करते हुए साधना की। कुछ प्रकाश भी दिखाई देता था तथा कुछ आवाजें भी सुनने लगी। अपने पंथ की साधना को सर्वोच्च मानकर अन्य की बात नहीं सुनता था। शरीर में कष्ट, घर में निर्धनता बढ़ती गई। कोई कार्य सिद्ध नहीं होता था। महा परेशानी का जीवन जीता रहा। गुरू चरण दास जी सत्संगों में कहते थे कि प्रारब्ध का कर्म भोग तो जीव को भोगना ही पड़ता है। इस दृष्टिकोण से अपने महाकष्टमय जीवन को जी रहा था।

एक दिन आस्था टी.वी. चैलन पर सन्त रामपाल दास आश्रम करौंथा जि. रोहतक का सत्संग सुना तो मुझे बहुत गुस्सा आया तथा सोचा यह तो हमारे पंथ की निन्दा कर रहा है। न चाहते हुए भी देखता रहा। जब सन्त रामपाल जी ने हमारे ही पंथ की पुस्तकों को टी.वी. पर दिखाया तथा अन्य शास्त्रों से तुलना की बताया कि श्री सावन सिंह महाराज ने श्री जगत सिंह जी को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया। तीन वर्ष पश्चात् श्री जगत सिंह जी का निधन हो गया उसके पश्चात श्री सावन सिंह के शिष्य श्री चरण सिंह जी जो नाते में श्री सावन सिंह के पौत्र थे को व्यास गद्दी पर नियुक्त किया गया। श्री चरण सिंह को श्री सावन सिंह जी ने नाम दान का आदेश भी नहीं दिया था। यदि कहें कि श्री जगत सिंह जी ने आदेश दिया तो श्री सावन सिंह जी का शिष्य नहीं रहा। श्री चरण सिंह जी तथा

श्री जगत सिंह जी गुरु भाई थे। एक शिष्य दूसरे शिष्य को आदेश नहीं दे सकता। जैसे एक सिपाही दूसरे सिपाही को सिपाही नियुक्त नहीं कर सकता। यह प्रमाण देख कर मुझे करंट जैसा लगा कि सचमुच राधास्वामी पंथ का ज्ञान तथा साधना पूर्ण रूप से शास्त्रविरूद्ध है। वह कार्यक्रम आस्था टी.वी. पर बन्द हो गया। कुछ समय उपरान्त एक समाचार पत्र पढ़ा उसमें भी सन्त रामपाल जी ने सर्व पुस्तकों का तथा पृष्ठों का हवाला देकर लेख लिखा था।

राधास्वामी पंथ की साधना करते-2 भी घर तथा परिवार व कारोबार में अत्यधिक परेशानियों के कारण शराब तथा तम्बाखु का आदी भी हो गया था। उस समाचार पत्र को तथा उसके सम्बन्धित पुस्तकों को लेकर में ब्यास डेरा राधास्वामी पंजाब में गया तथा सन्त रामपाल दास द्वारा बताई गई त्रुटियों के समाधान के लिए श्री रोहतास चन्द्र बहल जी तथा परिचर कथा वाचक श्री खुराना जी से मिला। उनको तुलसी साहेब हाथरस वाले द्वारा रचित घट रामायण भाग पहला के पृष्ठ 27 पर दिखाया। जिसमें लिखा है कि पाँचों नाम काल के हैं। इनसे भिन्न आदि नाम तथा सतनाम (दो नाम) हैं। उनसे ही काल जाल से छुटकारा हो सकता है। वो दो नाम हमें नहीं मिले तो कैसे काल जाल से छुटेगें। कबीर साहेब जी की वाणी दिखाई ''शब्द'' ''सन्तों शब्द शब्द बखाना, शब्द फांस फंशा सब कोई शब्द नहीं पहचाना। प्रथम ही ब्रह्म (काल) स्वईच्छा से पांचों शब्द उच्चारा, सोहं, ज्योति निरंजन, ररंकार, शक्ति और ओंकारा।'' जब यह पुस्तके दिखाई तो दाँतों तले उंगली दबाई। परन्तु अपनी चतुरता दिखाई की छटवां नाम अन्दर ध्यान में मिलेगा। मैंने पूछा तुलसी साहेब तो कह रहे हैं कि दो नाम और है जो पांचों से अन्य हैं। आदि नाम तथा सतनाम। फिर सातवां कहाँ मिलेगा? इस बात पर उन्होंने कहा आप गुरू जी (सन्त गुरविन्द्र सिंह जी) से मिल कर पूछो। मैंने कहा मिलाओ मुझे गुरू जी से, टालते हुए कहा कि करोड़ों शिष्य हैं गुरू जी के, किस-2 से मिलेगें। आप पत्र द्वारा समाधान प्राप्त करना। मैं रोता हुआ वापिस दिल्ली आ गया। पत्र डाला। उसका जवाब मिला, जो बेतुका था, कहा था आप अभ्यास और बढ़ाते जाओ अपने आप ही सब मन्त्र मिल जाएगें।

डेरा ब्यास के उत्तर से कोई सन्तुष्टि नहीं हुई। उसके पश्चात सन्त रामपाल जी महाराज के बताए अनुसार राधास्वामी पंथ की पुस्तकों को पढ़ा तो रोना आने लगा। यह क्या मजाक कर रखा है।

1. हजूर स्वामी शिवदयाल जी का कोई गुरू नहीं था।

2. स्वामी जी हुक्का पीते थे।

3. स्वामी जी प्रेत की तरह अपनी परम शिष्या बुक्की में प्रवेश होकर बोलते थे। मृत्यु उपरान्त भी बुक्की के मुख से हुक्का पीते थे तथा भोजन भी ग्रहण करते थे। सारवचन वार्तिक वचन 4 में कहा है कि सतनाम को सतनाम, सारनाम, सतशब्द, सतलोक, सतपुरूष भी कहते हैं।

आदि व्याख्याओं को पढ़ कर रोना आया। क्या करूं? कहाँ जाऊँ? सन्त

रामपाल दास जी महाराज ने बताया कि हठ योग सन्त मार्ग नहीं है। हठ योग का प्रमाण रूहानी फूल पुस्तक पृष्ठ-82 पर श्री जैमल सिंह जी महाराज अभ्यास में आलस आने पर अपने शरीर पर बैंत मारते थे तथा हजूर स्वामी शिवदयाल जी महाराज कई-2 दिन तक बन्द कमरे में हठ योग से साधना करते थे जो किसी भी सन्त के इतिहास में नहीं है। सन्त नानक जी हल चलाते थे तथा सुमिरण भी करते थे, सन्त रविदास जी जूते बनाने का कार्य भी करते थे तथा सुमिरण भी करते थे तथा परमेश्वर कबीर जी ने लीला करके दिखाया की जुलाहे का कार्य करते-2 भी प्रभु नाम का सुमिरण कर सकते हैं। सन्त गरीब दास जी (छुड़ानी वाले) हल भी चलाते थे तथा सुमिरण भी करते थे। हठ योग करने से श्री तुलसीदास साहेब हाथरस वाले के दोनों पैर कमर से नीचे सुन्न हो गए थे (अधरंग हो गया था) उनके शिष्य पालकियों में बैठा कर ले जाते थे (पुस्तक जीवन चरित्र तुलसी साहेब पृष्ठ - 7 पर प्रमाण है)। यह साधना जनसाधारण नहीं कर सकता तथा शास्त्रविरूद्ध होने के कारण व्यर्थ है। पुस्तक सन्तमत प्रकाश भाग-4 पृष्ठ-126 पर श्री सावन सिंह जी ने लिखा है कि अभ्यास में आत्मा सिमट कर आँखों के पीछे चली जाती है शरीर सो जाता है तो यह शरीर मुर्दा दिखाई देता है। यही जीवित मरना है।

उपरोक्त प्रमाणों को आँखों देख कर मैंने (राजेन्द्र ने) परम सन्त रामपाल दास जी महाराज से उपदेश ग्रहण कर लिया। मेरे सर्व कार्य सिद्ध हो गए तथा सर्व नशा छूट गया। मेरे शरीर का रोग भी समाप्त हो गया।

मेरी सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि सत्य को आँखों देख कर सन्त रामपाल जी महाराज से नाम दान लेकर अपना मानव जीवन सफल बनाऐं।

आपका अपना राजेन्द्र दास

"अनहोनी की परमेश्वर ने"

मैं भक्त सुरेन्द्र दास गाँव गांधरा, त. सांपला, जिला-रोहतक का निवासी हूँ। मेरी आयु 31 वर्ष है तथा बचपन से ही परमात्मा की खोज में लगा हुआ था तथा मनमुखी पूजा (मन्दिरों में जाना, व्रत आदि करना, श्राद्ध निकालना आदि) भी करता था। परन्तु शारीरिक कष्ट व मानसिक अशान्ति लगातार बनी हुई थी। फिर भी परमात्मा में विश्वास तथा परमात्मा पाने की तड़फ बरकरार थी। यही तड़फ मुझे सन् 1995 में संत आसाराम बापू के पास ले गई। मैंने उनसे नाम उपदेश लिया व जैसा भक्ति मार्ग बापू जी ने बताया डट कर साधना की। परन्तु न तो कोई शारीरिक कष्ट दूर हुआ और न ही कोई आध्यात्मिक उपलब्धि हुई, अपितु कष्ट बढ़ता ही चला गया। मैं आसाराम बापू के बताए अनुसार साधना करता था। जैसे 250 ग्राम दूध सुबह पीता था और 250 ग्राम दूध शाम को पीता था और मेरे मंत्र में जितने अक्षर थे उतने लाख मंत्र जाप करना और समाधि लगाना। चालीस दिन की यह क्रिया थी, जो कि यह एक अनुष्ठान होता था। ऐसे-ऐसे मैंने चौदह अनुष्ठान किए।

एक बार मैंने श्री आसाराम बापूजी के सत्संग में सुना कि सात दिन तक निराहार रहकर मंत्र जाप करने, समाधि लगाने तथा प्राणायाम करने से ईश्वर

प्राप्ति होगी। मैंने इन वचनों को सत्य मान कर ऐसा ही किया। परन्तु परमात्मा प्राप्ति की बजाए भूखा रहने के कारण मृत्यु के निकट पहुँच गया तथा प्राणायाम करने से दिमागी संतुलन बिगड़ गया और मैं पागल-सा हो गया।

उसी दौरान मेरे ऊपर सतगुरु पूर्ण संत रामपाल जी महाराज की कृपा दृष्टि हुई तथा मुझे सितम्बर 2000 में पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। उपदेश मिलते ही मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने दीपक में घी डाल दिया हो।

पूर्ण संत पाप कर्मों को समाप्त कर सकता है इसका प्रमाण मेरे जीवन में स्पष्ट रूप से तब घटित हुआ जब मैं मई 2004 में औरंगाबाद महाराष्ट्र में संत रामपाल जी महाराज के सतसंग के लिए टैंट की सेवा करते हुए 25 फुट ऊपर से नीचे पथरीली जमीन पर गिर गया। यहाँ काल को कुछ और ही मंजूर था तथा मेरी रीढ़ की हड्डी टूट गई और मेरे शरीर के नीचे के हिस्से में अधरंग मार गया। उसी समय मैंने अपने सतगुरु देव जी संत रामपाल जी महाराज को याद किया। मेरे गुरुदेव की दया से उसी समय दोनों पैर ठीक काम करने लग गए।

गरीब, काल डरै करतार से, जै जै जगदीश। जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारै शीश।।

उसके बाद मुझे औरंगाबाद के निजी हस्पताल (पटवर्धन हॉस्पीटल) में ले जाया गया। वहाँ पर डॉ. डी.जी. पटवर्धन ने मेरे शरीर की जाँच की तथा मेरी रीढ़ की हड्डी के एक्स-रे लिए। रिपोर्ट से पता चला कि रीढ़ की हड्डी टूटी हुई है। रिपोर्ट देखकर डॉ. बहुत हैरान होकर कहने लगा कि आपकी रीढ़ की हड्डी टूट गई है और उसका एक टूकड़ा टूट कर अलग हो गया है। डॉ. बार-बार मेरे पैरों को हाथ लगाकर देखता रहा और कहा कि आप पर परमात्मा की विशेष कृपा है कि आपके पाँव ठीक काम कर रहे हैं। क्योंकि इस रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्गं होना जरूरी था। वहाँ उस हॉस्पीटल में मैं तीन दिन तक दाखिल रहा। उसके बाद मैं छूट्टी लेकर वापिस अपने घर हरियाणा आ गया। यहाँ रोहतक में मैंने अपना ईलाज हड्डियों के प्रसिद्ध डॉ. चड्ढा से करवाया। डॉ. चड्डा भी मेरी रिपोर्ट देखकर हैरान रह गया तथा कहा कि आप चल-फिर कैसे रहे हो। आपको तो रिपोर्ट के अनुसार अधरंग होना चाहिए था। डॉ. चड्डा ने फिर से रंगीन एक्स-रे करवाया तथा कहा कि इसका ईलाज संभव नहीं है तथा ऑप्रेशन के द्वारा इसको जिस स्थिति में है वहीं रोका जा सकता है, ताकि हड्डी और न टूट सके। उसने हड्डियों को ताकत देने के लिए इंजेक्शन शुरु किए और तीन महीने में पूरे इंजेक्शन लग गए। फिर उसने कहा कि ऑप्रेशन जरूर करवाना पड़ेगा, नहीं तो बाकी बची हुई हड्डी भी टूट सकती है और कहा कि ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये आयेगा। फिर उसी समय डॉ. ने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको तीन महीने के अंदर मृत्यु को प्राप्त हो जाना था। आज आप परमात्मा की कृपा से ही जीवित हो। ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये देने में मैं असमर्थ था, इसलिए मैं दूसरे डॉ. के पास ईलाज के लिए गया। वह भी मेरी रिपोर्ट देखकर आश्चर्य में पड़ गया और कहा कि यदि ऑप्रेशन में देर हो गई तो हड्डी और भी टूट सकती है। उसने भी बताया कि

रिपोर्ट के अनुसार आपको अधरंग होना चाहिए था, आप चल-फिर कैसे रहे हो ?

आखिर हारकर मैंने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज के चरणों में प्रार्थना की। तब मेरे पूज्य गुरुदेव ने मुझपर दया की और सिर पर हाथ रखकर कहा 'बेटा आप बिल्कुल ठीक हो जाओगे, यदि आज परमेश्वर कबीर साहेब जी की शरण में नहीं होते तो आपको भुगत कर मरना था। आपकी आयु शेष नहीं थी। आप एक बार फिर डॉ. को दिखा लो'। मैंने गुरु जी के आदेशानुसार अगले ही दिन डॉ. को दिखाया, जिसने मेरा एक्स-रे किया और एक्स-रे देखकर डॉक्टर आश्चर्य चकित रह गया और बोला 'जो हड्डी टूट कर अलग हो गई थी, वह अपने आप ऊपर को उठकर कैसे जुड़ गई। डॉक्टर जी ने बताया कि इस हड्डी की ऐसी स्थिति थी कि जैसे कोई गाड़ी बहुत ज्यादा ढलान वाली चढ़ाई में चढ़ रही हो। उसके इंजन में खराबी हो जाऐं, वह वापिस ही आ सकती है या प्रथम गियर में डाल कर पत्थर आदि पहियों के पीछे लगाकर वहीं रोकी जा सकती है, आगे को नहीं चढ़ सकती। आपकी हड्डी ऐसे ऊपर को चढ़ कर जुड़ गई जो डॉक्टरी इतिहास से बाहर की बात है। इससे मुझे भी महसूस होता है कि कोई शक्ति है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। यह तो ऑप्रेशन से भी नहीं हो सकता था। आप्रेशन करके इसमें कोई पदार्थ भरकर वह गैप भरा जा सकता था। फिर भी यदि आप कोई वजन उठाने का कार्य करते तो फिर से हड्डी खिसक कर आप चारपाई पर भुगत कर मरते। डॉक्टर के समझ में भी नहीं आ रहा था। मैंने कहा कि पूर्णब्रह्म कबीर साहेब के स्वरूप मेरे पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज ने मेरे पाप कर्म काटकर तथा मेरी मृत्यु को टालकर अपने कोटे से मुझे नई जिंदगी दी है। परमेश्वर कबीर साहेब की वाणी है -"जो मेरी भक्ति पीछोड़ी होई, तो हमरा नाम न लेवे कोई।"

अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ तथा सतगुरु के चरणों में आत्म कल्याण हेतु निःस्वार्थ सेवा कर रहा हूँ। 50 कि.ग्रा. वजन अपने आप ही उठा कर चलता हूँ। हमारे गुरुदेव का वास्तविक उद्देश्य तो भक्ति करवाकर जीव को विकार रहित करवा कर अपने परम धाम सतलोक में ले जाना है, यहाँ के छोटे-मोटे सुख तो हमारे गुरुदेव अपने खजाने से दे देते हैं, ताकि जीव भक्ति मार्ग में लगा रहे। अतः सर्व समाज से प्रार्थना है कि हमारे गुरुदेव के चरणों में आकर सत्यभक्ति करें तथा सांसारिक सुखों के साथ-साथ आत्म कल्याण का मार्ग भी प्राप्त करें। सत् साहिब!!

विशेष :-ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मन्त्र 2 में पूर्ण परमात्मा ने कहा है कि हे शास्त्रानुकूल साधना करने वाले साधक तू सम्पूर्ण भाव से मेरी शरण ग्रहण कर अर्थात् संशयरहित होकर मेरी भक्ति कर मैं तेरे असाध्य रोग को भी समाप्त कर दूगां, यदि तेरी आयु भी शेष नहीं है तो तेरी आयु के स्वांस बढ़ाकर सौ वर्ष कर दूगां। उपरोक्त कथा प्रभु की समर्थता को प्रमाणित करती है।

भक्त सुरेन्द्र दास, मोब. नं. 9992600826

"अपने भक्त को धर्मराज के दरबार से छुड़वाना"

मैं भक्त ओमप्रकाश सुपुत्र श्री मातादीन, नजफगढ़, दिल्ली का निवासी हूँ।

मुझे परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से नाम लिए डेढ़ वर्ष हो गया है। मेरी नजफगढ़ में हलवाई की दुकान है। 19 मई 2005 को रात के 9:30 बजे मुझे दुकान पर पेट में बहुत ज्यादा दर्द हुआ। दर्द के कारण मेरी हालत बिल्कुल खराब हो गई थी। मैं गुरु जी का नाम जपते-जपते घर पहुँचा। घर में घुसते ही सामने गुरु जी की तस्वीर के सामने दण्डवत प्रणाम किया। मैं दण्डवत प्रणाम करके खड़ा हुआ तो मुझे पेट का दर्द महसूस नहीं हुआ। फिर मैं चारपाई पर लेट गया। चारपाई पर लेटते ही मैं बेहोश हो गया। मेरे चारों तरफ यम के दूत चक्कर लगाने लगे और मुझे डराने लगे। मैं डर के मारे बेहोश हो गया। तब यम के दूतों ने मेरे ऊपर सफेद चादर डाली और मेरे को उठा कर यमराज के दरबार में ले गये। यमराज के दरबार में मैंने देखा कि वहाँ पर लाईन लगी हुई थी। जब मेरा नम्बर आया तो यमराज ने कहा कि इसको तालाब में फैंक दो। मैंने तालाब की तरफ देखा तो मुझे तालाब में मगरमच्छ ही मगरमच्छ दिखाई दिए। मैं मगरमच्छों को देखकर डर गया। तब मैंने अपने परम पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज को याद किया, उस समय धर्मराज के दूत मुझे तालाब में फैंकने के लिए तैयार हो गये। मैंने गुरु जी को पुकारा कि - ‘‘हे गुरु जी बचाओ‘‘। तब मैंने देखा कि मेरे गुरु जी कबीर साहेब के रूप में आए और मुझे तालाब में गिरने से पहले ही बाहर निकाल लिया। यमराज ने कबीर साहेब के चरणों में गिरकर डण्डौतं प्रणाम किया। फिर गुरु जी अपने रूप में आ गए और मुझसे कहने लगे कि अब तू किस लिए डर रहा है, अब मैं तेरे साथ हूँ। तब मेरा डर दूर हो गया। धर्मराज ने गुरु जी से बहस की कि आप इसको बार-बार क्यों बचाते हो। यह तो मेरा भोजन है। आप ने इसको पहले भी दो बार मरते मरते बचाया है। ‘पहली बार तो स्कूटर और जीप की आमने-सामने की टक्कर होने पर भी मुझे खरोंच तक नहीं आई थी। और दूसरी बार मोटर साईकिल स्लिप होने के बाद मैं चलते ट्रक के नीचे जा गिरा। गुरुदेव जी ने मुझे उस ट्रक के नीचे से बचाया।‘

तब गुरुदेव ने धर्मराज को कहा - ‘इसने मेरी पिछले जन्म की भक्ति की हुई थी, इसलिए मैंने इसे बचाया। फिर धर्मराज ने कहा अब कि बार आपने क्यों बचाया, जबकि मैंने इसका नाम तुड़वा रखा था। फिर गुरु जी ने कहा कि इसका नाम आपने तुड़वाया था, इसने अपनी मर्जी से नहीं तोड़ा। इसलिए मैंने बचाया, यह मेरी भक्ति करता है।‘ तब काल ने कहा कि मैं देखता हूँ कि आप इसे कब तक बचाते हो। फिर गुरु जी ने कहा कि मैं पल-पल इसके साथ हूँ, तुम इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

फिर सतगुरुदेव ने धर्मराज को कहा कि अब कि बार इसको किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाया तो जैसे तू लोगों को सताता है, उससे बुरा हाल तेरा करूंगा।

उसके बाद सतगुरुदेव जी मुझे धर्मराज के दरबार से नीचे लेकर आए और मुझसे कहा कि तू जल्दी से जल्दी अपने घर वालों को बता दे कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ और मुझको घर ले चलो। दो डॉक्टर तो मना कर चुके थे कि हमारे बस की बात नहीं है। मेरे घर वाले मुझे हस्पताल (मैडीकल) में लेकर जा रहे थे। मैंने घरवालों से कहा कि मुझे जल्दी से जल्दी घर ले चलो, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। जो मेरे साथ थे, वे

एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि ये तो मर गया था। इसको होश कैसे आ गया ? ये ऐसी बातें कैसे कर रहा है ? फिर मेरे घर वाले रास्ते में से वापिस घर की तरफ आने लगे तो मुझे सतगुरुदेव कमल के फूल पर बैठे हुए दिखाई दिए। कभी तो गुरु जी के रूप में और कभी कबीर साहेब के रूप में दिखाई दे रहे हैं और मेरी तरफ हाथ हिलाते हुए जाते दिखाई दिए। मैं फिर जोर-जोर से रोने लगा कि मेरे गुरु जी गए, मेरे गुरु जी गए। हमारे घर वाले फिर घबरा गए कि यह ऐसे कैसे कर रहा है। फिर मैडीकल की तरफ जाने लगे। तब गुरु जी ने आवाज लगाई कि भक्त तू यह क्या कर रहा है, मैंने तो तेरे को कहा है कि घर चला जा जल्दी से जल्दी। फिर मैंने अपने घर वालों से कहा कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मुझे मेरे गुरु जी दिखाई दिए थे। तब हमारे घर वाले मेरे को घर लेकर गए और घरवाले एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि यह तो मर गया था, यह जिन्दा कैसे हुआ ? मैंने अपने घरवालों को अपने साथ बीती सारी घटना बताई कि मेरे साथ ऐसे-ऐसे हुआ और मेरे सतगुरुदेव जी मुझे घर छोड़कर चले गए।

भक्त ओमप्रकाश दास
RZ-15, B Block, गली नं. 2, मकसूदा
बाद कॉलोनी, नजफगढ़, नई दिल्ली।
मोब. नं. 09812166044

''भक्त रामस्वरूप दास की आत्मकथा'

बन्दी छोड़ कबीर साहेब की जय

मैं भक्त रामस्वरूप पुत्र मंगत राम गांव बड़ौली जिला-अम्बाला का रहने वाला हूँ। मैंने 13 साल से धन-धन सतगुरु से नाम ले रखा था। 6 साल पहले मेरे हाथ-पांव काम करना छोड़ गये थे। कमर से नीचे जैसे मेरा सारा शरीर मृत प्राय हो गया था। मेरे दोनों लड़के मेरे को अम्बाला सरकारी हस्पताल में लेकर गये फिर प्राईवेट डाक्टरों को भी दिखाया। इसके बाद मुझे 2 साल तक ईलाज के लिये इधर-उधर ले जाने के बाद मुझे P.G.I. चण्डीगढ़ भी लेकर गये वहां एक साल में मेरे दो बार टेस्ट किये गये। क्योंकि जिस मशीन से मेरे टेस्ट होते थे उसमें मेरा नम्बर एक महीने में आता था। उसकी टेस्टींग फीस छः हजार रूपये थी। वहां पर मेरे को दोनों बार की टेस्टींग में बीमारी के कारणों का पता नहीं लगा तो दोनों बार मेरे सिर का आप्रेशन करने को कहा गया जिसमें मेरी जान का खतरा बताया और पूर्ण ठीक होने की कोई गारन्टी नहीं है ऐसा कहा। उसके बाद घर वाले मुझे बाबा रामदेव के योग आश्रम में भी लेकर गये वहां मेरा कुछ दिन इलाज होता रहा कोई आराम न होने से मेरे को घर ले आये। फिर मुझे झाड़-फूंक करने वालों के पास पंजाब हरियाणा आदि स्थानों पर लेकर गये वहां भी मेरे को कोई आराम नहीं हुआ। हमने सोच लिया कि अब जीवन ही थोड़े दिन का है। जब मैं सभी ओर से निराश हो गया तो मेरे को मेरी लड़की जिसकी शादी शाहपुर (अम्बाला) में हुई थी उसने मेरे को वहां पर बुलाया गया। मेरे जमाई संजू ने कुकू - भगत के बारे में बताया। जो 15 अगस्त 2008 को मेरे को लेकर बरवाला आश्रम में सतगुरु बंदी

छोड़ रामपाल जी महाराज के पास लेकर आये 16 अगस्त 2008 को मैंने नामदान लिया। उसके बाद मेरे को आराम होने लगा। गुरू जी की कृप्या से अब मैंने अपने खेत में आप ट्रेक्टर चलाया और अपनी सारी जमीन की बुवाई का काम किया महाराज के आर्शीवाद से मेरे को दुबारा जीवन दान मिला। महाराज बन्दी छोड़ ने जो कृप्या की उसको जुबान से ब्यान नहीं कर सकता। गुरु जी आप सतलोक से मेरा जीवन दान देने के लिए आए हो मेरा कोटी-कोटी दण्डवत् प्रणाम है।

जय बन्दी छोड़ की। आपका दास

भक्त राम स्वरूप दास

गांव - बड़ौली, जिला - अम्बाला

"भूतों व रोगों के सताए परिवार को आबाद करना"

भक्तमति अपलेश देवी पत्नी श्री रामेहर पुत्र श्री माँगेराम, गाँव-मिरच, तहसील चरखी दादरी, जिला भिवानी (हरियाणा)।

मैं अपलेश देवी अपने दुःखी जीवन की एक झलक आपको बता रही हूँ। मैं और मेरे बच्चे - राहुल और ज्योति हैं जो बीते समय के बुरे हालातों को याद करके सिहर जाते हैं। जिनका वर्णन करते समय कलेजा मुंह को आता है।

6 दिसम्बर 1995 की रात्री में बदमाशों ने मेरे पति को ड्यूटी के दौरान जान से मार दिया था। लेकिन इस पूर्ण परमात्मा (कबीर साहिब) ने हमारा ध्यान रखा और मेरे पति को जीवन दान दिया जो आज हमें परिवार सहित बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज की दया से पूर्ण परमात्मा के चरणों में स्थान मिल गया है। हमारे परिवार में मेरे पति को साफ कपड़े पहनाते जो कुछ देर बाद अन्डर वियर के ऊपर के हिस्से पर जहाँ पर रबड़ या नाड़ा होता है वहाँ चारों ओर खून से कपड़े रंगीन हो जाते थे, तथा बच्चों को भी बलगम के साथ खून आता था और मैं भी एक वर्ष से हार्ट (दिल) की बीमारी से बहुत परेशान हो चुकी थी। जिसके लिए वर्षों से दवाईयाँ खा रही थी। मेरे पतिदेव दिल्ली पुलिस में हैं। मेरे सारे शरीर पर फोड़े-फुन्सी हो जाते थे। घर में परेशानियों के कारण मेरे पति रामेहर का दिमागी संतुलन भी बिगड़ गया था।

हमने इन परेशानियों के लिए सन् 1995 से जुलाई 2000 तक एक दर्जन से भी ज्यादा लंगड़े, लोभी व लालची गुरुवों के दरवाजे खट-खटाए तथा भारत वर्ष में तीर्थ स्थानों जैसे जमुना, गंगा, हरिद्वार, ज्वाला जी, चामुन्डा, चिन्तपूरनी, नगर कोट, बाला जी, मेहन्दी पुर व गुड़गाँवा वाली माई तथा गौरख टीला राजस्थान वाले प्रत्येक स्थानों पर बच्चों सहित काफी बार चक्कर लगाते रहे लेकिन हमें कोई राहत नहीं मिली।

इस प्रकार हमारे परिवार की हालत यहाँ तक आ चुकी थी कि हम होली व दिवाली भी किसी मस्जिद में बैठकर बिताने लग गये थे।

हम बड़े खुशनसीब हैं जो हमें संत रामपाल जी महाराज के द्वारा परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण मिल गई। अब कहाँ गये वे काल के दूत तथा वे हमारी

बीमारियाँ जिनका ईलाज आल इण्डिया हॉस्पीटल में चल रहा था, जो सतगुरुदेव के चरणों की धूल के आगे टिक नहीं पाई।

25 फरवरी 2001 को काल की पूजा करने वाले एक स्याने ने फोन करके पूछा कि अपलेश तुम्हारा नाम है। मैंने कहा कि हाँ, आप अपना नाम बताओ। तब वह स्याना कहता है कि यह बलवान कौन है, आपका क्या लगता है? मैंने कहा कि तुम कौन हो, आपका क्या नाम है तथा यह सब क्यों पूछना चाहते हो ? तब वह स्याना कहता है कि बेटी तुम मेरा नाम मत पूछो। मैं बताना नहीं चाहता तथा मैं हांसी से बोल रहा हूँ। बलवान तथा इसके साथ एक आदमी और आया था दोनों ने मुझे 3700 रूपए तुम पर घाल घलवाने के लिए दिए थे। मैंने तुम्हारा फोन नं. भी बलवान से लिया था कि मैं पूछूंगा कि उनकी दुर्गति हुई या नहीं। मेरे पास आपका फोन नं. नहीं था, बलवान ने ही दिया था। जो मैंने यह बुरा कार्य रात्री में किया। लेकिन जैसे ही मैं सोने लगा तो मुझे सफेद कपड़ों में जिस गुरु की तुम पूजा करते हो वे दिखाई दिये, जिन्होंने मुझे बतला दिया कि इसका परिणाम तुम खुद भोगोगे। यह परिवार सर्व शक्तिमान सर्व कष्ट हरण परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण में है। आपकी तो औकात ही क्या है ? यहाँ का धर्मराज भी अब इस परिवार का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

गरीब, जम जौरा जासै डरै, मिटें कर्म के लेख। अदली अदल कबीर हैं, कुल के सद्गुरु एक।।

परम पूज्य कबीर परमेश्वर जी से जम (काल तथा काल के दूत) तथा मौत भी डरती है। वे पूर्ण प्रभु पाप कर्म के दण्ड के लेख को भी समाप्त कर देते हैं। इसके बाद उस स्याने ने कहा कि बेटी तुम्हें यह बतला दूँ कि तुम जिस देव पुरुषोत्तम की पूजा करते हो, वे बहुत प्रबल शक्ति हैं। मैं 25 वर्ष से यह घाल घालने का कार्य कर रहा हूँ। न जाने कितने परिवार उजाड़ चुका हूँ। परन्तु आज पहली बार हार खाई है। बेटी इस शक्ति को मत छोड़ देना, नहीं तो मार खा जाओगे। आपके विनाश के लिए बलवान आदि घूम रहे हैं। मैंने कहा कि हम पूर्ण परमात्मा की पूजा करते हैं, बलवान मेरे पति का बड़ा भाई है। हमारा जानी दुश्मन बना है।

हम आज इतने खुशनसीब हैं कि हमारे दिल में किसी वस्तु या कार्य की आवश्यकता होती है उसको यह सतगुरुदेव, सत कबीर साहिब पूर्ण कर देते हैं। आज गुरु गोविन्द दोनों खड़े, हम किसके लागे पाय। हम बलिहारी सतगुरुदेव रामपाल जी के चरणों में जिन्हें परमेश्वर दिया मिलाय।

भाईयों और बहनों हमारा सारा परिवार मिलकर आपको यह सन्देश देता है कि अगर आपको सतलोक का मार्ग, पूर्ण मोक्ष व सर्व सुख प्राप्त करना हो और सांसारिक दुःखों से छुटकारा पाना हो तो बन्दी छोड़ संत रामपाल जी महाराज से सतनाम प्राप्त कर लेना और अपना अनमोल मनुष्य जन्म सफल कर लेना।

।। सत साहिब।। भक्तमति अपलेश देवी

''पूर्ण परमात्मा साधक को भयंकर रोग से मुक्त करके आयु बढ़ा देता है''

भक्त डा. ओम प्रकाश हुड्डा (C.M.O.) का प्रमाण

प्रमाण ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 161 मंत्र 1, 2 तथा 5 जिसमें परमेश्वर कहते

हैं कि यदि किसी को प्रत्यक्ष या गुप्त क्षय रोग तपेदिक हो उसे भी ठीक करता हूँ तथा यदि किसी रोगी व्यक्ति की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी हो। जिसकी आयु शेष न रही हो तेरे प्राणों की रक्षा करूं तथा तेरी आयु सौ वर्ष प्रदान कर दूं, सर्व सुख प्रदान करूं। मंत्र 5 में कहा है कि हे पुर्नजीवन प्राप्त प्राणी ! तू सर्व भाव से मेरी शरण ग्रहण कर। यदि पाप कर्म दण्ड के कारण तेरी आँखें भी समाप्त होनी हों तो मैं तुझे पुनर् आजीवन आँखें दान कर दूं। तुझे रोग मुक्त करके सर्व अंग प्रदान करूं तथा तुझे प्राप्त होऊं अर्थात् मिलुं।

जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख। अदली अदल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे जीवन में पूर्ण रूप से सत्य घटित हुई।

मैं भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा (C.M.O. - M.B.B.S., M.S.(Eye specalist), 18 A, सरकुलर रोड़ रोहतक में रहता हूँ। मेरा मोबाईल नं. 9813045050 है। मेरा जन्म 12 अप्रैल 1953 को गाँव किलोई जिला-रोहतक में हुआ। मेरी पाँचवी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई D.A.V. स्कूल व D.A.V. कॉलेज अमृतसर में हुई। अमृतसर में मेरे बड़े भाई Librarian के पद पर D.A.V. स्कूल में कार्यरत थे। वहाँ के जानकार लोग उन्हें मास्टर जी तथा मुझे प्यार से छोटे मास्टर जी कहते थे। जब मैं छठी कक्षा में पढ़ता था तो मुझे एक महात्मा ने जो कि दुरग्याना मन्दिर अमृतसर में सेवक था, ने मेरी हस्तरेखा देखकर बताया कि छोटे मास्टर जी आप डॉक्टर बनोगे तथा तुम्हारी आयु केवल पचास वर्ष है। यह कहते हुए यह भय हुआ कि बच्चे को यह सच्चाई बताकर गलत कर दिया, लेकिन मैंने महात्मा की बातों को एक बच्चे की भांति सुना अनसुना कर दिया। मैं बड़ा होकर डॉक्टर बना तथा मैंने M.B.B.S. तथा M.S. (Eye specalist) भी P.G.I. M.S. रोहतक से की है।

ठीक पचासवां वर्ष जब पूरा होना था यानी 10/11 अप्रैल 2003 की रात बारह बजे के करीब उस दिन मैं सपरिवार रोहतक में ही था तो मुझे दोनों हाथों में दर्द तथा सीने में भारीपन शुरु हुआ और हम उपचार के लिए P.G.I. M.S. में चले गए। इससे पहले मुझे न ही ब्लड प्रेशर रहता था और न ही मुझे शुगर की बीमारी थी। मैंने नाम लेने से पहले पच्चीस वर्ष लगातार धूम्रपान अवश्य किया था।

वहाँ ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर को मैंने परिचय दिया कि H.C.M.S.I. (Group A) श्रेणी में मैं एस.एम.ओ. के पद पर तैनात हूँ। (उस समय S.M.O वर्तमान में C.M.O.) परिचय देने के बाद डॉक्टर ने तुरन्त उचित निरीक्षण के बाद मेरा ईलाज शुरु कर दिया और Intensive Care Unit में शिफ्ट करने तक मुझे सभी गतिविधियाँ पता रही। लेकिन I.C.U. में शिफ्ट करने के कुछ समय बाद से मुझे कुछ मालूम नहीं कि आगे क्या हुआ ? लगभग डेढ़ दो घण्टे के पश्चात मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे काल के दूत चारों तरफ से घेर कर खड़े हैं और मुझे कह रहे हैं कि चलो तुम्हारा समय पूरा हो चुका है, हम तुम्हें लेने आए हैं। मैं उनको कुछ भी नहीं कह पाया था कि तभी पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब मेरे सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के रूप में मेरे बैड के पास प्रकट हुए तो वे काल के दूत जिनका चेहरा डरावना तथा शरीर डील-डोल था, महाराज जी को देखते ही अदृश्य हो गए।

मेरे सतगुरु देव ने मुझे आर्शीवाद दिया तथा कहा कि कबीर परमेश्वर ने आपकी आयु अपने कोटे से (अपनी शक्ति) से बढ़ा दी है ताकि आप अपनी भक्ति पूरी कर सके और सतलोक जा सकें। मैंने रो कर कहा कि मालिक आप ही स्वयं परमेश्वर हो, आपने इस चोले में अपने आपको छुपा रखा है, परमेश्वर भक्ति भी आप ही करवाने वाले हो। मैं भक्ति करने वाला कौन होता हूँ ? इतना कहकर मेरी आँखें खुल गई और मेरी आँखों में आसुंओं के सिवाए कुछ भी नहीं था। तीन दिन बाद जब I.C.U से मुझे वार्ड में लाया जा रहा था तो मैं उठकर पैदल चलने लगा तो एक डॉक्टर ने भाग कर मुझे पकड़ लिया तथा कहा कि क्या कर रहे हो ? आपने पैदल बिल्कुल नहीं चलना, आपको हार्ट अटैक हुआ है।

स्पेशल वार्ड में शिफ्ट करने के बाद डॉक्टर ने मुझे बताया कि हम हैरान हैं कि 10/11 तारीख की रात को आपकी E.C.G./B.P. इत्यादि रिपोर्ट बता रही थी कि आप बचने वाले नहीं हो, लेकिन सुबह आपकी E.C.G. आदि फिर सामान्य शुरु हो गई।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया था। इससे पहले मैं ब्रह्मा कुमारी, जैनी, राधास्वामी का शिष्य रहा तथा D.A.V. School/College का छात्र होने की वजह से आर्य समाज की अमिट छाप मुझ पर थी। गायत्री मंत्र का जाप कई लाख बार किया होगा। घर में लगभग सैकड़ों फोटो सभी देवी-देवताओं की थी। नामदान के बाद सभी देवी-देवताओं की फोटो जल प्रवाह कर दी तथा सभी प्रकार की आन उपासना बंद कर दी तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज के आदेशानुसार पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की भक्ति शुरु कर दी। क्योंकि सतगुरु ने कहा है कि --

'एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाए। माली सींचैं मूल को, फले–फूले अघाए।।'

एक कबीर परमेश्वर की भक्ति में आरूढ़ होने से वह भी केवल तत्वदर्शी संत से नाम लेने के बाद लाभ यह हुआ कि संत रामपाल जी महाराज ने अपने कोटे से मेरी उम्र बढ़ा दी। यह बातें मैंने तथा मेरे परिवार के सदस्यों ने P.G.I.M.S. में कार्यरत डॉक्टर तथा दूसरे स्टॉफ के सदस्यों को बताई, लेकिन उनके समझ में एक न आई। क्योंकि ये बातें समझ में उसी को आयेंगी जिनका चैनल परमेश्वर ऑन करेंगे, अन्यथा संभव नहीं कि कोई इस ज्ञान को समझ सके।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया तो मुझे मालूम नहीं था कि यही पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब ज्यों के त्यों अवतार आए हुए हैं। लेकिन जब मेरे साथ उपरोक्त घटना घटित हुई तब मुझे यह विश्वास हो गया किमाँसा घटे न तिल बढ़े, विधना लिखे जो लेख। साचा सतगुरु मेट कर ऊपर मारें मेख।

कबीर परमेश्वर सशरीर संत रामपाल जी महाराज के रूप में आए हुए हैं जो सच्चे सतगुरु हैं और विधना (भाग्य) के पाप कर्मों रूपी लेख को मिटा कर अपनी शक्ति से नये लेख लिख देते हैं।

"भक्तमति सुशीला की आँख ठीक करना"

इसी प्रकार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला हुड्डा को 6-12-2004 को दाईं आँख से दो-दो वस्तुएं नजर आनी शुरु हो गई थी। P.G.I.M.S. रोहतक में सभी टेस्ट

M.R.I. तथा **M.R.I. Angio graphy** इत्यादि करवाने तथा सभी वरिष्ठ डॉक्टरों को दिखाया तथा ईलाज भी किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। प्राइवेट डॉक्टर ईश्वर सिंह इत्यादि को भी दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। यह सभी हमने सतगुरु से आज्ञा लेने के बाद किया था लेकिन जब दवाईयों से कोई लाभ नहीं हुआ तो हमने सतगुरु से प्रार्थना की कि परमेश्वर आप आयु तक बढ़ा देते हो तो आपके लिए यह क्या कठिन है ? कृप्या आप अपने बच्चों पर यह कृपा भी कर दो। सतगुरुदेव ने कृपा की और सिर पर हाथ रखते ही दाई आँख बिल्कुल सीधी हो गई और दो-दो वस्तु नजर आनी बंद हो गई। जैसे पहले थी बिल्कुल ज्यों की त्यों हो गई। अब इनको पूर्ण परमात्मा पाप कर्मों को जलाकर नष्ट करने वाले भगवान नहीं कहे तो और क्या कहें ? कृप्या पाठक स्वयं पढ़कर विचार कर निर्णय लें और अति शीघ्र आप भी अपनी मान-बड़ाई व शास्त्रविधि रहित साधना को त्याग कर सतलोक आश्रम करौंथा में आकर परम पूज्य सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेकर अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाऐं।

''सत साहेब'' प्रार्थी : भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा।

'' तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है''

भक्त रामकुमार ढाका (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) का प्रमाण

मैं रामकुमार ढाका 'रिटायर हैडमास्टर दिल्ली' (M.A.B.ED.), गाँव सुंडाना, जिला-रोहतक, वर्तमान पता - आजाद नगर, रोहतक (मोब. नं. - 9813844747) में रहता हूँ। सन् 1996 से मेरी पत्नी और दोनों लड़कों को एक बहुत भयंकर बीमारी थी। इस बीमारी से इतने तंग हो गये कि दोनों लड़के कहने लगे कि नौकरी नहीं हो सकती क्योंकि इस बीमारी से गला रूकता था और श्वांस आना बंद हो जाता था, तभी डाक्टर लेकर आते और नशे का टीका लगा देते, परन्तु रात को ड्यूटी पर होते तब कहां ले जायें, बहुत ही परेशानी हो जाती थी, अफसर भी मुझे बुला लेते थे, मैं उनको बताता तब कहते की ईलाज करवाओ, जब घर पर होते तो डॉ. को रात को दो-दो बार भी आना पड़ता था, क्योंकि कभी किसी घर के सदस्य को तो कभी किसी को। अगर किसी को शक हो तो डबल फाटक पर डॉ. सचदेवा की दुकान है, सचदेवा साहब से पूछ लो कि मास्टर जी के घर पर क्या हाल हो रहा था?

जिसने भी जहाँ पर बताया मैं वहीं पर गया - उत्तर प्रदेश में कराना शामली के पास, उत्तर प्रदेश में खेखड़ा, राजस्थान में बाला जी कई बार, खाटूश्याम जी व कई जगह जन्त्र-मन्त्र करने वालों के पास, हरियाणा में तो मैंने कोई जगह नहीं छोड़ी, परन्तु कोई फर्क नहीं लगा, करेला के पास खेड़ा कंचनी, बोहतावाला, गोहाना के पास नगर, समचाना, सिकन्दरपुर, खिड़वाली आदि अनेक जगह गया और लगभग तीन लाख रूपये लग गये कोई काम नहीं आये।

मैं थक गया और मेरा परिवार बर्बाद हो गया। मेरी पत्नी ने मेरे से कहा कि मेरा जीवन समाप्त होने वाला है तथा भक्त सुभाष पुत्र महेन्द्र पुलिस वाला जिस संत रामपाल की महिमा सुनाता है मुझे उसी संत से नाम दिला दे। पहले मैं किसी

बात पर विश्वास नहीं करता था तथा गुरु बनाना तो बहुत ही हेय समझता था। कहा करता था कि तेरा गुरु तो मैं ही हूँ, मैं एम.ए.बी.एड मेरे से ज्यादा कौन गुरु होगा ? परन्तु परिस्थितियों ने मुझे विवश कर दिया तथा मैंने यह भी स्वीकृति अपनी पत्नी को दे दी कि आप नाम ले लो। आप का जीवन शेष नहीं है। क्योंकि उस समय मेरी पत्नी का वजन 50 कि.ग्रा. रह गया था, पहले 80 कि.ग्रा. वजन था। उठने-बैठने से भी रह गई थी, चलना फिरना तो बहुत दूर की बात थी।

मैंने कहा मर तो ली, नाम और लेकर देखले, अपने मन की यह और करके देखले, अब मैं तेरे को नहीं रोकूंगा, नाम ले ले, ठीक है, क्योंकि संत रामपाल जी से नाम लेने के लिए कहने दूसरे तीसरे महीने सुभाष हमारा भतीजा आता था, कहता था ताई नाम ले लो नहीं तो मरोगे। मैं कहता था कि कोई डॉ. छोड़ा नहीं, हम बाला जी आदि सभी तान्त्रिकों के पास सिर मार लिया तो आपका संत क्या ले रहा है ?

परन्तु तंग आकर, कहीं बात नहीं बनी तब नाम लेने भेज दी। क्योंकि मैं भी अपने परिवार के आश्रम में जाने के सख्त विरुद्ध था। 16 जनवरी 2003 में नाम लिया और 'गहरी नजर गीता में' नामक पुस्तक साथ लेकर आई। एक महीने में जैसे दीपक में तेल डाल दिया इस प्रकार रोशनी हो गई, हर महीने तीन किलो वजन बढ़ने लगा।

तब बड़े लड़के को भी बगैर नाम लिये ही इस माँ के नाम लेने से अच्छी नींद आने लगी, तभी उसने अपनी पत्नी को नाम दिलवाया, फिर मैंने 'गहरी नजर गीता में' पुस्तक पढ़ी, तब मैं भी गहराई में गया तो पाया कि ऐसा ज्ञान कभी नहीं पढ़ा व सुना था और मैंने भी अप्रैल 2003 में नाम लिया। आज मेरे घर में सभी बड़े से बच्चे तक ने नाम ले लिया है।

जब वह बीमारी होती थी तब सारा घर कांप उठता था, लड़ाई-झगड़ा, नौकरी में विवाद, डॉ. का आना जाना या मैडीकल में इमरजैंसी में लेकर पहुँचते थे। आज हमारा घर स्वर्ग के समान है और सतलोक जाने की इच्छा है।

एक महीना पहले स्वपन में परमेश्वर कबीर साहेब जी गुड़गाँव सैक्टर 57 में प्लॉट बुक कर गये, जब ड्रा निकला तो वही प्लॉट नंबर मिला जो स्वपन में कबीर परमेश्वर ने बताया था, सुबह समाचार पत्र पढ़ा तो वही प्लॉट नं. अलोट था।

हमारे यहाँ ऐसी बीमारी थी कि कोई भी इतना दुःखी नहीं होगा जो हम थे अब संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश प्राप्त करने के पश्चात् बहुत थोड़े दिनों में हम बहुत सुखी हैं।

मेरे घर पर 'जिन्न' (जिन्द) प्रकट हुआ, उसने कहा मैं आपके आश्रम में जाता हूँ, सब कुछ देखकर आता हूँ, परन्तु मैं शीशों में नहीं जाता जहाँ संत जी बैठ कर सत्संग करते हैं, क्योंकि मैंने सब बातों का पता है, अगर वहाँ जाउंगा तो मेरी पिटाई बनेगी इसलिए मैं वापिस बाहर आ जाता हूँ और तुम कहीं तान्त्रिकों के पास क्या, चाहे बाला जी गये, मैं अंदर जाया ही नहीं करता, बाहर रह जाता हूँ, मेरे को कोई बांधने वाला नहीं है। मेरे साथी डरपोक थे वह भाग गये मैं नहीं जाउंगा, मेरे को पढ़ कर छोड़ रखा है, मैंने तेरे घर व तेरी लड़की के घर की ईंट से ईंट बजानी है। मैं इस प्रकार पढ़कर छोड़ रखा हूँ कि एक के बाद एक सभी के विनाश का नम्बर आयेगा, चाहे कहीं भी भाग लो।

कुछ दिन के बाद वही प्रेत घर में फिर प्रकट हुआ और जोर-जोर से बोलने लगा कहां है तेरा गुरु रामपाल ? कहां है तेरा मालिक कविर्देव (कबीर परमेश्वर)? जब भी वह प्रकट होता था मनुष्य की तरह बातचीत करता था। तभी मेरी पत्नी हमारे घर पर बने पूजा स्थल पर चली गई और डण्डौतं प्रणाम किया, तभी जिन्द(प्रेत) की पिटाई आरम्भ हो गयी और कहने लगा क्यों पिटाई करते हो, इन दीवारों को अब गिरा दूंगा। उसकी अच्छी पिटाई हुई वो कहने लगा हाय ये तो दीवार नहीं लोहे का जाल है, सरिये हैं। ये मालिक रामपाल जी कहां से आ गये ये तो बरवाला सत्संग करने गये हुए थे (उस दिन संत रामपाल जी महाराज बरवाला जि. हिसार में सत्संग करने गए हुए थे) मैं तो इसलिये आया था कि मालिक यहाँ पर है ही नहीं।

जिन्द ने कहा कि मैं आया था तुम्हारी ईंट से ईंट बजाने परन्तु मेरी ईंट से ईंट बज गई। मेरे को नरक में डालेंगे, मैं चला जाउंगा, मुझे छुड़वा दो। करौंथा आश्रम में संत रामपाल जी बैठे हैं इनको आदमी मत समझना पूर्ण परमात्मा आये हुए हैं। इनको मत छोड़ देना, नहीं तो खता खा जाओगे। ऐसे ही खेड़ा कंचनी वाला पण्डित भी इलाज करता था।

जब मैं खेड़ा कंचनी में गया तो उस पंडित ने बताया कि आपका परिवार एक के बाद एक करके खत्म हो जायेगा। मैंने नहीं मानी, परन्तु शाहपुर में ही भाई की लड़कियों की शादी कर रखी है तथा वह पण्डित भी शाहपुर का ही है। फिर पण्डित जी ने हमारे चौधरी को बताया कि रोहतक वाले चौधरी रामकुमार के यहाँ बहुत खतरनाक बीमारी है और सारा परिवार नष्ट हो जायेगा। उनको बुलाकर लाओ। तब हमारे चौधरी साहब ने बटेऊ को मेरे पास भेजा। हमारे बटेऊ जिले सिंह ने बताया और वह साथ लेकर गया। बुलाना तो आसान था परन्तु फिर ईलाज बहुत मुश्किल हो गया। उसके काबू में नहीं आया। मंगल व शनिवार को रात के समय पाँच-पाँच चौकियां आती थी। उन्हें उतारता और साथ में तालाब में डाल देता। यह कार्यक्रम चार साल तक चलता रहा परन्तु बाद में हाथ खड़े कर दिए।

मैं बोहतावाला (जीन्द) में एक स्याने के पास पहुँचा। उसने कहा कि तेरी बीमारी मैं काट दूंगा। आपकी बीमारी का मुझे पता है। वह हमें कई बार बाला जी भी ले गया, न उस स्याने के काबू में आया और न उसके मन्दिर में। क्योंकि मंगल व शनिवार को चौकियों के आने ने उसको इतना तंग कर दिया कि वह भी हाथ खड़े कर गया, क्योंकि चौकियां जब आती थी तो मेरे पास भी संदेश आ जाता था कि रात 9 से 2 बजे तक आग जला कर, पानी का लोटा लेकर और लाठी लेकर जागते रहना है। यह कार्यक्रम सन् 1996 से 2002 तक चलता रहा। बोतावाले के पास जब चौकी आई तो उसमें एक पर्ची मिली थी बोहतावाले स्याने को कहा था कि बीच से हट जा तेरे को पचास हजार रूपये दे देंगे, नहीं तो तेरी भी खैर नहीं है। उसने डर के कारण मुझे इन्कार कर दिया। मैं दिन में दिल्ली नौकरी करने जाता और रात को पहरा देता। कभी रात को डॉ. को बुला कर लाता। मेरी बहुत ही दुर्दशा थी। मैं ऊपर के काम से तथा सारा परिवार बीमारी से बहुत तंग था। किसी को कहते तो मजाक करते थे, किसी ने भी साथ नहीं दिया। बहुत पैसे (लगभग 3 लाख) खर्च हो गये।

मेरी पत्नी चांदकौर को थाईराइड हो गई थी। जनवरी 2003 में डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने थाईराईड के लिए तिमारपुर, दिल्ली हस्पताल में दाखिल करवाने के लिए मार्क कर दिया। परन्तु वहाँ न जाकर मैं मैडिकल में डॉ. चुग इसका स्पेशलिस्ट था उनसे ईलाज करवाया, उसने कहा सारी उम्र दवा खानी पड़ेगी, परन्तु अब 2003 में नाम लेने के बाद दवाई बिल्कुल समाप्त हो गई। मैंने डॉ. चुग को भी चैक करवाया, तो हैरान होगये, ये कैसे हुआ, सारी बातें बताई।

अब मेरे लड़के व मेरी पत्नी की सभी बिमारियाँ बन्दी छोड़ ने ठीक कर दी। बड़े लड़के का नाम सुरेन्द्र कुमार तथा छोटे लड़के का नाम मनोज कुमार है। दोनों हरियाणा पुलिस में नौकरी करते हैं। जब वे दोनों ही उस जिन्द भूत से ग्रस्त थे व घाल ने भी उन पर कई बार अटैक किया, लेकिन नाम उपदेश ले रखा था। इसलिए उनको परमात्मा कबीर साहिब ने बचा लिया।

तत्वदर्शी जगतगुरु संत रामपाल जी महाराज हमारे लिये ही अवतरित हुऐ हैं क्योंकि जिस परिवार में दो लड़के नौकरी पर दोनों में ही जिन्द हो तो उस घर में क्या होगा। जिस औरत के दोनों लड़कों के साथ ऐसा खिलवाड़ हो और खुद में भी जिन्द हो तो क्या जिन्दगी है ? जो लोग करौंथा आश्रम के बारे में ज्ञान अर्जित नहीं करते वे लोग अंधेरे में हैं। क्योंकि पढ़ने के लिए दिमाग दिया है, पढ़िये और सोचिये कि वास्तविकता क्या है ?

हमारा परिवार बर्बाद हो गया था। मेरे बच्चे और मेरी पत्नी जब ठीक हो गई तभी मैंने अपने आपको सतगुरु रामपाल जी के चरणों में समर्पण कर दिया। मेरा कुछ नहीं है। ये तन-मन-धन सभी गुरु जी के चरणों में समर्पित करता हूँ।

मेरी लड़की ने व दामाद ने भी नाम ले लिया। आज मेरी बेटी का घर भी स्वर्ग हो गया है। मेरा दामाद शराब पीता था, उसने शराब भी त्याग दी। मेरी लड़की की प्रमोसन, प्लॉट, मकान आदि चन्द दिनों में ही प्राप्त हो गए तथा सबकी मौज हो रही है।

सन् 2003 में बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज ने हमारे पाप कर्मों रूपी सूखे घास के ढेर को सतनाम रूपी अग्नि से जलाकर नष्ट कर दिया। न कोई गंडा, न कोई डोरी, न राख, न ताबीज आदि कुछ नहीं, बस केवल बन्दी छोड के मंत्र (नाम उपदेश) मात्र से सर्व रोग नष्ट हो गए। मंत्र तो मोक्ष प्राप्ति के लिए सभी बन्धनों से छुटकारा पाकर सतलोक ले जाने का है, ये सभी बिमारियां तो रूंगे में कविर्देव की कृपा से ही समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसा न हो तो भक्ति से विश्वास उठ जाता है। अब हम बहुत सुखी हैं। अब चाहे कोई कुछ भी करे, हमारे घर पर कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि हम बन्दी छोड़ कबीर साहेब के हंस हैं, उनके चरणों में हैं। मैं भी नहीं मानता था, इन बातों को पाखण्ड कहता था, परन्तु जब एक के बाद एक को डॉ. के पास ले जाता था तथा बीमारी में पैसे भी लगे, तंग भी हुए, तब आँखें खुली वास्तव में ही मुझे जाल में फंसा रखा है। इसलिए अपने इस भ्रम को भुला देना कि भूत-प्रेत कुछ नहीं है। मैं कहता हूँ कि बकवास नहीं ये बातें वास्तव में हैं, क्योंकि मरोड़ में मैंने अपने घर को बरबाद कर दिया होता। इसलिए

मैं सभी पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि आप भी अपने समस्त दुःखों से छुटकारा पाने व सत्यभक्ति करने के लिए सतलोक आश्रम करौंथा में परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से मुफ्त उपदेश प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाए।

प्रार्थी : हैडमास्टर रामकुमार (एम.ए.बी.एड.)

उपरोक्त कुछ भक्तात्माओं की आत्म कथाएं आपने पढ़ी। ऐसे-२ भक्त हजारों-लाखों हैं जो अपनी आत्म कथा पुस्तकों में लिखवाना चाहते हैं। लेकिन यहां पर स्थान के अभाव के कारण हम कुछेक भक्तों की आत्म कथा दे पाए। यदि सभी भक्तों की आत्म कथा हम लिखने बैठ जांए तो शायद सैकड़ों पुस्तकें छप जाएंगी। इसलिए समझदार व्यक्ति को इशारा (संकेत) ही काफी होता है।

भक्ति में भेद : भक्ति भक्ति में बहुत भेद होता है। आप चाहें किसी देव/देवी की भक्ति करें। उसका फल अवश्य मिलेगा जो कि नाशवान होगा। लेकिन मुक्ति नहीं हो पाएगी और पाप कर्म भी समाप्त नहीं होंगे जिन्हें भोगने के लिए बार-२ जन्म लेते रहना पड़ेगा। मुक्ति तो केवल पूर्ण संत की शरण में जाकर अर्थात् उनसे नाम उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से ही हो पाएगी अन्यथा नहीं।

''सृष्टी रचना''

(सुक्ष्म वेद से निष्कर्ष रूप सृष्टी रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टी की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टी रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टी रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्मण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्मण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्मण्ड में एक विभाग

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में आत्मा और परमात्मा एक रूप होकर कबीर साहेब ही अनामी रूप में है। जैसे मिट्टी के ढले (छोटे-छोटे टुकड़े) हो जाते हैं। फिर वर्षा होने पर एक पृथ्वी बन जाती है, अलग अस्तित्व नहीं रहता।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।
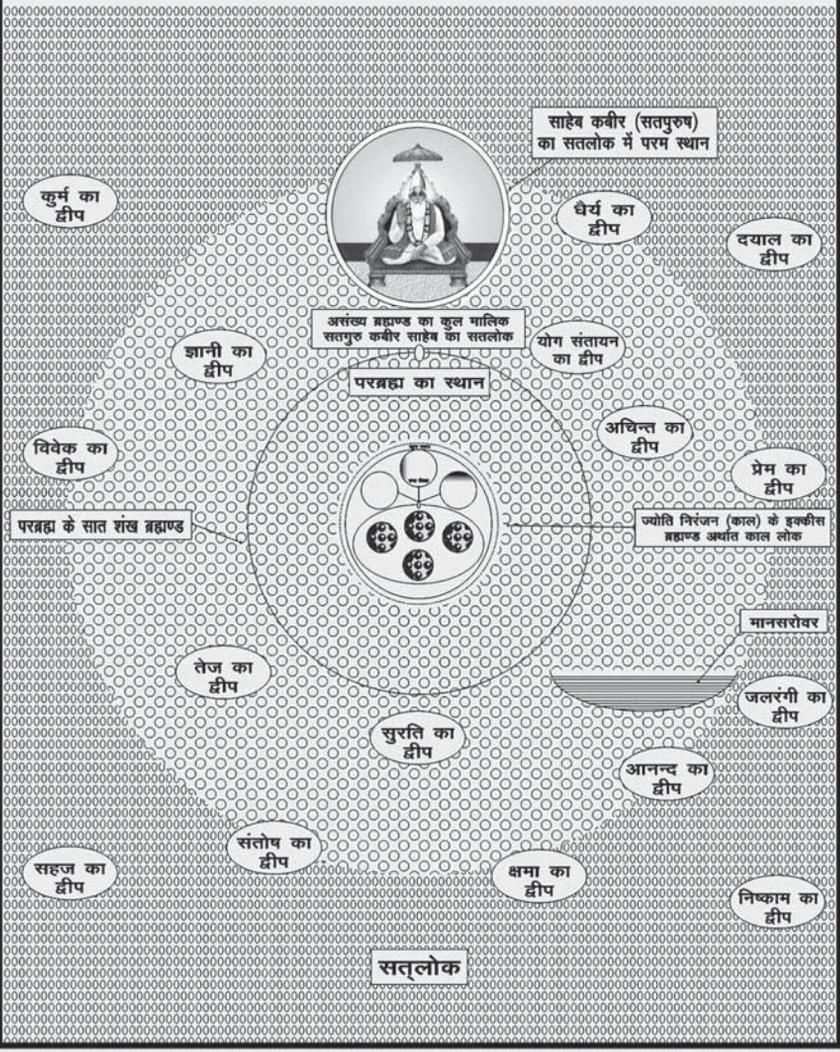
(गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टी रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सुक्ष्म वेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश संख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृहमंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-२ लोकों में होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम कूप की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम कूप की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की। एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक

मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ दिया। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फंसी ?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्मण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा अन्तरात्मा से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल सृष्टी में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त

ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र
शुन्य स्थान
महाविष्णु रूप में काल (ब्रह्म)
जटा कुण्डली झील
महाशिव रूप में काल
परमेश्वर का राजदूत भवन
महाब्रह्मा रूप में काल
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
ब्रह्म लोक
सप्तपुरी
दुर्गा लोक
अठासी हजार द्वीप
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
धर्मराय का लोक
मानसरोवर
मीठे जल का समुद्र
महास्वर्ग
सुमेरू पर्वत
फलदार वृक्षों का वन
स्वर्ग
नरक
जटा कुण्डली झील
विष्णु लोक
शिव लोक
ब्रह्मा लोक
सूर्य
पृथ्वी
चन्द्रमा
इन्द्र का लोक
वितल
महातल
अतल
सूतल
तलातल
रसातल
पाताल लोक
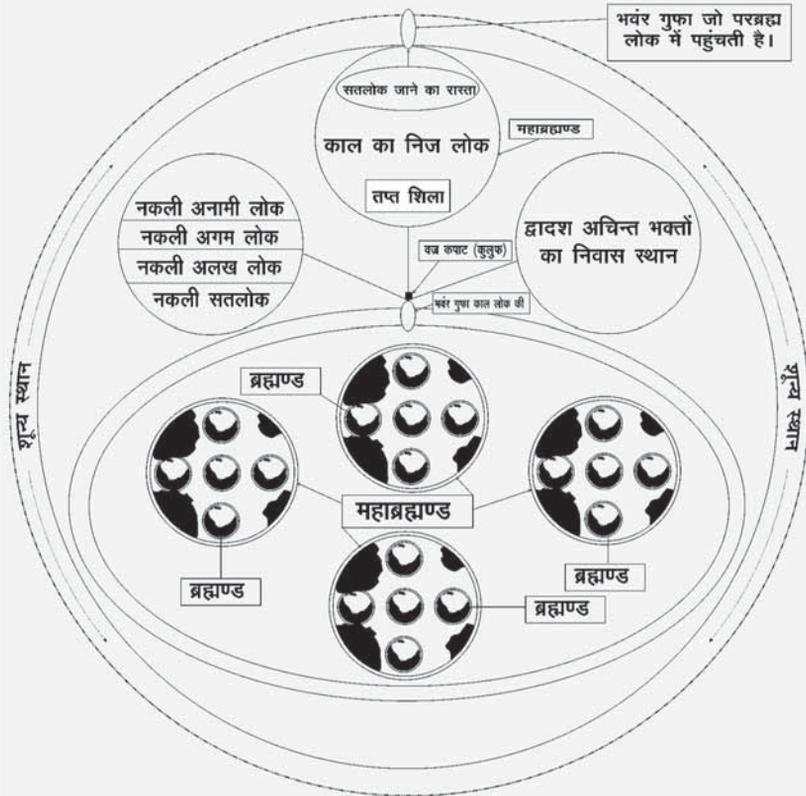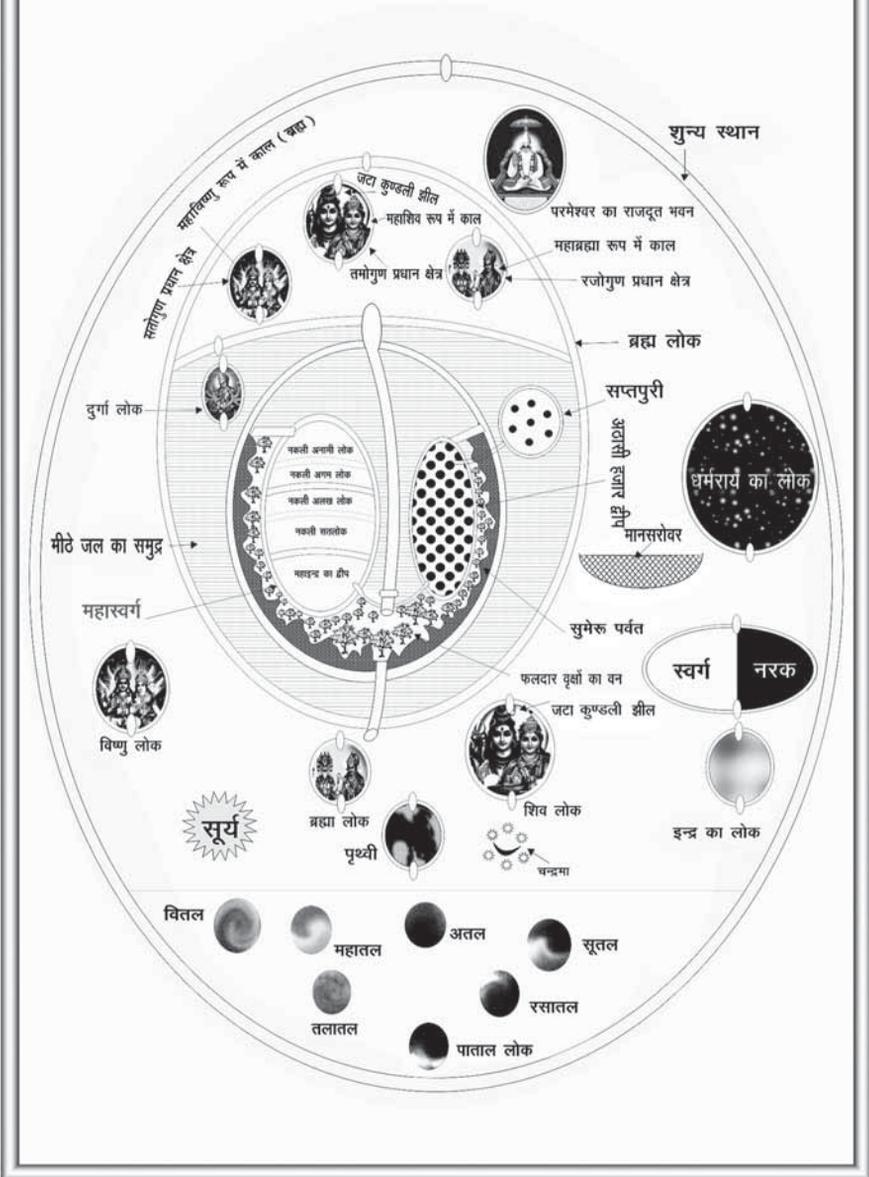
हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता—पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक—छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्मण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्मण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्मण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्मण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के प्रतिफल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्मण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्मण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्मण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्मण्ड सतलोक में ही थे।

तत् पश्चात पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कर्विदेव (कबीर साहेब) ने अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको मैंने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्मण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्मण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्मण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात संख ब्रह्मण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टी के एक ब्रह्मण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्मण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्मण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं"

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूंगा प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकृति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्मण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है।

जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सतोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्मण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पृष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पृष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रेस गोरख पुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक

हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पृष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टी-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा - अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो। (42)

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया ?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्म, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता–पिता'' (दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द (गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित,

अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)

पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है। एक ब्रह्मण्ड की सृष्टी रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्मण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्मण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे नहीं मालूम इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टी करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पृष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकृति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकृति देवी) ने की। पृष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में पढ़ें।

''पवित्र शिव महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सृष्टी रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है। कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टी रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य : अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टी की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन : परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टी की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टी की रचना की तथा फिर विश्राम किया। कृप्या देखें बाईबल के उत्पति ग्रन्थ की फोटो कापी इसी पुस्तक के पृष्ठ 81 से 82 पर।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हय्यिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टी की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी

मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टी रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :- कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

”पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टी रचना“

विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मृत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टी रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टी का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।

यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवों का भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवन की उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि राम का का भेद न जाना।।

राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछे से माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार। कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टी रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टी की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण

ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्मण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा ?

विशेषः- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथ श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दु समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मृत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाशवान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दु समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नही) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमृतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कर्विदेव (कबीर प्रभु) तत्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

“आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टी रचना का संकेत”

श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पृ. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही

अपने हाथों से सर्व सृष्टी की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची सृष्टी का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु (अंश) अमृतवाणी महला 1 (गु.ग्र.पृ. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टी रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है। सृष्टि रचना की विस्तृत जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' प्राप्ति स्थान :- सत्यलोक आश्रम, चण्डीगढ़ रोड़ बरवाला, जि. हिसार, (हरियाणा) फोन नं. -9992600801, 9992600802, 9992600803, 9812166044, 9812151088, 9812026821, 9812142324, 9992600825

''जीवन दाता अवतार''

मैं भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम निवासी गांव धनाना, जिला सोनीपत जो कि फिलहाल शास्त्री नगर रोहतक (हरियाणा) का निवासी हूँ। सतगुरु जी से नाम उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जो कि कभी बीमार न रहता हो, मेरी पत्नी को भूत-प्रेत बहुत ही ज्यादा परेशान करते थे। इतना कष्ट रहने के बावजूद हम देवी देवताओं की बहुत पूजा करते थे तथा मेरी हनुमान जी में बहुत ज्यादा आस्था थी। लेकिन घर में संकट पर संकट आते जा रहे थे। किसी भी काम में बरकत नहीं हो रही थी। पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी मेरे परिवार के होने के कारण हम उनको पूर्ण परमात्मा नहीं मान पाये जिसका खामियाजा हमें कई वर्षों तक झेलना पड़ा। तभी गांव सिंहपुरा निवासी भक्त विकास ने मुझे बताया कि आपके घर में पूर्ण परमात्मा

जगत् गुरु रामपाल जी महाराज आये हुए हैं और आप कहां सोये पड़े हो, तो मैंने कहा कि काल ने हमें कष्ट ही इतना दे रखा है कि हमें वहां के बारे में जानने का टाईम ही नहीं मिला। सारा समय डाक्टरों के चक्कर काटने में चला जाता है। ऊपर से आर्थिक तंगी भी बहुत रहती है। उस भक्त ने मुझे काफी समझाया, पूर्ण परमात्मा की ऐसी दया हुई कि मैं संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने के लिए अक्तूबर 2010 में सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचा। नाम उपदेश लेने के बाद सतगुरु जी ने अपना दया का पिटारा खोल दिया और मुझे वो सुख अनुभव होने लगे जिनका वर्णन इस जुबान से कर पाना बहुत मुश्किल है।

मेरी पत्नी को भूत-प्रेत सता रहे थे। सतगुरु देव जी की दया से अब वह पूर्ण रूप से ठीक है। 7 सितम्बर 2011 को मेरा लड़का मोहित उम्र 12 साल जो कि मेरे कहने पर मिस्त्री को बुलाने के लिए गया था। मेरा लड़का मिस्त्री के मकान की छत पर चढ़ गया तथा छज्जे पर चला गया। छज्जे के साथ ऊपर 11000 (ग्यारह हजार) वोलटेज के बिजली के तार थे। लड़के तथा तारों के बीच में केवल एक फीट की दूरी थी। जब वह उनके नजदीक गया तो तारों ने लड़के को खेंच लिया और लड़के के सिर पर तार चिपक गया तथा एक इन्च गहरा घुस गया व मुंह जल गया और बिजली सारे शरीर में प्रवेश करके पैर के अंगूठे की हड्डी को तोड़ कर निकलने लगी। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा मेरे लड़के को बहुत ही चमकदार (तेजोमय) शरीर सहित दिखाई दिये जैसे हजारों ट्यूबों का प्रकाश हो रहा हो। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया। फिर लड़के की सतगुरु जी से बहुत बातें हुई तथा जब सतगुरु जी जाने लगे तो लड़के ने पूछा कि गुरु जी कहां जा रहे हो तो गुरु जी ने कहा कि बेटा मैं तेरे साथ हूँ तू घबरा मत। उस समय मेरे लड़के मोहित की माता जी भी वहीं पर थी। उसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा तथा वह बहुत घबरा गई। क्योंकि लड़के के शरीर से बिजली के लपटें निकल रही थी।

उसके बाद हम लड़के को पी. जी. आई. रोहतक हॉस्पिटल में लेकर गये। वहां पर भी लड़के को गुरु जी दिखाई दिये व मेरे लड़के ने कहा कि गुरु जी मेरे साथ हैं। आप घबराओ मत। यदि आज हम गुरु जी की शरण में नहीं होते तो हमारा लड़का आज जिंदा नहीं होता तथा मेरी पत्नी को भी प्रेत मार डालते, हम उजड़ने से बच गये। यह सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की ही दया है।

सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि मेरी सत्यकथा को पढ़कर आप जी भी सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की शरण में आकर अपना समय रहते कल्याण कराऐं तथा प्रारब्ध में लिखे कर्मों के कारण जो घटनाऐं घटनी होती हैं उन से पूर्ण रूप से बचोगे। सतगुरु रामपाल जी महाराज के सतसंग वचनों में मैंने सुना था कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी बन्दी छोड़ हमारे सर्व पापों को नाश कर देते हैं। ऐसा ही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मंत्र 2 में तथा मण्डल 9 सुक्त 80 मंत्र 2 में भी लिखा है कि यदि किसी रोगी की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी है तथा उसकी आयु भी शेष न रही हो तो उसके प्राणों की रक्षा करूं तथा उसे सौ वर्ष आयु प्रदान करके अर्थात् उसकी आयु बढ़ा कर साधक को सर्व सुख प्रदान करता हूँ।

सज्जनों सतगुरु रामपाल जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में यह भी बताया है कि प्रत्येक प्राणी अपने किए कर्मों के अनुसार ही सुख व दुःख प्राप्त करता है। दुःख तो पाप

कर्मों का फल है तथा सुख पुण्य कर्मों का फल है। अभी तक सर्व सन्त, आचार्य, गुरु यही कहते रहे हैं कि जो प्रारब्ध कर्म का भोग है वह तो प्राणी को भोग कर ही समाप्त करना होगा। हे सभ्य पाठकों ! सतगुरु रामपाल जी महाराज कहते हैं कि पाप कर्म से दुःख होता है। यदि पाप कर्मों का नाश हो जाए तो दुःख का स्वतः अन्त हो जाता है। यदि भक्ति करते-२ भी पाप कर्म का फल (दुःख) भोगना ही पड़े तो भक्ति की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है। 7 सितम्बर 2011 को हमारे प्रारब्ध कर्म के पाप के कारण मेरे पुत्र मोहित की मृत्यु होनी थी। हमारे सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की कृपा से परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने हमारे पाप का नाश कर दिया तथा मेरे बच्चे की जीवन रक्षा करके आयु बढ़ा दी। यदि 7 सितम्बर 2011 को प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मेरा बेटा मर जाता तो हम सर्व परिवार के सदस्य भक्ति त्याग देते तथा नास्तिक हो जाते। क्योंकि हमें उस समय परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं था। अब भगवान पर अत्यधिक विश्वास हो गया है। यह भी विश्वास हो गया कि परम पूज्य कबीर जी ही परमेश्वर हैं। ये पाप नाशक सर्व सुखदायक व पूर्ण मोक्षदायक हैं तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज उन्हीं के भेजे उनके अवतार आए हैं। अतः आप जी से पुनः प्रार्थना है कि अविलम्ब सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचे तथा उपदेश लेकर कल्याण कराऐं। आप जी से प्रार्थना करने का मेरा उद्देश्य यह है कि मेरे जैसे दुःखीया बहुत हैं। मेरी उपरोक्त आत्मकथा को पढ़कर विचार करके वे भी मेरे की तरह संकटों का निवारण करा सकेंगे तथा सुखी हो सकेंगे।यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं। गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे (समय) नूं।।

प्रार्थी

भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम,
शास्त्री नगर, हिसार बाई पास, रोहतक, मोब. नं. 09829588628

(पुस्तक ज्ञान गंगा की) ''भूमिका''

अनादि काल से ही मानव परम शांति, सुख व अमृत्व की खोज में लगा हुआ है। वह अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न करता आ रहा है लेकिन उसकी यह चाहत कभी पूर्ण नहीं हो पा रही है। ऐसा इसलिए है कि उसे इस चाहत को प्राप्त करने के मार्ग का पूर्ण ज्ञान नहीं है। सभी प्राणी चाहते हैं कि कोई कार्य न करना पड़े, खाने को स्वादिष्ट भोजन मिले, पहनने को सुन्दर वस्त्र मिलें, रहने को आलीशान भवन हों, घूमने के लिए सुन्दर पार्क हों, मनोरंजन करने के लिए मधुर-२ संगीत हों, नांचे-गांए, खेलें-कूदें, मौज-मस्ती मनांए और कभी बीमार न हों, कभी बूढ़े न हों और कभी मृत्यु न होवे आदि-२, परंतु जिस संसार में हम रह रहे हैं यहां न तो ऐसा कहीं पर नजर आता है और न ही ऐसा संभव है। क्योंकि यह लोक नाशवान है और इस लोक की हर वस्तु भी नाशवान है और इस लोक का राजा ब्रह्म काल है जो एक लाख मानव सूक्ष्म शरीर खाता है। उसने सब प्राणियों को कर्म-भर्म व पाप-पुण्य रूपी जाल में उलझा कर तीन लोक के पिंजरे में कैद किए हुए है। कबीर साहेब कहते हैं कि :-

कबीर, तीन लोक पिंजरा भया, पाप पुण्य दो जाल। सभी जीव भोजन भये, एक खाने वाला काल।।
गरीब, एक पापी एक पुन्यी आया, एक है सूम दलेल रे।बिना भजन कोई काम नहीं आवै, सब है जम की जेल रे।।

वह नहीं चाहता कि कोई प्राणी इस पिंजरे रूपी कैद से बाहर निकल जाए। वह यह भी नहीं चाहता कि जीव आत्मा को अपने निज घर सतलोक का पता चले। इसलिए वह अपनी त्रिगुणी माया से हर जीव को भ्रमित किए हुए है। फिर मानव को ये उपरोक्त चाहत कहां से उत्पन्न हुई है ? यहां ऐसा कुछ भी नहीं है। यहां हम सबने मरना है, सब दुःखी व अशांत हैं। जिस स्थिति को हम यहां प्राप्त करना चाहते हैं ऐसी स्थिति में हम अपने निज घर सतलोक में रहते थे। काल ब्रह्म के लोक में

स्व इच्छा से आकर फंस गए और अपने निज घर का रास्ता भूल गए। कबीर साहेब कहते हैं कि --

इच्छा रूपी खेलन आया, तातैं सुख सागर नहीं पाया।

इस काल ब्रह्म के लोक में शांति व सुख का नामोनिशान भी नहीं है। त्रिगुणी माया से उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग-द्वेष, हर्ष-शोक, लाभ-हानि, मान-बड़ाई रूपी अवगुण हर जीव को परेशान किए हुए हैं। यहां एक जीव दूसरे जीव को मार कर खा जाता है, शोषण करता है, ईज्जत लूट लेता है, धन लूट लेता है, शांति छीन लेता है। यहां पर चारों तरफ आग लगी है। यदि आप शांति से रहना चाहोगे तो दूसरे आपको नहीं रहने देंगे। आपके न चाहते हुए भी चोर चोरी कर ले जाता है, डाकू डाका डाल ले जाता है, दुर्घटना घट जाती है, किसान की फसल खराब हो जाती है, व्यापारी का व्यापार ठप्प हो जाता है, राजा का राज छिन लिया जाता है, स्वस्थ शरीर में बीमारी लग जाती है अर्थात् यहां पर कोई भी वस्तु सुरक्षित नहीं। राजाओं के राज, ईज्जतदार की ईज्जत, धनवान का धन, ताकतवर की ताकत और यहां तक की हम सभी के शरीर भी अचानक छीन लिए जाते हैं। माता-पिता के सामने जवान बेटा-बेटी मर जाते हैं, दूध पीते बच्चों को रोते-बिलखते छोड़ कर मात-पिता मर जाते हैं, जवान बहनें विधवा हो जाती हैं और पहाड़ से दुःखों को भोगने को मजबूर होते हैं। विचार करें कि क्या यह स्थान रहने के लायक है ? लेकिन हम मजबूरी वश यहां रह रहे हैं क्योंकि इस काल के पिंजरे से बाहर निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आता और हमें दूसरों को दुःखी करने की व दुःख सहने की आदत सी बन गई। यदि आप जी को इस लोक में होने वाले दुःखों से बचाव करना है तो यहां के प्रभु काल से परम शक्ति युक्त परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) की शरण लेनी पड़ेगी। जिस परमेश्वर का खौफ काल प्रभु को भी है। जिस के डर से यह उपरोक्त कष्ट उस जीव को नहीं दे सकता जो पूर्ण परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) की शरण पूर्ण सन्त के बताए मार्ग से ग्रहण करता है। वह जब तक संसार में भक्ति करता रहेगा, उसको उपरोक्त कष्ट आजीवन नहीं होते। जो व्यक्ति इस पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' को पढ़ेगा उसको ज्ञान हो जाएगा कि हम अपने निज घर को भूल गए हैं। वह परम शांति व सुख यहां न होकर निज घर सतलोक में है जहां पर न जन्म है, न मृत्यु है, न बुढ़ापा, न दुःख, न कोई लड़ाई-झगड़ा है, न कोई बिमारी है, न पैसे का कोई लेन-देन है, न मनोरंजन के साधन खरीदना है। वहां पर सब परमात्मा द्वारा निःशुल्क व अखण्ड है। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी में प्रमाण है कि :--

बिन ही मुख सारंग राग सुन, बिन ही तंती तार। बिना सुर अलगोजे बजैं, नगर नांच घुमार।।
घण्टा बाजे ताल नग, मंजीरे डफ झांझ। मूरली मधूर सुहावनी, निसबासर और सांझ।।
बीन बिहंगम बाजहिं, तरक तम्बूरे तीर। राग खण्ड नहीं होत है, बंध्या रहत समीर।।
तरक नहीं तोरा नहीं, नांही कशीस कबाब। अमृत प्याले मध पीवैं, ज्यों भाटी चवैं शराब।।
मतवाले मस्तानपुर, गली–२ गुलजार। संख शराबी फिरत हैं, चलो तास बजार।।
संख–संख पत्नी नाचैं, गावैं शब्द सुभान। चंद्र बदन सूरजमुखी, नांही मान गुमान।।
संख हिंडोले नूर नग, झूलैं संत हजूर। तख्त धनी के पास कर, ऐसा मुलक जहूर।।
नदी नाव नाले बगैं, छूटैं फुहारे सुन्न। भरे होद सरवर सदा, नहीं पाप नहीं पुण्य।।
ना कोई भिक्षुक दान दे, ना कोई हार व्यवहार। ना कोई जन्मे मरे, ऐसा देश हमार।।

जहां संखों लहर मेहर की उपजैं, कहर जहां नहीं कोई।
दासगरीब अचल अविनाशी, सुख का सागर सोई।।

सतलोक में केवल एक रस परम शांति व सुख है। जब तक हम सतलोक में नहीं जाएंगे तब तक हम परमशांति, सुख व अमृत्व को प्राप्त नहीं कर सकते। सतलोक में जाना तभी संभव है जब हम पूर्ण संत से उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की आजीवन भक्ति करते रहें। इस पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' के माध्यम से जो हम संदेश देना चाहते हैं उसमें किसी देवी-देवता व धर्म की बुराई न करके सर्व

पवित्र धर्म ग्रंथों में छुपे गूढ रहस्य को उजागर करके यथार्थ भक्ति मार्ग बताना चाहा है जो कि वर्तमान के सर्व संत, महंत व आचार्य गुरु साहेबान शास्त्रों में छिपे गूढ रहस्य को समझ नहीं पाए। परम पूज्य कबीर साहेब अपनी वाणी में कहते हैं कि - 'वेद कतेब झूठे ना भाई, झूठे हैं सो समझे नांही।

जिस कारण भक्त समाज को अपार हानि हो रही है। सब अपने अनुमान से व झूठे गुरुओं द्वारा बताई गई शास्त्र विरूद्ध साधना करते हैं। जिससे न मानसिक शांति मिलती है और न ही शारीरिक सुख, न ही घर व कारोबार में लाभ होता है और न ही परमेश्वर का साक्षात्कार होता है और न ही मोक्ष प्राप्ति होती है। यह सब सुख कैसे मिले तथा यह जानने के लिए कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, क्यों जन्म लेता हूं, क्यों मरता हूं और क्यों दुःख भोगता हूं ? आखिर यह सब कौन करवा रहा है और परमेश्वर कौन है, कैसा है, कहां है तथा कैसे मिलेगा और ब्रह्मा, विष्णु और शिव के माता-पिता कौन हैं और किस प्रकार से काल ब्रह्म की जेल से छुटकारा पाकर अपने निज घर (सतलोक) में वापिस जा सकते हैं। यह सब इस पुस्तक के माध्यम से दर्शाया गया है ताकि इसे पढ़कर आम भक्तात्मा का कल्याण संभव हो सके। यह पुस्तक सतगुरु रामपाल जी महाराज के प्रवचनों का संग्रह है जो कि सद्ग्रन्थों में लिखे तथ्यों पर आधारित है। हमें पूर्ण विश्वास है कि जो पाठकजन रूची व निष्पक्ष भाव से पढ़ कर अनुसरण करेगा। उसका कल्याण संभव है :-

"आत्म प्राण उद्धार हीं, ऐसा धर्म नहीं और। कोटि अश्वमेघ यज्ञ, सकल समाना भौर।।"
जीव उद्धार परम पुण्य, ऐसा कर्म नहीं और। मरूस्थल के मृग ज्यों, सब मर गये दौर—दौर।।

भावार्थ :-- यदि एक आत्मा को सतभक्ति मार्ग पर लगाकर उसका आत्म कल्याण करवा दिया जाए तो करोड़ अवश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है और उसके बराबर कोई भी धर्म नहीं है। जीवात्मा के उद्धार के लिए किए गए कार्य अर्थात् सेवा से श्रेष्ठ कोई भी कार्य नहीं है। अपने पेट भरने के लिए तो पशु-पक्षी भी सारा दिन भ्रमते हैं। उसी तरह वह व्यक्ति है, जो परमार्थी कार्य नहीं करता, परमार्थी कर्म सर्वश्रेष्ठ सेवा जीव कल्याण के लिए किया कर्म है। जीव कल्याण का कार्य न करके सर्व मानव मरूस्थल के हिरण की तरह दौड़-२ कर मर जाते हैं। जिसे कुछ दूरी पर जल ही जल दिखाई देता है और वहां दौड़ कर जाने पर थल ही प्राप्त होता है। फिर कुछ दूरी पर थल का जल दिखाई देता है अन्त में उस हिरण की प्यास से ही मृत्यु हो जाती है। ठीक इसी प्रकार जो प्राणी इस काल लोक में जहां हम रह रहे है। वे उस हिरण के समान सुख की आशा करते हैं जैसे निःसन्तान सोचता है सन्तान होने पर सुखी हो जाऊँगा। सन्तान वालों से पूछें तो उनकी अनेकों समस्याऐं सुनने को मिलेंगी। निर्धन व्यक्ति सोचता है कि धन हो जाए तो में सुखी हो जाऊं। जब धनवानों की कुशल जानने के लिए प्रश्न करोगे तो ढेर सारी परेशानियाँ सुनने को मिलेंगी। कोई राज्य प्राप्ति से सुख मानता है, यह उसकी महाभूल है। राजा को (मन्त्री, मुख्यमन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति को) स्वपन में भी सुख नहीं होता। जैसे चार-पांच सदस्यों के परिवार का मुखिया अपने परिवार के प्रबन्ध में कितना परेशान रहता है। राजा तो एक क्षेत्र का मुखिया होता है। उसके प्रबन्ध में सुख स्वपन में भी नहीं होता। राजा लोग शराब पीकर कुछ गम भुलाते हैं। माया इकट्ठा करने के लिए जनता से कर लेते हैं फिर अगले जन्मों में जो राजा सत्यभक्ति नहीं करते, पशु योनियों को प्राप्त होकर प्रत्येक व्यक्ति से वसूले कर को उनके पशु बनकर लौटाते हैं। जो व्यक्ति मनमुखी होकर तथा झूठे गुरुओं से दिक्षित होकर भक्ति तथा धर्म करते हैं। वे सोचते हैं कि भविष्य में सुख होगा लेकिन इसके विपरित दुःख ही प्राप्त होता है। कबीर साहेब कहते हैं कि मेरा यह ज्ञान ऐसा है कि यदि ज्ञानी पुरुष होगा तो इसे सुनकर हृदय में बसा लेगा और यदि मूर्ख होगा तो उसकी समझ से बाहर है।

"कबीर, ज्ञानी हो तो हृदय लगाई, मूर्ख हो तो गम ना पाई"

❑❑❑